3 | राजधानी
बदमाशों ने सुरक्षा गार्ड को मारी गोली

5 | अभिमत
भारत नेपाल संबंधों पर ओली का प्रहार

7 | राष्ट्रीय
पत्नी की हत्या के बाद पुलिस जवान ने की आत्महत्या

8 | विदेश
हांगकांग में राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो बनाएगा चीन

RNI NO. UPHIN/2010/36547
वर्ष 10 अंक 241
लखनऊ, रविवार, 21 जून, 2020
पृष्ठ 16+4 मूल्य ₹ 3
लखनऊ संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

एक नयी दुनिया
आज के अंक के साथ
एजेण्डा

पीएम के कहे का गलत अर्थ मत निकालें, चीन की नहीं चलने देंगे

प्रधानमंत्री कार्यालय ने सर्वदलीय बैठक में दिए बयान का ब्योरा किया जारी

- कहा-जानबूझ कर फैलाई जा रही धारणा, सैनिकों ने बलिदान देकर चीन को किया नाकाम
- एलएसी पर सशस्त्र बलों की वीरता के बाद बने हालात से जुड़ीं हैं पीएम की टिप्पणियां

कोलकाता में आक्रोशित लोगों ने चीन का पुतला जलाया और उसे बहिष्कार का आह्वान किया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस बयान पर केंद्र सरकार ने सफाई दी है जिसमें उन्होंने कहा था कि चीनी सैनिकों ने न तो हमारे क्षेत्र में प्रवेश किया है और न ही किसी भारतीय चौकी पर कब्जा किया गया है। बीते 15-16 जून की मध्यरात्रि को पूर्वी लद्दाख में गलवान घाटी में हुई झड़प का जिक्र करते हुए सर्वदलीय बैठक में दिए पीएम मोदी के इस बयान पर बड़ा बवाल मच गया और सैन्य मामलों के विषेशज्ञों, सामरिक रणनीतिकारों और विपक्षी नेताओं ने सवाल उठाए। प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा कि प्रधानमंत्री की टिप्पणी की शरारतपूर्ण ढंग से गलत व्याख्या करने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार किसी को भी एलएसी के एकतरफा बदलाव की अनुमति नहीं देगी। हालांकि, प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने शनिवार जो स्पष्टीकरण दिया, वह 15 जून की रात को दोनों देशों के जवानों के बीच हुई झड़प पर केंद्रित है, लेकिन सरकार ने इसे लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं की है कि यह झड़प एलएसी के किस तरफ हुई- भारतीय क्षेत्र में या चीन की तरफ? स्थिति को पूरी तरह स्पष्ट करते हुए प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा (शेष पेज 7)

प्रवासी श्रमिकों के लिए 50,000 करोड़ की योजना

- प्रधानमंत्री ने गरीब कल्याण रोजगार अभियान का किया शुभारंभ
- देश के 116 जिलों में प्रवासी श्रमिकों को उनके घर के आसपास ही मिलेगा रोजगार

भाषा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को दूसरे राज्यों से लौट कर आए प्रवासी मजदूरों को उनके घर के आसपास ही रोजगार देने के लिए 50,000 करोड़ रुपए की लागत से गरीब कल्याण रोजगार अभियान की शुरूआत की।

बिहार के खगड़िया जिले के बेलदौर प्रखंड के तेलिहार गांव से शुरू की गई इस योजना का मकसद वापस आए प्रवासी श्रमिकों और गांव के लोगों को सशक्त बनाना, स्थानीय स्तर पर विकास को गति देना और आजीविका के अवसर प्रदान करना है। मोदी ने वीडियो कांफ्रेन्सिंग के जरिए योजना की शुरूआत करते हुए कहा कि यह छह राज्यों...बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, झारखंड और ओड़िशा ... के 116 जिलों में लागू होगी और इससे प्रवासी मजदूरों को उनके घर के आसपास ही रोजगार मिलेगा। गरीब कल्याण रोजगार योजना प्रवासी मजदूरों को एक बार रोजगार देने के लिए शुरू की गई है। ये योजना देश के 116 जिलों में लागू है और इसके तहत शुरुआत में 125 दिन का काम दिया जाएगा।

अधिकारियों ने कहा कि बाद में इस योजना का विस्तार किया जा सकता है।यह योजना ऐसे समय शुरू की गई है जब कोरोना वायरस महामारी और लॉकडाउन के कारण लाखों की संख्या में प्रवासी मजदूरों को कामकाज से हाथा धोना पड़ा और वे अपने गांवों को लौटने को मजबूर हुए हैं। प्रधानमंत्री ने वीडियो कांफ्रेंस के जरिए उद्घाटन कार्यक्रम में कहा, इस योजना पर कुल 50,000 करोड़ रुपए का खर्च आएगा। इस योजना के जरिए ग्राम पंचायत भवन और आंगनवाड़ी केंद्र, राष्ट्रीय राजमार्ग, रेलवे और (शेष पेज 7)

उन्नाव से मिली प्रधानमंत्री को योजना की प्रेरणा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज गरीब कल्याण रोजगार के नाम से 50 हजार करोड़ रुपये की जो योजना लांच की है उसकी प्रेरणा उन्हे प्रदेश के उन्नाव जिले से मिली। योजना के लांचिंग के दौरान प्रधानमंत्री ने इसका जिक्र भी किया। प्रधानमंत्री मोदी के अनुसार लॉकडाउन के दौरान दूसरे प्रदेशों से आए श्रमिकों और कामगारों को उन्नाव के एक सरकारी स्कूल में क्वारंटाइन किया गया था। इन श्रमिकों में से अधिकांश हैदराबाद से लौटे थे। इनकी रंग-रोगन और प्लास्टर ऑफ पेरिस (पीओपी) के काम में महारथ थी। इस दौरान श्रमिकों के लिए वहां प्रशासन की ओर से भोजन और नाश्ते की व्यवस्था की गई थी। काम करने वाले हुनरमंद हाथों ने सोचा बैठकर खाने से बेहतर तो कुछ करना है। मन बना तो सबने मिलकर उस स्कूल का ही कायाकल्प कर दिया जिसमें वे (शेष पेज 7)

रोजगार के नए अवसर खोलेगा गरीब कल्याण रोजगार अभियानः योगी

- यूपी के 31 जिलों के चयन पर मुख्यमंत्री ने पीएम का आभार जताया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गरीब कल्याण रोजगार अभियान में प्रदेश के 31 जनपदों को चयनित किये जाने पर प्रधानमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे देश में गरीब कल्याण व ग्रामीण विकास को नया आधार देने के लिए प्रधानमंत्री की पहल पर संचालित किया जा रहा यह अभियान गांवों में आजीविका के अवसरों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान करेगा। उत्तर प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री की आकांक्षाओं तथा अपेक्षाओं के अनुरूप गरीब कल्याण रोजगार अभियान को संचालित करते हुए इसका लाभ जन-जन तक पहुंचाने के लिए कृतसंकल्पित है। ज्ञातव्य है कि वापस आये श्रमिकों तथा गांव के लोगों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से देश के 6 राज्यों के 116 जनपदों में 125 दिन का यह अभियान संचालित किया जा (शेष पेज 7)

डोकलाम को लेकर स्वामी ने सरकार को घेरा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

पूर्वी लद्दाख में गलवान घाटी को लेकर भारत और चीन में विवाद के बीच वरिष्ठ भाजपा नेता और राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने शनिवार को अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्ट का हवाला दिया और कहा कि चीन ने डोकलाम में भारत के साथ हुए समझौते को खारिज कर दिया।

दोनों देशों के बीच यह समझौता पिछले साल हुआ था। समझौते के बाद चीन डोकलाम से अपनी सेना हटाने पर सहमत हो गया था। लेकिन एलएसी पर मौजूदा हालात को देखते हुए स्वामी ने सूत्रों के हवाला दिया जिसमें कहा गया है कि चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी फिर डोकलाम में घुस गई है। उन्होंने सरकार से इस मुद्दे को स्पष्ट करने को कहा है कि क्या ये सही या आधारहीन है।

चीनी सैनिक नहीं घुसे तो कहां शहीद हुए 20 जवान : राहुल

- मोदी पर मढ़ा तीखा आरोप-आक्रामक चीन के आगे झुककर दे दिया भारतीय भूभाग

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अब तक का सबसे तीखा हमला बोलते पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि चीन की आक्रामकता के आगे झुके पीएम ने भारतीय भूभाग दे दिया। उन्होंने ट्वीट कर सवाल दागा कि यदि जहां हिंसक झड़प हुई वह चीन का भूभाग था तो भारतीय जवान कहां और क्यों मारे गए।

सर्वदलीय बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समापन उद्बोधन के संदर्भ में पीएमओ की तरफ से जारी किए गए स्पष्टीकरण के कुछ ही घंटों बाद विपक्षी दल कांग्रेस ने कहा कि प्रधानमंत्री कार्यालय का बयान साफ तौर पर सच को दबाने का निष्फल प्रयास है। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता और पूर्व वित्त मंत्री पी चिंदबरम ने भी यह कहकर पीएम मोदी पर निशाना साधा कि सर्वदलीय बैठक में दिया गया उनका बयान निरर्थक और सबको हैरान कर देने वाला था। चिदंबरम ने कहा कि पीएम का बयान पूरी तरह से सैन्य प्रमुख, रक्षा मंत्री और विदेश मंत्री के पहले दिए बयानों के बिल्कुल विपरीत था। चक्कर में डालने वाली बात यह है कि यदि चीनी सैनिक एलएसी पार कर भारतीय भूभाग में नहीं घुसे तो 15 और 16 जून की रात को हुई हिंसक झड़प क्या थी।

हमारे जवान किस जगह शहीद और घायल हुए? पूर्व वित्त मंत्री ने कहा कि शुक्रवार को प्रधानमंत्री के बयान के बाद भी चीन ने झड़प के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराया और पूरी गलवान घाटी पर अपनी संप्रभुता का दावा दोहराया है। उसके इस दावे (शेष पेज 7)

भारत ने कहा- गलवान हमारा है, फर्जी दावा छोड़े चीन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

गलवान घाटी के मुद्दे पर भारत और चीन के बीच अब जुबानी जंग तेज हो गई है। एक ओर चीन इस पर अपना दावा पेश कर रहा है तो दूसरी ओर भारत इसे 'बढ़ाचढ़ाकर पेश किया गया अस्वीकार्य' दावा करार दे रहा है। सबसे पहले चीन ने दावा किया कि पूरी गलवान घाटी उसकी है और भारत पर समस्या बढ़ाने का आरोप लगाते हुए कहा कि इसका परिणाम 15 जून को खून संघर्ष के रूप में सामने आया। चीन के इस बयान के बाद लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी)जारी तनाव में एक नया मोड़ आ गया है।

भारत ने पलटवार करते हुए कहा कि गलवान घाटी इलाके के संबंध उसकी स्थिति ऐतिहासिक रूप से स्पष्ट है। एलएसी के संबंध में चीन का बढ़ा चढ़ाकर किया गया दावा अस्वीकार्य है। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा है कि यह चीन का रुख पहले के अनुरूप भी नहीं है। विदेश मंत्रालय ने यह भी कहा कि भारतीय सेना गलवान घाटी समेत भारत-चीन सीमाई इलाकों में एलएसी की स्थिति को लेकर पूरी तरह से वाकिफ हैं। विदेश मंत्रालय ने गलवान घाटी में हुए घटनाक्रमों पर 19 जून को चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता के बयान के जवाब में यह बात कही। चीनी सेना द्वारा भारतीय गश्ती दल को रोके जाने तथा पुल निर्माण पर एतराज जताने के बाद पिछले एक महीने से दोनों सेनाओं के बीच गतिरोध कायम है।

भारत का कहना है कि एलएसी के समानांतर 250 किमी लंबी श्योक-दौलत बेग ओल्डी उसके क्षेत्र में है और चीन को इसमें दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। संयोग से भारत ने घाटी में 60 मीटर लंबे पुल का निर्माण पूरा कर लिया है। गलवान घाटी में खून झड़प तथा एलएसी पर हालात के बारे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभी पार्टियों के प्रमुखों के साथ बैठक के बाद शनिवार सुबह चीन ने अपने दूतावास के जरिये आधिकारिक बयान जारी किया। अपने बयान में चीनी सरकार ने कहा ' भारत-चीन सीमा के पश्चिमी इलाके में गलवान घाटी एलएसी पर चीन के हिस्से में स्थित है।' विदेश मंत्रालय ने भारतीय जवानों को पेट्रोल ड्यूटी करने में चीन पर बाधा डालने का आरोप लगाते हुए कहा, ' मई 2020 की शुरुआत से ही चीन भारतीय गश्ती दल के काम में बाधा डाल रहा है, जिसके चलते उत्पन्न हुए गतिरोध को स्थानीय कमांडरों को द्वारा दूर किया गया। हम इस दलील को स्वीकार नहीं करते कि भारत ने यथास्थिति में एकतरफा बदलाव किया है, हमने इसे बरकरार रखा है। विदेश मंत्रालय ने कहा 'इसके बाद मई के मध्य में चीन सैनिकों ने भारत-चीन सीमा के पश्चिम सेक्टर में एलएसी और अन्य इलाकों में घुसपैठ की। इन प्रयासों पर हमारे द्वारा उचित जवाब दिया गया। इसके बाद एलएसी पर चीनी गतिविधियों के कारण उत्पन्न हालात का हल (शेष पेज 7)

किसी भी स्थिति से निपटने को हमारी वायु सेना तैयार

- बोले-एयर चीफ मार्शल आरकेएस भदौरिया

पायनियर समाचार सेवा। हैदराबाद

वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल आरके एस भदौरिया ने शनिवार को यहां कहा कि वायुसेना वास्तविक नियंत्रण रेखा पर स्थिति से पूरी तरह अवगत है तथा हालात का आकलन कर रही है। उन्होंने कहा कि सेना लक्ष्य पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है और किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार तथा उपयुक्त जगह पर तैनात है।

यहां डुंडीगल में वायुसेना अकादमी (एएफए) में कम्बाइंड ग्रैजुएशन परेड (सीजीपी) को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वायुसेना लक्ष्य पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है और वह लद्दाख की गलवान घाटी में हमारे शूरवीरों के बलिदान को कभी व्यर्थ नहीं जाने देगी। गलवान घाटी में 15 जून को पांच दशकों में चीन के साथ अब तक के सबसे बड़े सैन्य टकराव की पृष्ठभूमि में वायु सेना प्रमुख ने कहा कि बल किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है।

उन्होंने कहा, यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए कि हम पूरी तरह तैयार हैं और किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए उपयुक्त जगह पर तैनात हैं। मैं देश को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हम लक्ष्य पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं तथा गलवान के अपने शूरवीरों का बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाने देंगे। बाद में पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा, हम पूरी स्थिति से अवगत हैं। चाहे एलएसी हो या एलएसी के अलावा तैनाती हो। हमारे पास पूरा आकलन है और हमने इस तरह की तैनाती से पैदा होने वाली किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के (शेष पेज 7)

बाजार

सेंसेक्स	34,731	
निफ्टी	10,244	
सोना	48,334	/10g
चांदी	49,160	/kg

क्विक न्यूज

पाकिस्तानी ड्रोन को सीमा पर बीएसएफ ने मार गिराया

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने शनिवार को आधुनिक राइफल और कुछ छोटे बमों से लैस पाकिस्तान के एक ड्रोन को मार गिराया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। जम्मू क्षेत्र में यह पहली ऐसी घटना है जब बीएसएफ ने हथियारों और विस्फोटकों से लैस ड्रोन को मार गिराया है। इसके साथ ही ड्रोन के जरिए केंद्र शासित प्रदेश में हथियारों की तस्करी करने की पाकिस्तान की कोशिश नाकाम कर दी गई है। अधिकारियों ने बताया कि बीएसएफ के एक गश्ती दल ने सुबह करीब पांच बजकर 10 मिनट पर सीमा चौकी पंसार के क्षेत्र में आसमान में एक ड्रोन को मंडराते देखा।

उत्तर भारत के कई हिस्सों में आज दिखेगा वलयाकार सूर्य ग्रहण

- चंद्रमा सूर्य को पूरी तरह ढक नहीं पाएगा, इसलिए अंगूठी के आकार का होगा रूप

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

देश के कुछ हिस्सों में रविवार को वलयाकार सूर्यग्रहण दिखाई देगा, जिसमें सूर्य अग्नि वलय की तरह दिखाई देगा। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने कहा कि ग्रहण का आंशिक रूप सुबह 9.16 बजे शुरू होगा। वलयाकार रूप सुबह 10.19 बजे शुरू होगा और यह अपराह्न 2.02 बजे समाप्त होगा। ग्रहण का आंशिक रूप अपराह्न 3.04 बजे समाप्त होगा।

एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया ने कहा, दोपहर के करीब, उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में सूर्य ग्रहण एक सुंदर वलयाकार रूप (अंगूठी के आकार का) में दिखेगा क्योंकि चंद्रमा सूर्य को पूरी तरह से नहीं ढक पाएगा। ग्रहण का वलयाकार रूप सुबह उत्तर भारत के राजस्थान, हरियाणा और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में दिखाई देगा। इन राज्यों के भीतर भी कुछ प्रमुख स्थान हैं, जहां से स्पष्ट पूर्ण ग्रहण दिखेगा, जिनमें देहरादून, कुरुक्षेत्र, चमोली, जोशीमठ, सिरसा, सूरतगढ़ शामिल हैं।

देश के बाकी हिस्सों से, यह आंशिक सूर्य ग्रहण के रूप में दिखाई देगा। यह कांगो, सूडान, इथियोपिया, यमन, सऊदी अरब, ओमान, पाकिस्तान और चीन से भी होकर गुजरेगा। दिल्ली में नेहरू तारामंडल की निदेशक एन रत्नाश्री ने कहा कि अगला वलयाकार ग्रहण दिसंबर 2020 में पड़ेगा, जो दक्षिण अमेरिका से देखा जाएगा। 2022 में एक और वलयाकार ग्रहण होगा, लेकिन वह शायद ही भारत से दिखाई देगा। सूर्य ग्रहण अमावस्या के दिन होता है जब चंद्रमा, पृथ्वी (शेष पेज 7)

सूबे में कोरोना से 22 की मौत, 592 नए मरीज मिले

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ में पार्क रोड पर कोरोना रोगी के मिलने के बाद विधायक निवास-6 हुआ सील

प्रदेश में बीते 24 घंटों के दौरान विभिन्न जिलों में 592 नए कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले हैं। जिसके बाद कुल संक्रमित मरीजों की संख्या अब 17135 हो गई है। वही बीमारी के चलते 22 लोगों की मृत्यु हुई है। अब इस महामारी से मरने वालों का आंकड़ा 529 हो गया है। प्रदेश के प्रमुख स्वास्थ्य सचिव अमित मोहन प्रसाद ने बताया कि राज्य में इस समय कोरोना के 6237 सक्रिय मामले हैं, जिनका अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। उन्होंने बताया कि 10369 लोगों को स्वस्थ होने के बाद अस्पतालों से छुट्टी दी जा चुकी हैं। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार बीते 24 घंटों के दौरान मेरठ में पांच, लखनऊ में एक, कानपुर नगर में दो, गाजियाबाद में दो, वाराणसी में दो, हापुड़ में दो, प्रयागराज में एक, संभल में एक, मथुरा में एक, मुजफ्फरनगर में एक, इटावा में एक, मैनपुरी में एक, फर्रुखाबाद में एक, बागपत में एक व्यक्ति की कोरोना से मृत्यु हुई है। वही बीते 24 घंटों के दौरान आगरा में नौ, मेरठ में 20, गौतम बुद्ध नगर में 41, लखनऊ में 38, कानपुर नगर में 55, गाजियाबाद में 40, सहारनपुर में चार, फिरोजाबाद में तीन, मुरादाबाद में 14, वाराणसी में 11, रामपुर में 14, जौनपुर में 16, हापुड़ में 65, बुलंदशहर में 11, सिद्धार्थनगर में दो, गाजीपुर में 11, अमेठी में नौ, आजमगढ़ में 6, बिजनौर में 6, प्रयागराज में नौ, संभल में दो, संत कबीर नगर में 14, प्रतापगढ़ में दो, मथुरा में 13, सुल्तानपुर में चार, गोरखपुर में सात, मुजफ्फरनगर में नौ, देवरिया में एक, रायबरेली में पांच, गोंडा में चार, अमरोहा में छह, बरेली में दो, इटावा में तीन, हरदोई में 8, फतेहपुर में तीन, कन्नौज में 10, पीलीभीत में एक, शामली में 13, जालौन में 11, सीतापुर में दो, बदायूं में सात, भदोही में तीन, झांसी में छह मैनपुरी में एक, मिर्जापुर में तीन, फर्रुखाबाद में पांच, उन्नाव में एक, बागपत में एक, औरैया में आठ, श्रावस्ती में एक, एटा में 6, बांदा में एक, हाथरस में एक, चंदौली में तीन, कानपुर देहात में दो, शाहजहांपुर में चार, कुशीनगर में 10, और महोबा में पांच नए कोरोना पॉजिटिव मरीज पाए गए हैं। प्रसाद ने बताया कि प्रदेश में टेस्टिंग का कार्य तेजी से किया जा रहा है।

यूपी-112 में कोरोना का कहर, 48 घंटे के लिए बंद किया गया मुख्यालय.... पेज 3

अंधकार की ओर प्रकाश

निरंतर ओम का जाप करने वाले सिंह साहब के सामने इस समय अंधेरा ही अंधेरा है। उनके पास स्वयं का प्रकाश होने के बावजूद भी वह अंधकार में डूबे हुए हैं। आलम यह है कि जिस समाजवादी मठ में वह सीना चौड़ा करके घूमा करते थे आज वहां उन्हें प्रवेश तक नहीं मिल रहा है। स्थिति यह है कि कई बार तो वह समाजवादी मठ की परिक्रमा करके ही वापस चले गए हैं। बगल में ही शिव का मठ है लेकिन वहां वह जा नहीं सकते। यदि गए तो समाजवाद के अखिलेश्वर नाराज हो जाएंगे। पहले सिंह साहब सॉफ्टनेस के जरिए अपने सारे काम करा लिया करते थे लेकिन अब तो उस पर भी अखिलेश्वर ने कब्जा कर रखा है। बगैर अखिलेश्वर की अनुमति के सॉफ्टनेस किसी के नजदीक नहीं आने दी जाती। अखिलेश्वर स्वयं तो मठ के भीतर धूनी जमाए बैठे हैं और किसी से मिलते ही नहीं है। ऐसे हालात में सिंह साहब की परेशानी बढाना स्वभाविक है क्योंकि वह जानते हैं कि यही स्थिति रही तो भविष्य में सिंह साहब के ओम का स्वर अंतरिक्ष में कहीं विलुप्त हो जाएगा और प्रकाश अंधकार में खो जाएगा।

सब का ख्वाब एक

यूपी की नौकरशाही का भी अजब हाल है। जब से 88 और 89 बैच के साहब लोग प्रमोशन पाएं हैं तब से सत्ता के गलियारे में यह बात तेज हो चली है कि अब तो सब ही चीफ पद के दावेदार हो गए हैं क्योंकि 20 अधिकारी प्रमोशन पाकर अपर मुख्य सचिव बन गए हैं। पिछली सरकारों में ऐसा होता आया है कि चहेतों को चीफ पद पर बैठाने के लिए कई अधिकारियों को सुपर सीड किया गया है। बहन जी की सरकार में खासतौर पर ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं। ऐसे में हर कोई सोच रहा है कि जुगाड़ लगाने में क्या हर्ज है। क्योंकि चर्चा यह भी है कि मौजूदा चीफ साहब अपना ब्रीफकेस लेकर दिल्ली जाने की जुगत में हैं ताकि कैबिनेट सचिव की रैंक में आ जाए। ऐसे में अब हर कोई एक दूसरे को पछाड़कर इस कुर्सी पर बैठने की जुगत में है।

गोल्ड मेडल साहबै कौ मिलिहै

जिला प्रशासन के छोटे अफसर कोविड के चक्कर में अधिकारियों को निर्देश देते देते खुद घन चक्कर हो गए। महोदय सब्जी मंडी से घर और घर से आफिस के होकर रह गए हैं। घर जाने के बाद सोना खाना भी मुहाल हो गया है। मरता क्या न करता वाला हाल है। कोरोना से शुरू होती है सुबह और रात में ही यह खत्म होता है । सब्जी मण्डी को खूब संभालना और वहां कोविड की समस्या से लोगों को बचाना यह बड़ी बात है। कोरोना से अभी जंग खत्म भी नहीं हुई थी कि बड़े साहब और मेहरबान हो गए। अब श्रमिकों की स्किल मैपिंग करने का फरमान भी जारी हो गया। हजारों श्रमिकों को रोजगार देने संबंधी काम पर जोर दे रहे हैं। अब बेचारे साहब गांव गांव घूम कर धूल फांक रहे हैं। भागा दौड़ी देखकर आस पास के लोग दबी जबान कभी कभार यह कह ही जाते हैं कि गोल्ड मेडल साहबै कौ मिलिहै। कोरोना नाम की बला से भगवान की कृपा से हम दूर हैं।

कोरोना ने दिखाया रास्ता

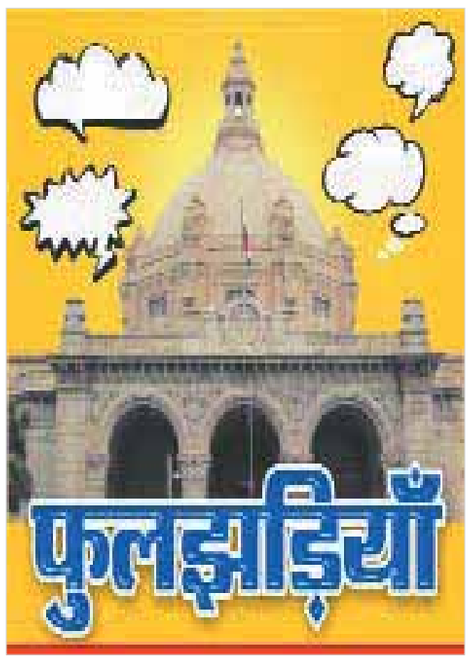

कोरोनाकाल में बहुतों का बहुत कुछ बदला है। कोई योगाभ्यास करने लगा है तो कोई पूजापाठ तो कोई कुकिंग में हाथ आजमा रहा है। यूपी सरकार में अहम पदों पर रहे एक अवकाश प्राप्त अधिकारी में तो कोरोनाकाल के दौरान जबरदस्त बदलाव आया है। आधुनिक अन्दाज में रहने वाले इस अधिकारी की पूजापाठ में कभी बहुत ज्यादा दिलचस्पी नहीं रही। कोरोनाकाल ने उनकी जिन्दगी का अन्दाज ही बदल दिया है और वह एक दार्शनिक की तरह हो गये है। आये दिन बात बात पर घर परिवार और मित्रों को उपदेश देने में उनका दिन गुजरता है। अभी कुछ ही दिन पहले गीता को केन्द्र में रखते हुये भगवान कृष्ण के अन्दाज में कोरोना पर पत्नी को उपदेश देते हुये बोले–हे पार्थ! इस समय सम्पूर्ण विश्व कोरोनामय है। जो दिख रहा है वो कोरोना है। जो अनदेखा है वो कोरोना है। जो पैदा हुआ वो कोरोना है। जो अजन्मा है वो कोरोना है। कोरोना ही आदि है। कोरोना ही अंत है। कोरोना ही आर है। कोरोना ही पार है। कण कण में कोरोना है। पग पग में कोरोना है। हे पार्थ कोरोना ही ब्रह्म है। कोरोना ही धर्म है। कोरोना के मर्म को आत्मसात करो। उसके रक्तबीज को पहचानो। यह अधिकारी राज्य के मुख्य सचिव जैसे अहम पद पर रहते हुये भी हमेशा पत्नी से डरते रहे लेकिन उनके गुस्से से बचने के लिए उन्होने कोरोनाकाल में यह रास्ता निकाला है।

नीयत साफ नहीं

कहते हैं विकास का दरवाजा उधारी की चाबी से खुलता है लेकिन दिशा सही और नीयत साफ होनी चाहिए। अगर नीयत साफ न हो तो सारे उपाय धरे के धरे रह जाते हैं। अब कोरोना महामारी की ही बात ले लीजिए। प्रदेश में महामारी की आहट शुरू होते ही सरकार की तरफ से नियंत्रण को लेकर सारे उपाय शुरू कर दिए गए थे। इनमें टेस्टिंग लैब से लेकर उपचार तक की व्यवस्था शामिल थी। सरकार बीमारी की पकड़ के लिए टेस्टिंग लैब की संख्या बढ़ा रही थी। इसका फायदा राजनीति की नर्सरी के रूप में शोहरत हासिल कर चुके संस्थान ने भी उठाने का प्रयास किया। संस्थान ने अगले ही दिन दावा कर दिया । टेस्टिंग की खबरें समाचार पत्र की सुर्खियां भी बनीं। अभी दावा ही हो रहा था कि इस बीच संस्थान ने एक लंबा चौड़ा प्रस्ताव तैयार कर सरकार को भेज दिया। अब प्रस्ताव में जांच की बात तो दूर पहले ही लंबे चौड़े बजट की मांग कर दी गई। पता चला कि टेस्टिंग के लिए अपग्रेड होना जरूरी है। संस्थान के प्रस्ताव को सरकारी मुलाजिमों ने कूड़े के ढेर में फेंक दिया। इसके पीछे पता चला कि वहां पर इस तरह की फैसलिटी है ही नहीं तो इसकी इजाजत किस आधार पर दी जाए। मुलाजिमों ने बताया कि पहले उन्हें इस तरह की व्यवस्था के लिए पैसा चाहिए इसलिए प्रस्ताव को तवज्जो नहीं दी गई। अब नीयत साफ न हो तो फिर क्या कहें।

निगरानी कमेटियों की संख्या बढ़ाकर रोकें संक्रमण: योगी

दिल्ली एनसीआर एरिया में आने वाले 11 जिलों के लिये बेहतर कार्ययोजना बनाकर लागू करने के निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

तमाम कोशिशों के बावजूद कोरोना के लगातार बढते मामलों को देखते हुये मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निगरानी कमेटियों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिये हैं। प्रस्तावित व्यवस्था में प्रत्येक एक लाख की आबादी पर एक निगरानी कमेटी स्थापित करने से सर्विलांस व्यवस्था को और मजबूत बनाया जाएगा। सीएम योगी का कहना है कि संक्रमण की चैन को तोडने के लिये यह बहुत जरूरी है। इसके साथ ही सीएम ने दिल्ली एनसीआर एरिया में आने वाले राज्य के 11 जिलों के लिये बेहतर कार्ययोजना बनाकर लागू करने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री शनिवार को अपने सरकारी आवास पर अनलाक व्यवस्था की समीक्षा करते हुये कहा कि सर्विलांस व्यवस्था को और प्रभावी बनाने के लिए निगरानी समितियों की संख्या में वृद्धि किया जाना जरूरी है। प्रत्येक एक लाख की आबादी पर निगरानी समितियां स्थापित करने से संक्रमण के शिकार लोगों पर पैनी नजर रखी जा सकेगी। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग, चिकित्सा शिक्षा विभाग तथा जिला प्रशासन को सर्विलांस सिस्टम को मजबूत करने के निर्देश भी दिये।

उन्होने ने रैण्डम चेकिंग में वृद्धि के निर्देश देते हुए कहा कि इसके माध्यम से कोविड-19 के प्रसार की सटीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जिससे कोरोना के खिलाफ जंग में कारगर रणनीति निर्धारित करने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि अनलॉक के दौरान पूरी सतर्कता बरती जाए। कहीं भी भीड़ एकत्र न हो, इसके लिए पुलिस द्वारा लगातार पेट्रोलिंग की जाए। सोशल डिस्टेसिंग

पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने कन्टेनमेन्ट जोन में डोर स्टेप डिलीवरी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने के निर्देश भी दिये हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी अस्पतालों में प्राथमिकता के आधार पर कोविड हेल्प डेस्क स्थापित की जाए। इसके माध्यम से लोगों को कोविड-19 के संक्रमण से बचाव तथा उपचार की जानकारी मुहैया करायी जाए। उन्होंने कोविड हेल्प डेस्क पर सेनिटाइजर, इंफ्रारेड थर्मामीटर तथा पल्स आक्सीमीटर की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिये। कोरोना के प्रसार को नियंत्रित करने में लोगों को जागरूक किये जाने पर बल देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना से बचाव के उपायों का व्यापक प्रचार-प्रसार जारी रखा जाए। चौराहों, बाजार, बस स्टेशन आदि पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाए। अस्पतालों में रजिस्ट्रेशन काउण्टर के समीप कोरोना से बचाव सम्बन्धी बैनर लगाए जाएं। मुख्यमंत्री ने ओल्ड एज होम, बाल गृह तथा महिला संरक्षण गृह में कोरोना से बचाव सम्बन्धी बैनर लगाने तथा इनके निवासियों का कोरोना टेस्ट कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि पुलिस तथा पीएसी के कार्मिकों को संक्रमण से सुरक्षित रखने के लिए सभी प्रबन्ध किये जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि खाद्यान्न वितरण का अभियान पुन: प्रारम्भ हो गया है। उन्होंने निर्देश दिये कि खाद्यान्न वितरण का कार्य पूरी पादर्शिता से संचालित किया जाए।

निरोग रहना है तो योग करें : सीएम

लखनऊ। योग और निरोग एक दूसरे के पूरक हैं। योग करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ती है। अगर व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता मजबूत है तो उसे किसी भी वायरस के संक्रमण का खतरा कम होगा। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर कही। वह महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महायोगी गोरक्षनाथ योग संस्थान की ओर से गोरखपुर में योग पर आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि योग के मूल आचार्य भगवान शिव हैं लेकिन मानव जगत के लिए योग दार्शनिक पक्ष महर्षि पतंजलि और व्यवहारिक या क्रियात्मक पक्ष महायोगी श्री गुरु गोरखनाथ की देन हैं। योग का यह क्रियात्मक पक्ष हर उम्र के व्यक्ति के लिए उपयोगी है। उन्होने कहा कि आध्यात्मिक रहस्य को जानने के लिए शरीर और मन का स्वस्थ्य होना जरूरी है। यह योग द्वारा ही संभव है। हर किसी को अपनी दिनचर्या में योग को अनिवार्य रूप से शामिल करना चाहिए। श्रीयोगी ने कहा कि योग मूलत: भारत की थाती है। प्रधानमंत्री ने इसे वैश्विक सम्मान दिलाकर सराहनीय कार्य किया। आज यह दिवस 200 से अधिक देशों में मनाया जाता है। इसका मतलब यह भी है कि इतने देशों से अपनी विरासत के जरिए भारत आत्मीय संवाद भी बनाता है। उन्होने कहा कि कोरोना संक्रमण के कारण योग का यह कार्यक्रम इस बार सामूहिक रूप से संभव नहीं। लिहाजा अपने घरों में परिवार के साथ योग करें। क्या करना है कैसे करना है इसके लिए केंद्रीय आयुष मंत्रालय ने एक कॉमन योगा प्लेट प्रोटोकॉल जारी किया है। आप योग करते हुए अपनी फोटो या वीडियो भी उस प्लेटफार्म पर अपलोड कर सकते हैं। केंद्र और राज्य सरकार अच्छे योगाभ्यासियों को पुरस्कृत भी करेगी।

अचिंत्य ऑर्गेनिक रिसर्च एलएलपी
एलएलपीआईएन:AAQ-2601
7/18, स्वरूप नगर, कानपुर–208002
फार्म न0 यूआरसी–2
अध्याय XXI के भाग I के तहत पंजीकरण के बारे में विज्ञापन
[कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 374(बी) के नियम और नियम 4(1) कंपनियों के (पंजीकृत करने के लिए अधिकृत) नियम, 2014, के अनुसार]

1. एततद्वारा सूचित किया जाता है कि कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 366 की उपधारा (2) के अनुसरण में, रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज, उ.प्र. कानपुर में कि **अचिंत्य ऑर्गेनिक रिसर्च एलएलपी**, एक **एलएलपी** कंपनी अधिनियम, 2013 के अध्याय XXI के भाग I के तहत एक निजी कंपनी के रूप में शेयरों द्वारा सीमित के रूप में पंजीकृत हो सकती है।
2. कंपनी के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं : जैविक खेती, कृषि उपज, फसल, कृषक, बागान मालिक, उत्पादक, फूल वाले, औद्यानिकी, कृषि उपज जिसमें खाद्यान्न, अनाज, दालें, फल आदि शामिल हैं, सब्जियां, नकदी फसलें, कॉफी, चाय, रबड़ के बागान के व्यवसाय में संलग्न होना, जैव प्रौद्योगिकी और अनुसंधान कार्य के क्षेत्र में संलग्न होना एवं कृषि भूमि व अन्य भूमि, सभी प्रकार के भवन, वाणिज्यिक परिसर, रिसॉर्ट और अन्य सभी समान निर्माण का विक्रय एवं कब्जा।
3. ज्ञापन प्रारूप की एक प्रति तथा प्रस्तावित कंपनी के लेखों का निरीक्षण कार्यालय 7/118, स्वरूप नगर, कानपुर–208002 में किया जा सकता है।
4. इस आवेदन पर आपत्ति करने वाला कोई भी व्यक्ति रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज, उत्तर प्रदेश में 37/17, वेस्टकॉट बिल्डिंग, द मॉल, कानपुर –208001 को लिखित रूप से इक्कीस दिनों के भीतर अपनी आपत्ति, कंपनी के पंजीकृत कार्यालय में एक प्रति के साथ सूचित कर सकता है।

अचिंत्य ऑर्गेनिक रिसर्च एलएलपी
स्थान–कानपुर
1 अर्पित अग्रवाल 2 नेहा अग्रवाल
दिनांक–20.06.2020
आवेदक

श्री विश्वनाथ महाविद्यालय
कलान–सुलतानपुर (उ.प्र.)

आवश्यकता है

श्री विश्वनाथ महाविद्यालय, कलान–सुलतानपुर (उ0प्र0) में डी0एल0एड0 (बी0टी0सी0) पाठ्यक्रम हेतु शिक्षा के परिप्रेक्ष्य/शिक्षा के आधार-01 पद, विज्ञान-01 पद, मानविकी और समाज विज्ञान-01 पद, गणित-01 पद, भाषाएँ-01 पद, ललित कला/निष्पादन कलाएँ-01 पद और स्वास्थ और शारीरिक शिक्षा-01 पद।

योग्यता:- राष्ट्रीय अध्यापक परिषद के मानकों के अनुरूप होगी। सेवा एवं निबंधन शर्तें, वेतनमान आदि राज्य सरकार/सम्बन्धक निकाय की नीति के अनुरूप होगी।

नोट-समस्त अभ्यर्थी मूल प्रमाणपत्रों एवं उनकी एक-एक छायाप्रति, तीन रंगीन फोटो के साथ साक्षात्कार हेतु दिनांक-01.07.2020 दिन-बुधवार को प्रातः 11 बजे संस्थान परिसर में उपस्थित हों।

प्रबंधक
भोलानाथ सिंह
मो. 9450178027, 8601619404
Mail: mapg140@gmail.com

घोटालों के खिलाफ कांग्रेस चलाएगी प्रदेशव्यापी अभियान

लखनऊ। कांग्रेस सूबे में 69000 शिक्षक भर्ती एवं पशुपालन विभाग में हुए घोटालों और फैले संस्थागत भ्रष्टाचार पर 22 जून से प्रदेश व्यापी पोल खोलो अभियान चलाएगी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने बताया कि प्रदेश व्यापी अभियान के तहत प्रत्येक जिले और ब्लॉक स्तर बड़े पैमाने पर पर्चा वितरण, पोस्टर आदि के माध्यम से प्रदेश में व्याप्त भ्रष्टाचार को जनता के सामने लाया जायेगा।

सभी अस्पतालों में कोविड हेल्प डेस्क स्थापित की जाए: अवनीश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

अपर मुख्य सचिव गृह एवं सूचना अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एनसीआर के जनपदों में कोविड-19 के संक्रमण को रोकने के लिए एक बेहतर कार्य योजना बनाकर उसे लागू करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा है कि इससे प्रदेश में कोरोना के प्रसार को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा है कि सर्विलांस व्यवस्था को और प्रभावी बनाने के लिए निगरानी समितियों की संख्या में वृद्धि की जाए। एक लाख की संख्या में स्थापित निगरानी समितियों में सर्विलांस व्यवस्था को और सुदृढ़ किया जाए। कोविड-19 के संक्रमण की चेन को तोड़ने में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास होगा। उन्होंने स्वास्थ्य विभागए चिकित्सा शिक्षा विभाग तथा जिला प्रशासन को सर्विलांस सिस्टम को और मजबूत करने के निर्देश भी दिये हैं।

श्री अवस्थी ने बताया कि मुख्यमंत्री जी ने कोविड-19 की रैण्डम चेकिंग में वृद्धि के निर्देश देते हुए कहा है कि इसके माध्यम से कोविड-19 के प्रसार की सटीक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बीजेपी की पहली जनसंवाद रैली का आयोजन आज

लखनऊ(पीएनएस)। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा रविवार को देश की पहली वर्चुअल जनसंवाद रैली को संबोधित करेंगे। प्रदेश भाजपा ने इस रैली में कम से कम दस लाख लोगों को एक साथ मोबाइल के जरिए जोड़ने का कार्यक्रम तय किया है। यूपी में इस प्रकार की या पहली ऐसी बड़ी रैली होगी इसके लिए बड़े-बड़े सॉफ्टवेयर बनाए गए हैं ताकि एक साथ मोबाइल लिंक के अलावा सोशल मीडिया के जरिए भी जे पी नड्डा की आवाज आमजन और कार्यकर्ताओं तक पहुंचाई जा सके।

जनसंवाद रैली रविवार से शुरू होगी। पश्चिमांचल की पहली जनसंवाद रैली को जगत प्रकाश नड्डा संबोधित करेंगे। पश्चिम व ब्रज क्षेत्र के लोगों के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष की होने वाली जनसंवाद रैली को सफल बनाने के लिए पार्टी ने अपनी पूरी तैयारी कर ली है।

अंशधारक कृषको को दिए जाएंगे शेयर प्रमाण-पत्र

लखनऊ (पीएनएस)। आयुक्त, गन्ना एवं चीनी संजय आर. भूसरेड्डी ने बताया कि सहकारी गन्ना/चीनी मिल समितियों की कार्यप्रणाली को पूर्ण पारदर्शी एवं जवाबदेह बनाने के क्रम में अंशधारक कृषक सदस्यों को शेयर प्रमाण-पत्र जारी किये जाने का निर्देश दिये गये हैं। इन अंश प्रमाण पत्रों का लेखा जोखा रखने के लिये शेयर अंश फीडिंग की व्यवस्था विभागीय ईआरपी पर भी कराये जाने हेतु मॉड्यूल विकसित कराये गये हैंए जिसके क्रम में सभी सहकारी गन्ना समितियों द्वारा ईआरपी मॉड्यूल पर फीडिंग कार्य प्रारम्भ करते हुए 77 प्रतिशत फीडिंग कार्य को पूर्ण कर लिया गया है। उन सभी सदस्यों को जो नियमित सदस्य होने की अर्हता रखते हों तथा न्यूनतम अंश जमा किये हुए एक वर्ष हो गया हो तो उपविधियों में दी गयी व्यवस्था के अन्तर्गत शेयर प्रमाण-पत्र जारी किये जायेंगे। प्रदेश की सभी 169 गन्ना समितियों में 56.73 लाख पंजीकृत सदस्यों में से 52.96 लाख कुल शेयर धारक सदस्य है, जिनके द्वारा रु.113.20 करोड़ का अंश जमा किया गया है।

आवश्यकता है
लार्ड बुद्धा पी.जी.कालेज, साकेतनगर, रुपईडीहा, बहराइच उ.प्र.
महाविद्यालय में योग्यताधारी निम्न विषयों/पाठ्यक्रमों हेतु प्रवक्ता/प्राध्यापकों की आवश्यकता है।

	कोर्स का नाम		पदों की संख्या
परास्नातक स्तर	1. एम0काम0		02 पद
	2. एम0एस0सी0–	रसायन विज्ञान	02 पद
		जन्तु विज्ञान	02 पद
		गणित	02 पद
स्नातक स्तर बी0पी0ई0	बी0पी0ई0		06 पद

शैक्षणिक योग्यता एवं वेतनमान : यूजीसी एवं डा. राम मनोहर लोहिया अवध विष्वविद्यालय के मानकानुसार। इच्छुक अभ्यर्थी 15 दिनों के भीतर फोटोयुक्त बायोडाटा एवं समस्त षैक्षणिक प्रमाणपत्रों के साथ महाविद्यालय से सम्पर्क करें।

डा0 हरीशचन्द्र
प्रबंधक
मोबाइल नम्बर 9450258399

पायनियर वर्गीकृत

सूचना
मेरे सैन्याभिलेखों में मेरी पत्नी का नाम बन्दना (Bandna) गलत दर्ज है, सही नाम बन्दना तिवारी (Bandana Tiwari) है, नं0 13626588F लान्स नायक धीरज तिवारी, ग्रा. पड़री तिवारी, पो0 हुमवलिया देवरिया, उ0प्र0 274509.

REQUIRED
VIKAT INSTITUTE
SCHOOL OF NURSING
Sikrori, Hardoi Road, Lucknow
Mob: 9415022214
URGENT REQUIREMENTS
B.SC. - NURSING
FOR PRINCIPAL, VICE PRINCIPAL, PROFESSOR, ASSO. PROFESSOR, ASST. PROFESSOR, TUTOR POSTS
Note: Qualifications will be considered as per norms of Indian Nursing Council New Delhi & State Medical Faculty Lucknow, Dr. RML Awadh Univercity Faizabad.
Interested candidate can send their CV, Photo & Scanned Documents by Post

आवश्यकता
आवश्यकता है
रहमानिया डिग्री कालेज रोपनपुर हिसामपुर मऊ (सम्बद्ध-वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल वि वि जौनपुर)
स्ववित्तपोषित योजना अंतर्गत स्नातकोत्तर स्तर पर क्लासंकाय हेतु उर्दू हिंदी समाज शास्त्र दो दो प्रवक्ता एव गृह विज्ञान भूगोल विषयों में तीन तीन प्रवक्ता तथा स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान संकाय में रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान में तीन तीन एव गणित में दो एव स्नातक स्तर पर कला संकाय में संगीत गायन, शिक्षा शास्त्र में एक एक प्रवक्ताओं की आवश्यकता है। योग्यता एव वेतनमान युजीसी ऊ0प्र0शासन/विश्वविद्यालय परिनियमावलीनुसार इच्छुक अभ्यर्थी अपना स्वलिखित दो दो फोटो लगा आवेदन-पत्र समस्त शैक्षिक प्रमाण पत्रों की छायाप्रति के साथ 21 दिन के अंदर महाविद्याालय के पते पर भेजे।
प्रबंधक मो0 9919608283

आम जनमानस के आत्मविश्वास से बनेगा आत्मनिर्भर भारत: महाना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के औद्योगिक विकास मंत्री सतीश महाना ने कहा है कि आम जनमानस के आत्म विश्वास से ही आत्मनिर्भर भारत बनेगा। उन्होंने कहा कि जब 25 मार्च को लॉकडाउन हुआ था तब हम मास्क बाहर से आयात करते थे वर्तमान में घर-घर में मास्क का प्रोडक्शन हो रहा है। उन्होंने कहा कि चाहे पीपीई किट हो, वेन्टीलेटर्स हों, सेनेटाइजर आदि आज हम बहुतायत में इनका प्रोडक्शन कर रहे हैं। हमें अपने आत्मबल को बढ़ाना होगा और अपनी क्षमताओ का पूर्ण उपयोग करके आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को मूर्तरूप देना होगा।

महाना शनिवार को एकेटीयू और एलएमए के संयुक्त तत्वावधान में पर्सपेक्टिव ऑफ आत्मनिर्भर भारत विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज न्यू नार्मल्स की बात हो रही है। सरकार इसके लिए नीति बना रही है हमें इन नीतियों को सफल बनाने के लिए एक जुट हो कर सकारात्मक पहल करनी होगी। नवनीत सहगल ने कहा कि सरकार

एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए नई नीति बना रही है, जल्द ही इस नीति को लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के पथ पर हम अग्रसर हुए हैं। उन्होंने कहा कि बटन संभल उत्तर प्रदेश में बनता था मगर बटन तरासने के लिए चाइना भेजे जाते थे। अब प्रदेश में बटन तरासने की मशीनें आ चुकी हैं और वर्तमान में प्रदेश बटन निर्यात कर रहा है। ऐसे ही छोटी-छोटी मूर्तियां (गणेश-लक्ष्मी) चाइना से आती थीं, जिन्हें उसी गुणवत्ता पर प्रदेश में उत्पादित करना शुरू किया गया है। इस अवसर पर आलोक रंजन ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के लिए विदेशी निवेश भी जरूरी है। उन्होंने कहा मेक इन इंडिया के तहत विदेशी निवेश को बढ़ावा देना चाहिए।

उत्तर प्रदेश के अल्पसंख्यक महाविद्यालयों में बी.एड.(द्विवर्षीय) पाठ्यक्रम हेतु
प्रवेश परीक्षा का कार्यक्रम : 2020-2022
आयोजक- **बाबू युगराज सिंह सेवा संस्थान**
पता- 709, चन्द्रप्रभा हाउस, नई बाजार, खागा, फतेहपुर (उ0प्र0)-212655

शैक्षिक अर्हता–
1. विज्ञान/वाणिज्य/सामाजिक–विज्ञान/मानविकी वर्ग में सामान्य एवं पिछड़ा वर्ग हेतु न्यूनतम 50% (पचास प्रतिशत) अंकों के साथ विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय की स्नातक उपाधि अथवा स्नातकोत्तर उपाधि। बी0ई0 एवं बी0टेक0 में गणित एवं विज्ञान में विशेषज्ञता वाले छात्रों के लिए न्यूनतम 55% (पचपन प्रतिशत) अंकों के साथ अथवा उपरोक्त के समतुल्य कोई अन्य अर्हता वाले अभ्यर्थी प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु अर्ह हैं।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थियों हेतु विधि द्वारा स्थापित किसी विश्वविद्यालय की स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधि उत्तीर्ण अथवा गणित एवं विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ बी0ई0 एवं बी0टेक0 में स्नातक उपाधि अथवा उपरोक्त के समतुल्य कोई अन्य अर्हता वाले अभ्यर्थी प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु अर्ह हैं।
3. विशेष वर्ग के अभ्यर्थियों को न्यूनतम शैक्षिक अर्हता में छूट उत्तर प्रदेश शासन के शासनादेश के अनुसार प्रदान की जाएगी।

प्रवेश परीक्षा हेतु आवेदन की अन्तिम तिथि– 20.07.2020
प्रवेश परीक्षा की संभावित तिथि– 23.08.2020
प्रवेश परीक्षा परिणाम की संभावित तिथि– 07.09.2020 से 15.09.2020
प्रवेश हेतु काउन्सिलिंग की सम्भावित तिथि– 20.09.2020 से 30.09.2020
शैक्षिक सत्र प्रारम्भ– 01.10.2020
आवेदन शुल्क रू0 500/– (पाँच सौ रुपये मात्र) का डिमांड ड्राफ्ट बाबू युगराज सिंह सेवा संस्थान, खागा, फतेहपुर के नाम से देय होगा। प्रवेश परीक्षा केन्द्र इलाहाबाद, कौशाम्बी, फतेहपुर, कानपुर, लखनऊ, बाँदा एवं जिस किसी भी जनपद में 25 परीक्षार्थी से अधिक होने पर सम्बन्धित जनपद में परीक्षा केन्द्र बनाया जायेगा।
नोट– 1. प्रवेश परीक्षा से सम्बन्धित समस्त सूचना एवं प्रवेश से सम्बन्धित प्रक्रिया संस्था के वेबसाइट पर उपलब्ध है। 2. कोविड–19 के प्रकोप के कारण परीक्षा केन्द्र एवं परीक्षा कार्यकम में परिवर्तन सम्भव है।
सम्पर्क सूत्र– 7704908714, 9839512101, 9984446392, 6393319089
Website: www.abhaygroup.com

कार्यालय, नगर पालिका परिषद, महोबा
पत्रांक : 177/न0पा0प0 महोबा/2020–21 दिनांक : 20–6–2020
नोटिस
सार्वजनिक एवम् व्यक्तिगत
रिलायन्स जियो इन्फोकॉम लि0,
द्वारा–रत्नाकर मिश्र पुत्र श्री कुलदीप नारायण मिश्र,
3/139, विकास खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ।

आपके द्वारा नगर पालिका परिषद, महोबा सीमान्तर्गत मौजा दरीबा गाटा संख्या 526मि0 (पहाड़) पहाड़ की भूमि पर मोबाइल टावर स्थापित किया गया है, जिसकी शिकायत उपरान्त तहसीलदार महोबा को पत्र भेजकर राजस्व टीम से जाँच करायी गयी। तहसीलदार महोबा की जाँच आख्या दिनांकः 08.03.2020 से स्पष्ट है कि उक्त मोबाइल टावर मौजा दरीबा की गाटा संख्या 526मि0 (पहाड़) पहाड की भूमि पर लगा हुआ है। उक्त जाँच आख्या से स्पष्ट है कि आप द्वारा स्थापित किया गया उक्त मोबाइल टावर पूर्ण रूप से अवैध है।

अतः नोटिस प्राप्ति के तत्काल बाद आपके द्वारा लगाया गया उक्त अवैध टावर हटाते हुये टावर लगाये जाने से अब तक की निर्धारित किराये की धनराशि ब्याज सहित एवम उस पर 100 प्रतिशत जुर्माना की धनराशि सहित सरकारी कोष में जमा कर अवगत करायें। अन्यथा की स्थिति में प्रशासनिक कार्यवाही करते हुये आप द्वारा उक्त सन्दर्भित भूमि पर स्थापित किया गया टावर हटा दिया जायेगा एवम् आरोपित धनराशि आपसे भू–राजस्व के बकाये की भाँति वसूल की जायेगी। साथ ही आवश्यक कानूनी कार्यवाही भी की जायेगी, जिसके लिये आप स्वयं उत्तरदायी होंगें।

इस आशय की नोटिस आपको कार्यालय के पत्र संख्या 40/न0पा0प0 महोबा/2020–21 दिनांकः 27.04.2020 द्वारा पंजीकृत डाक से आप द्वारा श्री जवाहर लाल तिवारी से किये गये अनुबन्ध में दर्शाये गये पते पर प्रेषित की गयी थी, किन्तु जो प्राप्त न होकर वापस आ गयी।

अतः व्यक्तिगत एवम् सार्वजनिक सूचना दोनों माध्यम से आपको सूचित किया जाता है कि नोटिस प्राप्ति के तीन दिवस के अन्दर उपरोक्तानुसार अनुपालन करते हुये लिखित रूप से अवगत करायें। साथ ही मोबाइल टावर स्थापित किये जाने से पूर्व किन–किन विभागों से अनुमतियाँ प्राप्त की हैं, वह भी इस कार्यालय को प्रस्तुत करें।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका परिषद, महोबा

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक चन्दन मित्रा द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक: चन्दन मित्रा, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह। फोन: (0522) 4036600 फैक्स: 2346443/2345582

यूपी-112 में कोरोना का कहर 48 घंटे के लिए किया गया बंद

आधा दर्जन कर्मचारियों के पॉजिटिव निकलने के बाद पूरे मुख्यालय को किया जा रहा सैनिटाइज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पुलिस की आपात सेवा यूपी-112 पर अब कोरोना ने अपना कहर ढाया है। आधा दर्जन कर्मचारियों के पॉजिटिव निकलने के बाद एडीजी असीम अरुण ने 48 घंटे के लिए यूपी-112 मुख्यालय बंद करवा दिया है। एडीजी के निर्देश पर नगर निगम और स्वास्थ्य विभाग की टीम ने पूरे मुख्यालय के चप्पे-चप्पे को शनिवार की शाम सैनिटाइज किया।

एडीजी असीम अरुण ने बताया कि मुख्यालय 48 घंटे बंद रहने की वजह से 112 की सेवाओं पर असर पड़ेगा लेकिन वर्क फ्रॉम होम और प्रयागराज केंद्र कॉल सेंटर की मदद से आपात सेवाएं जारी रखी जाएंगी। जरूरतमंद नागरिक 112 की सेवा न मिलने पर 1073 पर कॉल करके मदद मांग सकते हैं। एडीजी 122 असीम अरुण ने बताया कि पुलिस 112 ट्विटर व फेसबुक के साथ सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक्टिव रहेगी। व्हाट्सएप नंबर 7570000100 और 7233000100 पर भी मैसेज भेजकर नागरिक पुलिस की मदद ले सकेंगे।

एडीजी ने बताया कि 112 में कार्यरत एक कर्मचारी बृहस्पतिवार को कोरोना के संक्रमण से ग्रस्त पाया गया था। इसके बाद वहां कार्यरत 30 और लोगो के नमूने परीक्षण के लिए गए, जिसमें से पांच और संक्रमित पाए गए। ये सभी तकनीकी टीम में काम करते हैं। उन्होंने बताया कि इन सभी में कोरोना वायरस के कोई लक्षण नही पाये गये है और उनके इलाज की व्यवस्था कर दी गयी है ।

उन्होंने बताया कि भवन को संक्रमणरोधन के लिये 48 घंटे के लिये बंद कर दिया गया है । इन पांच लोगो के संपर्क में कौन कौन लोग आये थे उसके बारे में भी जानकारी हासिल की जा रही है ।एडीजी ने बताया कि शनिवार की दोपहर की शिफ्ट पूरी करके कर्मचारी कार्यालय से घर चले गए लेकिन की शिफ्ट के कर्मचारियों को कार्यालय आने से रोक दिया गया। 112 मुख्यालय मेन गेट से लेकर पूरे मुख्यालय परिसर को नगर निगम और स्वास्थ्य टीम ने सैनिटाइज किया। 112 मुख्यालय में खड़ी पीआरवी गाड़ियों को भी सैनिटाइज किया गया। रविवाार को भी पूरे मुख्यालय को एक बार फ्रि सैनिटाइज किया जाएगा।

जोनवार रैपिड रेस्पांस टीम भेज कर रोकेंगे कोरोना संक्रमण को: जिला प्रशासन के निर्देश पर कोरोना संक्रमण के बढ़ते प्रकोप को रोकने के लिए अब जोन वार निगरानी होगी। इसके लिए जोनवार स्तर पर अतिरिक्त रेपिड रेस्पॉन्स टीमें आरआरटी का गठन होगा। यह टीमें स्वयं जाकर प्रभावित इलाकों में लोगों की मेडिकल जांच में और तेजी लाएंगी। इसके लिए शहर को आठ जोनों में बांटा गया है।

शहर में कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए जिला प्रशासन द्वारा रैपिड रेस्पांस टीम भेजी जाएगी। शनिवार को जिलाधिकारी अभिषेक प्रकाश ने बताया कि जोनवार स्तर पर अतिरिक्त रेपिड रेस्पॉन्स टीमें आरआरटी का गठन होगा। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए टीम गठन की जिम्मेदारी संबंधित एसडीएम की होगी। इसके लिए मुख्य विकास अधिकारी को पूरे जिले का नोडल बनाया गया है। डीएम ने बताया कि कोरोना संक्रमित लोगों को त्वरित इलाज सुविधा मुहैया कराने को हर जोन में एक लिंक अस्पताल को भी चिन्हित किया जाएगा।

एसिम्टोमैटिक कोरोना मरीजों की डिस्चार्ज पॉलिसी में बदलाव

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने आईसीएमआर गाइडलाइन के अनुसार एसिम्टोमैटिक (बिना लक्षण वाले) कोरोना मरीजों की डिस्चार्ज पॉलिसी में संशोधन किया गया है। इस संबंध में स्वास्थ्य विभाग की ओर से आदेश जारी कर दिए गए हैं। एसिम्टोमैटिक वाले मरीजों को अब 10 दिन के बाद किसी प्रकार के लक्षण न आने पर बिना जांच के ही घर भेज दिया जाएगा। यह जानकारी शनिवार को प्रमुख सचिव स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने दी। प्रसाद ने बताया कि ऐसे लोगों को घर पर 7 दिन होम क्वारंटीन में रहना होगा। एसिम्प्टोमैटिक मामलों में ये सामने आया है कि 10 दिनों के बाद वो दूसरों को संक्रमित नहीं करते हैं। उन्होंने बताया कि सिम्टोमैटिक वाले मरीजों की जांच रिपोर्ट निगेटिव आने पर ही घर भेजा जाएगा ।वहीं उन्होंने बताया कि प्रदेश के सभी 75 जनपदों में रैण्डम सैम्पलिंग के अन्तर्गत प्रदेश के सभी जनपदों में आश्रय स्थलों, ओल्ड एज होम एवं बाल सुधार गृह में रह रहे व्यक्तियों के सैम्पल के जांच की गयी। जिसमें 3 जनपदों सुल्तानपुर, कुशीनगर, जालौन के ओल्ड एज होम में कोरोना संक्रमण पाया गया। उन्होंने बताया कि प्रदेश के 75 जनपदों में से केवल दो जनपदों मेरठ , कानपुर नगर के बाल सुधार गृह में कोरोना संक्रमण के केस सामने आये हैं । उन्होंने बताया कि जिन जनपदों में संक्रमण के केस आये हैं वहां के आश्रय स्थलों में सभी की जांच करायी जायेगी ।

बदमाशों ने सुरक्षा गार्ड को मारी गोली

गंभीर रूप से घायल को ट्रामा में कराया गया भर्ती हालत नाजुक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राजधानी के कृष्णा नगर इलाके में उस समय हड़कंप मच गया जब शनिवार तड़के बेखौफ बदमाश ने निजी कंपनी के सुरक्षा गार्ड पर रिवाल्वर से फायर झोंक दिया। गोली गार्ड के पेट में लगी और वह वहीं गिर गया। कंट्रोल रूम को सूचना मिली जिसके बाद मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस को घटना स्थल से एक खोखा बरामद हुआ है। पुलिस ने घायल गार्ड को ट्रामा भेज कंपनी सुपरवाइजर की तहरीर पर हत्या के प्रयास में मुकदमा दर्ज कर लिया है। पारा थाना क्षेत्र के 586, बीबी खेड़ा में रहने वाला कृष्ण कुमार पांडेय (38) पुत्र स्व जगदीश सरोजनीनगर में स्थित एस एन सिक्युरिटी कंपनी में सुरक्षा गार्ड का काम करता है वर्तमान में पंडित खेड़ा रेलवे लाइन 53 नंबर पर रात्रि ड्यूटी पर तैनात है। शनिवार तड़के लगभग 4:00 बजे एक बदमाश ने अपने रिवाल्वर से गोली मार फ्रार हो गया। गोली गार्ड के पेट में निचले हिस्से में लगी जिससे गार्ड मौके पर गंभीर रूप से घायल हो गया। वहीं कंट्रोल रूम पर गोली चलने की सूचना प्रसारित होते ही मौके पर पहुंचे स्थानीय थाने की पुलिस को घटना स्थल से एक खोखा बरामद किया है। वहीं पुलिस ने गार्ड को इलाज के लिए ट्रामा भेज दिया है। गार्ड को गोली लगने की सूचना पाकर स्थानीय थाने पर पहुंचे कंपनी सुपरवाइजर बलजीत पांडेय पुत्र श्रीनाथ पांडेय निवासी मुरली बिहार कॉलोनी सरोजनीनगर ने अज्ञात बदमाश के खिलाफ लिखित शिकायत की है।घायल गार्ड के परिवार में पत्नी कुसुम व एक बेटा व एक बेटी है।

कृष्णा नगर कोतवाली प्रभारी डी के उपाध्याय ने जानकारी देते हुए बताया कि कंपनी सुपरवाइजर की तहरीर पर अज्ञात हमलावर बदमाश के खिलाफहत्या के प्रयास में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। बदमाश किस मंसूबे से गार्ड को गोली मारी कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है पुलिस को मौके से एक खोखा

इंटर के छात्र ने फांसी लगाकर दे दी जान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राजधानी के आशियाना इलाके में रहने वाले 12 वीं एक छात्र ने मां से पैसों की मांग की जब पूरी नही हुई तो शनिवार सुबह अपने घर में लगे पंखे के हुक में साड़ी से फांसी लगाकर फांसी लगा ली। पंखे के हुक से भाई को झूलता देख मृतक का छोटा भाई चीख-पुकार कर रोने लगा। रोने की आवाज सुनकर पड़ोसी एकत्र हो गए। आनन फानन में युवक को फंदे से उतारकर निजी अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

आशियाना थाना क्षेत्र स्थित 2/270 रूचि खण्ड आशियाना में रहने वाले 18 वर्षीय कक्षा 12 के छात्र

मां से पैसों की मांग पूरी ना होने पर उठाया कदम

प्रिन्स पुत्र अतुल ने अपने घर में लगे पंखे के हुक में साड़ी से फांसी लगा अपनी जान गंवा दी। वहीं फंदे से लटका देख युवक का छोटा भाई लकी चीख पुकार कर रोने लगा। फंदे से उतारकर युवक के परिजन नजदीकी निजी अस्पताल ले गए। जहां जांच के बाद चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। सूचना पाकर मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। आशियाना पुलिस के मुताबिक मृतक प्रिन्स की मां साधना मलिहाबाद में मैंगो रिसर्च सेन्टर में काम करती है मृतक ने अपनी मां से पैसे मांगे थे पैसे न मिलने से छुब्ध होकर युवक ने फांसी लगा कर अपनी जान गंवा दी।

पीस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अयूब पर 22 जुलाई को तय होगा आरोप

लखनऊ(वि.सं.)। दुराचार के एक आपराधिक मामले में पीस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व विधायक डा. मो. अयूब पर आरोप तय करने के लिए एमपी-एमएलए की विशेष अदालत ने 22 जुलाई की तारीख मुकर्रर की है। विशेष जज पवन कुमार राय ने इससे पहले मुल्जिम की डिस्चार्ज अर्जी खारिज करते हुए उसे तय तारीख पर अदालत में व्यक्तिगत रुप से उपस्थित होने का आदेश दिया है। वर्ष 2012 में डा. मो. अयूब मेंहदावल विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे थे। चुनाव प्रचार के दौरान अयूब की पीड़िता से मुलाकात हुई। अयूब ने युवती से अपना चुनाव प्रचार करने को कहा। साथ ही यह वादा किया कि जीतने के बाद उसकी नौकरी भी लगवा देंगे।

नसीमुद्दीन समेत सभी मुल्जिमों पर 24 जुलाई को तय होगा आरोप

विधि संवाददाता। लखनऊ

भाजपा नेता दयाशंकर सिंह के परिवार की महिलाओं व उनकी बेटी के लिए अमर्यादित शब्दों का इस्तेमाल करने के आपराधिक मामले में एमपी-एमएलए की विशेष अदालत ने बसपा के तत्कालीन राष्ट्रीय महासचिव नसीमुद्दीन सिद्दीकी व राम अचल राजभर व राष्ट्रीय सचिव मेवालाल गौतम, नौशाद अली तथा अतहर सिंह राव के खिलाफआरोप तय करने के लिए 24 जुलाई की तारीख तय की है। विशेष जज पवन कुमार राय ने उस रोज इन सभी मुल्जिमों को व्यक्तिगत रुप से

भाजपा नेता दयाशंकर सिंह के परिवार की महिलाओं के लिए अमर्यादित शब्दों के इस्तेमाल का मामला

अदालत में उपस्थित होने का आदेश दिया है। उन्होंने इससे पहले इनकी आपत्ति खारिज करते हुए इस मामले में दाखिल आरोप पत्र पर संज्ञान लिया। मामला: 22 जुलाई, 2016 को इस मामले की नामजद एफआईआर दयाशंकर सिंह की मां तेतरी देवी ने थाना हजरतगंज में दर्ज कराई थी। जिसके मुतातिक 20 जुलाई, 2016 को बसपा सुप्रीमो मायावती ने राज्य सभा में उन्हें, उनकी बेटी, उनकी बहू व नातिन तथा उनके परिवार की सभी महिलाओं को गालियां दी व अपशब्द कहे। जबकि इसके दूसरे दिन नसीमुद्दीन सिद्दीकी, रामअचल राजभर व मेवालाल की अगुवाई में बसपा कार्यकर्ताओं ने हजरतगंज स्थित अम्बेडकर प्रतिमा पर उनके पुत्र दयाशंकर सिंह को मां व बहन की गंदी गंदी गालियां तथा अभद्र टिप्पणी करते हुए धरना प्रदर्शन किया। वर्ग और जातीय भेद बताते हुए भीड़ को हिंसा के लिए उत्तेजित किया। दयाशंकर की 12 वर्षीय बेटी के लिए खुलेआम अमर्यादित नारे लगाए।

केमिकल फैक्ट्री के खिलाफ दर्ज हुआ मुकदमा

जांच करने पहुंची श्रम विभाग व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम

चिनहट में केमिकल फैक्ट्री में ब्वायलर फटने का मामला

पायनियर समाचार सेवा । लखनऊ

चिनहट के उत्तरधौना गांव स्थित स्वरूप केमिकल फैक्ट्री में शुक्रवार रात ब्वायलर फटने हुए हादसे की जांच करने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड व श्रम विभाग की टीम पहुंची। टीम द्वारा अलग अलग लोगों से जानकारी की गयी । मौके की भयावहता को समझ कर टीम ने गंभीरता पूर्वक सुपरविजन किया। वहीं हादसे में मृतक शिवरुप सिंह की पत्नी ने फैक्ट्री के मालिक व मैनेजमेंट के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। शनिवार को चिनहट के उत्तरधौना गांव प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, श्रम विभाग व पुलिस मौके पर जांच करने पहुंची। उत्तरधौना गांव स्थित स्वरूप केमिकल फैक्ट्री में शुक्रवार रात ब्वायलर फटने हुए हादसे की जानकारी टीम ने की ।जांच करने के दौरान हादसा होने के कारणों को गहनता से जांचा गया। टीम के समक्ष लोग रात का मंजर याद कर सहमें हुएं हैं। लोगों ने बताया कि हादसा इतना भयंकर था कि धमाके की आवाज कई किलोमीटर तक सुनाई पड़ी। लोगों के घरों के शीशे टूट गये और फैक्ट्री का निकला मलवा लोगों के घरों में जा गिरा था। वहीं हादसे में मृतक शिवरुप सिंह की पत्नी ने फैक्ट्री के मालिक व मैनेजमेंट के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। मृतक की पत्नी कान्ती पाल ने फैक्ट्री पर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि फैक्ट्री में सुरक्षा संबंधी कोई उपकरण उपलब्ध नहीं था। धमाके के बाद फैक्ट्री के मैनेजमेंट के लोग अपनीण्अपनी जान बचाकर फ्रार हो गये। पुलिस को मृतक शिवरुप सिंह का शव बरामद करने में करीब डेढ़ घंटे तक का वक्त लग गया। इस दौरान फैक्ट्री में काफी देर तक अफ्रा.तफ्री का माहौल बना रहा। शुरुआत में पुलिस मामले को समझ ही नहीं पाई कि हादसा कैसे हुआ। हादसे की खबर पाकर कांग्रेस पार्टी के जिलाध्यक्ष मुकेश सिंह चैहान घटना स्थल पर पहुंचे। उन्होंने मृतक के परिजनों को 20 लाख व घायलों को उचित मुआवजा देने की मांग की। चिनहट के उत्तरधौना गांव में स्थित स्वरुप केमिकल फैक्ट्री 1980 में स्थापित हुई थी। इसके बाद से यहां लगातार आबादी बढ़ती गई और फैक्ट्री रिहायसी इलाके में आ गई। उत्तरधौना गांव के लोगों के मुताबिक फैक्ट्री को रिहायसी इलाके से हटाने के लिए कई बार शासन स्तर पर शिकायत की गई थी। लेकिन समय रहते कोई कार्रवाई नहीं की गई।

पूर्व सीओ गबरियाल व दूसरे पुलिसकर्मियों को निचली अदालत में जाने का निर्देश

लखनऊ(वि.सं.)। वर्ष 2009 में रीता बहुगुणा जोशी के घर हुई आगजनी के मामले में पुलिसकर्मियों के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने उन्हें संबधित अदालत में जाने का आदेश दिया है। पीठ ने कहा है कि वो आरोप पत्र दाखिल होने के पश्चात सम्बंधित मजिस्ट्रेट की अदालत में यह तर्क दे सकते हैं कि उनके खिलाफ अभियोजन स्वीकृति विधि सम्मत नहीं है। पीठ ने इसके साथ ही याचिका दाखिल करने वाले पुलिसकर्मियों को आंशिक राहत देते हुए यह भी आदेश दिया है कि सम्बंधित मजिस्ट्रेट सर्वप्रथम अभियोजन स्वीकृति के मुद्दे को निर्णित करेंगे और तब तक इनके खिलाफकोई भी विरोधात्मक कार्रवाई नहीं की जाएगी। जस्टिस अनिल कुमार एवं जस्टिस मनीष माथुर की पीठ ने यह आदेश बेंच तत्कालीन सीओ हजरतगंज बीएस गबरियाल, तत्कालीन प्रभारी निरीक्षक थाना हुसैनगंज बलराम सरोज, तत्कालीन आरक्षी हजरतगंज वीरेंद्र कुमार व हुसैनगंज के तत्कालीन आरक्षियों अशोक कुमार यादव व चंद्रशेखर की ओर से दाखिल दो अलग-अलग याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई करते हुए दिया है।

आडवाणी 30 जून, जोशी एक व कल्याण सिंह दो जुलाई को दर्ज कराएंगे बयान

विधि संवाददाता। लखनऊ

रामचंद्र खत्री का खराब कनेक्टिविटी के कारण सोनीपत से जेल से नहीं दर्ज हो सका बयान, अब सात जुलाई को होगा बयान

अयोध्या के विवादित ढांचा को ढ़हाए जाने के आपराधिक मामले में शनिवार को सीबीआई की विषेश अदालत ने लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी व कल्याण सिंह सहित कुल नौ मुल्जिमों का सीआरपीसी की धारा 313 के तहत बयान दर्ज करने के लिए उनके आवास पर वीडियो कांफ्रेंसिंग की सुविधा का इंतजाम करने का निर्देश केंद्र सरकार की संस्था एनआईसी को दिया। विशेष जज सुरेंद्र कुमार यादव ने इस संदर्भ में इन सभी मुल्जिमों की ओर से सुझाई गई तारीखों की सूची एनआईसी को भेजने का आदेश दिया है। उन्होंने एनआईसी से बेहतर कनेक्टिविटी की व्यवस्था करने को कहा है।

विशेष अदालत द्वारा एनआईसी को भेजी गई सूची के मुताबिक मुल्जिम आडवाणी 30 जून, जोशी एक जुलाई, कल्याण सिंह दो जुलाई, आरएन श्रीवास्तव 22 जून, महंत नृत्य गोपाल दास 23 जून, जय भगवान गोयल 24 जून, अमर नाथ गोयल 25 जून, सुधीर कक्कड़ 26 जून एवं आचार्य धर्मेंद्र देव ने 29 जून को वीडियो कांफ्रेंसिंग से अपना अपना बयान दर्ज कराने की बात कही है। इससे पहले सोनीपत जेल से एक मुल्जिम रामचंद्र खत्री को जरिए वीडियो कांफ्रेंसिंग पेश किया गया। लेकिन खराब कनेक्टिविटी की वजह से उनका बयान दर्ज नहीं हो सका। अब उनका बयान सात जुलाई को होगा। अब तक इस मामले में 13 मुल्जिम सीआरपीसी की धारा 313 के तहत अपना बयान दर्ज करा चुके हैं। जबकि 19 मुल्जिमों का बयान दर्ज होना बाकी है। मामले की सुनवाई रोजाना हो रही है। अब अगली सुनवाई 22 जून को होगी।

मामला: छह दिंसबर, 1992 को विवादित ढांचा ढंहाए जाने के मामले में कुल 49 एफआईआर दर्ज हुए थे। एक एफआईआर फैजाबाद के थाना रामजन्म भूमि में एसओ प्रियवंदा नाथ शुक्ला जबकि दूसरी एसआई गंगा प्रसाद तिवारी ने दर्ज कराई थी। शेष 47 एफ्आईआर अलग अलग तारीखों पर अलग अलग पत्रकारों व फ्रेटोग्राफ्रों ने भी दर्ज कराए थे। पांच अक्टूबर, 1993 को सीबीआई ने जांच के बाद इस मामले में कुल 49 मुल्जिमों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था। इनमें 17 की मौत हो चुकी है। लिहाजा अब लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती, कल्याण सिंह व विनय कटियार समेत कुल 32 मुल्जिमों के मामले की सुनवाई हो रही है।

नौकरी के नाम पर ठगी करने वाला जालसाज गिरफ्तार

लखनऊ। राजधानी की चिनहट पुलिस ने एक शातिर जालसाज को गिरफ्तार किया है। पकड़ा गया जालसाज नौकरी के नाम पर पैसे हड़प रहा था। जिसके खिलाफ थाने पर मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। प्रभारी निरीक्षक क्षितिज त्रिपाठी ने बताया अभियुक्त गौरी शंकर पुत्र विष्णु पोद्दार निवासी 70.सी जगदीश्वर विहार इंदिरा नगर को गिरफ्तार किया गया है। जिसके कब्जे से तीन एटीएम कार्ड विभिन्न बैंकों केए एक पैन कार्डए एक चेक बुक और एक ड्राइविंग लाइसेंस बरामद हुआ है।

स्वदेशी अपनाएं, आत्मनिर्भर बनें: केशव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने शनिवार को अपने लखनऊ आवास 7 कालिदास मार्ग से प्रदेश के विभिन्न जनपदों के स्वयं सहायता समूहो से जुड़े लोगों से वर्चुअल संवाद के माध्यम से अपने विचारों को साझा किया। उन्होंने कहा कि कोरोना संकट ने स्थानीय निर्माण, स्थानीय बाजार, स्थानीय सप्लाई चेन की अहमियत समझाई। लोकल ने ही हमारी मांग पूरी की। इस लोकल ने ही बचाया। लोकल सिर्फ जरूरत नहीं, हमारी जिम्मेदारी है, जीवन मंत्र है।

श्री मौर्य ने कहा कि सरकार स्वदेशी को अपनाकर स्वावलंबन के रास्ते पर चल रही है और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत बनाने का जो अभियान शुरू किया गया है, उसमें हम सब लोग मिलकर अपना सक्रिय योगदान करें। निश्चित रूप से हम लोग कामयाब होंगे। देश विकास के पथ पर अग्रसर होगा। इकोनामी बढ़ेगी। किसानों को फायदा होगा। रोजगार के साधन सुलभ होंगे। समाज के सभी वर्गों को समुचित लाभ मिलेगा। उन्होंने स्वयं सहायता समूह से अपील की कि वह ऐसे प्रोडक्ट बनाएं, जिनका आसानी से विपणन हो सके और उनकी आमदनी मे इजाफा होने के साथ.साथ स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिल सके। सरकार उनके कार्यक्षेत्र को प्रोत्साहित करने व बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि आत्मनिर्भर बनाने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है, इसके बारे में हमें सकारात्मक रूप से चिंतन और मनन करने की आवश्यकता है। केशव प्रसाद मौर्य ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत उत्तर प्रदेश के विभिन्न सहायता समूह एवं बैंक सखी योजना की महिला सदस्यों के साथ वर्चुअल संवाद के माध्यम से भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार की विभिन्न कल्याणकारी एवं राष्ट्रहित के किये महत्वपूर्ण कार्यों की चर्चा करते हुए स्वदेशी अपनाएं और आत्मनिर्भर बनें के नारे को साकार करने का आह्वान किया और स्वयं सहायता समूह को विश्वास दिलाया कि आवश्यकतानुसार सरकार की ओर से उन्हें हर संभव सहायता दी जाएगी।

घर पर परिवार के साथ करें योग

लखनऊ। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि वह कोविड-19 के चलते इस बार घर पर ही योग करें (योग एट होम)। उन्होंने कहा है कि रविवार 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सभी लोग योग करें और योग से होने वाले फायदों के बारे में जागरूकता पैदा करें। उन्होंने कहा कि योग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है, उसके अद्भुत और चमत्कारी लाभ हैं। योग करने से तनाव कम होता है मानसिक शांति प्राप्त होती है। श्री मौर्य ने कहा कि योग दिवस का भारतीय संस्कृति से नाता जुड़ा हुआ है योग से शारीरिक क्रियाशीलता बढ़ती है, योग को प्राचीन कला का प्रतीक माना जाता है। माना जाता कि योग से जीवन उर्जावान होता है तथा जीवन में सकारात्मकता बढ़ती है।

अतिवृष्टि से हुई मौतों पर सीएम ने किया मदद का ऐलान

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिर्जापुर एवं कुशीनगर में आकाशीय बिजली गिरने एवं सुल्तानपुर में अतिवृष्टि से हुई जनहानि पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने दिवंगतों के परिजनों को 4.4 लाख रुपए की राहत राशि तत्काल वितरित किए जाने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए सुल्तानपुर में अतिवृष्टि से दीवार गिरने तथा कुशीनगर में आकाशीय बिजली गिरने की घटना में घायलों को समुचित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराने के भी निर्देश दिए हैं। ज्ञातव्य है कि राहत आयुक्त द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के अनुसार आज मिर्जापुर एवं कुशीनगर में आकाशीय बिजली गिरने से 1.1 एवं जनपद सुल्तानपुर में अतिवृष्टि से 2 जनहानि की सूचना प्राप्त हुई है। सुल्तानपुर में दीवार गिरने से 2 एवं कुशीनगर में आकाशीय बिजली गिरने से 1 व्यक्ति के घायल होने की सूचना प्राप्त हुई है।

प्रोत्साहन के रूप में सरकार करेगी उद्योगों की एसजीएसटी प्रतिपूर्ति

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कोरोना के बीच उद्योगों को एसजीएसटी की प्रतिपूर्ति अब राज्य सरकार करेगी। इसके लिए सरकार ने मानक निर्धारित कर दिए हैं। पहले यह माना जा रहा था कि एसजीएसटी उद्योगों को ही देना पड़ेगा लेकिन औद्योगिक संगठनों की मांग के बाद सरकार ने यह निर्णय लिया है। इसके लिए प्रमुख सचिव औद्योगिक विकास आलोक कुमार ने शासनादेश जारी कर दिया है। शासनादेश के अनुसार उद्यमियों को इसके लिए अलग से पंजीकरण कराना होगा। पंजीकरण की सूचना तिथि से 30 दिन की अवधि के भीतर इसे प्राप्त किया जाएगा। पंजीकरण पर किसी भी प्रकार की ट्रेडिंग की गतिविधि पर प्रतिबंध रहेगा। इसमें अंतरप्रांतीय सप्लाई में एसजीएसटी के जितने अंश का समायोजन किया जाएगा उतनी धनराशि क्लेम से घटा दी जाएगी या संबंधित प्रशासकीय विभाग को वापस कर दिया जाएगा। इस राशि की प्रतिपूर्ति का क्लेम किया गया है उसमें विलंब शुल्क दंड ब्याज व ऐसे अन्य शुल्क शामिल नहीं किए जाएंगे। किसी आवेदन द्वारा अनुमन्य राशि से अधिक पैसा प्राप्त कर लेने पर उससे 18 प्रतिशत ब्याज दर से इस राशि को वापस ले लिया जाएगा। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की दृष्टि से संबंधित इकाइयों द्वारा एसजीएसटी प्रतिपूर्ति के लिए क्लेम नोडल एजेंसी वाले विभाग को देना होगा। इसके आधार पर 15 दिनों के अंदर विभाग को आख्या उपलब्ध करानी होगी जब तक वित्त विभाग द्वारा के लिए बजट आवंटन नहीं किया जाएगा तब तक प्रशासीय विभाग एसजीएसटी क्लेम की प्रतिपूर्ति अपने बजट से करेगा। आवेदनकर्ता के कारोबार के स्थान पर उत्पादित अर्ह माल के प्रथम विक्रय पर ही सुविधा अनुमन्य की जाएगी।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, विद्युत कार्य मण्डल, पूर्वान्चल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, फतहां–मीरजापुर, निविदा विस्तारित इस कार्यालय के पत्र संख्या 802/वि0का0मं0(मी0)/ई–निविदा प्रकाशन दिनांक 11.06.2020 द्वारा निविदा संख्या 52/वि0का0मं0(मि0)/2019–20 जो दिनांक 20.06.2020 को खोली जानी थी, अपरिहार्य कारणों से निविदा दिनांक 07.07.2020 को खोली जायेगी। शेष नियम व शर्तें यथावत रहेंगी। अधीक्षण अभियंता, विद्युत कार्य मण्डल, मीरजापुर पत्रांक–823 दिनांकः 20.6.2020 ''राष्ट्रहित में बिजली बचायें''

झाड़ियों के पीछे मिला अज्ञात व्यक्ति का शव हत्या की आशंका

लखनऊ(पीएनएस)। राजधानी के पारा इलाके में झाड़ियों के पीछे एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि व्यक्ति को कहीं और से मार कर लाया गया है और यहां झाड़ियों में फेंक दिया गया है।

इंस्पेक्टर थाना पारा द्वारा बताया गया कि राजेश पुत्र रामऔतार निवासी बुद्वेश्वर पुल के नीचे झोपड़ी थाना पारा लखनऊ ने थाना पारा पर सूचना दिया कि आज शनिवार को उसने देखा कि बुद्वेश्वर चैराहे से रिंग रोड़ चैकी की तरफ जाने वाले देशी शराब ठेका के बगल में गुप्ता जी के खाली प्लाट में जिसमें झाड़ झंकाड लगा हुआ है। इसी प्लाट में बीच में एक लगभग 45 वर्ष के अज्ञात व्यक्ति का शव पड़ा हुआ है। इस सूचना पर एसआई विनय सिंह द्वारा आवश्यक वैद्यानिक कार्यवाही की जा रही है। जिनके द्वारा बताया गया कि मृतक का हुलिया में गेहुआ रंग, आंख, नाक, कान कद औसत, मजबूत जिस्म, मृतक का पहनावा: सफेद रंग का शर्ट, नारंगी रंग का गमछा, दाहिने हाथ में कलावा, बैंगनी रंग की लोवर जिस पर टिक–टाक लिखा हुआ है। शव करीब एक दिन पुराना है।

चाइनीज कंपनी ईकोग्रीन पर नगर निगम की दरियादिली

कूड़ा उठाने के बदले कंपनी को 40 करोड़ का भुगतान किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

गलवान घाटी में चीन भारत के सीमा विवाद का असर उत्तर प्रदेश की राजधानी के नगर निगम में दिखने लगा है। देश में चीनी उत्पादों से लेकर कंपनियों का बहिष्कार शुरू हो गया है। नगर निगम द्वारा कचरा प्रबंधन योजना के तहत कूड़ा उठाने का कार्य करने वाली चीनी कंपनी ईको ग्रीन को 40 करोड़ों का भुगतान किया जा चुका है, जबकि कंपनी डोर टू डोर कूड़ा उठाकर शहर को स्वच्छ करने में फेल हो गयी है। ऐसे में नाकाम कार्यदायी संस्था ईको ग्रीन को बाहर का रास्ता दिखाने की आवाजें उठने लगी हैं।

चाइनीज इलेक्ट्रिक सामान की तरह चाइनीज कंपनियां भी टिकाऊ नहीं होती हैं, यह सत्य एक बार फिर उजागर हुआ है। राजधानी में नगर निगम द्वारा चाइनीज कंपनी ईकोग्रीन लिमिटेड को शहर का कूड़ा उठाने की जि मेदारी दी गयी। तीन वर्ष कूड़े के उठानी की जि मेदारी दिए हो गए हैं, लेकिन यह कंपनी किसी एक वार्ड को पूरी तरह डोर टू डोर उठाने का म कार्य नहीं कर सकी है। कंपनी द्वारा 110 वार्डों में कूड़े को उठाकर शिवरी प्लांट तक ले जाने की जि मेदारी थी लेकिन वहां भी कंपनी कार्य नहीं कर सकी। ऐसे में सफाई के बाद शहर से कूड़ा उठाने जैसा महत्वपूर्ण कार्य यह संस्था करने में नाकाम रही।

निलंबित वन रेंज अधिकारी ने चार्ज लेने गये अधिकारी पर कुर्सी से किया हमला

सरोजनीनगर-लखनऊ। सरोजनीनगर के वन रेंज अधिकारी का चार्ज लेने पहुंचे वन अधिकारी छोटेलाल गुप्ता को यहां के निलंबित वन रेंज अधिकारी जयनरायण न केवल चार्ज देने से मना कर दिया बल्कि कार्यालय से बाहर न जाने पर जान से मारने की धमकी भी दी। यही नही विवाद होने पर निलम्बित वन रेज अधिकारी जय नरायण ने छोटेलाल पर कुर्सी से हमला कर दिया। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने दोनो को समझा–बुझा कर शांत कराया। पुलिस ने वन अधिकारी छोटेलाल वर्मा की तहरीर पर निलंबित वन रेंज अधिकारी जय नारायण के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है।

केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान ने लांच किया मैंगो बाबा ऐप

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मैंगो बाबा मोबाइल ऐप को केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के डायरेक्टर डॉ. शैलेंद्र राजन द्वारा शनिवार को कार्बाइड मुक्त आमों को किसानों से सीधे ग्राहकों तक पहुंचाने के उद्देश्य लांच किया गया। यह ऐप ना केवल स्वादिष्ट एवं उत्तम क्वालिटी के आम बल्कि संस्थान के उद्यमियों द्वारा बनाए गए आम के मूल्य संबंधित प्रोडक्ट्स को भी उपलब्ध कराने में सहायक होगा।

आम के विभिन्न किस्मों की आइसक्रीम सीधे ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए इसका उपयोग हो सकेगा, युवा उद्यमियों द्वारा इस ऐप का प्रयोग किसानों से आम बाग से लेकर संस्थान की स्वचालित पैकेजिंग लाइन में परिष्कृत कर शहर के विभिन्न भागों में पहुंचा कर उद्यमिता विकास के लिए किया जाएगा। आम की सप्लाई चैन से जुड़े लोग विभिन्न स्थानों पर ऑफलाइन बिक्री भी कर सकेंगे। राजन ने बताया कि बागों से आमों को तोड़ने के बाद उनकी भली–भांति सफाई एवं हॉट–वॉटर ट्रीटमेंट द्वारा जीवाणु रहित करके पैक किया जाता है। इन नामों को कार्बाइड के बिना इथाईलीन गैस द्वारा पकाया जाता है। आमों की तुड़ाई से लेकर पैकेजिंग को संस्थान द्वारा दी गई सलाह के अनुसार किया जाता है। यह आम अधिकतर उन बागों से होंगे हैं जहां पर संस्थान द्वारा की गई संस्तुतियों के अनुसार कीटनाशकों का छिड़काव किया गया हो।

खनन रोकने गये प्रधान पर जानलेवा हमला, तीन लोग घायल

बख्शी का तालाब (लखनऊ)। गांव में हो रहे खनन को रोकने गये ग्राम प्रधान व उनके साथियों पर खनन माफियाओं द्वारा फायरिंग व चाकूबाजी की गयीं। जिसमे तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए है। वही पुलिस ने मौके से तीन डंफर व दो जीसीबी को कब्जे में ले लिया है। प्रधान की तहरीर पर सात नामजद लोगों के साथ 16 अज्ञात के विरूद्ध मारपीट व दलित उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज किया गया है। घटना बख्शी का तालाब थाना क्षेत्र के शिवपुरी गांव की है। यहां के ग्राम प्रधान संतोष रावत ने बताया कि उनके गांव में बीते कई दिनों से खनन चल रहा था। जिसकी शिकायत उन्होंने एसडीएम से लेकर पुलिस के आलाधिकारियो से की थी। लेकिन उसपर कोई कार्यवाही नही हो रही थी। शुक्रवार की रात्रि को उन्हें ग्राम समाज की ज़मीन पर खनन की सूचना मिली थी। जिसके बाद उच्चाधिकारियों को सूचना देने के बाद वह उनके भाई राघवेंद्र भतीजा विवेक व किसान रामू खनन स्थल पर पंहुचे। उनके पहुंचते ही सानू सिंह, अनुज सिंह, पुनीत शुक्ला, महेंद्र अशोक श्रीकेशन वर्मा व एक अन्य अज्ञात उनपर उग्र हो गये। वह सभी फायरिंग करने लगे वही चाकुओं से उनपर हमलावर हो गये।

पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लि0 ई–निविदा सूचना सक्षम एवं अनुभवी ठेकेदारों/फर्मों/संस्थाओं से निम्नलिखित कार्य हेतु दो भागों में निविदा आन–लाइन आमंत्रित की जाती है। जिसके खुलने की तिथि 29.06.2020 के 15:00 बजे निर्धारित है। आनलाइन निविदा बेबसाइड (https:/etender.up.nic.in) पर तिथि 29.06.2020 को 11:00 बजे तक अपलोड किया जा सकता है निविदा मूल्य (GST सहित) एवं धरोहर धनराशि NEFT/RTGS के माध्यम से अधीक्षण अभियन्ता, विद्युत नगरीय वितरण मण्डल, द्वितीय इलाहाबाद के बैंक खाते मे सीधे स्थानातरित किया जायेगा। तथा उसका साक्ष्य ई टेण्डर के डाक्यूमेन्ट के साथ अपलोड किया जायेगा, कार्यदायी संस्था को साझा फर्म व एकल मालिक के सम्बन्ध में अभिलेख, तकनीकी, वाणिज्यिक एवं अन्य नियम व शर्तें प्रथम भाग में तथा दरें द्वितीय भाग में ई–निविदा के माध्यम से अपलोड करना होगा निविदाओं के प्रथम भाग की शर्तों को पूर्ण होने के उपरान्त ही निविदाओं का द्वितीय भाग खोला जायेगा। निविदा प्रपत्र सम्बन्धी सभी जानकारियॉं इलेक्ट्रॉनिक टेण्डरिंग के माध्यम से उ0प्र0 शासन के ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल की बेबसाइट पर (https:/etender.up.nic.in) ही प्राप्त की जा सकती है। निविदा में भाग लेने हेतु दिशा निर्देश उक्त ई–निविदा के बेबसाइड पर उपलब्ध है। कार्य का विवरण 01–ई–निविदा संख्या 15/वि0न0वि0मं0द्वि0/प्रयागराज/एस0ई0/20–21 विद्युत नगरीय वितरण खण्ड–टैगोर टाउन, प्रयागराज के अन्तर्गत विभिन्न उपकेन्द्रों पर 20 अदद वी0सी0बी0 की ओवरहालिंग एवं रिपेयरिंग से सम्बन्धित कार्य। निविदा प्रपत्र मूल्य रू0 236/– (200.00+ कर रू0 36.00) धरोहर धनराशि रू0 4,000.00/–(रू0 चार हजार मात्र) अधीक्षण अभियन्ता, विद्युत नगरीय वितरण मण्डल–द्वितीय, 15/12ए थार्नहिल रोड, संध्यापुरम, प्रयागराज पत्रांक–378 दिनांक 20/6/20 ''एल0ई0डी0 बल्व लगाये, राष्ट्रहित में बिजली बचाएं''

उ0प्र0 पावर कारपोरेशन लिमिटेड। शुद्धि पत्र अल्पकालीन निविदा सूचना सं.–13/अनु0ई0/श0भ0वि0/2020–21 अधोहस्ताक्षरी द्वारा निविदा विशिष्टि सं0– 14/अनु0इ0/श0भ0वि0/2020–21 एवं ई–निविदा विशिष्टि सं0 – 14/अनु0इ0/श0भ0वि0/2020–21 के द्वारा आमन्त्रित निविदा दिनांक 20.06.2020 को खोली जानी थी। परन्तु अपरिहार्य कारणोवश निविदा खोले जाने की तिथि 27.06.2020 की जाती है। प्राप्त निविदायें उसी दिन 16.00 बजे सार्वजनिक रूप से खोला जायेगा। शेष नियम व शर्तें पूर्ववत रहेंगी, एवं अन्य विवरण कारपोरेशन की वेबसाइट http:#e-tender.up.nic.com से प्राप्त किये जा सकते हैं। अधिशासी अभियन्ता (अनुरक्षण इकाई) भूतल, शक्ति भवन विस्तार, 14–अशोक मार्ग, लखनऊ। पत्रांक 911, दिनांक 20.06.2020 "राष्ट्रहित में बिजली बचायें", हेल्प लाईन नं0 0522 2288738

तीन शातिर लुटेरे गिरफ्तार कब्जे से चोरी की बाइक बरामद

लखनऊ। पीजीआई थाना क्षेत्र से पुलिस ने 3 शातिर लुटेरों को गिरफ्तार करने का दावा किया है। पकड़े गए लुटेरों के पास से एक मोटरसाइकिल भी बरामद हुई है। पुलिस ने अभियुक्तों के खिलाफ कार्यवाही करते हुए उन्हें जेल भेज दिया। प्रभारी निरीक्षक कण्व कुमार मिश्रा ने बताया वाहन चेकिंग के दौरान एक काली पल्सर सवार तीन लड़के जगत खेड़ा के पास आते दिखाई दिए। जो पुलिस देखकर पीछे मुड़कर भागने लगे। शक होने पर पुलिस ने घरबंदी करके उन्हें दबोच लिया। पूछताछ में उन्होंने बताया कि 2 दिन पहले मोबाइल लूटने का प्रयास किया था। अभियुक्तों ने पूछताछ में अपना नाम जर्मन सिंह पुत्र जागीर सिंह निवासी पश्चिम परवर मोहनलालगंजए मोहित रावत पुत्र राम लोटन और अरुण रावत पुत्र राजाराम निवासीगण दीवानगंज मोहनलालगंज बताया है।

कोरोना वायरस से बचाव के लिए छात्रों को किया गया जागरूक

लखनऊ (पीएनएस)। आज गांधी विद्यालय इंटर कालेज आलमबाग लखनऊ में कोविड 19 कोरोना वायरस से बचाव हेतु गरीब छात्र छात्राओं को जागरूक किया गया साथ ही सभी बच्चों को साबुन एसेनेटाइजर मास्क व फल आदि भारत विकास परिषद मानसरोवर शाखा व विद्यालय परिवार के सौजन्य से वितरित किये गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शक्ति प्रसाद तिवारी भारत विकास परिषद के सचिव ने कहा कि साफ–सफाई से रहे तो कोरोना कभी नही होगा सदस्य रंजना मिश्रा, राष्ट्र सेविका समिति उप्र की सेविका के अपने विचार व्यक्त करते हुए आरोग्य सेतु ऐप लोड करने व चाइनीज सामान न अपनाने पर जोर दिया, इस कार्यक्रम की आयोजक डॉ. बबिता जैन प्रधानाचार्या व स्काउट और गाइड संस्था की कैप्टन ने अपने उदबोधन में कहा कि बार बार हाथ धोना व नियमित मास्क लगा कर स्वछता से रहेंगे तो कोरोना क्या कोई भी बीमारी नही हो सकती। अंत मे लिपिक अशोक बाजपेई ने सभी का आभार व्यक्त किया।

पांच लाख की मार्फीन के साथ तस्कर गिरफ्तार

लखनऊ। राजधानी की गाज़ीपुर पुलिस ने शनिवार को पालिटेक्निक चैराहे के पास से 24 वर्षीय युवक को 50 ग्राम मारफीन के साथ गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है। जानकारी के अनुसार मार्फीन पाउडर के साथ गिरफ्तार किया गया युवक बांसमंडी डालीगंज वज़ीरगंज का रहने वाले अब्दुल मलिक का पुत्र वाहिद है। पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए वाहिद के पास से बरामद 50 ग्राम मारफीन की अन्तराष्ट्रीय बाज़ार मे कममत 5 लाख रूपए बताई जा रही है क्यूकि मार्फीन मंहगा नशा है और मारफीन का नशा बड़े घर के लोग ही करते है इससे ये अन्दाज़ा लगाया जा रहा है कि वाहिद बड़े घर के बिगड़ैल युवाओ को मारफीन की सप्लाई मंहगे दामो मे करता था। इन्स्पेक्टर गाज़ीपुर बृजेश सिंह ने बताया कि अभी ये पता नही चला है कि वाहिद मारफीन किससे खरीदता था वाहिद ने ये ज़रूर बताया है कि वो मारफीन को नशे के ज़रूरतमन्दो तक पहॅुचा कर मुनाफा कमाता था। इस मुनाफे से वह शाह खर्च करता था।

लखनऊ पुलिस को मास्क मुहैया कराएगा राधास्वामी सत्संग व्यास

मोहनलालगंज। राजधानी के सभी थानों में पुलिस कर्मियों को जरुरत के मुताबिक लिनेन कॉटन के मास्क राधास्वामी सत्संग व्यास की ओर से मुहैया कराए जाएंगे। सत्संग परिवार की महिलाएं इसके लिए मोहनलालगंज के राधास्वामी सत्संग व्यास परिसर में ही मास्क तैयार कर रही हैं। सत्संग व्यास के क्षेत्रीय सचिव जितेन्द्र अरोड़ा और सेवादार अशोक मोतियानी ने श्याम किशनानी अनिल बजाज और विजय मोतियानी के साथ पुलिस कमिश्नर सुजीत पाण्डेय से मुलाकात कर 2500 मास्क सौंपते हुए यह भरोसा दिया है।अशोक मोतियानी ने बताया पुलिस कमिश्नर ने अति शीघ्र सत्संग व्यास आकर क्वारंटाइन सेण्टर और सेवादारों के अथक परिश्रम का जायजा लेने का आश्वासन दिया है।

निगोहां में किसान के घर चोरी, शादी की खुशियां मातम में बदली

निगोहां। निगोहां के कुशमौरा गांव के मजदूर ने बेटी के हाथ पीले करने के लिये पेट काटकर पाई–पाई एकत्रित कर शादी के बर्तन जेवर कपड़े खरीदकर रखे थे। घर शादी की तैयारी चल रही थी। शुक्रवार रात अज्ञात चोरों ने घर मे घुसकर बर्तन कपड़े जेवर सब कुछ उठा ले गए अब मजदूर पर बेटी के हाथ पीले करने का संकट खड़ा हो गया।नौबत यहाँ तक आ गई उसे अब बेटी की शादी तोड़ने के शिवा कोई रास्ता नही सूझ रहा है। कुशमौरा गांव के किसान शिवलाल ने बताया उसकी बेटी की शादी रायबरेली से तय है और 30 जून को घर बरात आनी है उसके लिये उसने पत्नी ने मजदूरी कर पाई जोड़कर बेटी के लिये जेवर दमाद के लिये कपड़े बर्तन सहित दहेज का समान समर्थनुसार खरीद कर रखा था।

कार्यालय नगर पंचायत बरवर–खीरी

पत्रांक–70/न0पं0ब0/का0गौ0/ई–प्रक्योरमेन्ट/2020–21 दिनांक 19.06.2020

अति अल्पकालीन निविदा सूचना ई–टेण्डर

नगर पंचायत बरबर में वर्ष 2020–21 के अन्तर्गत कान्हा गौशाला/पशु शेल्टर होम का निर्माण कार्य कराना चाहती है। जिसके लिये ई–निविदा वेबसाइट www.etender.up.nic.in पर ही की जायेगी।

टेण्डर शेड्यूल

संख्या	नगर पंचायत बरवर, खीरी	निविदादाता/ठेकेदार	प्रारम्भ तिथि व समय	अन्तिम तिथि व समय
1	Tender Release		23.06.2020 10 AM	
2		Tender Download	23.06.2020 10 AM	29.06.2020 10 AM
3		Bid Submission	23.06.2020 10 AM	29.06.2020 10 AM
4	Close for Bid			29.06.2020 10 AM
5	Technical Bid Opening			29.06.2020 12 AM
6	Online Finance Bid Opening	After Approval of Technical Bid & Submitted Original document as per following clauses 14		

कार्य का विवरण व अन्य शर्तें वेबसाइट www.etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।

(सपना भारद्वाज)
अधिशासी अधिकारी
नगर पंचायत बरवर, खीरी

(नसरीन बानो)
अध्यक्ष
नगर पंचायत बरवर, खीरी

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, निर्माण खण्ड–1, लोक निर्माण विभाग, लखनऊ

पत्रांक : 1350/ई–टेन्डर/20–21 दिनाँक : 16.06.2020

अल्प कालीन ई-निविदा सूचना

1. राज्यपाल महोदय, उ0प्र0 की ओर से अधिशासी अभियन्ता, निर्माण खण्ड–1,उ0प्र0 लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रतिशत दर पर उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग में मार्ग कार्य हेतु रजिस्टर्ड श्रेणी–ए, बी, सी व डी के अर्ह एवं अनुमोदित ठेकेदारों से ई–टेन्डरिंग के माध्यम से निविदा माँगी जाती है। निविदादाता किसी भी अथवा सभी कार्यों के लिए निविदा दे सकता है। निविदादाता को सलाह दी जाती है कि वह न्यूनतम अर्हता के सम्बन्ध में निविदादाता निर्देश पुस्तिका में वर्णित ठेका प्राप्त करने नियमों से अवगत हो लें।
2.

क्र. सं.	जनपद	कार्य का नाम	आंकलित धनराशि (रू0 लाख में)	धरोहर धनराशि (रू0 लाख में)	निविदा शुल्क प्रपत्र का मूल्य+स्टेशनरी +जी.एस.टी.	कार्य पूर्ण करने की अवधि (वर्षा ऋतु सहित)	कार्य सम्पादन हेतु अधिशासी अभि. का पता	अधीक्षण अभियन्ता का पता	मुख्य अभि0 का पता
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	लखनऊ	चिनहट सतरिख से जुग्गौर सम्पर्क मार्ग की विशेष मरम्मत का कार्य।	8.60	0.86	Rs. 225.00+ 500.00+41.00 (Tender cost+ Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 766.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
2	लखनऊ	चिनहट देवा से गनेशपुर मार्ग किमी0 1(500) की विशेष मरम्मत का कार्य।	4.90	0.49	Rs. 150.00 + 500.00+27.00 (Tender cost+ Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 667.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
3	लखनऊ	कचंनपुर मटियारी सम्पर्क मार्ग की विशेष मरम्मत का कार्य।	31.00	3.10	Rs. 300.00 + 2000.00+ 54.00 (Tender cost+Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 2354.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
4	लखनऊ	अम्बेडकर नगर चौराहा से मटियारी चौराहा किमी. 1 (0.00 से 0.200) एवं 1.400 से 0.500) तक का विशेष मरम्मत का कार्य।	13.75	1.35	Rs. 225.00 + 500.00+ 41.00 (Tender cost+Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 766.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
5	लखनऊ	लखनऊ कुर्सी मार्ग से कपासी मार्ग किमी0 1 (चैनेज 0.050से 0.100 चै0 0.850 से 0.900 से 0.950 से 1.00) तक विशेष मरम्मत का कार्य।	3.50	0.35	Rs. 150.00 + 500.00+ 27.00 (Tender cost+Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 667.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
6	लखनऊ	सीतापुर मार्ग से कोटवा लहंगपुर सम्पर्क मार्ग किमी0 1(400) तक का विशेष मरम्मत का कार्य।	32.25	3.23	Rs. 300.00 + 2000.00+ 54.00 (Tender cost+Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 2354.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
7	लखनऊ	चिनहट आंतरिक मार्ग का बी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	13.50	1.35	Rs. 225.00 + 500.00+ 41.00 (Tender cost+Stationary Charges) + GST @ 18%) = Rs. 766.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
8	लखनऊ	चिनहट देवा से धावा मार्ग का बी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	24.00	2.40	Rs. 300.00 + 2000.00+ 54.00 (Tender cost+Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 2354.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
9	लखनऊ	गौरव बिहार सतरिख मार्ग होते हुये रामा डिग्री कालेज सम्पर्क मार्ग।	21.80	2.18	Rs. 300.00 + 2000.00+ 54.00 (Tender cost+Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 2354.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
10	लखनऊ	खरगापुर मार्ग से कौशलपुरी कालोनी मार्ग होते हुये गडेरियनपुरवा मार्ग का पी.सी. द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	9.50	0.95	Rs. 225.00 + 500.00+ 41.00 (Tender cost+Stationary Charges) + GST @ 18%) = Rs. 766.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
11	लखनऊ	श्री कृष्ण अवतार सिंह सेंगर के मकान से रामा डिग्री कॉलेज तक मार्ग का पी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	5.40	0.54	Rs. 150.00 + 500.00+ 27.00 (Tender cost+Stationary Charges) + GST @ 18%) = Rs. 667.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
12	लखनऊ	सीतापुर मार्ग से मिर्जापुर अहनहर रसूलपुर कोटवा मार्ग का पी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	25.95	2.60	Rs. 300.00 + 2000.00+ 54.00 (Tender cost+Stationary Charges)+ GST @ 18%) = Rs. 2354.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
13	लखनऊ	सिरसा कमालपुर मार्ग किमी0 2 से बीबीपुर सम्पर्क मार्ग होते हुये बलसिंह पुरवा और काशीराम पुरवा मार्ग का पी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	14.00	1.40	Rs. 225.00 + 500.00+ 41.00 (Tender cost+Stationary Charges) + GST @ 18%) = Rs. 766.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
14	लखनऊ	एक दुनिया सम्पर्क मार्ग का पी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	4.40	0.45	Rs. 150.00 + 500.00+ 27.00 (Tender cost+Stationary Charges) + GST @ 18%) = Rs. 667.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
15	लखनऊ	हरसकरी सम्पर्क मार्ग का पी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	2.60	0.26	Rs. 150.00 + 500.00+ 27.00 (Tender cost+Stationary Charges) + GST @ 18%) = Rs. 667.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ
16	लखनऊ	बी0के0टी0 बाबागंज मार्ग किमी0 5 से शाहपुरवा सम्पर्क मार्ग का पी0सी0 द्वारा नवीनीकरण का कार्य।	11.80	1.18	Rs. 225.00 + 500.00+ 41.00 (Tender cost+Stationary Charges) + GST @ 18%) = Rs. 766.00	06 माह	निर्माण खण्ड–1 लो0.नि.वि, लखनऊ	लखनऊ वृत्त लो.नि.वि. लखनऊ	मुख्य अभि. (म0क्षे0) लो.नि.वि. लखनऊ

➤ बिल ऑफ क्वान्टिटी में लगाई गयी दरें जी0एस0टी0 करों को छोड़ते हुये लगाई गयी है।

निविदा आनलाइन दिनांक 26.06.2020 की पूर्वान्ह् 9:00 बजे से डाउनलोड की जा सकती है एवं दिनांक 01.07.2020 की अपरान्ह 12:00 बजे तक अपलोड की जा सकती है। उक्त निविदा की तकनीकी बिड दिनांक 02.07.2020 को अपरान्ह 3:00 बजे खोली जायेगीं तथा अर्ह निविदादाताओ की वित्तीय बिडे कार्यालय आदेशानुसार निर्धारित समय, दिनांक एवं स्थान पर खोली जायेंगी। शासनादेश संख्या 1/2018/3070/78–2–2018/42 आई0टी0/2017 (22) दिनांक 03.01.2018 में निहित व्यवस्थानुसार निविदा की तकनीकी एवं वित्तीय बिड खोले जाने के उपरान्त निविदादाता द्वारा मूल अभिलेख व्यक्तिगत रूप से विभाग/कार्यालय में प्रस्तुत किये जाने है। निविदादाता द्वारा मूल अभिलेख प्रस्तुत न किये जाने की दशा में शासनादेश में निहित प्राविधानों के अनुरूप कार्यवाही की जायेगी।

निविदादाता सम्बन्धी शेष सभी शर्तें http//etender.up.nic.in पर देखी जा सकती है।

(ए0 के0 सिंह)
अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड-1, लो0नि0वि0, उ0प्र0, लखनऊ

उ0प्र0 152638, दिनांक–18.06.2020
विज्ञापन वेबसाईट www.up.gov.nic.in पर उपलब्ध है।

भारत-नेपाल संबंधों पर ओली का प्रहार

लिपुलेख, कालापानी और लिम्पियाधुरा को नेपाल के हिस्से के तौर पर को वैधानिकता प्रदान करने के लिए नेपाली संसद द्वारा नए मानचित्र को मंजूरी दिए जाने के साथ ओली सरकार ने नेपाल-भारत संबंधों को गंभीर चोट पहुंचाई है।

विवेक मिश्रा

राकेश कुमार मीना

लिपुलेख, कालापानी और लिम्पियाधुरा को नेपाल के हिस्से के तौर पर को वैधानिकता प्रदान करने के लिए नेपाली संसद द्वारा नए मानचित्र को मंजूरी दिए जाने के साथ ओली सरकार ने नेपाल-भारत संबंधों को गंभीर चोट पहुंचाई है। अब अगले कदम के तौर पर राष्ट्रपति द्वारा इस प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान किए जाने के साथ ही भारत-नेपाल संबंध दक्षिण की ओर प्रस्थान कर जाएंगे। केपी शर्मा ओली द्वारा किया गया यह दावा भड़काऊ कहा जा सकता है कि नेपाल भारत द्वारा हथियाई गई जमीन वापस ले लेगा। मानचित्र बदलने का निर्णय मामूली होता है, जिससे जमीनी स्तर पर नेपाल को कोई भौगोलिक अथवा संप्रभु उपलब्धि नहीं होने वाली। मगर यह कदम भारत-नेपाल रिश्तों को अपरिवर्तनीय मोड़ देने वाला साबित हो सकता है।

यद्यपि रिश्तों में हालिया तनाव पैदा करने वाला कारक है लिपुलेख दर्रे को जोड़ने वाली वह सड़क जिसका भारत द्वारा उद्घाटन किया गया है, जिसको नेपाल अपना भूक्षेत्र होने का दावा करता है, दोनों पड़ोसियों के बीच रिश्तों को प्रभावित करने वाली सिलसिलेवार घटनाएं होती रही हैं। 13 मई को, नेपाल ने कालापानी और छंगू पर सीमा के नेपाली हिस्से में सशस्त्र पुलिस बलों को तैनात कर दिया था। हाल ही में, नेपाल पुलिस ने बिहार के सीतामढ़ी जिले में भारत-नेपाल सीमा पर भारतीय लोगों पर गोली चलाई जिसमें एक किसान की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए थे। भारत-नेपाल के बीच वर्तमान में जारी लिपुलेख मुद्दे एक और दुविधा पैदा कर दी है, जिससे द्विपक्षीय रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। केवल इस बार ही ऐसा हुआ है कि काठमांडू द्वारा उठाए गए कदम अपरिवर्तनीय असर डालने वाले प्रतीत होते हैं।

अपनी संप्रभुता पर जोरे देने की नेपाल की नई आकांक्षा को तीन व्यापक संदर्भों में देखना होगा। पहला, ओली सरकार का घरेलू राजनीतिक एजेंडा भारत विरोधी विमर्श पर फलता फूलता है। इस प्रकार, संविधान संशोधन प्रधानमंत्री द्वारा नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए इस्तेमाल किया गया औजार है। इस बाबत, घरेलू स्तर पर एकीकरणकारी विमर्श राष्ट्रीय सुरक्षा को बाहर से खतरे के विमर्श पर आधारित है जिसकी उसे आवश्यकता है।

रणनीतिक रिक्त स्थान को पाटने के लिए काठमांडू का चीन पर बढ़ता विश्वास भारत के साथ रिश्तों को पटरी से उतार देगा, और यह बात नेपाल में चीनी निवेश की प्रवृत्तियों एवं बीजिंग के साथ उसके नेतृत्व की बढ़ती निकटता को देखकर स्पष्ट हो जाता है। साथ ही, नेपाल के कदम मनोवैज्ञानिक रूप से नेपोलियन काम्पलेक्स का सामरिक प्रतिरूप का संकेत देते हैं जहां एक बहुत छोटा सा देश अतिशय आक्रामक राजनीतिक कदमों के द्वारा अपनी क्षमताओं में व्याप्त अभावों के बावजूद एक पड़ोसी बड़ी ताकत के साथ बराबरी करने पर ऊतारू हो जाता है।

अपने घरेलू क्षेत्र के एक तबके को खुश करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर का टकराव अंतरराज्यीय संबंधों में शायद ही कभी लाभकारी होता है। ऐसे कदम उठाकर घरेलू स्तर पर राजनीतिक लाभ तो उठाए जा सकते हैं लेकिन ये एक चुनावी चक्र से आगे नहीं चलने वाले। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, ऐसे कदम के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव दीर्घकालीन हो सकते हैं। यद्यपि देशीय स्तर पर व्याकुलता दीर्घकालिक उपलब्धियों की नींव पर खड़ी होती है, अंतरराष्ट्रीय परिणाम तात्कालिक होते हैं। नेपाल में, घरेलू तौर पर ऊर्जावान राजनीति जो एक बाहरी आक्रांता पर केंद्रित हो वह देश के भीतर भड़काने वाली सिद्ध हो सकती है और राजनीतिक मजबूती में रूपांतरित हो सकती है लेकिन अंतरराज्यीय रिश्तों पर इसके बुरे प्रभावों को पुन: सुधारा नहीं जा सकता।

भारत विरोधी एजेंडा नेपाली नेतृत्व के लिए घरेलू चुनावों में लाभकारी सिद्ध हुआ है लेकिन जो रणनीतिक लाभ ओली के नेतृत्व वाली वर्तमान हुकूमत ने निचोड़ने के प्रयास भारत की आलोचना के द्वारा किए हैं वैसा अतीत में कभी नहीं हुआ। पुन: मानचित्र बनाकर नेपाल द्वारा दावा किया जाना एवं उसका संसदीय अनुमोदन, भारत द्वारा संप्रभुता के मुद्दे पर प्रतिक्रियात्मक जोर तथा कालापानी मुद्दा उठने के बाद से काठमांडू द्वारा बातचीत के बार-बार किए गए अनुरोध को खारिज किया जाना यह दर्शाता है कि दोनों पक्षों ने अपना रुख कड़ा कर लिया है। चिंता का विषय यह है कि द्विपक्षीय संबंध धीरे-धीरे अपरिवर्तनीय पतन की ओर बढ़ रहे हैं।

नेपाल की अस्थिरता के पूर्व में उल्लिखित विशिष्ट रूप से प्रासंगिक संदर्भों के साथ-साथ, दो व्यापक संदर्भ हैं जो हालिया वैश्विक घटनाओं में अन्यत्र समानांतर नजर आते हैं। एक तरफ तो, छोटे से बड़े तक, राज्यों के लिए संप्रभुता पर रुख कठोर करने का लगभग प्रचलन सा हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ''मैक्सिको दीवार'', चीन द्वारा वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दादागीरी दिखाने के साथ-साथ ''नाइन डैश लाइन'' पर जोर दिया जाना, तुर्की द्वारा साइप्रस के हिस्सों पर रुख को पुनर्स्थापित किया जाना आदि सभी प्रवृत्तियों ने राज्य-संप्रभुता संबंधों के मामले में मिलते जुलते रुझान दर्शाए हैं। हालांकि, अधिकतर मामलों में इस पुनर्स्थापना का प्रवाह अधिक शक्तिशाली देश से कम शक्तिशाली देश की ओर होता है। लगता है नेपाल ने भारत के साथ सीमा विवाद समाधान के लिए राजनयिक मार्ग को मोड़कर उस रुझान को उलट दिया है।

दूसरी ओर, कुछ ऐसे राज्य है, खासकर कि ट्रंप की अगुवाई में अमेरिका, जिसने बाहरी संबंधों की कीमत पर घरेलू चुनावों में लाभ पाने के लिए घरेलू आवश्यकताओं को प्राथमिकता पर रखा है, यहां तक कि सुस्थापित परा-अटलांटिक संबंधों अथवा जापान और दक्षिण कोरिया जैसे उसके नाटो सदस्यों के साथ भी यही रवैया अपना रहा है।

ऐसा लगता है कि ओली ट्रंप से प्रेरित होकर काम कर रहे हैं। वो खुली सीमा की व्यवस्था, लोगों के उन्मुक्त आवागमन, नेपाली लोगों के कार्य करने के अधिकार, भारतीय सेना में अत्यंत सम्मानित गोरखा रेजीमेंट एवं बहुत पसंद की जाने वाले रोटी-बेटी की अवधारणा पर आधारित संबंधों को स्थापित करने वाले अंतरराज्यीय विवाहों, पर सवार कई वर्षों से चले आ रहे विशेष किस्म के संबंधों को शायद चीन के उकसावे पर घरेलू राजनीतिक लाभ के लिए जोखिम में डालने को राजी हो गए हैं। सवाल यह उठता है कि क्या भारत-नेपाल संबंधों के खिलाफ काठमांडू के कदम जोखिम के कारक हैं?

भारत के लिए यह अलग मामला है, जो महान शक्ति संभावनाओं के साथ सबसे बड़ा और दयाशील पड़ोसी देश है। अपने छोटे पड़ोसी देश के निर्णयों की प्रतिक्रिया में एक मामूली सी प्रतिक्रिया भी कठोरता की परिचायक होगी। यह अपने पड़ोसियों के प्रति भारत की नीति की प्रतिक्रिया में गलत समझ भी साबित हो सकता है। आज दक्षिण एशिया के छोटे देश अपने बड़े पड़ोसी देश भारत से संबंधों में जिस समानता का भाव दर्शा रहे हैं उसमें चीन से जुड़कर जिस उत्थान को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं उससे भिन्न है। इसका सरोकार तीन संवेदनशील कारकों से है : छोटे राज्य द्वारा भारत की क्षमताओं का चीन की तुलना में सापेक्षिक आंकलन, भारत की बाहुबल आधारित विदेश नीति उन्मुखता जिसमें अहस्तक्षेप एवं शून्य खतरे की नीति शामिल है, और अधिक महत्वपूर्ण रूप से, जैसा कि नेपाल के मामले में हो रहा है, इन देशों में विश्वसनीय विकल्प मुहैया कराने की चीन की क्षमता।

ऐसा लगता है कि भारत और नेपाल दोनों ने ही संप्रभुता के दावे के मुद्दे पर अपना-अपना रुख कठोर बना लिया है। ऐसे मुकाम पर, द्विपक्षीय संबंधों में, खासकर उनमें अनम्यता को देखते हुए बुद्धिमानीपूर्वक बर्ताव किया जाना चाहिए। अंतरराज्यीय संबंधों में विषाद अच्छा भी है और बुरा भी। ऐसे समय पर जब मालदीव और श्रीलंका से नेपाल तक और कुछ तो कहेंगे भूटान भी, जैसे दक्षिण एशियाई देशों ने भारत के समक्ष अपनी संप्रभुता को कठोर रूप दिया है, नई दिल्ली को ऐसे कदमों से निबटने के लिए अतीत की स्मृतियों के अनुरूप काम नहीं करना चाहिए। और यह कोई बुरा विचार नहीं है। भारत-नेपाल संबंधों में अतीत का प्रभाव अच्छा है मगर शायद यह अपना उद्देश्य पूरा कर चुका है। अब उसकी आयु से आगे बढ़कर उसे खींचने के परिणाम उम्मीद के विपरीत हो सकते हैं।

शायद भारत नेपाल के साथ भी अपने संबंधों को पुनर्समायोजित करने के बारे में सोच रहा है। भारत ने नेपाल द्वारा नया मानचित्र पेश करने की आलोचना उसे दावों के अप्राकृतिक संवर्धन बताकर की है और भारत का यह रुख मोलभाव से रहित द्विपक्षीय रिश्तों का मार्ग प्रशस्त करता है। संभव है कि नई दिल्ली काठमांडू के निर्णय को अनदेखा कर नेपाल के साथ संबंधों में सामान्यता बनाए रखे। इसके लिए रणनीतिक समझौतावादी बनने की जरूरत होगी। यह ओली सरकार के अगले कदमों पर निर्भर करेगा, खासकर उन मामलों पर जो भारत के साथ उसके संबंधों पर असर डालते हों।

नेपाल द्वारा चीन को ज्यादा कसकर पकड़ लेने से दिल्ली-काठमांडू रिश्तों का मार्ग आगे और संकीर्ण हो जाएगा। यदि नेपाल किसी भी प्रकार का व्यापक ढांचा निर्मित करने के लिए चीन को शामिल करने का निर्णय लेता है तो स्थिति और बिगड़ जाएगी। नेपाल के लिए टकराव मोल लेने का एक और तरीका हो सकता है भारत को अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में खींचकर विवाद का अंतरराष्ट्रीयकरण करना।

अब नई दिल्ली को आगे बढ़ने के लिए सारे विकल्पों पर विचार करना होगा, क्योंकि यह परिपाटी के बगैर नहीं होगा कि भारत को अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के लिए किसी छोटे पड़ोसी देश द्वारा विवाद में घसीटा गया हो। भारत को नेपाल के राज्य स्तरीय बर्ताव में किसी प्रकार के नेपालियन काम्पलेक्स के प्रदर्श कन प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, खासकर कि जब चीन पीछे नजरें गड़ाए बैठा है। काठमांडू द्वारा घरेलू स्तर पर तुष्टीकरण के लिए पीड़ित होने के भाव के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय मंच द्वारा पूरक की भूमिका निभाई जा सकती है।

कोरोना पश्चात नए शिक्षाशास्त्र की आवश्यकता

वैश्विक महामारी कोविड-19 ने बच्चों के माता-पिता तथा स्कूल प्रबंधनों को तगड़ा आर्थिक झटका दिया है। इस अनिश्चितता पूर्ण परिवेश को देखते हुए अब बच्चों के लिए एक नए शिक्षाशास्त्र का विकास होना चाहिए।

जे एस राजपूत
लेखक शिक्षा एवं सामाजिक एकजुटता हेतु कार्यरत हैं।

दुनिया भर में कोरोनावायरस प्रसार से पैदा एक गंभीर समस्या यह है कि महामारी के बाद स्कूल कब और कैसे खुलने चाहिए। किसी भी संरक्षक से बात करने पर उसकी पहली प्रतिक्रिया प्रतीक्षा करने की होती है। कुछ अगस्त-सितंबर में भी स्कूल खुलने पर अपने बच्चों को भेजने के लिए तैयार नहीं हैं। बच्चों की मातायें एक शिक्षा वर्ष छोड़ने के लिए भी तैयार हैं और कोई जोखिम नहीं लेना चाहती हैं। यूनेस्को की उप महानिदेशक स्टेफानिया जियानिनी ने 13 मई को प्रकाशित एक लेख में समस्या की भयावहता का अनुमान लगाया है।

उनके अनुसार, '190 से अधिक देशों में स्कूल दो महीने से बंद हैं जिससे 1.57 बिलियन बच्चे व युवा प्रभावित हैं जो दुनिया में छात्र संख्या का 90 प्रतिशत हैं। कोविड-19 से बचने के लिए स्कूल जल्दी से बंद किए गए। इसके साथ ही सरकारों ने तेजी से प्लेटफार्मों, टेलीवीजन व रेडियो से शिक्षा जारी रखने के प्रयास किए जो शिक्षा के इतिहास में दूरगामी महत्व वाली परिघटना है। लेकिन स्कूल पुन: खोलने के बारे में अनिश्चितता व्याप्त है। यूनेस्को के आंकड़ों के अनुसार अभी 100 देशों ने इसके लिए किसी तिथि की घोषणा नहीं की है, 65 ने आंशिक या पूर्ण रूप से खोलने की योजना बनाई है, जबकि 32 यह शिक्षण वर्ष आनलाइन चलाएंगे। 890 मिलियन छात्रों के लिए स्कूल वर्ष कभी इतना अपरिभाषित नहीं रहा है।'

भारत में स्कूल जाने वाले लगभग 250 मिलियन छात्र हैं। कोरोनावायरस मामलों में रोज बढ़ोत्तरी के कारण छात्रों व उनके माता-पिता में चिन्ता स्वाभाविक है। 224 जिलों में कराए एक हालिया अध्ययन से यह बेचैनी व अनिश्चितता स्पष्ट है। सर्वेक्षण में शामिल 18,000 संरक्षकों में से 37 प्रतिशत चाहते हैं कि जिले में तथा उसके 20 किलोमीटर के दायरे में 21 दिन नया मामला न आने पर ही स्कूल खोले जाएं। लेकिन 20 प्रतिशत से अधिक संरक्षकों का मानना है कि देश में तीन सप्ताह तक कोई मामला न आने के बाद ही स्कूल खोले जाएं, जबकि 13 प्रतिशत का मानना है कि वैक्सीन का विकास होने तक स्कूल बंद रखे जाएं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि स्कूल पुन: खोलने का निर्णय राज्य सरकारें करेंगी और वे अपने निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं। केन्द्रीय मंत्रालय सफाई, क्वारंटीन व फिजिकल डिस्टेंसिंग तथा अन्य संबंधित विषयों पर दिशानिर्देश जारी करता है। कुल मिला कर इससे शिक्षा क्षेत्र में अनिश्चितता व्याप्त है। हालांकि, रचनात्मक सोच वाले लोग सीखने-सिखाने के परिदृश्य में आई बाधाओं से संघर्ष करते हुए संभावित समाधान तलाशने का प्रयास कर रहे हैं।

जिस प्रकार डिजिटल शिक्षा ने बड़ी संख्या में स्कूलों में पांव पसारे हैं उससे लगता है कि व्यवस्था ने समस्या की जटिलता पहचानी है और वह विकल्पों का परीक्षण कर रही है। लेकिन डिजिटल शिक्षा में परिवर्तन आसान नहीं है। बहुत से स्कूल सभी आयामों से अच्छी तरह लैस हैं। लेकिन अन्य स्कूल लगातार लगातार समस्याओं का सामना कर रहे हैं तथा ढांचागत संरचना व पेशेवर समर्थन के मामले में वंचित हैं। पिछले तीन दशकों में शिक्षकों के खाली स्थान भारी चिन्ता का विषय रहे हैं और इसका सीधा प्रभाव शिक्षण की गुणवत्ता पर पड़ा है। इससे स्कूलों की विश्वसनीयता भी प्रभावित हुई है।

महानगरों व छोटे शहरों में एक और परिघटना स्कूलों को प्रभावित कर रही है। शहरों से अपने गृह राज्यों को श्रमिकों के पलायन ने कामगारों और व्यवस्था के समक्ष अनेक सवाल खड़े किए हैं। इसमें बच्चों की शिक्षा का प्रमुख स्थान है। जैसा कि अनुमान था, इससे स्कूली शिक्षा अत्यधिक प्रभावित हुई है। विभिन्न स्रोतों से पुष्टि हुई है कि देश के विभिन्न भागों में सरकारी स्कूलों से उन बच्चों के माता-पिता ने संपर्क किया है जो वर्तमान समय में निजी स्कूलों व अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों की भारी फीस देने में अक्षम हैं। कोरोना वैश्विक महामारी के कारण पैदा आर्थिक संकट से समाज के गरीब व निम्न-मध्य वर्ग के लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। निजी स्कूलों में बच्चों को प्रवेश दिलाने वाले उच्च शिक्षित लोग भी स्वयं को दोराहे पर खड़ा पाते हैं। परिवार के खर्चे में कटौती कर किसी प्रकार आर्थिक जरूरतें पूरी करने वाले माता-पिता दुविधाग्रस्त हैं। उनमें से अनेक स्कूल फीस देने में सक्षम नहीं हैं, भले ही इस वर्ष उसमें कोई वृद्धि न हो।

इसके परिणामस्वरूप इन प्रतिष्ठित स्कूलों से ऐसे निजी स्कूलों या सरकारी स्कूलों की ओर छात्रों का पलायन हो सकता है जो आर्थिक रूप से कमजोर तबकों की सेवा करते हैं। वर्तमान समय में यह पलायन रोकने का कोई रास्ता नहीं है। इससे शिक्षा उद्योग में भारी उथलपुथल है जो मुख्यत: निजी उद्यमियों द्वारा संचालित है। हमारे देश में स्कूल मुख्यत: दो श्रेणियों में विभाजित हैं, जनता के पैसे से चलने वाले सरकारी स्कूल तथा निजी उद्यमियों द्वारा संचालित निजी स्कूल।

यह वास्तव में परेशान करने वाली बात है कि अधिकांश माता-पिता स्कूली शिक्षा व्यवस्था के कामकाज से संतुष्ट नहीं हैं। अपने बच्चों को निजी प्रबंधन वाले 'पब्लिक' स्कूलों में भेजने वाले इसलिए नाराज हैं क्योंकि प्रबंधन एक या दूसरे बहाने उनसे पैसे वसूलने में लगा रहता है। लेकिन सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता को दुख है कि वे अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के 'पब्लिक' स्कूलों में प्रवेश नहीं दिला सके।

निजी स्कूलों के प्रबंधन को भी बहुत चिन्ता है। उनको भय है कि शायद हर साल की तरह फीस बढ़ाने की अनुमति न मिले। उनकी आशंका और बेचैनी समझी जा सकती है। हाल ही में मुझे जानकारी मिली कि एक खोजी उद्यमी ने 'इंटरनेट टीचिंग एंड लर्निंग' के लिए अतिरिक्त फीस लेने का फैसला किया। आने वाले महीनों में यह टकराव अनेक आयाम धारण कर सकता है। शिक्षा व्यवस्था के सामने पैदा कठिन स्थिति से निपटने पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय नए शिक्षाशास्त्र और शिक्षक प्रशिक्षण रणनीतियां विकसित करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

निजी स्कूलों को अर्थव्यवस्था की ज्यादा चिन्ता है कि वे अपनी आय कैसे बनाए रखें। सभी असली स्थिति जानते हैं, पर औपचारिक रूप से भारत अभी इस बात पर जोर देता है कि शिक्षा उद्यम मुनाफा कमाने के लिए नहीं है। अनेक स्कूल प्रबंधनों ने मुझे बताया है कि वे अपने निवेश पर ईमानदारी से आमदनी पाने के लिए रिकार्ड ठीक रखने तथा टैक्स अदा करने को तैयार हैं। उनका कहना बिल्कुल ठीक है। इस मोड़ पर नीतिगत मामलों में गंभीर परिवर्तन जरूरी हो गया है।

वर्तमान स्कूल परिदृश्य तथा अपने गांवों को लौट रहे श्रमिकों की पीड़ा देख कर मुझे स्वामी विवेकानन्द का वह पत्र याद आता है जो उन्होंने 23 जून, 1894 को मैसूर के महाराजा को लिखा था। उन्होंने कहा था, 'भारत में सारी बुराइयों की जड़ गरीबों की स्थिति है। निचले तबकों की एकमात्र सेवा उनको शिक्षा देना तथा उनका खोया व्यक्तित्व बहाल करना है।' केन्द्र व राज्य सरकारें अब चाहे जो योजनायें बनाएं, उनको समाज के गरीब तबकों के बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। उनको अवसर देना चाहिए कि वे सारी बाधायें तोड़ कर अपने व्यक्तित्व की पुन: खोज कर सकें। प्रगति, वृद्धि एवं विकास की विचारधारा इन दो आयामों पर केन्द्रित होनी चाहिए।

भारत ने समझ लिया है कि अपने किसानों, कारीगरों व कामगारों को अनदेखा नहीं करना चाहिए जो गांवों को रहने योग्य बनाते हैं। अब हमें उस चरण में पहुंचना चाहिए जिसकी कल्पना जान रस्किन की पुस्तक 'अंटू द लास्ट' पढ़ने के बाद गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में की थी। इसके अनुसार, 'व्यक्ति की अच्छाई सबकी अच्छाई से जुड़ी है। एक वकील के काम का महत्व एक नाई के काम के महत्व जितना है क्योंकि दोनों को काम से आजीविका पाने का समान अधिकार है। एक श्रमिक, किसान और कारीगर का जीवन वास्तव में जीने योग्य है।' ये पंक्तियां पुरानी कहावत पर आधारित हैं कि 'एक व्यक्ति में मौजूद अच्छाई सबकी अच्छाई से जुड़ी है। गांधीजी ने इसे अपने जीवन में उतारा और वे चाहते थे कि पंक्ति के अंतिम व्यक्ति को सभी नीतियों व सभी लोगों द्वारा समान महत्व दिया जाए।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, 'भौतिक सभ्यता और ऐशोआराम भी गरीबों के लिए कार्य सृजन हेतु जरूरी है। मेरा विश्वास ऐसे ईश्वर में नहीं है जो मुझे यहां रोटी न दे सके, भले ही स्वर्ग में चाहे जितना आनन्द मिले।' प्रगति का रास्ता हमारे सामने पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। इसे आने वाले दिनों में समझना होगा तथा धैर्य व प्रतिबद्धता बनाए रखनी होगी।

सतर्कता व जागरूकता कोरोना महामारी के संक्रमण से बचाव का अस्त्रः योगी

पायनियर समाचार सेवा। गोरखपुर

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महायोगी गोरखनाथ योग संस्थान गोरखनाथ मंदिर द्वारा आयोजित ऑनलाइन सप्ताहिक योग प्रशिक्षण शिविर, विशिष्ट व्याख्यान तथा शैक्षिक कार्यशाला को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थाध्यक्षों सहित 110 शिक्षकों को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा ने कहा कि सतर्कता और जागरूकता ही कोरोना महामारी के संक्रमण से बचाव का प्रमुख अस्त्र है। ऑनलाइन योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला का आयोजन करने के पीछे भी संक्रमण से सावधान रहते हुए जीवन को आगे बढाते रहने और समाज का उत्थान करते रहने का पवित्र उद्देश्य निहित है। इस वायरस ने व्यक्ति और समाज जीवन में व्यापक परिवर्तन किया है। यह परिवर्तन आने वाले समय में भी निरंतर होते रहने की प्रबल संभावना है। इसलिए आने वाले समय में सुदृढ तकनीकि संसाधनों की अपरिहार्यता और महत्ता आवश्यक है। इस चुनौतीपूर्ण समय में गुणात्मक तकनीकि संसाधनों का प्रयोग करते हुए जीवन को आगे बढाने में बेहतर परिणाम प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में भी आज तकनीकि संसाधनों की उपयोगिता अनिवार्य हो गयी है। उन्होंने कार्यशाला से जुड़े शिक्षकों से आह्वान करते हुए कहा कि कोरोना के चलते उत्पन्न हुए परिस्थितियों के अनुसार पठन-पाठन के लिए सुदृढ़ डीजिटल प्लेटफार्म तैयार कर सघन संवाद स्थापित करने की महती आवश्यकता ळें उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा और जीवन पद्धति अपने आप में किसी भी प्रकार के संक्रमण को परास्त करने में बहुत कारगर है। इंसेफेलाइटिस के दंश को पूर्वी उत्तर प्रदेश के बच्चों के झेलते हुए अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर उस पर विजय प्राप्त किया है, उसी क्रम में भारत की योग परंपरा और दुनिया के लिए इस महासंकट और महाविनाश के युग में जीवन अमृत बनकर पूरी दुनिया सामने उभरा है। योग न केवल लोगों को आपस में जोड़ता है वरन शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक उत्थान का सबसे बड़ा मार्ग निर्धारक है।

कार्यशाला में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य एवं दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कार्यपरिषद सदस्य प्रमथनाथ मिश्र ने संस्थाओं की मूल्यांकन भूमिका प्रविधि विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

बाढ़ की संभावित स्थिति से निपटने के लिए जिलाधिकारी ने की बैठक

पायनियर समाचार सेवा। वाराणसी

● बैठक से नदारत रहने वाले नगर निगम के बाढ़ नोडल अधिकारी पर गिरी गाज

जिलाधिकारी ने संभावित बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए अधिकारियों के साथ की बैठक किया। बैठक के दौरान डीएम ने बाढ़ कन्ट्रोल रूम को अभी से चालू कराने के निर्देश दिए। बाढ़ कन्ट्रोल रूम पर 24 घंटे सिफ्टवार कर्मचारियों की तैनाती की जाएगी। लेखपाल अगले 2 महीने तक अपने-अपने तैनाती किए गांव में ही निवास करेंगे, ताकि किसी भी आपात स्थिति की सूचना तथा सहायता उपलब्ध करायी जा सके। जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि जो भी बाढ़ चौकी पूर्व में बनती आ रही है, उनमें भी संबंधित विभागों के कर्मचारियों की ड्यूटी अभी से लगा दी जाय। डीएम ने नगर निगम तथा सिविल डिफेंस के द्वारा कार्य योजना तैयार नहीं किए जाने पर नाराजगी जताई है।

उन्होंने नगर निगम के बाढ़ नोडल अधिकारी के बैठक से अनुपस्थित रहने पर उनका वेतन रोकने तथा कारण बताओ नोटिस देने का दिया निर्देश। डीएम कौशल राज शर्मा ने बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए लोकल स्तर पर व्यापरियों को टेण्डर कराने के निर्देश दिए। जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित किया कि बाढ़ राहत शिविर के आस-पास ही कम्युनिटी किचन संचालिए किए जाए, इसके लिए कैटरर्स चिन्हित करते हुए उन्हें निर्देश पहले से ही दे दिए जायें। गोताखोरो को चिन्हित करते हुए उन्हें घाटवार तैनाती के निर्देश दिए।

सूर्य प्रताप शाही ने मत्स्यकी तालाबों का किया अवलोकन

संवाददाता। मिल्कीपुर, अयोध्या

प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने शनिवार को आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि का भ्रमण किया। इस अवसर पर कृषि मंत्री ने प्रसार निदेशालय द्वारा अपने प्रछेत्र पर क्रॉप कैफेटेरिया में धान रोपाई की शुरुआत का अवलोकन किया। इससे अवगत कराते हुए निदेशक प्रसार प्रो. ए पी राव ने बताया कि इस वर्ष इस प्रछेत्र पर धान की आठ किस्मों की रोपाई की जा रही है जो अपने में अलग अलग समयावधि तथा उत्पादन क्षमता की है। कृषि मंत्री ने काले धान की पौध व रोपाई भी देखी। अपने विश्वविद्यालय भृमण के दौरान कुलपति डॉ बिजेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में विकसित किया गया एन एस पी 6 फार्म का लोकार्पण किया। यह फार्म एकीकृत फसल पद्धति के स्वरूप में विकसित किया गया है। कृषि मंत्री ने लोकार्पण के दौरान कुलपति के अद्भुत प्रयास की प्रसंसा करते हुए कहा कि इस प्रछेत्र का किसानों को अवलोकन कराने से उन्हें एक स्थान पर ही कृषि, पशुपालन एमत्स्य पालन एबकरी पालन व फसल उत्पादन का वैज्ञानिक तकनीक से अवगत कराया जा सकेगा। कृषि मंत्री शाही को कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह ने उद्यान प्रछेत्र, सस्य विज्ञान प्रछेत्र शैक्षणिक पशुधन प्रछेत्र तथा मत्स्यकीय तालाबों का अवलोकन भी किया।

परमहंस दास ने संतों के साथ शी जिनपिंग का फूंका पुतला

● गलवान घाटी में भारतीय सैनिकों पर हुए हमले का अयोध्या के संत कर रहे हैं विरोध

संवाददाता। अयोध्या

आचार्य पीठ तपस्वी छावनी के महंत परमहंसदास की अगुवाई में शनिवार को संतों ने चीनी राष्टपति शी जिनपिंग और फ्लैग का पुतला फूंका। साथ ही चीन.पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे भी लगाए। पुतला दहन का कार्यक्रम तपस्वी छावनी आश्रम के सामने किया गया। इस मौके पर स्वामी परमहंस ने कहा कि चीन ने कायराना हरकत कर भारतीय जवानों पर धोखे से जो हमला किया। वह बेहद ही निंदनीय है चीन और पाकिस्तान कभी भी विश्वास करने योग्य नही हैं। वैसे भी पाकिस्तान जहां आत्मघाती हमलावर तैयार करता है। तो वहीं दूसरी तरफ चीन कोरोना जैसे जैविक हथियार को तैयार कर पूरी दुनिया में तबाही मचाए हुए है। अब जितने भी मानवतादी राष्ट हैं। उन सबको एकजुट हो करके चीन और पाकिस्तान को दुनिया के नक्शे से समाप्त करने का समय आ गया है। उन्होंने कहा कि शनिवार को मैंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने खून से लिखा हुआ पत्र स्पीड पोस्ट के माध्यम से भेंजकर। यह मांग किया है कि चीन से हर तरह के व्यापारिक सम्बंध समाप्त किए जाएं। क्योंकि चीन अपना व्यापार भारत में फैलाकर आर्थिक रूप से मजबूत होता है और भारत को ही घुड़की दे रहा है। इसलिए चीन से जब हर तरह का व्यापार समाप्त हो जायेगा। तो निश्चित रूप से वह 5 साल के अंदर अपनी औकात में आ जायेगा। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी से आशा और उम्मीद है उनके नेतृत्व में निश्चित रूप से हमारा देश आगे बढ़ रहा है। चीन अब 1962 वाला युद्ध भूल जाए। क्योंकि अब नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश है। जो भी भारत से टकरायेगा उसको गंभीर परिणाम भुगतना पड़ेगा।

चौक घंटाघर में चीनी राष्ट्रपति का हिन्दू युवा वाहिनी ने फूंका पुतला

अयोध्या। हिन्दू युवा वाहिनी ने पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने भारतीय सैनिकों के उपर चीनी सैनिकों के द्वारा किये गये कायराना हमले के विरोध में चौक घंटाघर पर चीनी राष्टपति का पुतला फूंका। चाईनीज समानों को जलाकर इसके बहिस्कार का आवाहन भी किया। पुतला दहन के बाद शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित करके पूर्वी लद्दाख की गलवानी घाटी में शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दी। हिन्दू युवा वाहिनी के जिला प्रभारी पवन मिश्रा ने कहा कि भारतीय सीमा की सुरक्षा के लिए अदम्य साहस व शौर्य का परिचय देकर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर सैनिकों के सर्वोच्च बलिदान को सदैव याद रखा जायेगा। जिलाध्यक्ष राकेश सिंह ने कहा कि हम अपनी एक इंच भूमि से भी कभी समझौता नहीं करेंगे। चीन को हर मोर्चे पर करारा जवाब दिया जायेगा। जिला संयोजक संजय सिंह ने कहा कि चीन की इस कायराना हरकत को लेकर आज पूरा देश गुस्से है। जिला महामंत्री ललित सिंह ने कहा कि चीन की यह हरकत आने वाले समय में उसको काफी महंगी साबित होने वाली है। महानगर अध्यक्ष शम्भूनाथ जायसवाल ने कहा कि चीन को भारत सैन्य, आर्थिक, राजनैतिक व मानसिक रुप से करारा जबाव देने के लिए तैयार है। इस अवसर पर अंजनेय सेवा समिति के अध्यक्ष शशिकांत दास, शिया वक्फ वोर्ड के पूर्व सदस्य अफताब हुसैन जिया, संतोष मिश्र, कुलभूषण द्विवेदी, दीपक पाण्डेय, मनीष पाण्डेय, संदीप निगमए शैलेन्द्र सिंह, आकाश सोनी, दुर्गेश गुप्ता, अभय मिश्र, संदीप सिंह, संदीप आचार्य, केपी तिवारी, विक्रम मणि तिवारी, आकाश गुप्ता, मनीष तिवारी, किंग कौशल समेत हिन्दु युवा वाहिनी के कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

भूसा बैंक में ग्राम प्रधान व जनपदवासियों ने बढ़ चढ़कर किया भूसा दानः डीएम

कानपुर देहात। डीएम राकेश कुमार सिंह के कुशल निर्देशन में मुख्य विकास अधिकारी जोगिन्दर सिंह ने भूसा बैंक का संचालन किया गया है जिसके अन्तर्गत ग्राम प्रधान एवं सम्मानित जनपदवासियों द्वारा भूसा स्वेच्छा से बैंक में भूसा दान किया गया। जनपद में कुल ग्राम पंचायत 640 जिसमें भूसा बैंक में भूसा दान किये जाने वाली ग्राम पंचायत 196, ग्राम प्रधानों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 2360 क्विन्टल, सम्मानित नागरिक 14, सम्मानित नागरिकों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 652 क्विटल, कुल प्राप्त भूसा 3013 क्विटल प्राप्त हुआ है। जिलाधिकारी ने कहा कि भूसा बैंक में ग्राम प्रधान व जनपदवासियों ने बढ़ चढकर भूसा दान किया है। मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि विकास खण्ड अकबरपुर के अन्तर्गत कुल ग्राम पंचायत 59 जिसमें भूसा बैंक में भूसा दान किये जाने वाली ग्राम पंचायत 17, ग्राम प्रधानों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 200 क्विन्टल, सम्मानित नागरिक 1, सम्मानित नागरिकों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 25 क्विटल, कुल प्राप्त भूसा 225 क्विटल। इसी प्रकार अमरौधा विकास खण्ड के अन्तर्गत कुल ग्राम पंचायत 73 जिसमें भूसा बैंक में भूसा दान किये जाने वाली ग्राम पंचायत 25, ग्राम प्रधानों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 262 क्विन्टल, सम्मानित नागरिक 2, सम्मानित नागरिकों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 70 क्विटल, कुल प्राप्त भूसा 332 क्विटल, डेरापुर विकास खण्ड के अन्तर्गत कुल ग्राम पंचायत 55 जिसमें भूसा बैंक में भूसा दान किये जाने वाली ग्राम पंचायत 22, ग्राम प्रधानों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 305 क्विन्टल, सम्मानित नागरिक 2, सम्मानित नागरिकों द्वारा भूसा बैंक में प्राप्त भूसा 22 क्विटल, कुल प्राप्त भूसा 327 क्विटल, झींझक ब्लाक में कुल प्राप्त भूसा 121 क्विटल, मैथा ब्लाक में 168 क्विटल, मलासा ब्लाक में 369, राजपुर ब्लाक में 442, रसूलाबाद ब्लाक में 186, सन्दलपुर में 313, सरवनखेडा ब्लाक में 529 क्विटल भूसा प्राप्त हुआ है।

भारी बरसात से हर जगह जल भराव

● तमसा नदी भी उफान पर

संवाददाता। अम्बेडकरनगर

शनिवार सुबह से हो रही भारी बरसात से जिला मुख्यालय के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रो में भी जल भराव हो गया है। खेत पानी से लबालब भर गये है ,तालाबो में भी बरसात का पानी भरने लगा है। जिला मुख्यालय पर स्थित तमसा नदी में भी उफान आने लगा है । हैरत इस बात को लेकर है कि नदी की सफाई किए जाने के बाद नदी का पानी अब पूरब की तरफ नहीं बल्कि पश्चिम की तरफ बह रहा है जो काफी चौकाऊ है। वैसे तो शुक्रवार की शाम से ही बरसात का सिलसिला शुरू हो गया था लेकिन शनिवार की सुबह से तेज बरसात का सिलसिला शुरू हुआ वह दिनभर जारी रहा । रुक रुक कर हो रही तेज बरसात से खेत जलमग्न हो गए। जिला मुख्यालय पर नालियों की सफाई ना होने से बरसात का पानी सड़कों पर जमा हो गया। बस स्टेशन क्षेत्र में तो घुटने भर पानी जमा रहा। इसके अलावा लोक निर्माण विभाग के कार्यालय तथा कृषि भवन में भी बाढ़ का दृश्य देखने को मिला। नगर पालिका ने बरसात पूर्व नालों की सफायी से मुंह मोड़ रखा था। आमतौर पर बरसात शुरू होने के पूर्व नालों की सफायी हो जाया करती थी लेकिन गत दो वर्षों से ऐसा नही हो रहा है। इस बार भी नालों व नालियों की सफाई नही करायी गयी जिससे बरसात होने के बाद असलियत सामने आ गयी। पानी का बहाव बाधित होने के कारण सड़कों पर घण्टो जलभराव रहा जिससे लोगो को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। छोटी गाड़िया बस स्टेशन पर डूबती देखी गई। ग्रामीण क्षेत्रो में भी बरसात से स्थिति बिगड़ गयी है। जगह-जगह जलभराव हो जाने के कारण आवागमन में भी परेशानी हो रही है। खेतो में भी जल भराव हो गया है।

मनरेगा के तहत प्रवासी श्रमिकों को मिल रहा काम

● रोजगार देने के उद्देश्य से काम को दिया जा रहा बढ़ावा

संवाददाता। अम्बेडकरनगर

मजदूरों की सेहत सुधारने में मनरेगा योजना कारगर साबित हो रही है। जहागीरगंज विकास खण्ड में कई ग्रामसभाओं में हजारों प्रवासी मजदूरों सहित गरीबों को रोजगार मिल रहा है। मालूम हो ग्राम पंचायत देवरिया लाला में लाक डाउन में प्रवासी मजदूरों कामगारों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार देने के लिए ग्रामीण स्तर पर मनरेगा कार्य को बढ़ावा दे रही है। ऐसे में ग्रामप्रधान श्रीमती रंजना देवी ने अब तक लगभग 150 मजदूरों को 2500 से 3000 के लगभग श्रमाँश के काम करवा दिया है। ग्रामप्रधान प्रतिनिधि विनोद कुमार एवं रोजगार सेवक ऊषा देवी ने बताया कि ग्रामसभा में मनरेगा योजना के माध्यम से 5 मई से लेकर अबतक 2500 श्रम दिवस कार्य कराया जा चुका है जिसमे प्रवासी मजदूरों को 900 श्रम दिवस,कार्य प्राथमिकता पर दिया गया है जिससे प्रवासी मजदूरों को आर्थिक सहायता होती रहे। प्रधान प्रतिनिधि ने बताया कि गाँव में मनरेगा मजदूरों से पोखरे की खुदाई, नदी किनारे तटबन्ध निर्माण, खेत समतलीकरण एवं दलसिंगार गोंड़ के चक में तालाब की खुदाई करायी जा रही है जिससे लगभग 150 मजदूरों को गांव में ही रोजगार दिया जा रहा है।

बीआरडी के एसआईसी कोविड-19 पॉजिटिव

पायनियर समाचार सेवा। गोरखपुर

दस चिकित्सकों और चार स्टाफ नर्स के कोविड-19 संक्रमित होने के बाद अब बीआरडी मेडिकल कालेज से सम्बद्ध नेहरू अस्पताल के सुपरिटेंडेंट आफ चीफ (एसआईसी) कोविड-19 पाजिटिव पाए गए हैं। शुक्रवार की रात उनके नमूने की रिपोर्ट पाजिटिव आयी। अब उनके सम्पर्क में आए चिकित्सकों, कर्मचारियों व अन्य लोगों को चिन्हित किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग और बीआरडी मेडिकल कालेज ने सीआईसी के कोविड-19 संक्रमित होने की पुष्टि की है।

बीआरडी मेडिकल कालेज में कोविड-19 संक्रमण का दायरा बढ़ता जा रहा है। बीआरडी मेडिकल कालेज में चिकित्सक के संक्रमित होने का पहला मामला 6 जून को आया था। एनस्थीसिया विभाग के एक चिकित्सक कोविड-19 संक्रमित मिले। इसके बाद से अब तक 10 चिकित्सक व चार स्टाफनर्स कोविड-19 पाजिटिव हुए हैं। एक चिकित्सक के परिवार के कई सदस्य भी कोविड-19 पाजिटिव हुए हैं। बीआरडी मेडिकल कालेज के नेहरू चिकित्सालय के एसआईसी की तबियत चार दिन पूर्व खराब हुई। उन्हें बुखार और सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। इसके बाद उनका नमूना जांच के लिए लिया गया। जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद बीआरडी मेडिकल कालेज प्रशासन सकते में आ गया है। जानकारी के अनुसार एसआईसी मेडिकल कालेज परिसर के बाहर एचएन सिंह चैराहे के पास अपने निजी आवास में रहते हैं। नेहरू चिकित्सालय 950 बेड का है। कोविड-19 महामारी के बाद से अभी मेडिकल कालेज में इमर्जेंसी सेवाएं संचालित हो रही है। मेडिकल कालेज के सुपर स्पेशियलिटी ब्लाक को लेवल-3 कोविड हास्पिटल बनाया गया हैं जहां गोरखपुर-बस्ती मंडल के गंभीर कोविड-19 रोगी भर्ती किए जा रहे हैं। अभी तक जो भी चिकित्सक व स्टाफ नर्स कोविड-19 पाजिटिव पाए गए हैं, उनकी ड्यूटी लेवल-3 कोविड अस्पताल में नहीं लगी थी। ये मेडिकल कालेज में अपनी ड्यूटी कर रहे थे। अभी तक कोविड-19 संक्रमण के स्रोत का पता नहीं चल सका है। अनुमान लगाया जा रहा है कि इमर्जेंसी में आया कोई मरीज या आपरेशन किया कोई मरीज कोविड-19 संक्रमित था जिससे यह संक्रमण चिकित्सकों में आया। नेहरू चिकत्सालय में एसआईसी के अलावा महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद मुख्य चिकत्सा अधीक्षक सीएमस, चिकित्सा अधीक्षक एमएस का होता है। चूंकि सीआईसी पूरे अस्पताल प्रबंधन का कार्य देखते हैं, इसलिए उनसे चिकित्सकों, कर्मचारियों व अन्य स्टाफ का काफी मिलना-जुलना होता है।

बरामदे में सो रही महिला की गोली मारकर हत्या

पायनियर समाचार सेवा। वाराणसी

बड़ागांव थाना क्षेत्र के नेवादा (सालिवाहनपुर) गांव में शुक्रवार की रात घर के बरामदे में सो रही 45 वर्षीय पार्वती देवी की अज्ञात बदमाशों ने हत्या कर दी। बताया जा रहा है कि बरामदे में सो रही महिला को अज्ञात बदमाशों ने गोली मारकर हत्या कर दी। बरामदे में ही चंद कदम दूर सोई एक अन्य वृद्ध महिला को इसकी भनक तक नहीं लगी। सुबह सोकर उठने पर वृद्ध महिला मृतका को खुन से लथपथ देखकर शोर मचाने लगी। शोर सुनकर आसपास के लोग एकत्रित हो गए। परिजनों ने हत्या की सूचना पुलिस को सूचना दिया। घटना के समय परिजन दिन में ही रिश्तेदार के घर शादी समारोह में भाग लेने गये थे। घटना की सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष बड़ागांव मय फोर्स मौके पर पहुंचे। घटना की जांच के लिए डाग स्क्वायड टीम एवं फारेंसिक टीम को बुलाया गया। हत्या की सूचना मिलते ही वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रभाकर चौधरी, एसपी क्राईम ज्ञानेंद्र प्रसाद एवं सीओ बड़ागांव ज्ञानेंद्र राय मौका मुआयना किया। फिलहाल हत्या के कारणों का पता नहीं चला है। घटना के संबंध में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने कहा कि हत्या का कारण और हत्यारा अज्ञात है जल्द ही घटना का खुलासा किया जायेगा। पुलिस ने शव को कब्जे में ले पीएम के लिए भेज दिया।

फिरोजाबाद सड़क हादसे में मेजा के पांच लोगों की मौत से मचा हड़कंप

प्रयागराज। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस वे में फिरोजाबाद के पास शनिवार तड़के भीषण सड़क हादसा हो गया। हादसे में कार सवार पांच लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। जबकि एक महिला गंभीर रूप से घायल है। महिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे की खबर पाकर फिरोजाबाद पुलिस मौके पर पहुंच गयी। हादसे का शिकार हुए लोग प्रयागराज के रहने वाले हैं। फिरोजाबाद जनपद के थाना नसीरपुर स्थित हाइवे पर एक ट्रक खड़ा था। आगरा से लखनऊ की ओर जा रही कार को ट्रक से टक्कर हो गई। स्थानीय लोगों के मुताबिक कार की रफ्तार तेज थी। हादसे में कार के परखच्चे उड़ गए। कार सवार पांच लोगों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। जबकि एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गयी। घायल को एंबुलेंस से अस्पताल भेज दिया गया। जानकारी के अनुसार कार सवार सभी लोग दिल्ली से प्रयागराज जा रहे थे। मृतकों में रविनेश पांडेय (45) पुत्र अखिलेश पांडेय रूबी (42) पत्नी रविनेश पांडेय लक्ष्य पांडेय (4) पुत्र रविनेश, केशव पांडेय (17) पुत्र सतेंद्र पांडेय व नंदनी पांडेय (7) पुत्री सतेंद्र पांडेय निवासी गुसोरा थाना मेजा प्रयागराज शामिल हैं। जबकि प्रियंका पांडेय पत्नी सतेंद्र पांडेय गंभीर रूप से घायल है। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। प्रयागराज के इस परिवार के लोग शिक्षक हैं।

गरीब कल्याण योजना का प्रधानमंत्री ने किया शुभारम्भ

गोरखपुर। अपने गांव वापस पहुंचे कामगारों/प्रवासी मजदूरों के लिये प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना का शुभारम्भ डिजिटल माध्यम से किया गया। जिसका सीधा प्रसारण सूचना और तकनीकी मंत्रालय के कॉमन सर्विस सेंटरों के माध्यम से देश के ग्रामीण नागरिकों के मध्य किया गया। उसी के क्रम में आज गोरखपुर जनपद के कुल 710 केंद्रों से 8515 नागरिकों ने कार्यक्रम का लाईव प्रसारण देखा गया। बताते चले कि इन्हीं कॉमन सर्विस सेंटरों के माध्यम से स्थानीय नागरिकों को कोरोना महामारी के काल में स्थानीय नागरिकों को विभिन्न प्रकार के आवश्यक सेवा सहयोग डिजिटल माध्यम से प्रदान की जा रही है। जिला प्रबंधक विकास कुमार ने बताया कि इन प्रवासी मजदूरों को ध्यान में रखते हुए सीएससी केंद्रों के माध्यम से आज विभिन्न प्रकार के कौशल विकास समेत अन्य ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने के साथ-साथ ग्रामीण नौकरी वेबसाईट के माध्यम से इनका पंजीकरण कर इन्हें स्थानीय स्तर पर रोजगार प्राप्त करने में सहयोग भी किया जा रहा है। स्वरोजगार के इच्छुक कामगारों को एमएसएमई योजना अन्तर्गत पंजीकरण कराकर इनके लिये ऋण लिये जाने में मदद कर रहे हैं। साथ ही श्रमिकों के सरकारी लाभार्थी योजना का लाभ लिए जाने हेतु आवश्यक श्रमिक पंजीकरण भी इन्हीं कॉमन सर्विस सेंटरों के माध्यम से किया जा रहा है।

गोकशी में वांछित फरार अपराधी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बीकापुर अयोध्या। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर बीकापुर क्षेत्र में अपराधियो के रोकथाम व गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत 20 जून शनिवार को उ0नि0 चन्द्रशेखर यादव मय हमराह का0 धीरज तिवारी का0 रवि रंजन तिवारी पुलिस टीम को मुखबिर की सूचना पर फरार अभियुक्त को खद्दू पुत्र कुन्नी निवासी बनकट थाना कोतवाली बीकापुर गोवध निवारण अधि0 मे वंछित था जो काफी समय से फरार चल रहा था। अभियुक्त पूर्व में गोकशी सहित अन्य अपराध में भी जेल जा चुका है अभियुक्त को शनिवार को सुबह मलेथू कनक रेलवे स्टेशन के पास से गिरफ्तार कर मेडिकल परीक्षण कराने के बाद जेल भेजा गया।

चार के विरुद्ध छेड़छाड़ दलित उत्पीड़न एक्ट का मुकदमा दर्ज

बीकापुर, अयोध्या। बीकापुर थाना क्षेत्र के एक गांव की बालिका ने चार लोगों के खिलाफ छेड़छाड़ दलित उत्पीडन एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में बीकापुर कोतवाली में एक माह बाद कप्तान के निर्देश पर दर्ज किया गया मुकदमा। पीड़िता बालिका ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आशीष तिवारी को दिए गए प्रार्थना पत्र में आरोप लगाया है कि मैं कोछा बाजार से घरेलू सामान लेकर साइकिल से घर वापस जाते समय 22मई को जब ग्राम ससौली राजकीय नलकूप पर पहूंची तभी वहां पर पहले से मौजूद चार लोगों ने मेरी साइकिल पकड़ कर मुझे ज़मीन पर पटक दिया और अश्लील हरकत करने लगे जब इसका विरोध किया तो लात घूसो से मारा.पीटा। जिसकी शिकायत लेकर बीकापुर कोतवाली गई लेकिन मेरी नहीं सुनी और निराश हो वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को आपबीती लिखित शिकायत पत्र देकर कार्रवाई की फरियाद करने पर कप्तान के निर्देश पर अंतोगत्वा बीकापुर कोतवाली पुलिस को आरोपी के खिलाफ धारा 323, 504, 354 व दलित उत्पीडन एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। जिसकी विवेचना सीओ पुलिस कोमल प्रसाद मिश्र करेंगे।

करेण्ट लगने से युवक की मौत

रसूलाबाद, कानपुर देहात। करंट लगने से नव युवक की जान चली गई। सूचना पुलिस को दी गई। रसूलाबाद थाना क्षेत्र के। कस्बा के तुलसी नगर निवासी श्यामू 20 पुत्र स्वण्उदय प्रताप तुलसीनगर केबिल से उतरे करंट से झुलस गया। परिजन उसे अस्पताल ले जा रहे थे तभी उसने दम तोड़ दिया। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया। गौरतलब हो कि म्रतक के पिता पुलिस विभाग में थे और उनकी मौत डाकुओं से मुठभेड़ में हो गई थी। वह इटावा में तैनात थे।

कानून व्यवस्था के सुधार के लिये एसपी ने थानों में किया फेरबदल

कानपुर देहात। एसपी अनुराग वत्स ने जनपद की कानून व्यवस्था को दुरूस्त करने के लिये 11 थानों के प्रभारियों के कार्यक्षेत्र में फेरबदल किया। एसपी ने बताया कि जनपदीय स्थापना बोर्ड के अनुमोदन के बाद अकबरपुर कोतवाल आमोद कुमार सिंह को मॅगलपुर थाने, चन्द्रशेखर दुबे भोगनीपुर कोतवाली से रसूलाबाद थाने, रामप्रकाश को देवराहट थाने से राजपुर, रामबहादुर पाल को मूसानगर से सिकन्दरा थाने, रजनेश कुमार चौहान को सिकन्दरा थाने से मूसानगर, नवीन कुमार को अपराध शाखा से देवराहट थाना, शिवकुमार सिंह राठौर को मॅगलपुर थाने से वाचक एसपी, तुलसीराम पाण्डेय को रसूलाबाद थाने से सदर अकबरपुर कोतवाली, धर्मेन्द्र सिंह वाचक एसपी से भोगनीपुर कोतवाल, दिग्विजय सिंह थाना बरौर से अपराध शाखा, विक्रम सिंह को थानाध्यक्ष राजपुर से थानाध्यक्ष बरौर बनाया गया है।

आज मनाया जायेगा अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस

गोरखपुर। सम्पूर्ण भारतीय रेल पर 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जायेगा। इस अवसर पर प्रातः 07.00 बजे से पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी, लखनऊ एवं इज्जनगर मंडलों तथा मुख्यालय, गोरखपुर में रेल अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों द्वारा कोरोना संक्रमण काल में बचाव हेतु सामूहिक रूप से इकट्ठा न होकर, सामाजिक दूरी का पालन करते हुए अपने-अपने घरों से योगा कार्यक्रम में सहभागिता की जायेगी। आयुष मंत्रालय द्वारा योगा कार्यक्रम का प्रसारण टी.वी.चैनलों, सोशल मीडिया चैनलों, आयुष मंत्रालय की बेसवाइट, योगा पोर्टल, फेसबुक, इस्टाग्राम, ट्वीटर, यू-ट्यूब एवं अन्य संचार माध्यमों से किया जायेगा जिसमें योग्य योग प्रशिक्षक द्वारा योगा कराया जायेगा। कोविड-19 के कठिन समय में इम्यूनिटी बढ़ाने हेतु योगासन एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया जायेगा। उक्त जानकारी मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने दी है।

गाड़ियों के समय पालन में होगा अपेक्षित सुधार

गोरखपुर। कोविड-19 के कारण लागू देशव्यापी लॉकडाउन एवं कोरोना संक्रमण के इस कठिन समय में भी पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा अनेकों विकास के कार्य सम्पादित किये जा रहे हैं। इसी क्रम में वाराणसी मंडल के भटनी-औंड़िहार रेल खंड पर 125 रूट किलोमीटर के विद्युतीकरण का चुनौतीपूर्ण कार्य पूर्ण कर भटनी-किड़िहरापुर के मध्य तथा औड़िहार-इन्दारा के मध्य इलेक्ट्रिक इंजन ट्रायल सम्पन्न हुआ। विद्युतीकृत इन रेल खण्डों का शीघ्र रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा निरीक्षण किया जायेगा। इस खंड के विद्युतीकरण से अब गोरखपुर से वाराणसी के मध्य एक बड़ा हिस्सा अब विद्युतीकृत रेल खण्डों से जुड़ जायेगा, जिससे अन्य लाभों के अतिरिक्त गाड़ियों के समय-पालन में भी अपेक्षित सुधार होगा। ऊर्जा संरक्षण को लेकर रेल प्रशासन बेहद सजग है। इसी क्रम में पूर्वोत्तर रेलवे ने पिछले वर्ष 540 रूट किमी. रेलवे टैऊक के विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण किया। इस खण्ड के अतिरिक्त अन्य खण्डों पर भी विद्युतीकरण का कार्य लगभग पूर्ण कर लिया गया है। लखनऊ मण्डल के गोण्डा-सुभागपुर खण्ड (11रूट किमी.) पर भी इलेक्ट्रिक इंजन का ट्रायल सम्पन्न हुआ। इज्जतनगर मण्डल पर कासगंज-बरेली खण्ड (108 रूट किमी.) के विद्युतीकरण का कार्य भी लगभग पूर्ण कर लिया गया है। इन तीनों खण्डों के विद्युतीकरण होने के उपरान्त पूर्वोत्तर रेलवे पर कुल 1967 रूट किमी. रेलपथ विद्युतीकृत हो जायेगा ।

महिला थाना प्रभारी ने काटा चालान

गोरखपुर। कोविड-19 कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के बाद शासन ने मास्क लगाना अनिवार्य कर दिया है। दो पहिया वाहन पर दो सवारी चलना भी मना है। बिना हेलमेट के गाड़ी चलाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसके अलावा चार पहिया वाहन में भी लोगों के बैठने की संख्या निर्धारित कर दी गई है। प्रशासन लगातार लोगों से अपील कर रहा है कि वह शासन के नियमों का पालन करें। इसके बाद भी लोग बाज नहीं आ रहें हैं। इसके लिए एसएसपी के निर्देश पर अभियान भी चलाया जा रहा है। इसी क्रम में आज महिला थाना प्रभारी ने नौकायन पर जांच अभियान चलाया।कई लोग नियमों का उल्लंघन करते हुए पाये गए। महिला थाना प्रभारी ने ऐसे लोगों का चालान किया।

नदी की जलधारा में बालू का खनन करने पर तीन पट्टाधारकों पर 5-5 लाख रुपये का लगा जुर्माना

कानपुर देहात। कानपुर देहात जनपद मे संचालित साधारण बालू के खनन क्षेत्र खरका के-1,खरका के-2 व दौलतपुर कछार खण्ड सं0 02 में नदी की जलधारा में खनन करने की जॉच उप जिलाधिकारी भोगनीपुर व खान निरीक्षक कानपुर देहात से करायी गयी। जॉच में नदी की जल धारा में साधारण बालू का खनन की पुष्टि होने पर जिलाधिकारी महोदय द्वारा 5-5 लाख रूपये का जुमार्ना लगाते हुए एक सप्ताह में जुर्माने की धनराशि जमा करने हेतु निर्देशित किया गया तथा स्पष्टीकरण भी तलब किया गया है। उपरोक्त जानकारी देते हुए जिला खान निरीक्षक केबी सिंह ने बताया कि नदी की जलधारा पर बालू का खनन करने पर पट्टाधारको पर जुर्माना लगाया गया है तथा उपरोक्त निर्देशों का पालन न करने पर पट्टा निरस्त कर ब्लेक लिस्ट करने की चेतावनी भी दी गयी है। पट्टाधारको में में0 घनाराम इन्फ्रा इंजीनियर्स प्रा0लि0 निदेशक-विशन सिंह निवासी स्टेशन रोड पारीछा जनपद झॉसी। में. हरिहर मिनरल्स एल एल पी निदेशक-रामअवतार सिंह, निवासी 405 ख नया पटेल नगर, कालीदास स्कूल के पास उरई जनपद जालौन। में0 एन्थ्रासाइट इन्फ्रा प्रा.लि. निदेशक अंकित सचान पुत्र संतोष सचान निवासी बी-202 गोपालग्रीन रतन लाल नगर थाना गोविन्द नगर,कानपुर है।

हंडिया में कारोबारी से डेढ़ लाख की लूट

प्रयागराज। हंडिया थाना क्षेत्र में शनिवार को बदमाशों ने कारोबारी से एक लाख 49 हजार रुपये लूट लिये। बाइक सवार तीन बदमाशों ने लूट की वारदात को अंजाम दिया। इस वारदात से इलाके में सनसनी फैल गयी। लूट की वारदात को अंजाम देने के बाद लूटेरे बाइक से फरार हो गए।

कोलकाता के एक अखबार में भारत विरोधी छपे लेख व चीन के राष्ट्रपति के खिलाफ प्रदर्शन करतीं भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकर्ता

राज्यसभा में विपक्ष के मुकाबले राजग की शक्ति और बढ़ी

भाषा। नई दिल्ली

राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव के संपन्न होने के साथ उच्च सदन में विपक्ष के मुकाबले भाजपा नीत राजग की शक्ति और बढ़ गई है तथा भगवा दल के पास राज्यसभा में अब 86 सीटें और कांग्रेस के पास महज 41 सीटें हैं। भाजपा के नेतृत्व वाले राजग के सदस्यों की संख्या अब 245 सदस्ईय सदन में लगभग 100 पहुंच गई है। यदि अन्नाद्रमुक (09), बीजद (09), वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (06) जैसे दलों का समर्थन और कई संबद्ध नामांकित सदस्यों का समर्थन गिना जाता है तो मोदी सरकार के समक्ष वहां किसी गंभीर संख्यात्मक चुनौती का सामना करने की चुनौती नहीं है। चुनाव आयोग ने 61 सीटों पर द्विवार्षिक चुनाव कराने की घोषणा की थी जिनमें से 55 सीटों पर मार्च में चुनाव होना था लेकिन कोरोना वायरस महामारी के कारण इसमें देरी हुई।पहले ही 42 सदस्य निर्विरोध चुने गए थे और शुक्रवार को 19 सीटों पर हुए चुनाव में से भाजपा ने आठ सीटों, कांग्रेस और वाईएसआर कांग्रेस ने चार-चार सीटों और तीन अन्य ने जीत दर्ज की। मध्य प्रदेश और गुजरात में कांग्रेस के कई विधायकों के दलबदल के कारण भाजपा ने अपनी संख्या के बल पर कुछ और सीटें जीतीं। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि भाजपा ने 17, कांग्रेस ने नौ, भाजपा के सहयोगी जद(यू) ने तीन, बीजद और तृणमूल कांग्रेस ने चार-चार, अन्नाद्रमुक और द्रमुक ने तीन-तीन, राकांपा, राजद और टीआरएस ने दो-दो और शेष सीटें अन्य ने जीतीं। इन 61 नए सदस्यों में से 43 पहली बार चुने गए है जिनमें भाजपा के ज्योतिरादित्य सिंधिया और कांग्रेस के मल्लिकार्जुन खड़गे शामिल हैं। दोनों लोकसभा के सदस्य थे लेकिन 2019 के चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवगौड़ा और लोकसभा के पूर्व उपाध्यक्ष एम थंबीदुरई भी राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुए हैं। ऊपरी सदन में विपक्ष का संख्या बल अधिक होने के कारण पहले कार्यकाल में मोदी सरकार के विधाई एजेंडे को संसद में अक्सर अड़चनों का सामना करना पड़ता था और पहले कुछ सालों में भाजपा की तुलना में कांग्रेस के पास अधिक संख्या थी।हालांकि भाजपा ने विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन किया और कांग्रेस के हाथ से कई राज्य निकल गए जिससे सदन में सत्ता पक्ष के सदस्यों की संख्या में धीमी लेकिन लगातार वृद्धि हुई।

'मिले अवसर का सदुपयोग करें सदस्य'

भाषा। नई दिल्ली

राज्यसभा के सभापति एम वेंकैया नायडू ने शनिवार को उच्च सदन के नव-निर्वाचित सदस्यों से कहा कि वे अगले छह साल में देश के बदलाव में योगदान के लिए मिले अवसर का सदुपयोग करें। नायडू ने नए सदस्यों से कहा कि राज्यसभा का सदस्य बनना सम्मान की बात है। यह सदन देश में कानून बनाने और शासन का मार्ग दर्शाने वाले संघवाद के सिद्धांत पर स्थापित है। देश के 20 राज्यों से नव-निर्वाचित 61 सदस्यों के लिए ट्विटर पर अपने संदेश में नायडू ने लिखा, करीब 20 राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व करने वाले और निर्दलीय 61 सदस्य हमारे राजतंत्र की विविधता को रेखांकित करते हैं और हमारी एकता के प्रति दृढ़संकल्प की भावना को भी। उन्होंने कहा, नए सदस्यों में वरिष्ठ और पहली बार सदन में आने वाले, दोनों तरह के सदस्य हैं। सभी अपने देश में बदलाव लाने और 21वीं सदी को भारत का बनाने की प्रतिबद्धता रखते हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि सभी निर्वाचित सदस्य अगले छह साल के लिए मिले इस अवसर का सदुपयोग करेंगे। नए सदस्यों का स्वागत करते हुए नायडू ने आशा व्यक्त की कि वह जल्द से जल्द उन सभी से मिलेंगे।

पत्नी की हत्या के बाद पुलिस जवान ने की आत्महत्या

भाषा। राजनांदगांव

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित राजनांदगांव जिले में पुलिस जवान ने पत्नी की हत्या करने के बाद खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली।राजनांदगांव जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गोरखनाथ बघेल ने शनिवार को बताया कि मानपुर थाना क्षेत्र में शुक्रवार रात विवाद के बाद पुलिस आरक्षक मुकेश मनहर (32) ने पत्नी बबीता (26) की अपने सर्विस रायफल से गोली मारकर हत्या कर दी तथा बाद में खुद को गोली मार ली।बघेल ने बताया कि मुकेश का परिवार मानपुर थाना परिसर में बने मकान में रहता था। पुलिस को जानकारी मिली है कि शुक्रवार रात किसी बात पर विवाद होने के बाद मुकेश ने पत्नी को गोली मार दी। बाद में खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली।पुलिस अधिकारी ने बताया कि जब वहां अन्य जवानों ने गोली चलने की अवाज सुनी तब सब मुकेश के घर की ओर भागे। बाद में उन्होंने मुकेश के घर से उसकी पत्नी और मुकेश का शव बरामद किया।उन्होंने बताया कि पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और मामले की जांच की जा रही है।

मुर्गीपालन फार्मों में कोरोना वायरस की खबर पूरी तरह भ्रामक एवं आधारहीन

भाषा। भोपाल

मध्यप्रदेश के पशुपालन विभाग ने सोशल मीडिया में प्रदेश के कुछ मुर्गीपालन फार्मों में कोरोना वायरस संक्रमण फैलने की वायरल हुई खबर को पूरी तरह से भ्रामक एवं आधारहीन बताया है। इसके अलावा, सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि कुक्कुट उत्पादों का सेवन पूरी तरह से सुरक्षित है।

मध्यप्रदेश जनसंपर्क विभाग के एक अधिकारी ने शनिवार को बताया, कोरोना वायरस के संक्रमण से मुर्गीपालन फार्मों एवं कुक्कुट उत्पादनों को किसी भी प्रकार का कोई खतरा नहीं है। कुक्कुट उत्पादों का सेवन पूरी तरह से सुरक्षित है। उन्होंने कहा, संचालक पशुपालन आर. के. रोकड़े ने इस संबंध में स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी आदेश का हवाला देते हुए मुर्गीपालन फार्म में कोरोना वायरस की वायरल खबर का खंडन किया। रोकड़े ने कहा कि पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त सचिव द्वारा इस संबंध में पशुपालन विभाग के सचिवों को पत्र भी लिखा है। उन्होंने कहा, मुर्गीपालन में कोरोना वायरस की वायरल हो रही खबर पूरी तरह भ्रामक और आधारहीन है। रोकड़े ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा अपने पत्र में कुक्कुट का उपयोग करने अथवा मुर्गीपालन फार्मों को शीघ्र बंद करने के संबंध में कोई दिशा-निर्देश अथवा चेतावनी पत्र जारी नहीं किए गए हैं। उन्होंने कहा कि वायरल खबर में उल्लेखित भोपाल, ग्वालियर, देवास, इंदौर, उज्जैन, रतलाम, बड़नगर, सीहोर, बड़वानी और महू में विभाग द्वारा कुक्कुट की किसी भी प्रकार का नमूना नहीं लिया गया। रोकड़े ने कहा कि कुक्कुट उत्पादों का उपयोग पूरी तरह से सुरक्षित है इनसे अभी तक किसी भी प्रकार के कोरोना संक्रमण का कोई संकेत नहीं है।

संचालक पशुपालन आर. के. रोकड़े ने इस संबंध मे स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी आदेश का हवाला देते हुए मुर्गीपालन फार्म मे कोरोना वायरस की वायरल खबर का खंडन किया

राणा के प्रत्यर्पण से आईएसआई की गतिविधियों के बारे में और जानकारी मिलेगी : निकम

भाषा। मुंबई

विशेष लोक अभियोजक उज्ज्वल निकम ने शनिवार को कहा कि मुंबई आतंकवादी हमले में संलिप्तता के आरोप में अमेरिका में फिर से गिरफ्तार किए गए पाकिस्तानी मूल के कनाडाई कारोबारी तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण से आईएसआई की गतिविधियों के बारे में और जानकारी मिलेगी। राणा के प्रत्यर्पण को लेकर भारत के अनुरोध के बाद उसे 10 जून को लॉस एंजिलिस में दोबारा गिरफ्तार किया गया। भारत ने राणा को भगोड़ा घोषित कर रखा है। मुंबई हमलों के मामले में विशेष लोक अभियोजक निकम ने पीटीआई भाषा से कहा कि राणा पर भारत में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए बड़ा आपराधिक षड्यंत्र रचने का आरोप है। निकम ने

कहा, पाकिस्तानी-अमेरिकी आतंकवादी डेविड कोलमैन हेडली ने यहां वीडियो लिंक के माध्यम से अदालत के समक्ष अपने बयान में स्वीकार किया था कि राणा को 26।11 मुंबई हमलों के पूरे आपराधिक षड्यंत्र की जानकारी थी। उन्होंने कहा, हेडली ने यह भी स्वीकार किया था कि राणा उसे वित्तीय मदद दिया करता था। निकम के अनुसार हेडली ने लश्कर-ए-तैयबा की आतंकवादी गतिविधियों और आईएसआई से उसके संबंधों के बारे में उस समय सनसनीखेज खुलासे किए थे।उन्होंने कहा, राणा के प्रत्यर्पण से आईएसआई की गतिविधियों के बारे में और जानकारी मिलेगी। उल्लेखनीय है कि राणा (59) को अनुकंपा के आधार पर हाल में अमेरिका की जेल से रिहा किया गया था। उसने अदालत को बताया था कि वह कोरोना वायरस से संक्रमित पाया गया है। इसके बाद उसे रिहा कर दिया गया था, लेकिन 10 दिन पहले उसे पुन: गिरफ्तार कर लिया गया। यहां एक विशेष अदालत ने 28 अगस्त, 2018 को राणा के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया था। मुंबई में नवंबर 2008 में हुए आतंकवादी हमलों में 166 लोग मारे गए थे।

मॉस्को में विजय दिवस परेड में भाग लेने रूस यात्रा पर जाएंगे राजनाथ सिंह

भाषा। नई दिल्ली

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह मॉस्को में आयोजित विजय दिवस परेड में शिरकत के लिए सोमवार से रूस की तीन दिनों की यात्रा करेंगे। यह परेड द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी पर सोवियत की जीत की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित होगी। रक्षा मंत्री की यह यात्रा भारत और चीन के बीच बढ़ते सीमा गतिरोध के मध्य में हो रहा है खासकर पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में 15 जून को चीनी सैनिकों द्वारा 20 भारतीय सैनिकों की हत्या किए जाने के बाद। रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वितीय विश्व युद्ध में मिली जीत की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए 24 जून को आयोजित विजय दिवस परेड में शमिल होने के लिए मॉस्को की यात्रा करेंगे। अधिकारियों ने कहा कि चीन के साथ सीमा विवाद के बावजूद सिंह यात्रा करेंगे क्योंकि रूस के साथ भारत के दशकों पुराने सैन्य संबंध हैं।रूस के राजदूत निकोले कुदाशेव ने ट्वीट किया, मैं सामरिक साझेदार भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की सुरक्षित यात्रा की कामना करता हूं जो सोमवार को मॉस्को के लिए रवाना होंगे जहां वह 24 जून को ग्रेट विक्टरी डे सैन्य परेड के गवाह बनेंगे। यह परेड पहले नौ मई को होने थी लेकिन कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के चलते इसे टाल दिया गया था। परेड में शामिल होने के लिए 75 सदस्ईय भारतीय सैन्य दस्ता पहले ही मॉस्को पहुंच गया है। मंत्रालय ने कहा, रक्षा मंत्री की यात्रा भारत और रूस के बीच दीर्घकालिक विशेष एवं विशेषाधिकृत सामरिक साझेदारी को मजबूत करेगा। भारतीय मार्चिंग दस्ते का नेतृत्व गैलेंट सिख लाइट इंफैंट्री रेजिमेंट के मेजर रैंक के एक अधिकारी करेंगे। इस रेजिमेंट ने द्वितीय विश्व युद्ध में बहादुरी के साथ लड़ाई की थी और इसके नाम पर चार युद्ध सम्मान एवं दो सैन्य क्रॉस समेत अन्य वीरता पुरस्कार दर्ज हैं। भारतीय टीम चीन समेत कम से कम 11 देशों से भाग ले रहे सशस्त्र बलों के साथ इस परेड में हिस्सा लेगी।

देश में कोरोना के एक दिन में 14,516 मामले, 375 मौतें

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

भारत में शनिवार को कोविड-19 के एक दिन में सर्वाधिक 14,516 नए मामलों के सामने आने के साथ देश में संक्रमितों की कुल संख्या 3,95,048 हो गई है वहीं मौत के 375 नए मामलों के साथ अब तक 12,948 लोग इस संक्रमण से जान गंवा चुके हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आज सुबह आठ बजे जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार स्वस्थ हो रहे रोगियों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है और अब तक 2,13,830 लोग संक्रमण से उबर चुके हैं, वहीं 1,68,269 मरीजों का अब भी इलाज चल रहा है।

एक रोगी देश छोड़कर जा चुका है। एक अधिकारी ने कहा, इस तरह अब तक करीब 54.12 फीसदी मरीज स्वस्थ हो चुके हैं। संक्रमण के कुल मामलों में विदेशी भी शामिल हैं। देश में लगातार नौवें दिन संक्रमण के 10 हजार से अधिक मामले सामने आए हैं। गत एक जून से 20 जून के बीच देशभर में कोरोना वायरस संक्रमण के दो लाख से अधिक मामले सामने आए हैं। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, दिल्ली, गुजरात और उत्तर प्रदेश में कोविड-19 के मामलों में सबसे अधिक इजाफा देखा गया है।

नई दिल्ली के एलएनजेपी अस्पताल में कोरोना के संदिग्ध रोगी लेकर पहुंची एंबुलेंस

कोविड-19 के कारण शुक्रवार सुबह तक 375 लोगों की मौत हुई है, इनमें से 142 की मौत महाराष्ट्र में, 66 की दिल्ली में, 41 की तमिलनाडु में, 27 की गुजरात में, 23 की उत्तर प्रदेश में, 11 की पश्चिम बंगाल में, 10-10 की राजस्थान, कर्नाटक और हरियाणा में, नौ-नौ लोगों की मध्य प्रदेश और पंजाब में, छह की बिहार में, चार-चार की आंध्र प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में तथा तीन लोगों की मौत तेलंगाना में हुई। अमेरिका, ब्राजील और रूस के बाद भारत वैश्विक महामारी कोविड-19 से प्रभावित चौथा देश है।

कोविड-19 के कारण देश में अब तक 12,948 लोगों की मौत हुई है जिनमें सर्वाधिक 5,893 लोगों की मौत महाराष्ट्र में, 2,035 लोगों की मौत दिल्ली में,1,618 की मौत गुजरात में, 666 की मौत तमिलनाडु में, 529 की पश्चिम बंगाल में, 495 संक्रमितों की मौत मध्य प्रदेश में, 488 मरीजों की मौत उत्तर प्रदेश में, 333 की मौत राजस्थान में तथा 198 संक्रमितों की मौत तेलंगाना में हुई। कोविड-19 के कारण हरियाणा में 144 लोगों की मौत हुई, कर्नाटक में 124 लोगों की मौत हुई, आंध्र प्रदेश में 96 की मौत, पंजाब में 92 की मौत, जम्मू-कश्मीर में 75 की मौत, बिहार में 50 की मौत, उत्तराखंड में 26 की मौत, केरल में 21 की तथा ओडिशा में 11 लोगों की मौत हुई। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक झारखंड में कोरोना वायरस संक्रमण के कारण 11 लोगों की मौत, छत्तीसगढ़ 10 की मौत, असम में 9 लोगों की, हिमाचल प्रदेश में 8 की, पुडुचेरी में 7 की, चंडीगढ़ में 6 की तथा मेघालय, त्रिपुरा और लद्दाख में एक-एक मरीज की मौत हुई है। मंत्रालय ने कहा कि संक्रमण के कारण मौत के 70 फीसदी से अधिक मामलों में मरीज अन्य बीमारियों से भी ग्रस्त थे।

योग दिवस पर मेरे साथ सूर्य नमस्कार करने के लिए एक करोड़ लोगों के जुड़ने की उम्मीद : प्रह्लाद पटेल

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री प्रह्लाद पटेल ने शनिवार को कहा कि उन्हें उम्मीद है कि इस साल रविवार को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर उनके साथ सूर्य नमस्कार करने में एक करोड़ लोग शामिल होंगे।

कोविड-19 महामारी के कारण इस साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मनाया जाएगा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संदेश का प्रसारण किया जाएगा।दुनिया भर में योग दिवस का आयोजन 2015 से हर साल 21 जून को किया जाता रहा है। पहली बार इसका आयोजन डिजिटल होगा। इस साल योग दिवस की थीम घर पर योग और परिवार के साथ योग है और लोग 21 जून को सुबह सात बजे इसमें डिजिटल माध्यम से भाग ले सकेंगे। पटेल ने संस्कृति मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान में कहा, मैं पुराना किला पर सूर्य नमस्कार करुंगा और मैं सभी आग्रह करता हूं कि अपने-अपने घरों पर मेरे साथ सूर्य नमस्कार करें। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया को योग दिवस का उपहार दिया है और हमें अपने दैनिक जीवन में योग करना चाहिए। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक वीडियो संदेश भी डाला और सभी से अपने सूर्य नमस्कार के वीडियो संबंधित हैशटैग पर साझा करने को कहा ताकि यह एक जन आंदोलन बन सके और लोगों के बीच स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़े।

पटेल ने कहा, मुझे उम्मीद है कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, 2020 पर मेरे साथ सूर्य नमस्कार करने के लिए करीब एक करोड़ लोग जुड़ेंगे। इस बीच संस्कृति मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि मंत्रालय का समर्थन करने के लिए भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या बेंगलुरू में योगाभ्यास करेंगे और उनके साथ फिटनेस विशेषज्ञ सपना व्यास भी होंगी।

पेज एक का शेष

पीएम के...

कि जहां तक एलएसी पर समझौते के उल्लंघन की बात है तो यह साफकहा गया था कि 15 जून को गलवान घाटी में हिंसा हुई थी, क्योंकि चीनी पक्ष एलएसी के पार संरचनाएं खड़ी करना चाहता था और काम बंद करने से इनकार कर रहा था। यह स्पष्टीकरण तीन बार विदेश मंत्रालय (एमईए) द्वारा आधिकारिक रूप से कही गई बातों से भी मेल नहीं खाता है। पीएमओ ने कहा कि ये संरचनाएं एलओसी के पार, जबकि विदेश मंत्रालय ने कहा था एलएसी पर भारतीय क्षेत्र में खड़ी की जा रही हैं।

प्रवासी श्रमिकों...

जल संरक्षण जैसे विभिन्न प्रकार के 25 कार्यों का क्रियान्वयन होगा, देश के ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का निर्माण किया जाएगा। मोदी ने कहा कि उन्हें इस योजना की प्रेरणा उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले की एक घटना से मिली। उन्होंने कहा, वहां एक सरकारी स्कूल को क्वारन्टाइन सेंटर बनाया गया था। शहर से वापस आए श्रमिकों को वहां रखा था। इस सेंटर में हैदराबाद से आए कई श्रमिकों को रखा गया था। ये श्रमिक रंगाई-पुताई और पीओपी के काम में एक्सपर्ट थे। ये अपने गांव के लिए कुछ करना चाहते थे। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि उन्होंने अपने हुनर की पेशकश की और सरकारी स्कूल में रहते हुए, इन श्रमिकों ने अपने हुनर से स्कूल का ही कायाकल्प कर दिया। उन्होंने कहा कि गरीब कल्याण रोजगार योजना उन लोगों के लिए है, जो अपनी मेहनत और हुनर से अपने गांव के विकास के लिए कुछ करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, यह हमारा प्रयास है कि श्रमिकों को उनके घर के पास ही काम मिले, अबतक आप शहरों का विकास कर रहे थे, अब आप अपने गांवों की मदद करेंगे। मोदी ने कहा कि इस योजना से श्रमिकों के सम्मान की रक्षा होगी और गांवों के विकास को गति मिलेगी। यह अभियान 12 विभिन्न मंत्रालयों, विभागों- ग्रामीण विकास, पंचायती राज, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, खान, पेयजल और स्वच्छता, पर्यावरण, रेलवे, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, नई और नवीकरणीय ऊर्जा, सीमा सड़क, दूरसंचार और कृषि का एक समन्वित प्रयास होगा। इस योजना के तहत गांवों में रोजगार के लिए करीब 25 कार्यक्षेत्रों की पहचान की गई है। ये कार्यक्षेत्र गांव की मूलभूत सुविधाओं से जुड़े हैं। इसके तहत आंगनबाड़ी भवन, सामुदायिक शौचालय, ग्रामीण मंडी, कुओं और गरीबों के लिए पक्के घरों का निर्माण, वृक्षारोपण, पेज जल की सुविधा जैसे कार्य किए जाएंगे। मोदी ने कहा, सभी श्रमिकों के हुनर की मैपिंग की भी शुरू की गई है। यानि गांव में ही आपके हुनर की पहचान की जाएगी, ताकि आपके कौशल के मुताबिक आपको काम मिल सके। आप जो काम करना जानते हैं, उस काम के लिए जरूरतमंद खुद आपके पास पहुंच सकेगा। इससे पहले, उन्होंने देश के लिए अपनी जान न्यौछावर करने वाले सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने लद्दाख गतिरोध पर कहा कि हर किसी को बिहार रेजीमेंट की वीरता पर गर्व है। कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलौत, मध्यप्रदेश के शिवराज सिंह चौहान और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और ओडिशा सरकार के एक मंत्री जुड़े थे। अधिकारियों ने कहा कि गरीब कल्याण रोजगार योजना मनरेगा से अलग है। मनरेगा पूरे देश में लागू है और इसका दायरा काफी बड़ा है। महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) प्रति परिवार एक साल में 100 दिन का काम सुनिश्चित करती है।

उन्नाव से...

क्वारंटाइन थे। प्रधानमंत्री के अनुसार मीडिया के जरिए जब मुझे यह खबर मिली तो मैं अपने श्रमिक एवं कामगार भाइयों के हुनर और देश भक्ति का कायल हो गया। मुझे लगा कि ये लोग देश और समाज के लिए कुछ करने का जज्बा रखते हैं। इससे ही प्रेरित होकर मुझे गरीब कल्याण रोजगार अभियान शुरू करने की प्रेरणा मिली। प्रधानमंत्री ने कहा कि सोचिएए कितना टैलेंट इन दिनों अपने गांव लौटा है। देश के हर शहर को गति और प्रगति देने वाला यह वर्ग जब ग्रामीण इलाकों में लगेगा तो संबंधित राज्य के विकास को भी गति मिलेगी।

रोजगार के...

रहा है। इस अभियान में प्रदेश के 31 जनपद चयनित किये गये हैं। जिनमे सिद्धार्थनगर, प्रयागराज, गोण्डा, महराजगंज, बहराइच, बलरामपुर, जौनपुर, हरदोई, आजमगढ़, बस्ती, गोरखपुर, सुल्तानपुर, कुशीनगर, संतकबीरनगर, बांदा, अम्बेडकरनगर, सीतापुर, वाराणसी, गाजीपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, अयोध्या, देवरिया, अमेठी, लखीमपुर खीरी, उन्नाव, श्रावस्ती, फतेहपुर, मिर्जापुर, जालौन और कौशाम्बी शामिल हैं। गरीब कल्याण रोजगार अभियान के तहत कामगारों की रुचि और कौशल के अनुरूप रोजगार व स्वरोजगार के कार्य कराये जाएंगे। ग्रामीण सार्वजनिक परिसम्पत्तियों के निर्माण के अन्तर्गत सड़क, ग्रामीण आवास, बागवानी, पौधा रोपण, जल संरक्षण एवं सिंचाई, आंगनवाड़ी, पंचायत भवन, तथा जल जीवन मिशन आदि से जुड़े 25 कार्य सम्मिलित किये गये हैं। इस अभियान के संचालन से रोजगार की तुरन्त आवश्यकता वाले कामगारों को विभिन्न कार्य क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलेंगे तथा वे अपने ही गांव में जीविकोपार्जन की विभिन्न गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित भी होंगे।

चीनी सैनिक...

पर सरकार का क्या जवाब है? क्या वह इसे खारिज करेगी। प्रधानमंत्री कार्यालय के स्पष्टीकरण पर अपने जवाब में कांग्रेस ने सरकार से कई प्रश्न पूछे हैं। उसने जानना चाहा है कि वह पूर्वी लद्दाख में गलवान घाटी पर अपनी स्थिति बताए जहां चीनी सैनिकों से हिंसक झड़प में 20 जवान शहीद हुए जबकि 76 अन्य जख्मी। कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने सवाल किया कि पीएमओ और सरकार सबसे पहले गलवान घाटी में अपनी पोजीशन स्पष्ट करें।

भारत ने...

ढूंढ़ने के लिए दोनों पक्ष तय कूटनयिक और सैन्य चैनलों के जरिये बातचीत कर रहे हैं।' भारत ने कहा कि उसे उम्मीद है कि चीनी पक्ष सीमाई इलाकों में शांति और स्थिरिता के लिए विदेश मंत्रियों के बीच हुई सहमति का ईमानदारी से पालन करेगा, हमारे द्विपक्षीय संबंधों के समग्र विकास के लिए जरूरी है। दूसरी ओर चीन ने बयान में कहा, 'कई सालों से चीन के सैनिक यहां पर गश्त और अपनी ड्यूटी दे रहे हैं।

किसी भी...

लिए आवश्यक कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि देशभर में भारतीय वायु सेना के अड्डों पर वे सभी आवश्यक कदम उठाए गए है जो स्थिति से निपटने के लिए जरूरी हैं। उन्होंने चीनी हवाई अड्डों से संबंधित सवाल पर कहा, हम जानते हैं उनके (चीनी) अड्डे कहां है। हम जानते हैं उनके हवाई क्षेत्र कहां हैं, उनकी तैनाती कहां है, उनके संचालनात्मक अड्डे कहां हैं। भदौरिया ने कहा, सैन्य वार्ता के दौरान हुए समझौतों के बाद चीन की अस्वीकार्य कार्वाई और उसके परिणामस्वरूप जान के नुकसान के बावजूद सभी प्रयास यह सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे थे कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर मौजूदा स्थिति शांतिपूर्ण तरीके से हल हो जाए। यह पूछे पर कि क्या भारत का चीन के साथ युद्ध चल रहा है, इस पर उन्होंने कहा, आप सैन्य स्तर पर हो रही वार्ता से अवगत हैं लेकिन हम किसी भी आकस्मिक स्थिति के लिए तैयार हैं।

उत्तर भारत...

और सूर्य के बीच में आ जाता है और जब तीनों खगोलीय पिंड एक रेखा में होते हैं। वलयाकार सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा का कोणीय व्यास सूर्य से कम हो जाता है जिससे चंद्रमा सूर्य को पूरी तरह से नहीं ढक पाता है। इसके परिणामस्वरूप, चंद्रमा के चारों ओर सूर्य का बाहरी हिस्सा दिखता रहता है, जो एक अंगूठी का आकार ले लेता है। यह अग्नि-वलय की तरह दिखता है। दिल्ली में लगभग 94 प्रतिशत, गुवाहाटी में 80 प्रतिशत, पटना में 78 प्रतिशत, सिलचर में 75 प्रतिशत, कोलकाता में 66 प्रतिशत, मुंबई में 62 प्रतिशत, बेंगलुरु में 37 प्रतिशत, चेन्नई में 34 प्रतिशत, पोर्ट ब्लेयर में 28 प्रतिशत ग्रहण दिखाई देगा। मुंबई के नेहरू तारामंडल के निदेशक अरविंद परांजपे ने कहा, दिल्ली जैसी जगहों पर दिन में 11 से 11.30 बजे तक पांच-सात मिनट तक अंधेरा रहेगा। उन्होंने लोगों को आगाह किया कि सूर्य ग्रहण को नग्न आंखों से नहीं देखना चाहिए, यहां तक कि बहुत कम समय के लिए भी बिना उपकरण के नहीं देखना चाहिए, इससे आंख की रोशनी प्रभावित हो सकती है। सूर्य ग्रहण को सुरक्षात्मक उपकरण के माध्यम से देखना सुरक्षित रहता है। कई संगठनों ने ग्रहण पर व्याख्यान आयोजित किए हैं। दिल्ली स्थित नेहरू तारामंडल ग्रहण पर परिचर्चा का आयोजन करने के अलावा इसकी वेबकास्टिंग भी करेगा।

आईसीए 57 जरूरतमंद क्रिकेटरों की मदद करेगा

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेटर संघ (आईसीए) 78 लाख रुपए जुटाने मे सफल रहा और अब 57 जरूरतमंद क्रिकेटरो को कोविड-19 महामारी से उत्पन्न हुए संकट मे वित्तीय मदद मुहैया कराएगा। आईसीए की योजना पहले 25 से 30 पूर्व खिलाड़ियो की मदद करने की थी जिन्हे इस स्वास्थ्य संकट के कारण आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हम 20 से 25 क्रिकेटरो की मदद करने की उम्मीद कर रहे थे लेकिन साथी क्रिकेटरो की मदद से हम 57 क्रिकेटरो को सहायता करने मे सफल रहे।

आनलाइन योग सत्र में भाग लेंगे रीजीजू, मेरीकॉम और मोदिगल

नई दिल्ली। खेलमंत्री किरेन रीजीजू रविवार को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर अभिनेत्री और फिटनेस ट्रेनर शिल्पा शेट्टी के साथ आनलाइन योग सत्र मे भाग लेंगे जिसमे निशानेबाज अंजुम मोदिगल और मुक्केबाज एम सी मेरीकॉम भी रहेगी। भारत सरकार के फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत आयोजित 45 मिनट का आनलाइन सत्र फन , फैमिली , योग के नाम से होगा। इसे आयुष मंत्रालय के घर पर योग के दिशा निर्देशो के तहत तैयार किया गया है चूंकि कोरोना वायरस महामारी के कारण बाहर योग दिवस नही मनाया जा सकता।

मैं पूरी तरह से स्वस्थ हूं: सौरव गांगुली के भाई

कोलकाता। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली के भाई और बंगाल क्रिकेट संघ (सीएबी) के सचिव स्नेहाशीष गांगुली ने शनिवार को कोविड-19 से संक्रमित होने की मीडिया रिपोर्टो को खारिज करते हुए कहा कि वह पूरी तरह से स्वस्थ है। पश्चिम बंगाल के स्वास्थ्य विभाग के अनुसार स्नेहाशीष के परिवार के सदस्यो मे पत्नी, ससुर, सास और एक घरेलू नौकर कोरोना वायरस जांच मे संक्रमित पाए गए थे। उन लोगो का इलाज एक निजी अस्पताल मे चल रहा है। पूर्व रणजी खिलाड़ी स्नेहाशीष कोविड-19 जांच मे बीमारी से संक्रमित नही थे।

व्हीलचेयर खिलाड़ियों को मिल सकता है मौका

वाशिंगटन। अमेरिकी टेनिस महासंघ (यूएसटीए) ने इस ओर इशारा किया कि यूएस ओपन 2020 मे व्हीलचेयर टेनिस प्रतियोगिता का आयोजन हो सकता है। इससे पहले कोरोना वायरस महामारी के कारण प्रतियोगिता के आकार को छोटा करने के लिए व्हीलचेयर स्पर्धा को रद्द कर दिया गया था।

आस्ट्रेलियाई फुटबॉल लीग का मैच स्थगित

मेलबर्न। आस्ट्रेलियाई फुटबॉल लीग ने एसेनडन और मेलबर्न के बीच एक मैच स्थगित कर दिया क्योंकि हाल मे आयरलैंड से लौटा एक खिलाड़ी कोविड-19 की जांच मे पॉजिटिव पाया गया है।

श्रीकांत ने गांगुली की तारीफ की, जन्मजात नेतृत्वकर्ता बताया

लायड से की तूलना ,भारत को विदेशी सरजमीं पर जीत के लिए प्रेरित किया: श्रीकांत

भाषा। मुंबई

पूर्व मुख्य चयनकर्ता के श्रीकांत ने सौरव गांगुली की तुलना वेस्टइंडीज के महान खिलाड़ी क्लाइव लायड से करते हुए मौजूदा बीसीसीआई अध्यक्ष को जन्मजात नेतृत्वकर्ता करार दिया जिन्होंने भारतीय क्रिकेट टीम को विदेशी सरजमीं पर जीत हासिल करने को प्रेरित किया। श्रीकांत ने स्टार स्पोर्ट्स। तमिल शो क्रिकेट कनेक्टिड - आटम थोडारूम में कहा, गांगुली काफी सक्रिय थे। वह ऐसे खिलाड़ी थे जो टीम संयोजन बनाने की क्षमता रखते थे। जैसे 1976 में क्लाइव लायड ने वेस्टइंडीज टीम के लिए विजई संयोजन बनाया था। सौरव ने सही टीम को एक साथ रखा और फिर उन्हें प्रेरित किया। पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज ने कहा, इसलिए गांगुली बहुत सफल कप्तान थे, विदेशी सरजमीं पर भी। उन्होंने विदेशों में जीतना शुरू किया। गांगुली में यह काबिलियत जन्मजात थी। वहीं इसी शो में पूर्व भारतीय स्पिनर लक्ष्मण शिवरामकृष्णन ने श्रीकांत की कप्तानी के तरीके की प्रशंसा की और उन्होंने कहा कि उनमें लंबे समय तक राष्ट्रीय टीम की अगुआई करने की क्षमता थी। चीका (श्रीकांत) बहुत आक्रामक कप्तान थे। उन्होंने काफी नतीजे भी दिलाए। वह काफी सक्रिय थे। सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ी ने चीका की कप्तानी में पदार्पण किया। चीका ने इतनी छोटी उम्र में सचिन तेंदुलकर को प्रोत्साहित किया जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा और वह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बना। हमने कई प्रेरणादाई कप्तान देखे, लेकिन मुझे हमेशा लगता है कि चीका और कप्तानी कर सकते थे।

भारतीय टीम के साथ श्रृंखला खेलने को बेकरार हैं स्मिथ

भाषा। नई दिल्ली

स्टार बल्लेबाज स्टीव स्मिथ भारतीय टीम के आस्ट्रेलियाई दौरे को लेकर काफी उत्साहित हैं और उन्होंने कहा कि वह इस श्रृंखला में खेलने के लिए बेताब हैं जो काफी विशेष होगी। भारतीय टीम इस साल आस्ट्रेलियाई दौरे पर अक्टूबर और जनवरी 2021 तक तीन वनडे, चार टेस्ट और तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलेगी। स्मिथ ने स्टार स्पोर्ट्स शो क्रिकेट कनेक्टिड में कहा, उनकी टीम काफी शानदार है और इस साल आस्ट्रेलिया के दौरे पर मैं उनके साथ खेलने को बेकरार हूं, यह श्रृंखला काफी बेहतरीन होगी। भारत का दौरा 11 अक्टूबर को ब्रिसबेन में टी20 मैच के साथ शुरू होगा। इसके बाद टीम 14 अक्टूबर को कैनबरा और 17 अक्टूबर को एडीलेड में अगले दो मैच खेलेगी। चार मैचों की टेस्ट श्रृंखला तीन दिसंबर से ब्रिसबेन में शुरू होगी। दूसरा टेस्ट दिनारात्रि होगा जो एडीलेड में 11 से 15 दिसंबर तक खेला जाएगा। तीसरा और चौथा टेस्ट क्रमशः मेलबर्न (26 से 30 दिसंबर) और सिडनी (तीन से सात जनवरी) में होगा। वनडे श्रृंखला 12 जनवरी से पर्थ में शुरू होगी जिसके बाद 15 जनवरी (मेलबर्न) और 17 जनवरी (सिडनी) को मैच होंगे। स्मिथ ने भारतीय कप्तान विराट कोहली के साथ अपनी मित्रता के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, मेरी विराट कोहली के साथ मैदान के बाहर भी कुछ बातचीत हुई थी, हाल के दिनों में कुछ संदेश भी हमने साझा किए कि भारत में चीजें कैसे चल रही हैं। वह शानदार व्यक्ति है और हम दोनों अपनी टीमों के लिए मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ खेलते हैं और यह खेल का हिस्सा है।

टी20 विश्व कप को मैच लाइव देखने की अनुमति होगी: सीए अंतरिम सीईओ

मेलबर्न। क्रिकेट आस्ट्रेलिया (सीए) के अंतरिम मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) निक होकले ने शनिवार को कहा कि अगर टी20 विश्व कप के लिए 15 टीमों को देश में प्रवेश की अनुमति दी जा सकती है तो प्रशंसकों को भी स्टेडियम में लाइव मैच देखने से रोका नहीं जाएगा। होकले ने केविन रोबर्ट्स की जगह ली जिन्हें हाल में क्रिकेट आस्ट्रेलिया ने निकाल दिया था जो वित्तीय परेशानियों से जूझ रहा है। कोविड-19 महामारी के कारण टी20 विश्व कप के इस साल के अंत में आयोजन के लिए अलग अलग संभावनाओं को ढूंढा जा रहा है जिसमें से एक में इस टूर्नामेंट की मेजबानी खाली स्टेडियम में करना भी है। लेकिन होकले ने कहा कि दर्शकों को अनुमति दी जाएगी, हालांकि अभी खिलाड़ियों, अधिकारियों और सहयोगी स्टाफ के साथ 15 टीमों की मेजबानी करना पेचीदा लग रहा है जिससे संकेत मिलता है कि आईसीसी के टूर्नामेंट को स्थगित किया जा सकता है। होकले ने जब पूछा गया कि क्या वह दर्शकों के बिना विश्व कप को होते हुए देखना चाहेंगे तो उन्होंने क्रिकेट डॉट कॉम डॉ एयू से कहा, सच्चाई यह है कि हाल के हफ्तों में हमने इसके बारे में ज्यादा चीजें समझी हैं और इसके अनुसार अंतरराष्ट्रीय यात्रा से पहले दर्शकों के आने की संभावना अधिक है। हमारी सबसे बड़ी चुनौती देश में 15 टीमों को लाने की है।

गांगुली की फाउंडेशन ने कोविड-19 योद्धाओं की मदद की

कोलकाता। भारतीय क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष सौरव गांगुली के फाउंडेशन ने चाकलेट और च्यूइंगम बनाने वाली कंपनी मार्स रिगले के साथ कोविड-19 महामारी के दौरान काम करने वाले डाक्टरों, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और देखभाल करने वालों का सहयोग करने के लिए हाथ मिलाए। एक मीडिया बयान के अनुसार, स्वास्थ्य सेवा कर्मचारी मौजूदा संकट में अन्य लोगों की सुरक्षा और भलाई के लिए योद्धा बनकर डटे रहे। उनकी इस भावना और उनकी कड़ी मेहनत की सराहना के प्रयास में बीसीसीआई के अध्यक्ष सौरव गांगुली आभार जताते हुए पश्चिम बंगाल डाक्टर्स फोरम को मार्स रिगली उत्पादों सहित भेंट सौंपी।

ब्रेक ने एंडरसन के करियर को लंबा कर दिया : कोच

लंदन। इंग्लैंड के दमखम और अनुकूलन कोच रॉब अहमन का मानना है कि कोरोना वायरस के कारण मजबूरी में मिले विश्राम से टीम के अनुभवी तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन के करियर को एक-दो साल के लिए आगे बढ़ाने में मददगार होगा। एंडरसन उन 55 खिलाड़ियों के समूह में शामिल हैं जिन्हें आठ जुलाई से वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की टेस्ट श्रृंखला से पहले इंग्लैंड के अभ्यास शिविर में शामिल होने के लिए कहा गया है। सैतीस साल के एंडरसन नेट्स पर सामाजिक दूरी के नियम का पालन करते हुए गेंदबाजी अभ्यास कर रहे है। कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए लागू लॉकडाउन के बाद खेल और अभ्यास की बहाली के बाद से एंडरसन के अभ्यास के दौरान प्रदर्शन पर अहमन नजर रख रहे है।

मलिक को इंग्लैंड देर से पहुंचने की हरी झंडी मिली

कराची। पाकिस्तानी आलराउंडर शोएब मलिक केवल टी20 प्रारूप में खेलते हैं और शनिवार को उन्हें अनुमति मिल गई कि वह इंग्लैंड में थोड़ा देर से राष्ट्रीय टीम से जुड़ सकते हैं ताकि वह अपने परिवार के साथ समय बिता सकें। शोएब टी20 मैचों में खेलेंगे और उन्हें पीसीबी ने 24 जुलाई को इंग्लैंड में टीम से जुड़ने की अनुमति दे दी है क्योंकि वह अपने परिवार के साथ थोड़ा समय बिताना चाहते हैं। अंतरराष्ट्रीय यात्रा प्रतिबंध के कारण मलिक अपनी पत्नी भारतीय टेनिस स्टार सानिया मिर्जा और एक साल के बेटे इजहान से पांच महीने से मिल नहीं पाए हैं। सानिया और इजहान दोनों भारत में हैं जबकि वह सियालकोट में अपने घर में थे। बोर्ड के मुख्य कार्यकारी वसीम खान ने बयान में इसकी जानकारी दी। 29 सदस्ईय पाकिस्तान टीम 28 जून को मैनचेस्टर के लिए रवाना होगी और इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) उनके देर से वहां पहुंचने पर सहमत हो गया है।

वेस्टइंडीज तेज आक्रमण पर भरोसा करेगा: गेब्रियल

मैनचेस्टर। कैरेबियाई तेज गेंदबाज शैनन गेब्रियल ने कहा कि इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टेस्ट श्रृखला में दबदबा बनाने के लिए वेस्टइंडीज अपने तेज गेंदबाजी आक्रमण को मजबूत करेगा। चोट से वापसी कर रहे 32 वर्षीय गेब्रियल ने वेस्टइंडीज में इंग्लैंड के खिलाफ 2019 में घर में मिली 2-1 से जीत में बड़ी भूमिका निभाई थी। मुझे नहीं लगता कि पिछले साल वेस्टइंडीज में हमने जो किया उन योजनाओं को बहुत अधिक बदलना चाहिए।

आईसीसी ने मनाया विश्व शरणार्थी दिवस

भाषा। दुबई

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने शनिवार को संयुक्त राष्ट्र के विश्व शरणार्थी दिवस को मान्यता देते हुए इस मौके पर एक वीडियो जारी की जो दुनिया भर में विस्थापित किए गए लोगों की जिंदगियों पर क्रिकेट के सकारात्मक प्रभाव पर जोर देती है। यूएनएचसीआर (शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त) का विश्व शरणार्थी दिवस दुनिया को याद दिलाता है कि शरणार्थी सहित हर कोई समाज में योगदान दे सकता है। संयुक्त राष्ट्र के विश्व शरणार्थी दिवस पर आईसीसी ने एक वीडियो जारी किया जिसमें दिखाया गया कि कैसे क्रिकेट में लोगों के जीवन को बदलने, उम्मीद जगाने और दुनिया भर में लोगों को एकजुट करने की क्षमता है। आईसीसी मुख्य कार्यकारी मनु साहनी ने बयान में कहा, क्रिकेट में समुदायों को साथ लाने, व्यक्तियों को जोड़ने और रूकावटें तोड़ने की क्षमता है और यह सही मायने में प्रत्एक व्यक्ति का खेल है। आज आईसीसी विस्थापित लोगों के जीवन में क्रिकेट की भूमिका का जश्न मनाकर संयुक्त राष्ट्र के विश्व शरणार्थी दिवस को मान्यता देता है।

पेस को सपना टूटने का अंदेशा

भाषा। कोलकाता

लगता है आठवें ओलंपिक में खेलने का सपना साकार नही होगा

कोविड-19 महामारी के कारण तोक्यो ओलंपिक सहित कई दूसरे टूर्नामेंटों के निलंबित होने के बाद दिग्गज भारतीय टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस को लग रहा है कि लगातार आठवें ओलंपिक में खेलने का उनका सपना साकार नहीं होगा। बुधवार को अपना 47वें जन्मदिन मनाने वाले पेस ने पहले कहा था कि 2020 सत्र और ओलंपिक उनका आखिरी टूर्नामेंट होगा लेकिन कोरोना वायरस महामारी ने उनकी पूर्व नियोजित योजना पर पानी फेर दिया। पेस ने भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स - यंग लीडर्स फोरम द्वारा आयोजित एक वेबिनार के दौरान कहा, मैं वास्तव में ओलंपिक के बारे में चिंतित हूं क्योंकि यह मेरे इतिहास, मेरी विरासत के लिए प्रासंगिक है।, मैं वन लास्ट रोर (आखिरी) सत्र में था, जिसका समापन तोक्यो ओलंपिक के साथ होना था। लेकिन ओलंपिक को 2021 के लिए निलंबित कर दिया है और विश्व अर्थव्यवस्था भी नीचे की तरफ जा रही है। ऐसे में ओलंपिक के लिए कॉरपोरेट प्रायोजक कैसे आएंगें। कोविड-19 से निपटने के लिए टीके (वैक्सीन) के बिना ओलंपिक का 2021 में भी आयोजन मुश्किल होगा।

सेविल्ला ने बार्सीलोना को गोलरहित ड्रा पर रोका

भाषा। बार्सीलोना

सेविल्ला ने ला लिगा में तालिका में पहले स्थान पर काबिज बार्सीलोना को गोल रहित ड्रा पर रोक दिया जिससे रियाल मैड्रिड को शीर्ष पर पहुंचने का मौका मिल गया। कोविड-19 महामारी के दौरान निलंबत रहने के बाद स्पेन की शीर्ष घरेलू फुटबॉल लीग के फिर से शुरू होने के बाद बार्सीलोना के लिए यह सबसे चौकाने वाला नतीजा है। रियाल मैड्रिड बार्सीलोना से तीन अंक पीछे है और रविवार को उसे रियाल सोसीदाद के खिलाफ खेलना है। रियाल मैड्रिड इस मैच को अगर जीतने में सफल रहा तो वह अंकों के मामले में बार्सीलोना की बराबरी कर लेगा लेकिन बेहतर गोल अंतर के कारण वह शीर्ष पर पहुंच जाएगा। मौजूदा चैम्पियन बार्सीलोना के दिग्गज खिलाड़ी गेरार्ड पीके ने इस नतीजे पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा कि सेविला से दो अंक का नुकसान बड़ा अंतर पैदा करेगा।

मैनचेस्टर और टॉटेनहैम का मुकाबला 1-1 से ड्रा रहा

लंदन। सर्जरी से वापसी कर रहे पॉल पोग्बा ने इंग्लिश प्रीमियर लीग की वापसी पर अपना दमखम दिखाते हुए पेनल्टी हासिल किया जिसे ब्रुनो फर्नांडिज ने गोल मे बदल कर टॉटेनहैम के खिलाफ मैनचेस्टर यूनाइटेड की वापसी कराई। स्टीवेन बेर्गविज्न ने 27वे मिनट मे गोल कर टॉटेनहैम को आगे कर दिया था। टीम की यह बढ़त 81वे मिनट तक कायम रही।

लीग को जीतना मुश्किल होगा क्योंकि अब हम दूसरी टीमों के नतीजों पर निर्भर रहेंगे।

मुर्तजा कोविड-19 जांच में संक्रमित पाए गए

भाषा। ढाका

बांग्लादेश के पूर्व कप्तान मशरफे मुर्तजा कोविड-19 की जांच में इस बीमारी से संक्रमित पाए गए। वह पाकिस्तान के पूर्व कप्तान शाहिद अफरीदी के बाद कोराना वायरस के चपेट में आने वाले दूसरे बड़े क्रिकेटर है। पिछले सप्ताह अफरीदी इस खतरनाक वायरस से संक्रमित पाए गए थे। मुर्तजा पिछले कुछ दिनों से कथित तौर पर अस्वस्थ थे और शुक्रवार को उनकी कोविड-19 जांच हुई जिसमें वह पॉजिटिव पाए गए। वह फिलहाल अपने घर में पृथकवास में है। मुर्तजा के छोटे भाई मोरसलिन बिन मुर्तजा ने यूनाइटेड न्यूज ऑफ बांग्लादेश (यूएनबी) से कहा, उन्हें दो दिनों से बुखार था। शुक्रवार को उनकी कोविड-19 जांच की गई जिसका नतीजा हमें आज (शनिवार) मिला है। वह पॉजिटिव पाए गए है और वह ढाका के अपने घर में पृथकवास में रह रहे है। कृपया उनके लिए प्रार्थना करें। स्थानीय मीडिया के मुताबिक मुर्तजा के परिवार के कुछ सदस्य इस बीमारी से संक्रमित पाए गए थे। मुर्तजा संसद के सदस्य है और इस महामारी के दौरान राहत अभियान चला रहे थे। मुर्तजा के अलावा वनडे टीम के कप्तान तमीम इकबाल के बड़े भाई और बांग्लादेश के पूर्व क्रिकेटर नफीस इकबाल कोरोना वायरस की जांच में पॉजिटिव पाए गए हैं। नफीस इकबाल ने 2003 में बांग्लादेश के लिए पदार्पण किया था लेकिन 2006 के बाद राष्ट्रीय टीम से बाहर हो गए।

महामारी के बीच तुलसा में रैली से अपने प्रचार अभियान को फिर गति देने पर ट्रंप की नजर

भाषा। वाशिंगटन

महामारी के कारण पिछले कुछ महीनों से ठंडे पड़े अपने चुनाव अभियान को फिर से गति देने और हाल के दिनों में अपनी सियासी लोकप्रियता में आती कमी को दूर करने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप शनिवार को एक रैली को संबोधित करने जा रहे हैं जिसमें उनके हजारों कट्टर समर्थक शामिल होंगे। ट्रंप की यह रैली ओक्लाहोमा के तुलसा में होगी। अमेरिका में कोरोना वायरस की वजह से बड़ी संख्या में लोगों के एक जगह जुटने पर मार्च से लगी रोक के बाद इस रैली को सबसे बड़े इंडोर कार्यक्रमों में से एक के तौर पर देखा जा रहा है। कई राज्यों में कोविड-19 के बढ़ते मामलों और स्थानीय स्वास्थ्य कर्मियों के विरोध के बीच ट्रंप की इस रैली का कार्यक्रम तय किया गया है। इस कार्यक्रम के विरोधियों के भी वहां जुटने की उम्मीद है। ट्रंप की आखिरी रैली को तीन महीने से ज्यादा का समय हो चुका है।देश में दो मार्च को बेरोजगारी दर 3.5 प्रतिशत थी और उस समय अमेरिका में कोरोना वायरस के अनुमानित मामले महज 91 थे।

उप राष्ट्रपति पद की डेमोक्रेट उम्मीदवार के लिए किसी काली महिला पर जोर

वाशिंगटन। डेमोक्रेटिक पार्टी मे काले लोगो की अहम भूमिका स्वीकार करने तथा देशभर मे नस्लवाद एवं असमानता के खिलाफ हो रहे प्रदर्शनो के मद्देनजर जो बाइडेन से उपराष्ट्रपति पद के लिए किसी काली महिला को उम्मीदवार बनाने की मांग बढ़ रही है। यह स्थिति बृहस्पतिवार को तब और स्पष्ट हो कर सामने आई जब मिन्नेसोटा की श्वेत सीनेटर ऐमी क्लोबेशार उप राष्ट्रपति पद की दौड़ से हट गईं। उन्होने एमएसएनबीसी से कहा, यह काले रंग की महिला को उम्मीदवार बनाने का समय है। राष्ट्रपति पद के संभावित डेमोक्रेटिक उम्मीदवार बाइडेन पहले ही उप राष्ट्रपति पद के लिए किसी महिला को चुनने की बात कह चुके है ताकि पार्टी के आधार को मजबूत किया जाए और इतिहास रचा जाए।

जॉन बोल्टन की किताब के प्रकाशन पर रोक को लेकर कोर्ट ने अभी नहीं सुनाया फैसला

वाशिंगटन। ट्रंप प्रशासन के वकीलों ने पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जॉन बोल्टन की किताब का प्रकाशन रोकने का न्यायाधीश से अनुरोध करते हुए कहा कि बोल्टन ने अंतिम मंजूरी मिले बिना अपनी किताब को प्रकाशित करने का फैसला लेकर खुद परेशानी खड़ी की। उन्होंने इस बात की मंजूरी नहीं ली कि इस किताब में गोपनीय सूचनाएं नहीं हैं। बहरहाल बोल्टन की ओर से पेश हुए वकील ने सरकार के अनुरोध को अवास्तविक और अव्यावहारिक बताया, खासतौर से तब, जब इस किताब की प्रतियां पहले ही प्रमुख समाचार संगठनों को जारी कर दी गई हैं और यह काफी चर्चा में आ चुकी है। अमेरिका के डिस्ट्रिक्ट जज रॉयस लैमबर्थ ने तत्काल कोई फैसला नहीं सुनाया। उन्होंने कहा कि वह मामले में अतिरिक्त सूचना की समीक्षा करना चाहते हैं। न्याय विभाग ने द रूम वेयर इट हैपेन्ड किताब के अगले हफ्ते होने वाले विमोचन पर रोक लगाने के लिए मुकदमा दायर किया है।

कोविड-19 ने बढ़ाया अकेलापन और व्यग्रता, ऐसे में योग मददगार: यूएनजीए अध्यक्ष

भाषा। संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र महासभा के अध्यक्ष ने छठे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कहा कि कोविड-19 ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है, लोगों में अकेलापन बढ़ गया है और इसके कारण व्यग्रता भी बढ़ी है, ऐसे में सेहतमंद रहने के लिए योग करना आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है। इस वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कोविड-19 संबंधी पाबंदियों के चलते तथा सामाजिक दूरी के नियम का पालन करने के लिए डिजिटल तरीके से मनाया जाएगा।

महासभा के अध्यक्ष तिजानी मोहम्मद बंदे ने डिजिटल संदेश में कहा, वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया है। सामाजिक दूरी के कारण अकेलापन बढ़ा है, आर्थिक परेशानियों के कारण व्यग्रता बढ़ी है तथा बीमारी का डर और प्रियजन की चिंता भी लोगों को खाए जा रही है।

उन्होंने कहा, वैश्विक महामारी के कारण जो परेशानियां पैदा हुई हैं उनसे निपटने तथा चिंता से जूझ रहे लोगों की मदद करने के लिहाज से हम जानते हैं कि योग करना कितना महत्वपूर्ण है। इससे पहले, भारत का स्थाई मिशन संरा परिसर में योग दिवस का कार्यक्रम बड़े पैमाने पर आयोजित करता था। इस बार मिशन ने शुक्रवार को कोविड-19 के चलते डिजिटल कार्यक्रम योग फॉर हैल्थ - योग ऐट होम का आयोजन किया।

वाशिंगटन में व्हाइट हाउस के पास ब्लैक लिव्स मैटर प्लाजा में रुबालाकावा 16वीं स्ट्रीट नॉर्थवेस्ट पर एक क्रॉस के साथ खड़ा एक व्यक्ति

डेनवर में स्टेट कैपिटल के रोटुंडा में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान एक व्यापक पुलिस जवाबदेही बिल पर हस्ताक्षर करने के समय कोलोराडो के गवर्नर जारेड पोलीस और साथ में बिल के प्रायोजक सदस्य

उद्यमी खालसा अमेरिका में प्रदर्शनकारियों को 10 लाख डॉलर के मास्क करेंगे वितरित

भाषा। वाशिंगटन

जाने-माने भारतीय-अमेरिकी परोपकारी एवं उद्यमी गुरिंदर सिंह खालसा ने जूनटीन्थ के अवसर पर घोषणा की कि वह अफ्रीकी-अमेरिकी जॉर्ज फ्लॉयड की पुलिस हिरासत में मौत के बाद पुलिस की बर्बरता के खिलाफ अमेरिका में शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे लोगों को 10 लाख डॉलर के मास्क एवं रक्षात्मक शील्ड दान करेंगे। जूनटीन्थ अमेरिका में दास प्रथा के अंत की खुशी में मनाया जाता है।

प्रतिष्ठित रोजा पार्क्स ट्रेलब्लेजर पुरस्कार से सम्मानित इंडियाना के रहने वाले खालसा ने कहा, यदि हम घृणा एवं हिंसा की जगह प्रेम एवं करूणा फैलाना चाहते हैं तो हमें अमेरिका की असल तस्वीर पेश करने की आवश्यकता है। खालसा ने कहा कि मास्क और रक्षात्मक शील्ड दान करना न्याय की मांग कर रहे और पुलिस की बर्बरता समाप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे लोगों की मदद करने का एक छोटा प्रतीक है।

हांगकांग में राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो बनाएगा चीन

बीजिंग। चीन ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा माने जाने वाले अपराधों की जांच और मुकदमा चलाने के लिए हांगकांग में एक विशेष ब्यूरो स्थापित करने की योजना बनाई है। सरकारी मीडिया में शनिवार को जारी खबरों में हांगकांग में लागू किए जा रहे विवादित नए राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के बारे में कुछ जानकारी सामने आई है, जिसमें यह बात पता चली है। हांगकांग में वित्त से लेकर आव्रजन तक सभी सरकारी विभागों के निकाय सीधे बीजिंग की केन्द्र सरकार के प्रति जवाबदेह होंगे। चीन की विधायिका ने हांगकांग के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा बिल का मसौदा पारित किया था। इस कानून को लेकर चीन पर अर्ध-स्वायत्त हांगकांग के कानूनी और राजनीतिक संस्थानों को कमजोर करने के आरोप लगे हैं। चीन की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थाई समितियों ने अपराध की चार श्रेणियों से संबंधित इस विधेयक की समीक्षा की थी।

चालक दल के सदस्यों के बचाव के लिए आवाज उठाने वाले नौसेना के कैप्टन की बर्खास्तगी रुकी

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिकी नौसेना ने चौंकाने वाला उलटफेर करते हुए विमानवाहक पोत के उस कैप्टन की बर्खास्तगी रोक दी है जिसने कोरोना वायरस के प्रकोप से अपने चालक दल के सदस्यों के बचाव के लिए त्वरित कार्वाई की अपील की थी। खबर की जानकारी रखने वाले एक अमेरिकी अधिकारी ने यह जानकारी दी।

नौसेना ने पोत पर वैश्विक महामारी संकट के संबंध में निष्कर्ष निकाला कि दोनों अधिकारियों के फैसले में गंभीर खामियां थी जिसकी वजह से एक सितारा वाले एडमिरल की पदोन्नति को भी टालने का भी फैसला किया गया है जो यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट में ही सवार थे। मार्च में प्रशांत महासागर में तैनाती के दौरान विमानवाहक पोत में कोरोना वायरस का प्रसार हाल के वर्षों में सबसे बड़ा सैन्य नेतृत्व संकट बन गया था। चालक दल के 1,000 से अधिक सदस्य धीरे-धीरे संक्रमित हो गए थे और एक नाविक की मौत हो गई थी। पोत को कुछ हफ्तों के लिए गुआम में खड़ा कर दिया गया था लेकिन वह हाल ही में फिर से ड्यूटी पर लौट आया। नौसैन्य अभियानों के प्रमुख, एडमिरल माइक गिलडे द्वारा दोनों कैप्टन ब्रेट क्रोजियर और उनके बॉस रियर एडमिरल स्टुअर्ट बेकर को जिम्मेदार ठहराने का फैसला पेंटागन के शीर्ष अधिकारियों की तरफ से जताई गई चिंताओं की पुष्टि है जिन्होंने पिछले महीने गहन जांच की मांग की थी जब शुरुआती जांच में पोत के कैप्टन के तौर पर क्रोजियर की बहाली की अनुशंसा की थी।

संदना के कोठावां में देवर और भाभी हुसैनगंज में महिला कोरोना संक्रमित

● दिल्ली में मजदूरी करते थे देवर भाभी दिल्ली से ही परिवार के साथ लौटी थी महिला खैराबाद के एल-1 में किया गया भर्ती

पायनियर कोरोना अपडेट

संवाददाता। सीतापुर

संदना क्षेत्र में दिल्ली से वापस लौटे देवर-भाभी की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आने के बाद से हड़कंप मच गया। दोनों संक्रमित दिल्ली में मजदूरी करते थे। देवर भाभी कुछ दिन पूर्व अपने परिवार के साथ दिल्ली से आए थे। सीएचसी अधीक्षक डॉ. धीरज मिश्रा के मुताबिक 14 जून को वह आए थे, इस दौरान जून 15 को दोनों की सेंपलिंग हुई थी। जिसमें देवरभाभी की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। दोनों मरीजों को खैराबाद के एल-1 हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया है। वहीं संपर्क में आए परिजनों को भी प्राथमिक विद्यालय में क्वॉरेंटाइन किया गया है। उपखंड विकास अधिकारी गोंदलामऊ मनोज सिंह का कहना है मौके पर साफसफाई कराई जा रही है। मौके पर एसडीएम सिधौली संतोष राय, सीओ मिश्रिख अभय प्रताप मल्ल, आशा व स्वास्थ्य टीमों के द्वारा ग्रामीणों का चेकअप कर, पूरे गांव को सेनेटाइज कराया गया और गांव को सीलकर एलाउंस कराया जा रहा है। वहीं देर शाम शहर के मोहल्ला हुसैनगंज से एक 25 वर्षीय महिला पाजिटिव पाई गई जिसकी पुष्टि डा. पीके सिंह ने की और बताया कि महिला का पूरा परिवार दिल्ली से लगभग दो-तीन दिन पूर्व आई थी और उसने जिला अस्पताल में अपनी जांच कराई थी, जिसको खैराबाद अस्पताल में भर्ती कराकर परिजनों को होम क्वारंटीन किया गया है, मोहल्ले का 250 मीटर एरिया एसडीएम सदर अमित भट्ट, सीओ सिटी योगेंद्र सिंह, इंस्पेक्टर अंबर सिंह द्वारा सील कराया गया।

सीएमओ कार्यालय में लगी सेनेटाइज मशीन

कोरोना के संक्रमण को देखते हुए शनिवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ आलोक वर्मा द्वारा अपने कार्यालय में सैनिटाइजर मशीन लगवायी गयी। इस मौके पर उन्होंने निर्देश दिए कि समस्त स्टाफ व आगुन्तक कार्यालय में अंदर जाने से पहले गेट पर लगे सैनीटाईजर मशीन से अपने दोंनो हाथो को सेनीटाईज करने के पश्चात ही कार्यालय के अंदर जायें।

सीतापुर-हाथ सेनेटाइज करते सीएमओ डा. आलोक वर्मा

सपा कार्यकर्ताओं ने सेउता कस्बे में बाँटे मास्क व सेनेटाइजर

रेउसा सीतापुर। विधान सभा क्षेत्र के सेउता कस्बे में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने घर- घर जाकर लोगों को मास्क और सेनेटाईजर वितरित किये। सपा कार्यकर्ता मेराज अहमद, मौलाना नसीम अहमद कादरी, नूर अहमद, एमडी राजा आदि ने सेउता कस्वे में ग्रामीण बैंक की लाइन में लगे लोगों को पानी, बिस्किट व मास्क आदि का वितरण कर सभी को करोना से बचाव सम्बंधी आवश्यक जानकारी दी।

मोदी-योगी सरकार की उपलब्धियों के पत्रक बांटे गए और मास्क भी

सीतापुर-मास्क वितरित करते जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा

संवाददाता। सीतापुर

जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा के नेतृत्व में जिले के सभी मंडल व बूथों पर पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने घर घर संपर्क कर मोदी सरकार 2 के सफल एक वर्ष व योगी सरकार की 3 वर्ष की शानदार उपलब्धियों के पत्रक तथा मास्क बांटकर कोविड 19 से बचाव के लिए भी लोगों को प्रेरित किया। जिलाध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा ने नैपालापुर बूथ पर पार्टी पदाधिकारियो के साथ घर घर संपर्क कर मोदी व योगी सरकार के शानदार कार्यकाल पर उपलब्धियों का पत्रक व मास्क बांटकर लोगों से कोविड 19 से बचाव के लिए भी प्रेरित किया। वही जिला महामंत्री विश्राम राठौर, उपाध्यक्ष संजय मिश्रा, नीरज वर्मा झल्लर,इंदू सिंह चौहान, युवा मोर्चा संयोजक अनूप विश्वकर्मा, सचिन मिश्र, अभिषेक मिश्र, अजय प्रताप सिंह, तरुण शुक्ल, पंकज अवस्थी,संदीप अवस्थी,शिवा गोस्वामी ने भी परिवार संपर्क अभियान में घर घर संपर्क कर मोदी व योगी सरकार की उपलब्धियां तथा मास्क बांटकर कोविड 19 से बचाव के लिए लोगो को प्रेरित किया। जिला उपाध्यक्ष संजय मिश्रा ने बताया कि प्रदेश नेतृत्व के निर्देश पर परिवार संपर्क अभियान को आगे बढ़ाकर 20 जून तक कर दिया गया है।

एमएलसी ने बांटे मास्क

सीतापुर-बैठक करते स्नातक एमएलसी ब्रजेश सिंह व अन्य

सीतापुर। एमएलसी स्नातक प्रत्याशी ब्रजेश सिंह ने अपने कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की और आगे की रणनीति बनाई व कार्यकर्ताओं को मास्क व सेनेटाइजर वितरित किए। इस मौके पर विजय त्रिपाठी, दुर्गेश सिंह, भानु प्रताप सिंह, अमर सिंह,, अनुज सिंह, रितेश सिंह, अखिलेश सिंह, रिजवान, मनीष त्रिपाठी, जितेंद्र कश्यप, बाबू पाल, अनूप राठौर, अखिलेश मिश्रा, दीपक त्रिपाठी, सिद्धि कुमार शुक्ला, रज्जन सिंह आदि मौजूद रहे।

ग्रामीणों ने पकड़ा एटीएम हैकर, आठ कार्ड बरामद

रामकोट सीतापुर। रामकोट कस्बे में स्टेट बैंक के पास स्थिति इंडिया 1 एटीएम में अतीक पुत्र हबीब निवासी सहोली थाना सन्दना पैसा निकाल रहा था। तभी पीछे से एक युवक घुस गया। जब अतीक ने उससे कहा बाहर रहो, उसने कहा हम किनारे खड़े है। पैसा निकलते समय एटीएम कार्ड को बदल लिया और कार्ड को लेकर भागने लगा, ग्रामीणों ने उसे पकड़कर पुलिस के हवाले किया। पूछने पर युवक ने अपना नाम पंकज कुमार तिवारी पुत्र राजकुमार तिवारी नि. जिहुरा कोतवाली मिश्रिख बताया। पुलिस ने बताया हैंकर के पास से 8 एटीएम कार्ड बरामद हुए है। हैकर के खिलाफ कोतवाली सदर व मिश्रिख में केस दर्ज हैं। पुलिस ने 420 के तहत दर्ज कर जेल भेजने की कार्यवाही की है।

जिलाधिकारी ने सुनीं किसानों की समस्याएं

संवाददाता। सीतापुर

शनिवार को जिलाधिकारी अखिलेश तिवारी ने कलेक्ट्रेट सभागार में किसानों एवं संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर जिले में चल रहे किसान उत्पादन संघ के बारे में सुनियोजित ढंग से कार्य योजना बना कर के कार्य करने पर चर्चा की। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि सभी विभाग जनपद की भौगोलिक एवं आर्थिक गतिविधियों को दृष्टिगत रखते हुये क्लस्टर आधारित कार्यों का चुनाव कर कार्ययोजना तैयार कर अगली बैठक में प्रस्तुत करें। जिला कृषि उप निदेशक अरविंद मोहन मिश्र ने कहा कि सीतापुर जनपद में कुल 9 किसान उत्पादन समूह कार्यरत है और 3 समूह बनाये के लिए प्रयास जारी है। उन्होंने बताया कि कृषि विभाग द्वारा बीज उत्पादन के लिए मिश्रिख के दो कृषक उत्पादक संघ द्वारा मिल कर कार्य किया जा रहा है एवं पांच कृषक उत्पादक संघों को फार्म मशीनरी बैंक अनुदान पर स्थापित कराये गए है। कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ आनन्द सिंह द्वारा सनई से रेशा उत्पादन कर दरी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराया जा सकेगा, जिसके से दरी के साथ साथ किसानों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी संदीप कुमार, अपर जिलाधिकारी विनय कुमार पाठक, नगर मजिस्ट्रेट पूजा मिश्रा सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

सीतापुर-बैठक करते जिलाधिकारी अखिलेष तिवारी

अब पटरी दुकानदार भी होंगे आत्मनिर्भर, मिलेगा लोन

● नगरपालिका या डूडा कार्यालय में कर सकते हैं संपर्क, डिजिटल लेन-देन पर 50 से 100 रुपए तक की मिलेगी नकद वापसी

सीतापुर। पटरी दुकानदारों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में जिलाधिकारी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट में पीएम स्ट्रीट वेन्डर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) की बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने बताया कि पीएम स्ट्रीट वेन्डर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना के तहत नगरीय निकायों में 24 मार्च 2020 या उससे पहले विक्रय गतिविधि करने वाले पटरी दुकानदार तथा शहरी इलाके के आस-पास एवं ग्रामीण क्षेत्रों से आये पटरी दुकानदारों को लाभान्वित किया जायेगा, जिनका रू. 10 हजार रूपये का पूंजीगत ऋण उपलब्ध कराया जाएगा जिसमें गिरवी रखने के लिए किसी भी चीज की आवश्यकता नही है। समय पर समय से पहले ऋण वापसी करने पर 7 प्रतिशत की दर से ब्याज सब्सिडी दी जाएगी। डिजिटल लेन-देन पर रू0 50 से 100 तक की मासिक नकदी वापसी (कैश बैक) प्रोत्साहन भी मिलेगा। लाभ प्राप्त करने हेतु संबंधित नगरपालिका या डूडा कार्यालय में सम्पर्क किया जा सकता है। डीएम ने सभी ईओ को निर्देशित किया कि सभी पटरी दुकानदारों का पंजीकरण कर लिया जाए तथा इच्छुक पथ विक्रेताओं का ऋण हेतु आवेदन पत्र प्राप्त कर उनके पात्रता की जांच माह जून तक पूर्ण कर लें ताकि जुलाई माह में ऋण देने की कार्यवाही की जा सके। इस दौरान विनय कुमार पाठक, नगर मजि. पूजा मिश्रा, परियोजना निदेशक डूडा पूजा मिश्रा, प्रबन्धक अग्रणी जिला बैंक आदि मौजूद रहे।

क्विक न्यूज

चोरों ने लाखों का माल उड़ाया

लालपुर सीतापुर। लहरपुर कोतवाली क्षेत्र के निमौची गांव में शुक्रवार रात करीब 2:30 बजे अज्ञात चोरों ने उमा दत्त मिश्रा पुत्र शिवराखन के घर में पीछे की दीवार से प्रवेश करके एक हार एक जोड़ी झाला एक अंगूठी एक चेन व 30 हजार के करीब नगदी उठा ले गए सुबह जब इधर-उधर तलाश की तो घर के पूरब करीब डेढ़ सौ मीटर की दूरी पर तालाब के किनारे खाली बच्चे पड़े मिले। पुलिस जांच कर रही है।

अन्नपूर्णा परिवार ने मनाया योग दिवस

सीतापुर। अन्नपूर्णा सेवा संस्थान परिवार द्वारा विश्व योग दिवस के पूर्व दिवस पर परिवार के कर्मवीरों द्वारा योग दिवस मनाया गया। संपूर्ण योगासन अन्नपूर्णा उड़ान सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष डॉ. अरुण कुमार त्रिपाठी ने कराकर सभी को स्वस्थ व निरोग रहने के लिए कुछ नियम बताए। सभी ने उनके मार्गदर्शन में शारीरिक दूरी बनाते हुए सरस्वती संगीत महाविद्यालय में योग किया। संस्थान अध्यक्ष अनिल द्विवेदी ने कहा कि योग जो कि हमारी प्राचीन धरोहर है। इसे रोज करके स्वस्थ रहें। और जब शरीर स्वस्थ रहेगा, तभी मन भी स्वस्थ रहेगा। अन्नपूर्णा कर्म वीरों नें योग कर पूरे समाज को स्वस्थ रहने का संदेश दिया। इस दौरान पुष्पा अवस्थी, डॉ. अरुण कुमार त्रिपाठी, शैलेन्द्री तिवारी, प्रगति बाजपेई, यासीन इब्ने उमर, विकास सेठ, विकास अग्रवाल, के.पी. मिश्रा, अभय श्रीवास्तव, शिव प्रताप सिंह चौहान, नवीन श्रीवास्तव, पवन कश्यप, आदर्श गुप्ता, शिवम शुक्ला, सूरज, अमित वर्मा, सौरभ मिश्रा, रामसेवक, आदि मौजूद रहे।

पालिका क्षेत्र में घर तक नहीं और बन गईं अध्यक्ष

सीतापुर। मतदाता सूची में हेरफेर और नैमिष के पते पर निवास न करने के मामले में शासन ने मिश्रिख पालिकाध्यक्ष सरला भार्गव के वित्तीय एंव प्रशासनिक अधिकार सीज कर दिए गए है। एक महीने में स्पष्टीकरण न देने पाने की दशा में अन्य कार्रवाई किए जाने की चेतावनी भी दी गई है। प्रमुख सचिव दीपक कुमार ने जिलाधिकारी अखिलेश तिवारी को पत्र में कहा कि सभासद विष्णु व अन्य लोगो द्वारा एसडीएम मिश्रिख व ईओ से शिकायत भी की गई थी। रिपोर्ट आने के बाद स्पष्टीकरण मांगा गया था जो कि सरला भार्गव द्वारा नहीं दिया गया।

वरिष्ठ कोषाधिकारी को स्टाम्प विक्रेताओं ने दिया ज्ञापन

सीतापुर। आल यूपी स्टाम्प वेंडर एसोसिएशन ने कोषागर से नगद स्टाम्प खरीद रोके जाने के आदेश को वापस लेने की मांग की है। अपर मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश शासन के नाम ज्ञापन वरिष्ठ कोषाधिकारी सीतापुर के द्वारा प्रेसित किया गया है जिसमें मांग की गई है कि स्टाम्प वेंडरों के लिये कोषागार से नगद स्टाम्प की खरीद पर लगाई गई रोंक को हटवाया जाये और स्टाम्प वेंडरों को भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में धनराशि जमा करने व अलग विंडो की सुविधा सुनिश्चित की जाये। वेंडर एसोसियन के अध्यक्ष विनय बैश्य व महामंत्री राम मिश्रा सहित जिले भर के संगठन पदाधिकारीयों ने ज्ञापन देकर स्टाम्प विक्रेताओं की समस्य निराकरण के लिये मांग की है।

फर्राटा में उतरा करंट, पिता-पुत्र की मौत

सीतापुर। खैराबाद थाना क्षेत्र के कृष्णा सुजावलपुर गांव में शनिवार को फर्राटा में करंट उतरने से पिता-पुत्र की मौत हो गई। वहीं एक महिला घायल हो गई। घायल का इलाज बीसीएम हॉस्पिटल खैराबाद में चल रहा है। घर में फर्राटा चल रहा था। पूरा परिवार पंखे के निकट बैठा था। इसी बीच पंखे में गड़बडी आ गई। संजय 24 वर्ष पंखा ठीक करने लगा। वह पंखा में चिपक गया। पिता रमाकुमार 60 वर्ष बेटे को छुड़ाने लगा। दोनों की मौत हो गई। वहीं रामकुमार की पत्नी बिंदे देवी घायल हो गईं।

करंट की चपेट में आने से महिला की मौत

लहरपुर सीतापुर। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम लालपुर बाजार में बिजली की चपेट में आने से 35 वर्षीय महिला की मौत, शादी की खुशियां मातम में बदलीं। जानकारी के अनुसार कोतवाली क्षेत्र के ग्राम लालपुर बाजार में उस वक्त शादी की खुशियां मातम में बदल गई जब घर की छत पर रेखा पत्नी दिलीप उम्र 35 वर्ष कुछ काम से छत पर गई हुई थी, घर के पास से गुजरी बिजली की लाइन की चपेट में आ गई और बुरी तरह झुलस गई, परिजन उसे आनन-फानन में सीएचसी लेकर आए जहां पर डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बताया जाता है कि संतोष कुमार पुत्र कामता प्रसाद के चचेरे भाई राम रतन पुत्र ठाकुर प्रसाद निवासी लालपुर बाजार के घर कल लड़की की थाना तालगांव क्षेत्र के ग्राम अल्हना से बारात आई थी, आज सुबह विदाई होनी थी पूरा परिवार शादी के माहौल में विदाई की तैयारियां कर रहा था, दूसरी तरफशादी में उनकी लड़की रेखा पत्नी दिलीप निवासी बाबूराम सर्राफनगर कॉलोनी लखीमपुर खीरी आई हुई थी जो बिजली के तारों की चपेट में आ गई और जिससे उनकी मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने आवश्यक कार्यवाई कर शव को पीएम के लिए भेजा।

थाना इमलिया सुल्तानपुर क्षेत्र में हुई घिनौनी वारदात...

विवाह देखने गई मासूम के साथ दुल्हन के भाई ने किया दुष्कर्म

● गांव से दूर ले जाकर दिया वारदात को अंजाम, खून से लथपथ घर पहुंची मासूम ने परिजनों को सुनाई आपबीती, हालत गंभीर लखनऊ में इलाज जारी, एसपी ने मौके पर पहुंचकर किया निरीक्षण, आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता। ऐलिया/कचनार सीतापुर

थाना इमलिया सुल्तानपुर इलाके से एक घिनौनी वारदात सामने आई है जहां गांव के ही युवक ने एक 8 साल की मासूम के साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया फिर उसको जान से मारने की धमकी दी पीड़िता की हालत बिगड़ी तो उसने अपने परिजनों को सारी बात बताई फिर लोगों ने आरोपी को पकड़ लिया, वहीं पीड़िता की हालत इतनी बिगड़ी कि उसका इलाज लखनऊ में जारी है। क्षेत्र के अंदौली गांव में भगवानदीन की लड़की की शुक्रवार रात आई थी रात 9 बजे गांव की 8 वर्षीय बारात देखने गई थी तभी गांव के ही अनुराग वर्मा (20) उर्फबद्री पुत्र भगवानदीन ने लड़की से कहा कि तुम्हारे पिताजी गांव के बाहर शराब के नशे में पड़े हुए हैं तुमको उन्होंने बुलाया है जब मासूम अनुराग के साथ गई तो अनुराग ने गांव से दूर ले जाकर मासूम के साथ दुष्कर्म किया और मासूम को वहीं छोड़ दिया जान से मारने की धमकी भी दी जब पीड़िता घर आई तो लड़की के माता-पिता ने पीड़िता को खून में और मिट्टी में सना पाया। पीड़िता ने सारी बात कह सुनाई परिजनों ने पुलिस को सूचना दी पुलिस ने अनुराग के भाई व दूल्हे को हिरासत में ले लिया। कुछ देर बाद अनुराग को घर वालों ने ही पुलिस के हवाले कर दिया तब जाकर पुलिस ने अनुराग की बहन की शादी के लिए दूल्हे को छोड़ दिया व उसके भाई को भी छोड़ दिया। मौके पर इंस्पेक्टर मनोज यादव पहुंचे पीड़िता की हालत देखते हुए लखनऊ रेफर कर दिया। रविवार को पुलिस अधीक्षक आरपी सिंह ने घटनास्थल का निरीक्षण कर केस दर्ज करने के निर्देश दिए।

हैप्पी फादर्श डे...

सीतापुर-चित्र में दिख रहा है यह शानदार परिवार किसी जमींदार या बड़े व्यापारी का नहीं बल्कि एक साधारण मोची श्रीराम सुमन का है। श्रीराम सुमन ने म्युनिस्पिल मार्केट में रखी एक छोटी गुमटी में बूट पालिस करके अपने बच्चों का जीवन चमका दिया है। उनकी बड़ी बेटी आशा परिषदीय विद्यालय कीं प्रधानाध्यापिका है, दूसरी बेटी ऊषा स्टाफ नर्स है, तीसरी बेटी निशा सिपाही है, बेटा दीपराज लेखपाल है और छोटी बेटी प्रिया केन्द्रीय विद्यालय में 12वीं की छात्रा है।

डॉ. गया प्रसाद कटियार की मनाई जयंती

सीतापुर-प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते लोग

सीतापुर। शनिवार को को डॉ गया प्रसाद कटियार की जयंती हर्षोल्लास के साथ सीतापुर में मनाई गई। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सक्रिय सेनानी के व्यक्तित्व पर डॉ ओ.एन. वर्मा द्वारा वक्तव्य दिए गए तथा कवित्री मालती देवी की डॉक्टर गया प्रसाद कटियार पर लिखी गई कविता को मानवीय पटेल कक्षा 6 एलपीएस ने सुनाया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रेम नाथ वर्मा ने तथा जेडी सिंह ने विस्तारपूर्वक कटियार के जीवन संघर्ष पर बताया। इस अवसर पर कवि राज बहादुर वर्मा, दीपेंद्र वर्मा शिक्षक, महेश प्रसाद वर्मा सामाजिक कार्यकर्ता , प्यारे लाल पटेल सामाजिक कार्यकर्ता, सुरेश वर्मा सामाजिक कार्यकर्ता, नत्था लाल वर्मा राकेश वर्मा आदि लोगों ने सोशल डिस्टेंसिंग का पूर्ण रुप से पालन करते हुए उपस्थित रहे कार्यक्रम का समापन सेवानिवृत्त शाखा प्रबंधक झम्मन लाल वर्मा द्वारा मिष्ठान वितरित करके किया गया तथा शाखा प्रबंधक की पत्नी संतोष कुमारी ने व्यवस्था में भूमिका अदा की।

लूट के बाद ग्रामीणों ने लुटेरों को पकड़ कर पीटा, कर दिया पुलिस के हवाले

● सकरन थाना क्षेत्र की घटना, पुलिस ने बरामद किया लूट का सामान, ग्रामीणों की वजह से पकड़े गए लुटेरे जनता में खौफ व्याप्त

संवाददाता। सकरन सीतापुर

थाना सकरन इलाके में असलहों से लैस बदमाशों ने शनिवार को ससुराल से अपने मायके जा रही नवविवाहिता से दिनदहाडे असलहों की नोंक पर लूटपाट की, शोर सुनकर ग्रामीणों ने बदमाशों को घेर कर पकड कर उनकी पिटाई कर पुलिस को सौंपा पुलिस ने घायल बदमाशों को इलाज हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सांडा में भर्ती कराया है। पकडे गये तीनों बदमाश गैर जनपद के बताये जा रहे है। सकरन के मोतीपुर गांव निवासी हेमराज की पुत्री पिंकी की शादी दो दिन पूर्व बिसवां थाना क्षेत्र के भवानी पुर गांव से हुयी थी पिंकी शनिवार सुबह अपने ममेरे भाई मोल्हे के साथ ससुराल से अपने मायके जा रही थी सुबह करीब दस बजे सकरन थाना क्षेत्र के सुकेठा बाजार के पास नकाबपोश असलहों से लैस बदमाशों ने उनको रोककर उसके पास से जेवर व नकदी लूट ली और बाइक पर सवार होकर भागने लगे पिंकी द्वारा शोर मचाने पर ग्रामीण चन्द्रकुमार, श्रीकेशन आदि ने घेर कर बदमाशों को पकड लिया तथा मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने तीनो बदमाशों की लाठी डंडों से पिटाई कर दी। पुलिस ने तीनों बदमाशों को सीएचसी सांडा में भर्ती कराया दिया है। पूछताछ के दौरान बदमाशों ने अपना नाम हारेन्द्र पुत्र हरिशंकर ,श्रीकेशन पुत्र भूरे निवासी नकहा बिजय पुत्र फक्कीरे निवासी चौव्वापुर थाना व जनपद खीरी बताया पुलिस ने बदमाशों के पास से दो अदद अवैध असलहे व चाकू तथा लूटे गये जेवरों में सोने की नथ बरामद की है सूचना पाकर मौके पर पहुंचे एडिशनल एसपी डा0 राजीव दीक्षित व सीओ बिसवां समर बहादुर सिंह के साथ साथ रेउसा, बिसवां व तम्बौर थानों की पुलिस ने घटना स्थल का निरीक्षण करते हुए बताया कि लुटेरों के खिलाफसंबंधित धाराओं में केस भी दर्ज किया जा रहा है। दिन दहाडे हुयी लूट की घटना से समूचे क्षेत्र में सनसनी फैल गयी है।

आज लगेगा सूर्य ग्रहण

संवाददाता। नैमिषारण्य सीतापुर

आचार्य रमेष चन्द्र शास्त्री

नैमिष आचार्य रमेश चंद्र शास्त्री के अनुसार आषाढ़ कृष्ण अमावस्या रविवार को खण्डग्रास सूर्य ग्रहण लगेगा जो भारत में भी दिखाई देगा। ग्रहण का समय प्रात:10:27 बजे प्रारम्भ 12:12 बजे मध्य एवं दोपहर 01:58 बजे मोक्ष यानी ग्रहण की समाप्ति होगी। इस ग्रहण का सूतक 12 घण्टे पूर्व अर्थात 20 जून शनिवार की रात्रि 10:27 से प्रारम्भ हो जायेगा। ये ग्रहण न ही आंशिक सूर्य ग्रहण होगा और न ही पूर्ण सूर्यग्रहण, क्योंकि चन्द्रमा की छाया सूर्य का करीब 99: भाग ही ढकेगी। इसके परिणामस्वरूप सूर्य का घेरा एक चमकती अंगूठी की तरह दिखाई देता है। ग्रहण के दौरान नैमिष के भूतेश्वर नाथ मंदिर, ललिता देवी मंदिर, हनुमान गढ़ी, व्यासगद्दी, सूतगद्दी समेत सभी प्रमुख मंदिर बंद राह रहेंगे। ग्रहण समाप्ति के बाद सभी मंदिरों की साफसफाई और शुद्धिकरण किया जाएगा ।

'अमावस्या के मौके पर नैमिष में जुट सकती है भीड़'

नैमिषारण्य तीर्थ में अमावस्या के मौके पर भारी भीड़ जुट सकती है, वैश्विक महामारी कोविड 19 के भय के बीच श्रद्धालु मंदिरों में कैसे दर्शन करेंगे यह असली चुनौती रहेगी । 8 जून के से मंदिरों के कपाट खुलने के बाद श्रद्धालुओं ने सीमित संख्या में ही सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखते हुए दर्शन किया । यदि अमावस्या के मौके पर भीड़ बढ़ी तो प्रशासन को सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराना चुनौती होगी ।

शादी का झांसा देकर पांच साल तक बनाता रहा शारीरिक संबंध

- गर्भपात भी कराया
- शिकायत के बावजूद उच्चाधिकारियों ने नहीं की कार्रवाई
- जानकारी पर भड़का हिंदूवादी संगठन
- आरोपी के खिलाफ की कार्रवाई की मांग

संवाददाता। लखीमपुर-खीरी

गोला कोतवाली क्षेत्र में गैर समुदाय का युवक एक दलित युवती को शादी का झांसा देकर पांच साल तक शारीरिक सम्बन्ध रहा। जब लड़की ने खुद के गर्भवती होने की बात बताई तो अपनाने की जगह जबरन उसका गर्भपात करा दिया। जिसके बाद से वह लड़की को जातिसूचक गालियां देकर दूर रहने को कह रहा है। युवती की शिकायत पर कार्रवाई नहीं हुई। बात हिंदू संगठन को पता चली तो उन्होंने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की है।

जानकारी के अनुसार, गोला नगर के एक मोहल्ला निवासी दलित युवती को पांच साल पहले मिंटू उर्फ रसीद अली पुत्र इम्तियाज अली ने अपने प्रेमजाल में फंसाया। शादी का झांसा देकर उसके साथ पांच साल तक शारीरिक सम्बन्ध बनाता रहा। पांच माह पूर्व वह युवती गर्भवती हो गई और उसने शादी की बात कही तो रसीद अली ने उसका जबरन गर्भपात करा दिया। फिर वह काफी दिनों तक बहाना बनाकर शादी की बात टालता रहा। जब लड़की ने अधिक दबाव बनाया तो दो हफ्ते पहले रसीद अली ने न केवल शादी से इंकार कर दिया बल्कि जातिसूचक गालियां देते हुए भगा दिया। युवती ने स्थानीय पुलिस, डीएम व एसपी को शिकायती पत्र दिया पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।

वहीं जब मामला हिन्दू युवा वाहिनी तक पहुंची तो संगठन भड़क गया। संगठन के जिला प्रभारी विपिन मिश्रा, प्रिंकल मिश्रा, जयेन्द्र मिश्रा उर्फसोनू, नवीन श्रीवास्तव, धर्मेंद्र, सोनू त्रिवेदी आदि कोतवाली पहुंचे और मुस्लिम युवक के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग की।

सड़क हादसे में युवक की मौत, दो घायल

लखीमपुर-खीरी। नेशनल हाइवे 730 पर बेड़नापुर के पास हुए एक सड़क हादसे में खमरिया क्षेत्र के लोनियन पुरवा निवासी एक युवक की मौत हो गई। जबकि उसी की बाइक पर सवार खमरिया के दो छात्र जख्मी हुए। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। खमरिया कस्बा निवासी रवि (18) पुत्र सोनेलाल और अभिषेक (16) पुत्र विक्रम खमरिया चौकी क्षेत्र के लोनियन पुरवा अल्लीपुर निवासी दीपक (30) पुत्र हरनाम के साथ लखीमपुर गए थे। जहां से तीनों एक बाइक पर सवार होकर घर वापसी कर रहे थे। उसी दौरान खीरी थाना क्षेत्र में नेशनल हाइवे 730 पर बेड़नापुर के पास तीनों की बाइक एक अन्य बाइक से टकरा गई। हादसे में दीपक की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि रवि और अभिषेक जख्मी हो गए। अभिषेक 10वीं और रवि 12वीं कक्षा के छात्र हैं।

बीस करोड़ से बनेगा मेडिकल कालेजः अजय

निघासन-खीरी। भाजपा सांसद अजय मिश्र टेनी ने पत्रकार वार्ता के दौरान बताया है कि जिले के लिए मंजूर मेडिकल कालेज के लिए बीस करोड़ रुपए मंजूर होकर ट्रांसफर किए जा चुके हैं। इसके शुरूआती कामों के लिए टेंडर भी हो गया है। पीडब्ल्यूडी ने इसके निर्माण के लिए दो जगह देखी गई जमीन का प्रोपोजल बनाकर भेजा है। सांसद अजय मिश्र टेनी शुक्रवार को लोगों के साथ पत्रकारों को अपने एक साल के कार्यकाल की उपलब्धियों और कामों की जानकारी दे रहे थे। कस्बे के पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में वार्ता करते हुए उन्होंने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र के लिए मझरा फार्म में अधिग्रहीत भूमि पर जुलाई में शिलान्यास होगा। इसके लिए साठ लाख रुपए मिल चुके हैं। दो सौ बेड का मातृ शिशु अस्पताल पूरा हो चुका है। इसे एक माह में हैंडओवर कर दिया जाएगा। इसे लखीमपुर.सीतापुर हाईवे से जोड़ने के लिए एक किमी डबल रोड बनाने का प्रस्ताव भेजा है। उन्होंने बताया कि पलिया के गदनिया में एक और केंद्रीय विद्यालय के लिए प्रिंसिपल की तैनाती हो चुकी है। कोरोना संक्रमण की वजह से काम रुका है। सरकार का आदेश होते ही उद्घाटन होगा। टेनी ने बताया कि गन्ना इस जिले की प्रमुख फसल है। इसको देखते हुए उन्होंने ओडीओपी योजना के तहत थारू हस्तशिल्प के तहत यहां के गुड़ और खांडसारी को भी शामिल कराया है। उन्होंने अपने अन्य तमाम कामों की भी जानकारी दी। इस दौरान अरविंद सिंह संज, कनकपाल सिंह राणा, नगेंद्र सिंह सेंगर, वीरेंद्र मिश्र, मोहित त्रिवेदी, प्रज्ञानंद श्रीवास्तव, हरीश पांडे, मोनू दीक्षित, हरीश पांडे, हरिशंकर शर्मा, रतीराम लोधी, दिग्विजय गुप्ता, अमन अवस्थी, केके तिवारी, प्रदीप शुक्ला, शंभू दयाल गुप्ता और राहुल निषाद आदि मौजूद रहे।

दो महीने से लखीमपुर देहात में नहीं आ रहे सफाईकर्मी

संवाददाता। लखीमपुर-खीरी

- ग्राम प्रधान व प्रधानाध्यापिका ने की डीपीआरओ से शिकायत
- वेतन के लिए सत्यापन कराने आते हैं गांव
- डीपीआरओ ने कहाः शिकायत आई तो करेंगे कार्रवाई

कोरोना काल में एक तरफ जहां साफ-सफाई और सेनेटाइज पर जोर दिया जा रहा है तो वहीं दूसरी तरफ गांव में दो-दो महीने से सफाईकर्मी तक नहीं भेजे जा रहा। गंदगी का अम्बार है। ऐसे में कोरोना के साथ-साथ संक्रामक रोगों का खतरा भी पनपता जा रहा है।

शहर से सटी ग्राम पंचायत लखीमपुर देहात की ग्राम प्रधान अफसाना महलूद व पूर्व माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका दीपा गुप्ता ने संयुक्त रूप से डीपीआरओ को शिकायती पत्र दिया है। उन्होंने बताया कि पिछले दो महीने से ग्राम सभा में तैनात सफाईकर्मी आराधना व अन्य आ ही नहीं रहे हैं। कारण पूछने पर कहते हैं कि हमारी ड्यूटी ब्लाक से लगती है लिहाजा ग्राम प्रधान के कहने पर काम नहीं करेंगे। जहां ब्लाक के अधिकारी भेजेंगे वहीं पर जाएंगे। सोचनीय बात यह है कि इन सफाईकर्मियों का वेतन ग्राम प्रधान के सत्यापन एवं प्रमाणित करने पर मिलता है फिर भी वह ग्राम प्रधान की बात नहीं मानते। सत्यापन कराने आने पर वह खुशामद करते हैं और आगे से प्रतिदिन आने का वादा भी करते हैं मगर काम निकलने के बाद फिर उसी ढर्रे पर आ जाते हैं। बताया जाता है कि अफसरान अपने हिसाब से ड्यूटी लगाते हैं। कई सफाईकर्मी अधिकारियों के कार्यालय में ही काम किया करते हैं। कइयों को सफाई करने की बजाए गांव में बने शौचालयों का सर्वे करने के लिए भी लगा दिया गया है। यही नहीं कई ग्राम प्रधान या पंचायत अधिकारी को बताए बिना ही उनके यहां तैनात सफाईकर्मी की ड्यूटी दूसरी ग्राम पंचायत में लगा दी जाती है। ऐसे में प्रधानों का नाराज होना लाजिमी है।

इस बावत डीपीआरओ से बात की गई तो उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों में तैनात सफाईकर्मियों की ड्यूटी कहीं और नहीं लगाई जा सकती। यदि मामले की शिकायत आती है तो वह कार्रवाई करेंगे। उन्होंने सफाईकर्मियों को अपनी-अपनी ग्राम पंचायतों में पहुंचकर दायित्व निभाने को कहा है।

तालाब का अस्तित्व मिटा रहे प्रधान

ओयल-खीरी। तालाबों, कुओं आदि को बचाने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारो ने कई नियम कानून रखे हैं मगर भृष्टाचारियों के चलते सरकार की मंशा नहीं हो रही। ओयल देहात के प्रधान मोइज गौरी उर्फ मुन्ना अपने कुछ विशेष व्यक्तियों को लाभ पहुंचे के उद्देश्य से क्षेत्रीय लेखपाल शैलेंन्द्र सिंह की मिलीभगत से गाटा संख्या 705 पर अंकित तालाब का अस्तित्व मिटाने पर आमादा हैं। इसकी शिकायत भी स्थानीय लोगों ने 17 जुलाई 2018 को सम्पूर्ण समाधान में की थी। तत्कालीन लेखपाल व कानूनगो ने जांच कर अपनी आख्या दी थी और अवैध अतिक्रमण को हटवाने के आदेश भी दिये थे। अब एक बार फिर काशीराम आवास व खुशहाली के बीच में गाट संख्या 705 पर ग्राम प्रधान अंकित तालाब को पाट कर रास्ता निकालने पर आमादा हैं। इसमाजसेवी शरद गुप्ता ने जनपद के आलाधिकारियों सहित सूबे के मुखिया योगी आदित्य नाथ से तालाब का सौंदर्यीकरण कर अस्तित्व बचाने की गुहार लगाई है। ताकि जल संचय हो सके और सीधा लाभ किसानों को मिल सके। वहीं जब ग्राम प्रधान माईज गौरी उर्फ मुन्ना ने से बात की गई तो उन्होंने लेखपाल से जानकारी करने की सलाह देकर पल्ला झाड़ लिया। वहीं लेखपाल शैलेंद्र सिंह ने भी गोल-मोल बात कर काल काट दी।

पान की दुकान में चोरी

खमरिया-खीरी। कस्बा खमरिया के कोनिया चौराहे पर बीते शुक्रवार को चोरों ने दिनदहाड़े लड्डू पान की दुकान पर एक बोरी में रखे करीब 45000 रुपये के पान का सामान पार कर ले गये। काफी देर बाद जब लड्डू की नजर अपने रखे सामान पर गई तो वह अचंभित रह गये। काफी खोजबीन की पर पता नहीं चल सका। फिलहाल कुछ भी हो कस्बे में सक्रिय चोरों के हौसले इतने बुलंद है कि अब वह दिन में भी चोरियों की घटना को अंजाम देने लगे हैं। जिससे क्षेत्र में तरह तरह के कयास लगने शुरू हो गये हैं।

एसडीएम पलिया को हटाने की मांग

- भाकिविमं ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता। लखीमपुर-खीरी

भारतीय किसान विकास मंच ने डीएम के जरिए पांच सूत्रीय एक ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। मंच ने कहा कि अवैध खनन की जानकारी के बावजूद एसडीएम पलिया पूजा यादव के खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई। तहसील एवं ब्लाक पलिया के अंतर्गत अतरिया में पांच सौ ट्राली बालू खनन माफियाओं के द्वारा एकत्र की गई। यह मामला समाचार पत्रों में प्रकाशित होने पर बालू वहां से हटा दी गई। इसका संज्ञान भी पलिया एसडीएम ने नहीं लिया। खनन हुई बालू किसानों के खेतों से माफियाओं द्वारा निकलवाई गई। इसी मांग को लेकर स्थानीय किसानों के द्वारा एसडीएम पलिया पूजा यादव के कार्यालय पर त्रस्त किसानों के द्वारा प्रदर्शन किया गया और उन्हीं किसानों के खिलाफ एसडीएम पलिया के द्वारा दण्डात्मक कार्रवाई की गई। सोशल मीडिया के द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर एसडीएम पलिया पूजा यादव के पति अरुण यादव सपा यूथ ब्रिगेड के महासचिव हैं। वह जौनपुर की मल्हानी सीट पर आगामी विधानसभा चुनाव के स्वघोषित उम्मीदवार हैं। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव एवं उनकी पत्नी डिम्पल यादव के साथ उनकी फोटो भी है। इससे संदेह होता है कि एसडीएम पलिया वर्तमान सरकार की मंशा के विरोध में कार्य कर रही हैं। किसानों ने एसडीएम को तत्काल स्थानांतरित करते हुए खनन माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

महिला का शव मिला

लखीमपुर-खीरी। खीरी थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी नकहा के कटकुसुमा मार्ग पर जिन्द बाबा के पास नग्न अवस्था मे एक महिला का शव बरामद हुआ है। पुलिस ने शव को पीएम के लिए भेज दिया है। शनिवार सुबह नकहा कटकुसमा मार्ग पर जिन्दबाबा स्थान के समीप स्थानीय लोगों द्वारा नग्न अवस्था में एक महिला का शव देखा गया। ग्रामीणों की मानें तो महिला मानसिक रूप से विक्षिप्त थी। ग्रामीणों द्वारा तीन दिन से आस-पास उसे देखा जा रहा था। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा करवाकर उसे पीएम के लिए भेज दिया गया है।

तीन और कोरोना पॉजिटिव मिले

मोहम्मदी खीरी। नगर के मोहल्ला बाजार खुर्द कहरौला से सटे गांव मगरेना व पसगवां के गाल धर्माखेड़ा में करौना पाजटिव मिला है। सभी तीनों लोग कोरनटाइम में थे। नगर मगरेना और पसगवा तीनो युवक दिल्ली से अपने घर पर कोरोनाटाइम था। इसका टेस्ट कराया गया जो पाजटिव आया। लगातार नगर से लेकर आस-पड़ोस में करौना पाजटिव मिलने से आम नागरिकों के चेहरों पर चिताओं को बल दे दिया है। वहीं नगर सहित गांव में सनसनी फैल गयी है। नगर के बाजार खुर्द और गांव की सभी सीमाओं को सील किया जा रहा है। किसी को भी घर से निकलने के लिए मना किया गया है। आस पडोस की सभी दुकानों को बंद करा दिया गया है। उपजिलाधिकारी स्वाति शुक्ला, सीओ प्रदीप कुमार यादव, कोतवाल संजय त्यागी सहित अन्य टीम के लोग मौजूद रहे।

रविवार को घोषित साप्ताहिक बंदी दिवस का पालन करें व्यापारी

- बिना मास्क आने वाले व्यापारियों को न बेचें सामान
- चाइनीज सामानों का व्यापारी करें बहिष्कार

संवाददाता। ललितपुर

जिला उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल ने आज प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष महेंद्र जैन मयूर के मुख्य आतिथ्य व जिलाध्यक्ष प्रदीप त्रिपाठी की अध्यक्षता में एक बैठक कार्यालय में संपन्न की। बैठक में सभी व्यापारियों से अपील की गई साप्ताहिक बंदी व्यवस्था पालन करें और अपने प्रतिष्ठान बंद रखें एवं बाकी शेष दिनों में प्रतिष्ठान पर आने वाले ग्राहकों से मास्क लगाने की अपील करें। मास्क ना लगाने पर उन्हें सामान ना दे। उन्होंने यह भी अपील की है कम से कम एक सैकड़ों की संख्या में माक्स खरीद कर अपनी-अपनी प्रतिष्ठान पर रख लें और ग्राहकों को मास्क देकर निशुल्क सेवा कर जागरूक करें, जहां तक संभव हो सामाजिक दूरी बनाए रखें। ग्राहकों से वहीं दूसरी ओर व्यापार मंडल ने चीन से आए हुए सीमा पर संकट एवं हमारे शहीद हुए सैनिकों की शहादत को नमन करते हुए कहा देशवासियों एवं व्यापारियों के शहीद हुए सैनिकों की सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम और आप चीनी उत्पादनों का पूर्ण बहिष्कार करें और जो भी व्यापारी चीनी उत्पादन और मंगवा कर देते हैं, वह इन चीजों का उत्पादन में ना भेजें। नौजवान साथियों से अपील की है कि वह चीनी सामान का ऑनलाइन ऑर्डर न दें। भारतीयों के सच्चे उत्तर बने व्यापारी नेताओं की बंदी दिवस और मास्क लगाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा कड़े निर्देश दिए गए। अभी हाल ही में गुरुवार को तालबेहट नगर क्षेत्र के 4 व्यापारियों को बैठक परेशानी उठानी पड़ी। जनपद में किसी भी परेशानी से बचने के लिए व्यापारियों को बंदी दिवस का पूर्णतया पालन कर मास्क लाकर स्वयं एवं परिवार की रक्षा करें। बैठक में अनिल जैन, पंकज जैन, अशोक कुमार, अभय जैन एड, आलोक जैन मयूर पार्षद, सतीश जैन बंटी, राजीव सुडेले, मज्जू सोनी, विजय जैन, राहुल, अज्जू बाबा आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक का संचालन अभय जैन एड. ने किया।

घरों में रहकर मनाया गया शनि अमावस्या महापर्व

घर में शनि अमावस्या महापर्व मनाते श्रद्धालु

ललितपुर। वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण के बीच जहां एक ओर धार्मिक स्थलों पर सोशल डिस्टेंश बनाये रखने के लिए लोगों की आवाजाही कम है। तो वहीं शनिवार को शनि अमावस्या महापर्व को घरों में रहकर ही मनाये जाने का आह्वान किया गया था। इसके क्रम में शनिवार को कोरोना संक्रमण के दौरान शासन की गाइड लाइन का पालन करते हुए शनि अमावस्या को श्रद्धालुओं ने घर पर रहकर मनायी। घरों में बड़े ही भक्तिभाव व उत्साह के साथ श्रीसूर्यपुत्र छाया नंदन शनिदेव, शनि अमावस्या का पर्व मनाया गया। श्रद्धालुओं ने घर पर रहकर पूजन अर्चना शनिदेव की प्रतिमा पर सरसों का तेल, काला तिल, उड़द की दाल एवं उड़द, चना, खीर, हलवा-पूड़ी का भोग लगाया। श्रद्धालुओं ने भगवान शनि देव से प्रार्थना की कि हे सूर्यपुत्र छाया नंदन न्यायधीश शनि देव महाराज आप इस कोरोना महामारी से सभी देशवासियों की रक्षा करें।

वेबिनार से होगा विधिक साक्षरता का आयोजन

ललितपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष/जनपद न्यायाधीश की अध्यक्षता में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में 22 जून 2020 को समय सुबह 10.00 बजे से जिला कारागार में निरूद्ध बंदियों को प्रदत्त सुविधाओं, उनके अधिकार एवं अन्य विषयक एक विधिक साक्षरता बेबनार का आयोजन किया जा रहा है।

किसानों को मिले फसल बीमा योजना का पूरा लाभः मुकेश

संवाददाता। बिरधा(ललितपुर)

प्रशासन को ज्ञापन सौंपने पहुंचे युवा अधिवक्ता

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अन्तर्गत ललितपुर जिले के समस्त किसान भाईयों के किसान कार्ड के खातों में से बीमा की राशि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड द्वारा काटी गयी थीं। लेकिन बीमा की राशि देते समय बीमा कम्पनी द्वारा बताया गया है कि 23 हजार किसानों के कागजात (आधार कार्ड) फीडिंग होते समय गड़बड़ हो गयें हैं, जिसको लेकर ललितपुर जनपद के किसानों में रोष व्याप्त है।किसान नेता मुकेश करमरा एड ने कहा कि बीमा कम्पनी कह रहीं हैं कि किसानों के खातों में डाटा गड़बड़ हो जाने के कारण प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ किसानों को नही मिल सकता है। जबकि पूर्व में प्रीमियम काटते समय बीमा कम्पनी ओरिएंटल इंश्योरेंस द्वारा ऐसी कोई बात नहीं गयीं, जिससे प्रतीत होता है कि बीमा कम्पनी किसानों को क्षतिपूर्ति की राशि नहीं देना चाहती। उन्होंने कहा कि अगर जल्द ही 23 हजार किसान एवं शेष किसानों को अतिशीघ्र बीमा की राशि नही दी गयीं तो ललितपुर जिले में एक बहुत बड़ा जन आन्दोलन होगा जिसकी समस्त जिम्मेदारी जिला प्रशासन व ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड की होगी। केन्द्रीय कृषि मंत्री भारत सरकार नरेन्द्र सिंह तोमर को सम्बोधित ज्ञापन उप जिलाधिकारी एस.पी.सिंह (अपर उप जिलाधिकारी) को दिया गया। ज्ञापन देते समय युवा अधिवक्ता शशिकान्त सिंह लोधी एड, हरगोविन्द्र सिंह लोधी चमरौआ उपस्थित रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को सफल बनाने का आह्वान

ललितपुर। जिला होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी ने जानकारी देते हुए अवगत कराया है कि योग शारीरिक एवं मानसिक रूप से सबको स्वस्थ्य रखने के लिए सबसे कारगर उपाय है। योग तन और मन से जुड़े तमाम तरह के रोग और विकारों को दूर करके मनुष्य का जीवन आसान कर देता हैं। मुख्यत: विश्व विदित है कि 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2017 से 2019 के बीच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश में प्रत्येक वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया है। वर्तमान समय में विश्व में फैले कोरोना संकट को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरी तरह से डिजिटल प्लेटफार्म पर आयोजित किया जाएगा, जिसके लिए सामान्य योग अभ्यास क्रम कॉमन योगा प्रोटोकॉल विकसित किया गया है।

भौगौलिक स्थितियों के अनुसार रोपे जायें पौधे

वृक्षारोपण को लेकर कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक का आयोजन

संवाददाता। ललितपुर

- प्रत्येक पंचायत में हर व्यक्ति को कम से कम चार से पांच पौधे लगवाने के लिए प्रेरित किया जाए, गांव के मुखिया की पट्टिकायें भी लगायी जायें

कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में प्रदेश में वर्ष 2020-21 में 25.00 करोड़ वृक्षारोपण लक्ष्य के सापेक्ष जनपद में वन विभाग एवं अन्य विभागों का 45.39 लाख शासन द्वारा निर्धारित किया गया है। जिसकी तैयारी हेतु जिला प्रशासन ने सभी विभागों को निर्देशित किया है कि अपने-अपने लक्ष्य के सापेक्ष वृक्षारोपण हेतु स्थल चयन/गड्ढा खुदान की प्रगति सूचना डीएफओ को अवश्य उपलब्ध करा दें। जिससे नि:शुल्क पौध वितरण हेतु इंडेन्ड जारी करने की कार्यवाही की जा सकें। शासन द्वारा जुलाई, 2020 के प्रथम सप्ताह के किसी 01 दिन में ही वृक्षारोपण कार्य सम्पन्न होना है। जिसके लिये सभी विभागो को निर्देशित किया गया है कि पौध ढुलान हेतु वाहन व्यवस्था एवं श्रमिक व्यवस्था अभी से पूर्ण कर ली जायें। प्रशासन ने पौधों की सुरक्षा हेतु विशेष जोर दिया तथा इसके पूर्व भी बैठक में भी सभी विभागो को निर्देशित किया था कि पौधों का संरक्षण जरूरी है। माह अक्टूबर से 15 नवम्बर व मई से जून लगभग 100 दिनों के लिये सुरक्षा हेतु मनरेगा श्रमिक तैनात किये जाये। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में महुआ, पापड़, कैथा, बरगद, बबूल ऐसी प्रजाति रोपित की जाने पर जोर दिया गया। जो भौगोलिक स्थिति के अनुसार जीवित रह सकें। डीएफओ ने अवगत कराया कि शासन की मंशा के अनुसार सहजन के पेड़ों का रोपण कराया जायें तथा सागौन के वृक्षों के ज्यादा से ज्यादा रोपण कराने हेतु अवगत कराया गया। प्रशासन द्वारा कराया गया कि प्रत्येक पंचायत में पौधों को बचाने के लिये कम से कम 4 से 5 पौध 01 व्यक्ति लगवाने हेतु प्रेरित किये जाये तथा 200 परिवार के गांव के मुखिया के पट्टिकायें बनाकर लगायी जायें। जिससे पौधों को संरक्षण मिलेगा। मालकान अधिकार के सम्बन्ध में डीएफओ ने बताया कि पौध लगाने वाले व्यक्ति के द्वारा पौध संरक्षण करने के सम्बन्ध में प्रमाण पत्र जारी कर दिये जायें। बैठक में जिलाधिकारी समेत सभी जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

बिना मास्क बाजार न जाएं लोगः एसपी

घण्टाघर पर चलाया गया सघन चेकिंग अभियान, कइयों पर हुई कार्रवाई

संवाददाता। ललितपुर

कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए शासन द्वारा जारी किये गये निर्देश के तहत प्रत्येक व्यक्ति को घर से निकलते समय मास्क लगाना अनिवार्य है। इस आदेश का पूर्ण रूप से पालन कराने के लिए पुलिस द्वारा सख्ती बरती जा रही है। बावजूद इसके लोग मास्क बिना लगाये ही बाजारों में घूमते नजर आते हैं। ऐसे लोगों व वाहन चालकों के खिलाफ प्रतिदिन आर्थिक दण्डात्मक कार्यवाहियां की जा रही हैं। इसी क्रम में शनिवार को पुलिस अधीक्षक कैप्टन मिर्जा मंजर बेग के आदेश पर क्षेत्राधिकारी सदर केशवनाथ व कोतवाली पुलिस द्वारा कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए शहर के मुख्य बाजारों में घूम-घूमकर लोगों को जागरूक किया गया। साथ ही चैकिंग अभियान घण्टाघर पर चलाया गया। जहां कई ऐसे वाहन चालकों के चालान किये गये, जो कि बिना मास्क लगाये वाहन संचालित कर रहे थे। पुलिस दल ने नगर में मुख्य बाजार में भ्रमण कर जनता को कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव करने हेतु मास्क पहनने के लिए जागरूक किया। पुलिस अधीक्षक के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के वृद्ध व छोटे बच्चों को निशुल्क मास्क वितरित किया। कोरोना संक्रमण से बचने के लिए आवश्यक उपाय, मास्क पहनने की उपयोगिता के सम्बंध मे जानकारी दी। ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध जो जानबूझकर मास्क का प्रयोग नहीं कर रहे थे उनके विरुद्ध जुर्माना चालानी किया गया।

युवक की हत्या के मामले में दस पर केस, आरोपी पकड़ से दूर

संवाददाता। उन्नाव

गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के सहजनी स्थित दूधमंडी के निकट शुक्रवार की शाम हुई ब्रम्हनगर निवासी शुभममणि त्रिपाठी उर्फ निक्कू (25) की हत्या मामले में देररात आईजी लक्ष्मी सिंह मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया था। देररात मृतक के बड़े भाई ऋषभमणि की तहरीर पर पुलिस ने शक्तिनगर निवासी दिव्याअवस्थी, कन्हैया अवस्थी, राघवेन्द्र उर्फयशू, मोनू लुटेरा, शहनाज बिहारी, कौशल किशोर अपराधी बाबा, स्वरूप चंद्र शर्मा उर्फरानू शर्मा, कपित कटारिया, अतुल दुबे व विकास दीक्षित समेत दस लोगों के खिलाफ नामजद हत्या, बलवा व धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया है। एसपी ने हत्या में शामिल आरोपियों को पकड़ने के लिये एसपी ने चार टीमें लगाई हैं। इसके बावजूद पुलिस अभी तक किसी भी आरोपी को नहीं पकड़ सकी हैं। वहीं अब पुलिस सर्विलांस के जरिए आरोपितों को पकड़ने के लिये लगी हुई हैं।

पुलिस कार्रवाई करती तो बच जाती जान

मृतक सरकारी भूमि पर हो रहे कब्जों का विरोध करता था। जिस पर उसे कई बार जान से मारने की धमकी भी मिल चुकी थी। उसने यह बात अपने दोस्तों को भी बताई थी। अभी तीन दिन पहले उसने शुभम ने सीएम, एसपी, मानवाधिकारी और गंगाघाट पुलिस को प्रार्थना पत्र दिया। जिसमें उसने हत्या की आशंका व्यक्त की थी। इसके बावजूद गंगाघाट पुलिस ने ध्यान नहीं दिया। जिस कारण शुक्रवार को उसकी हत्या कर दी गई।

मिश्राघाट पर हुआ अंतिम संस्कार

शनिवार की दोपहर मृतक का गंगाघाट के मिश्राघाट पर अंतिम संस्कार किया है। मृतक के भाई ऋषभमणि त्रिपाठी ने मुखानि दी। उधर, सुरक्षा की दृष्टि से पीएससी व भारी मात्रा में गंगाघाट, शहर, अचलगंज व मांखी का फोर्स तैनात रहा। पूरे दिन शुक्लागंज की सड़को पर लोग इस घटना की चर्चा करते दिखे।

सात लाख की अंग्रेजी शराब बरामद, एक युवक गिरफ्तार

संवाददाता। उन्नाव

बांगरमऊ पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर कस्बा गंजमुरादाबाद स्थित नवनिर्मित पेट्रौल पप्प के पास से टैंकर से 102 पेटी में नौ सौ लीटर अवैध अग्रेंजी शराब के साथ शनिवार को एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार पकड़ी गई शराब की कीमत करीब सात लाख रूपए है। शनिवार को बांगरमऊ कोतवाली प्रभारी श्याम कुमार पाल ने मुखबिर की सूचना पर कस्बा गंजमुरादाबाद स्थित नवनिर्मित पेट्रौल पप्प के निकट एक टैंकर को पकडा। जामा तलाशी के दौरान टैंकर में 102 पेटी में कुल नौ सौ लीटर अवैध अग्रेंजी शराब बरामद हुई। पुलिस ने मौके से हरियाणा जनपद यमुनानगर के रत्तुवाडा के रहने वाले मनीष कुमार पुत्र स्व. गोपाल सिंह को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार पकड़ी गई शराब की कीमत करीब सात लाख रूपए है। पुलिस ने आरोपित को कोर्ट में पेश किया है।

क्विक न्यूज

करंट की चपेट में आने से दो की मौत

उन्नाव। बारासगवर थाना क्षेत्र के कुम्भी गांव निवासी प्रकाश गुप्त का अड़तीस वर्षीय बेटा संजय शुक्रवार की शाम गर्मी अधिक होने के चलते वह आते ही फर्राटा पंखा चालू कर दिया। पंखा चालू करते ही पंखे में उतर रहे करंट की चपेट में आने से उसकी मौत हो गई। उधर, बीघापुर कस्बा के रहने वाले शिवनंदन का पैंतालीस वर्षीय बेटा प्रकाश शर्मा शुक्रवार की शाम बाजार से घर आ रहा था। तभी रास्ते में बारिश की वजह से बिजली खंभे में करंट उतर रहा था। गुजरते समय बिजली खंभे के छूने से प्रकाश करंट की चपेट में आ गया। जिससे उसकी मौत हो गई।

हादसे मे मां की मौत, बेटा घायल

उन्नाव। बिहार थाना क्षेत्र के मनिकापुर गांव निवासी देवीदीन की वृद्ध पत्नी राजरानी शुक्रवार रात अपने बेटे सुनील के साथ शुक्लागंज से बाइक से लौट रहीं थी। देर रात जैसे ही वह अचलगंज थाने क्षेत्र के लोहचा मोड़ के पास पहुंची थी कि अचानक सामने से सड़क पर आवारा मवेशी आ गया। जिससे बाइक अनियंत्रित हो गई और वृद्धा सिर के बल सड़क पर गिर गई। पुलिस व राहगीरों की मदद से जख्मी मां बेटे को सीएचसी अचलगंज पर भर्ती करवाया गया। जहां प्राथमिक इलाज के बाद हालत नाजुक देख डॉक्टर ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया। इमर्जेंसी पहुंचने पर डॉक्टर ने राजरानी को मृत घोषित कर दिया।

छत से गिरकर वृद्ध किसान की मौत

उन्नाव। औरास हाजीपुर गोशा गांव निवासी वृद्ध किसान मंगलू शाम को खाना खाने के लिए छत से जीने के रास्ते नीचे उतरने जा रहे थे। अचानक उनके शरीर का संतुलन बिगड़ने से छत पर रेलिंग न होने की वजह से पैर दीवार के किनारे पड़ गया। इससे वह नीचे बनी आरसीसी सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल गए। घटना देख परिजनों ने वृद्ध को एम्बुलेंस से औरास पीएचसी पर भर्ती करवाया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

संदिग्ध परिस्थितियों में मासूम की मौत

औरास,उन्नाव। थाना क्षेत्र के बरादेव गांव निवासी शेर बाज ने बताया कि उसने अपनी बेटी चांदनी की शादी करीब दो वर्ष पूर्व काकोरी थाना क्षेत्र के नटकौरा गांव निवासी सोनू पुत्र नासिर के साथ की थी शादी के कुछ दिनों बाद ही सोने ने दूसरी औरत रख ली जिस पर आये दिन विवाद होता रहता था। जिससे परेशान होकर उसकी बेटी आठ महीने से मायके में उसके घर पर रह रही थी। यहीं पर बच्चे को जन्म दिया, एक सप्ताह से उसके छह माह के नाती अनस को बुखार आ रहा था। जिसका इलाज हसनगंज व आसपास के प्राइवेट डाक्टरों को दिखाया। लेकिन शनिवार सुबह अनस की मौत हो गई।

पिता-पुत्र को मारपीट कर दी धमकी

औरैया। थाना कस्बा दिबियापुर मोहल्ला कृष्णा नगर निवासी कौशिक यादव पुत्र सूरज सिंह ने थाने में तहरीर देते हुए बताया की शुक्रवार कि सुबह करीब 7 बजे वह मौजा सिंगनपुर में था। उसी समय झुन्ना पुत्र बाबूराम निवासी ग्राम वैसुंधरा थाना दिबियापुर आ गया और उसे एवं उसके पिता के साथ गाली गलौज करने लगा। जब उसने गालियां देने का विरोध कर खेत में मिट्टी खोदने के लिए मना किया। उसी समय आरोपित ने उसे एवं उसके पिता के साथ मारपीट करते हुए जख्मी कर दिया।

गाली-गलौज कर की मारपीट

औरैया। थाना सहायल क्षेत्र के ग्राम सिंह पुरवा माना निवासी वीरेंद्र सिंह पुत्र सोवरन सिंह ने थाने में तहरीर देते हुए बताया कि शुक्रवार की दोपहर करीब 1 बजे वह अपने खेतों पर था। उसी समय गांव के ही नरेंद्र व श्रीभगवान पुत्रगण दयाराम आ गये और उसके साथ गाली-गलौज करने लगे। जब उसने गालियां देने का विरोध किया, उसी समय उन लोगों ने उसे मारपीट कर घायल कर दिया। थाना पुलिस ने नामजद आरोपितों के खिलाफमामले की एनसीआर दर्ज की है।

धोखाधड़ी कर 87 हजार किये पार

औरैया। थाना कस्बा अछल्दा महेवा रोड़ निवासी प्रदीप कुमार पुत्र इकबाल सिंह ने थाने में तहरीर देते हुए बताया कि गत 16 व 17 फरवरी 2020 को अज्ञात व्यक्ति ने उसका पेटीएम नंबर चालू कराने की बात कह कर धोखाधड़ी करते हुए उसकी दो खातों से 87 हजार रुपए निकाल लिए। थाना पुलिस ने अज्ञात मोबाइल धारक के खिलाफ अन्य धारा के अलावा धोखाधड़ी की धारा में मामले की रिपोर्ट दर्ज की है।

दुर्घटना में एक व्यक्ति घायल

औरैया। कोतवाली बिधूना क्षेत्र के कस्बा रुरुगंज निवासी पुष्पा देवी पत्नी विजय सिंह ने कोतवाली में तहरीर देते हुए बताया कि गत 16 जून कि सुबह करीब साढ़े 6 बजे उसके पति विजय सिंह साइकिल से जा रहे थे। जैसे ही वह कस्बा स्थित सड़क पर पहुँचे, उसी समय एक मोटर साइकिल के अज्ञात चालक ने गाड़ी के तेजी व लापरवाही से चलाते हुए उसके पति को टक्कर मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया तथा साइकिल क्षतिग्रस्त हो गई। कोतवाली पुलिस ने मामले की रिपोर्ट दर्ज की है।

आग लगने से गृहस्थी जलकर हुई राख

गुरसहायगंज (कन्नौज)। गैस सिलेंडर से खाना बनाते समय अचानक आग लग गई। जिससे गृहस्थी जलकर खाक हो गई। जबकि आग पर काबू पाने के प्रयास में तीन लोग झुलस कर घायल हो गये। कडी मसक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। शनिवार की सुबह क्षेत्र के गांव मझपुर्वा निवासी इसामुद्दीन की 17 वर्षीय पुत्री राहत बानो गैस चूल्हे पर खाना बना रही थी। तभी अचानक सिलेंडर ने आग पकड़ ली। देखते ही देखते आग ने बिकराल रूप ले लिया और घर में रखे छप्पर ने आग पकड ली। चीख-पुकार सुनकर पहुंचे स्थानीय लोगों ने राहत कार्य शुरू कर पुलिस को भी सूचना दी। कड़ी मशक्कत के बाद ग्रामीणों ने आग पर काबू पा लिया। आग बुझाने के प्रयास में इसामुद्दीन, उसकी पुत्री राहत बानों व मोहल्ले के कयामुददीन झुलस कर घायल हो गये।

नकाशपोश बदमाशों ने महिला की चेन लूटी

फर्रूखाबाद। शौच करने जा रही महिला के गले से आधा दर्जन नकाब पोश बदमाशों ने चेन तोड़ ली। पीडित महिला के शोर मचाने पर बदमाश जानमाल की धमकी देकर फरार हो गए। पीड़ित महिला ने थाना पुलिस को तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। जानकारी के अनुसार शमशाबाद थाना क्षेत्र के ग्राम नगलानान निवासी मीरा देवी पत्नी सुरेश चंद्र ने लगभग आधा दर्जन नकाबपोश बदमाशों के खिलाफ शमशाबाद थाना पुलिस को तहरीर देकर कहा है बीते दिवस की रात्रि अचानक पेट खराब हो जाने के कारण महिला घर के बाहर बने शौचालय में शौच करने के लिए घर से बाहर निकली उसी दौरान पहले से घात लगाए अज्ञात नकाबपोश बदमाशों ने दबोच लिया और गले में पड़ी लगभग 10 ग्राम की सोने की चैन तोड़ ली बदमाशों की इस हरकत से घबराई महिला ने चीख पुकार मचाई मगर रात्रि का लाभ उठाकर बदमाश जानमाल की धमकी देकर फरार हो गए।

लूट की योजना बनाते तीन गिरफ्तार

उन्नाव। औरास पुलिस ने शुक्रवार की देररात लूट की योजना बनाते समय तीन आरोपितो को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से अवैध तमंचा व कारतूस भी बरामद किया है। शुक्रवार की देररात औरास थाने में तैनात एसआई योगेश सिंह व मो. फरीद चेंकिग कर रहे थे। तभी टियर बाजार के बाग में बने कमरे के टीन सेट के नीचे से लूट की योजना बना रहे उदेतखेड़ा गांव निवासी पप्पू यादव पुत्र रामपाल, हरदोई थाना कासिमपुर के कल्हेपुर निवासी अवधेश पुत्र प्रभु व हरदोई थाना कासिमपुर के बेहसार सिरदारनगर गांव के रहने वाले जोद्धी पुत्र अंगने को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपितो के पास से तीन अवैध तंमचा, छह कारतूस भी बरामद किए है। थाना प्रभारी राजबहादुर ने बताया कि पकड़े गए आरोपित शातिर है।

उन्नाव में पांच और पॉजिटिव

संवाददाता। उन्नाव

जिले में कोरोना संक्रमितो की संख्या थमने का नाम नही ले रही है। लगातार बढ़ रहे मरीजो से जिले में रहने वाले लोगो में दहशत है। शनिवार को दो सगी बहनो समेत पांच की रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद हडकंप मचा हुआ है। गंगाघाट के सरैयां के पूर्व प्रधान की दो बेटियां पिछले कई दिनों से बीमार चल रही थी। जिस पर उन्होंने कानपुर उर्सला में दिखाया और अपना कोरोना टेस्ट कराया। उर्सला अस्पताल में सैंपल लिया गया। जिसके बाद कानपुर गणेशशंकर विद्यार्थी मेडिकल कॉलेज में कोरोना की जांच हुई। शनिवार सुबह दोनों की रिपोर्ट पॉजिटिव आई। जिससे क्षेत्र में हड़कंप मच गया। वहीं कानपुर स्वास्थ्य विभाग ने उन्नाव स्वास्थ्य विभाग को सूचना दी। जिस पर सीएचसी प्रभारी डा. विजय कुमार और स्वास्थ्य पर्यवेक्षक प्रदीप दिवाकर मौके पर पहुंचे। जहां दोनों संक्रमितों को एम्बुलेंस से उन्नाव कोविड 19 अस्पताल भिजवाया गया। वहीं डब्ल्यूएचओ को ब्लॉक मॉनीटर प्रशांत कुमार ने बताया कि वैसे तो पांच सौ मीटर का दायरा है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में उसी गांव को सील किया गया है। इसके साथ ही पूरे गांव को पूरी तरह से सील कर दिया गया है। संक्रमितों के संपर्क में आने वाले पिता समेत नौ लोगों को स्वास्थ्य विभाग की टीम ने आइसोलेट किया है। वही असोहा के रतवसिया निवासी एक प्रवासी युवक में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हुई थी। उसके संपर्क में आई पत्नी व दो जुड़वा बेटियों का भी सैंपल जांच के लिए भेजा गया था। जिसमें एक तीन साल की बच्ची को कोरोना संक्रमित पाया गया। जबकि मां व जुड़वा बहन की रिपोर्ट निगेटिव आई है। इसी तरह औरास के शेल्टर होम में ठहरे प्रवासी श्रमिक की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। जबकि शहर के कब्बाखेड़ा निवासी एक युवक को भी कोरोना से संक्रमित पाया गया है।

अलग-अलग थाना क्षेत्रों में तीन युवकों ने कर ली आत्महत्या, मचा कोहराम

उन्नाव। अलग-अलग थाना क्षेत्रो में शनिवार की सुबह तीन युवको के संदिग्ध हालात में फांसी पर शव लटकते मिले। पुरवा कोतवाली क्षेत्र के फत्तेहगंज गांव निवासी पियारे का अट्ठारह वर्षीय बेटा नीलेश कुमार लॉक डाउन दौरान डेढ़ माह पहले केरल से घर आया था। वापस लौटने के बाद से मानसिक परेशान चल रहा था। शनिवार की सुबह घर के कमरे का दरवाजा बंद कर छत में लगे छल्ले से शुक्रवार की रात फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। अचलगंज थाना क्षेत्र के ओरहर गांव के रहने वाले चौबीस वर्षीय पवन कुमार उर्फ मोनू का शुक्रवार की दोपहर बड़े भाई सोनू से किसी बात को लेकर आपस में विवाद हो गया। भाई की डांट से नाराज होकर मंझले भाई पवन ने रात घर से कुछ दूरी पर एक मंदिर के पास कदम्ब के पेड़ में साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाकर जान दे दी। उधर, बांगरमऊ कोतवाली क्षेत्र के गांव गहरपुरवा निवासी रमेश (20) पुत्र होरीलाल अपनी निजी कार को बुकिंग में चलाता चला आ रहा है। इसी क्रम में बीते शुक्रवार को वह एक मांगलिक कार्यक्रम में गाड़ी लेकर गया हुआ था। बताया जा रहा है बुकिंग से गाड़ी लेकर वह मध्य रात करीब 12 बजे वापस घर लौटा था। जिसके बाद अपने बिस्तर पर लेट गया। शनिवार भोर पहर जब परिजन सोकर उठे तो वह बिस्तर पर नदारद मिला। खोजबीन के दौरान गांव से बाहर करीब 500 मीटर की दूरी पर खेतो में एक नीम के पेड़ से उसका शव लटकता मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

जमीनी रंजिश में खूनी संघर्ष, अधेड़ की मौत

संवाददाता। गुरसहायगंज (कन्नौज)

जमीनी रंजिश को लेकर जमकर चले लाठी डण्डों में अधेड़ की मौत हो गई जबकि दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। मृतक के भतीजे ने कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

कोतवाली क्षेत्र के ग्राम पुराभोज निवासी शिशुपाल पुत्र राधा कृष्ण ने बताया कि शुक्रवार रात परिवार के अवधेश पुत्र बाबूराम, ऋषि, साधना व संगीता ने जमीनी रंजिश के चलते उसके दरवाजे पर आकर चाचा शालिग्राम के साथ अभद्रता करते हुये लाठी-डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया। बीच-बचाव करने आये उसके पिता राधाकृष्ण व पत्नी रूबी को भी मारपीट कर घायल कर दिया। जिस पर शिशुपाल के चाचा गंभीर रूप से घायल हो गये। पुलिस ने सभी घायलों को नगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां शालिग्राम की इलाज दौरान मौत हो गई। जबकि घायलों रूबी व राधा कृष्ण को गंभीर हालत के चलते जिला अस्पताल रिफर कर दिया है। कोतवाली पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी है।

वहीं दूसरे पक्ष की ओर से संगीता पत्नी अवधेश ने कोतवाली में दी गई तहरीर में बताया कि परिवार की रूबी पत्नी शीशपाल व राधा कृष्ण पुत्र बाबूराम ने घरेलू विवाद को लेकर दरवाजे पर आकर उसके साथ अभद्रता की। जब उसने इसका विरोध किया तो उसे मारपीट कर घायल कर दिया। कोतवाली पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर मामले की रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ट्रक की भीषण टक्कर में बाइक सवार की मौत

संवाददाता। औरैया

सदर कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत शनिवार की दोपहर एक ट्रक ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने गंभीर रूप से घायल को सैफई रेफर कर दिया। कोतवाली क्षेत्र के जेसीज चौराहे के समीप स्थित फायर ब्रिगेड के सामने नदीम का पुत्र मुद्दन खा उम्र 23 वर्ष एवं अमित कुमार 26 वर्ष पुत्र ओमप्रकाश निवासीगण ग्राम सराय बिहारीदास फफूंद बाइक से औरैया बाजार करने के लिए आ रहे थे। जैसे ही वह लोग फायर ब्रिगेड के सामने पहुंचे कि तभी एक तेज रफ्तार ट्रक ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। जिससे बाइक सवार दोनों युवक उछलकर दूर जा गिरे और बाइक क्षतिग्रस्त हो गई। राहगीरों ने दौड़कर ट्रक व चालक को पकड़ लिया तथा कोतवाली पुलिस को सूचना दी। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने ट्रक को कब्जे में लेकर कोतवाली पहुंचाया तथा घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां पर डॉक्टरों ने नदीम पुत्र मुद्दन खां को मृत घोषित कर दिया। जबकि अमित पुत्र ओम प्रकाश की गंभीर हालत को देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद रेफर कर दिया। चौकी इंचार्ज शैलेश कुमार पांडेय ने जानकारी देते हुए बताया कि घटना की जानकारी घायल के परिजनों को दे दी गई। जिला अस्पताल के चिकित्सकों ने बताया कि अमित के पैर के ऊपर से ट्रक का पहिया निकल गया। जिससे उसका पैर पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया।

विद्युत पोल पर चढ़े संविदा लाइनमैन की करंट से मौत

संवाददाता। कायमगंज फर्रूखाबाद

पोल लाइन की मरम्मत करते समय करंट लगने से संविदा कर्मचारी रमेश शाक्य की मौत हो जाने से कोहराम मच गया। रमेश थाना कंपिल के ग्राम भोगपुर का निवासी दयाराम शाक्य के 40 वर्षीय पुत्र थे वह कई वर्षों से क्षेत्रीय विद्युत सब स्टेशन संविदा पर नौकरी करते थे बीती रात लाइन में फाइल हो जाने के कारण सिकंदरपुर इलाके की विद्युत आपूर्ति ठप हो गई। रमेश रात 12:30 बजे सिकंदरपुर खास के जंपर खोल दिए रमेश आज करीब 6:30 बजे शट डाउन लेकर पोल पर जोड़ने के लिए चढ़े थे। शट डाउन के बाद विद्युत आपूर्ति चालू कर दी जाने के कारण रमेश को जोरदार का करंट लगा पोल से नीचे गिरने पर हालत काफी गंभीर हो गई। उन्हें तुरंत एंबुलेंस से कायमगंज ले जाया गया जहां डॉक्टर शोभित कुमार ने रमेश को मृत घोषित कर दिया। यह जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया भाई सुशील कुमार ने आरोप लगाया जेई अजय यादव विद्युत आपूर्ति चालू करवा कर मेरे भाई की हत्या कराई है। 2 दिन पहले ही शराब मांगने को लेकर जेई अजय यादव का भाई से विवाद हुआ। तभी मोरपाल ने भाई को सलाह दी कि तुम छुट्टी पर चले जाओ। आज सुबह भाई रमेश संविदा कर्मचारी देवेंद्र के साथ सिकंदरपुर खास गांव जंपर जोड़ने गए थे। भाई रमेश ने शिवाय 6:24 पर फोन पर राजकुमार से शट डाउन लिया। जेई के कहने से विद्युत आपूर्ति चालू कर दी गई। बताया गया कि विद्युत विभाग की ओर से संविदा कर्मचारियों को हाथ में पहनने के लिए दस्ताने भी नहीं दिए जाते हैं। यदि रमेश दस्ताने पहनकर कार्य कर रहा होता तो है बच जाता। थानाध्यक्ष देवेंद्र कुमार गंगवार ने अस्पताल में पहुंचकर घटना की जानकारी ली ग्रामीणों का कहना है जेई अजय यादव द्वारा शट डाउन होने पर भी विद्युत आपूर्ति चालू कर दी जिससे रमेश की मौत हो गई।

दिनदहाड़े स्कूटर की डिग्गी से दो लाख रुपये किए पार

संवाददाता। फर्रूखाबाद

जिले के पुलिस कप्तान डॉ. अनिल कुमार मिश्र जहां अपराधियों की धर पकड के लिए दिन रात प्रयास कर रहे है। वहीं दूसरी ओर बेखौफलुटेरे दिन दहाडे घटना करने से चूक नहीं रहे। सरेआम स्कूटर की डिग्गी में रखे दो लाख रूपये उस समय लूट लिए जब स्कूटर स्वामी बोतल में पेट्रोल लेने के लिए गया। देखेत ही देखते लुटेरे डिग्गी का लॉक तोड दिया और पैसे लेकर फरार हो गया। यह नजारा पेट्रोल पम्प पर लगे सीसीटीबी कैमरे में कैद हो गया। मामले की सूचना पर पुलिस अधीक्षक, नगर क्षेत्राधिकारी,स्वाट टीम,शहर कोतवाल सहित पूरा फोर्स मौके पर पहुंच गया। एसपी ने टीम गठित कर जल्द ही मामले का खुलासा करने के निर्देश दिए है। वहीं बैंक में जाकर मैनेजर को कडी हिदायत देते हुए सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए जाने की भी चेतावनी दी।

विवरण के अनुसार शहर कोतवाली क्षेत्र के अन्तर्गत अंगूरीबाग के रहने वाले सुखराम शाक्य ने बताया कि उनकी घर के पास में ही बीज की दुकान है। वह थोक का व्यापार करते है। आज वह दोपहर लगभग 12:30 बजे वह ठंडी सडक स्थित आईडीबीआई बैंक में पैसे निकालने के लिए स्कूटर से गया था। बताया कि बैंक से दो लाख रूपये निकालकर उसने अपने स्कूटर की डिग्गी में रख लिए। उसके बाद वह आईटीआई चैराहे के निकट बनी गुप्ता फीलिंग स्टेशन पर पहुंचा जहां स्कूटर को साइड में खडा कर बोतल में पेट्रोल लेने गया। उसी दौरान एक व्यक्ति उसके स्कूटर के पास बैठ गया और डिग्गी का लॉक तोड दिया। उसमें रखे दो लाख रूपये निकालकर जब वह भागने लगा तो मामले की जानकारी पीडित को हुई जब तक पीडित ने शोर मचाया तब तक लुटेरा फरार हो चुका था।

घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस कप्तान डॉ.अनिल कुमार मिश्र मौके पर पहुंचे और पडताल की। वहीं स्वाट टीम प्रभारी दिनेश गौतमए नगर क्षेत्राधिकारी मन्नी लाल गौडए शहर कोतवाल वेद प्रकाश पांडेय सहित पूरा फोर्स मौके पर पहुंच गया। एसपी ने मामले की पडताल के बाद टीम को गठित किया और लुटेरों की तलाश शुरू कर दी।

इससे पूर्व भी आईडीबीआई बैंक से पैसे निकालकर जब गुप्ता पेट्रोल पम्प के मालिक जा रहे थे तो उनके साथ भी लाखों की लूट हो गयी थी। जिसमें पुलिस ने लुटरों को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। आज भी इसी बैंक से निकाले गए दो लाख रूपये लूटे गए है। क्या इस बैंक में चोर लुटेरों की नजर गडी रहती है।

मजे की बात तो यह है कि घटना को अंजाम देने के बाद अपराधी मौके से फरार हो जाते है लेकिन सुखराम के साथ हुई लूट के बाद लुटेरो के साथी ने धनराशि के बारे में पीडित से कुछ इस तरह पूछा कि क्या हो गया है। डिग्गी में कितने रूपये रखे थे। उसके बाद वह युवक भी फरार हो गया। उस युवक की जब तलाश की गई तो वह भी नौ दो ग्यारह हो गया। लोगों में चर्चाएं कुछ इस तरह हो रही थी। हो सकता है कि बराबर का हिस्सा बांट करने को लेकर लूटी गई नगदी के बारे में जानकारी की गई है।

क्या बैंक से ही पीछा कर रहे थे टप्पेबाज

फर्रूखाबाद। ठंडी सडक स्थित आईडीबीआई बैंक से जब पीडित सुखराम पैसे निकालकर जा रहा था तो क्या बैंक के अंदर से ही लुटेरे उसके पीछे लग गए थे आखिर लुटेरो को यह कैसे पता कि सुखराम की डिग्गी में दो लाख रूपये रखें है।

बाइक चालू रख साथी का कर रहा था इंतजार

फर्रूखाबाद। पेट्रोल पम्प पर दीवार के पास खडे स्कूटर के पास लुटेरा छिपकर बैठ गया तो दूसरा बाइक को चालू कर भागने का इंतजाम कर रहा था। घटना होने के बाद बाइक सवार अपने साथी को लेकर लालगेट की ओर फरार हो गया। एसपी डॉ. अनिल कुमार मिश्र ने चेकिंग अभियान चलाए जाने के निर्देश दिए।

डीएम ने अधिकारियों के साथ बैठक कर दिए निर्देश

कन्नौज। कोरोना वायरस को रोकने के लिए अब फ्रन्टलाइन वर्कर्स का भी सहयोग लिया जाएगा। जिलाधिकारी ने कोरोना की निगरानी के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, स्वच्छताग्राहियों को तैनात किए जाने के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी राकेश कुमार मिश्र ने शनिवार को चिकित्सा विभाग एवं अन्य विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होनें निर्देशित करते हुये कहा कि स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ आंगनवाडी कार्यकत्रियों, स्वच्छताग्रहियो को लगाया जाये ताकि कोरोना वायरस से संबंधित अन्य बीमारियों की सघन रूप से निगरानी की जा सके। उन्होनें बाल सुधार ग्रह, वृद्धा आश्रम, (ओल्ड ऐज होम) महिला संरक्षण ग्रह, नारी निकेतन आदि का शत-प्रतिशत निरीक्षण करने के निर्देश देते हुये कहा कि वहॉ की सुरक्षा व्यवस्था एंव अपेक्षित टेस्टिंग की कार्यवाही भी सुनिश्चित की जा सके। डीएम ने निर्देश दिये कि प्रत्येक घर एंव व्यक्ति को आरोग्य सेतु एप प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया जाये तथा मास्क का प्रयोग करने व सामाजिक दूरी रखने के अतिरिक्त वाहनों पर निर्धारित संख्या से अधिक व्यक्तियों को न बैठने देने के संबधं में विभागीय प्रवर्तन/अर्थ दण्ड लगाने की कार्यवाही की जाये। इस कार्य हेतु व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार हेतु पोस्टर, डिजीटल डिस्प्ले, रेडियो, दूरदर्शन, सोशन मीडिया आदि के माध्यम से जनता को जागरूक भी किया जाये।

पूरी क्षमता से हो काऊ मिल्क प्लांट का संचालन

संवाददाता। कन्नौज

काऊ मिल्क प्लांट को पूर्ण क्षमता से संचालित करते हुए अधिक से अधिक दुग्ध उत्पादों का उत्पादन किया जाए। प्लांट के संचालन में गुणवत्ता पूर्ण ध्यान दिया जाए। उक्त निर्देश आयुक्त, कानपुर मण्डल, कानपुर डा0 सुधीर एम बोबडे ने काऊ मिल्क प्लांट का निरीक्षण करते हुए संबंधित अधिकारियों को दिये। मण्डलायुक्त ने कहा कि पशुपालन विभाग उसे सम्पर्क स्थापित करते हुये किसानों को गाय पालने के लिये प्रोत्साहित किया जाये, जिससे गाय का दूध अधिक से अधिक मात्रा में प्लांट को प्राप्त हो सके। उन्होनें निर्देश दिये कि प्राप्त दूध की क्षमता को बढ़ावा दिया जाये। गर्मी होने के कारण दूध की उत्पादिकता में कमी आती है, जिसे माह अक्टूबर से पूरा किया जा सकता है। इस संबंध में अथक प्रयास करते हुये दूध की मात्रा को बढाया जाये, जिससे संबंधित किसानों के आमदनी में भी बढोतरी हो सके। उन्होनें काऊ मिल्क प्लांट में स्थापित प्रोसेस सेक्शन, लैब, मिल्क, पैकिंग सेक्शन, बटर सेक्शन, घी सेक्शन आदि का गहनता से निरीक्षण करते हुये काऊ मिल्क प्लांट की सराहना भी की ।मण्डलायुक्त ने प्लांट में विद्युतीकरण की शिकायत पर पूर्व में 10 केवीए का ट्रांसफार्मर स्थापित कर विद्युत की समस्या को शीघ्र ही दूर किये जाने के निर्देश दिये। उन्होनें पास्चराइज्ड फुल क्रीम मिल्क को दूरगामी प्रदेशों तक भेजे जाने हेतु दूध को 122 डिग्री पर पास्चराइज्ड कर उसे टैट्रा पैक में भरे जाने हेतु भी आवश्यक निर्देश दिये। उन्होनें सफेद मक्खन के भण्डारण कक्ष, घी पैकिंग, प्लांट कन्ट्रोल रूम, दुग्ध ट्रीटमेंट कक्ष एंव पैकिंग एरिया का भी निरीक्षण किया, जिसमें उन्होनें स्वंय दूध की गुणवत्ता परखी। वर्तमान समय में 12 हजार लीटर ताजा दूध प्रतिदिन कानपुर मण्डल के जनपद कन्नौज, इटावा, फर्रूखाबाद, कानपुर नगर, देहात द्वारा उर्पाजित आपूर्ति की जा रही है, जिसमें प्रतिदिन 11 मेरियंट में पाली पैक दूध (एफ0सी0एम0), टी0एम0, टी-स्पेशल, की सप्लाई आगरा, हमीरपुर, इटावा, कन्नौज, औरैया, कानपुर, फर्रूखाबाद आदि जनपदों में की जा रही है तथा आगामी समय में शीघ्र ही अलीगढ़ तथा अन्य जनपदों में भी पाली बैग की सप्लाई की जायेगी। इस प्लांट के माध्यम से पनीर, घी, तथा दूध की सप्लाई निर्धारित मूल्य पर उक्तानुसार जनपदों में सप्लाई करते हुये 12 हजार लीटर दूध तथा 1 दिन में 80-90 किग्रा0 पनीर का उत्पाद तैयार कर सप्लाई किया जाता है।

क्विक न्यूज

केरोसीन के थोक व्यापारी के यहां छापा, रिपोर्ट दर्ज

हमीरपुर। जनपद के कैरोसीन के थोक विक्रेता के यहां शुक्रवार को प्रशासनिक अधिकारियों ने छापेमारी करते हुए स्टाक में तेल की कमी व अभिलेखों में भारी गड़बड़ी का मामला पकड़ा। थोक विक्रेता के खिलाफमौदहा कोतवाली में पूर्ति निरीक्षक अमित त्रिवेदी के द्वारा आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत मुकदमा पंजीकृत कराया गया है। जिलाधिकारी ज्ञानेश्वर त्रिपाठी के आदेश पर जिले के सभी तहसीलों में एसडीएम व पूर्ति निरीक्षकों के द्वारा मिट्टी के तेल के थोक विक्रेताओं के यहां छापेमारी की गई। जिसके क्रम में मौदहा एसडीएम अजीत परेश व पूर्ति निरीक्षक अमित त्रिवेदी ने मौदहा कस्बे में स्थित मेण्गुलाब स्टोर के केरोसीन गोदाम में छापेमारी करते हुए सारे अभिलेख चेक किए और स्टाक रजिस्टर की जांच की। जिसमें स्टाक में 3400 लीटर केरोसीन के सापेक्ष 3000 लीटर केरोसीन पाया गया। केरोसीन में शासनादेश के मुताबिक दी गई छूट के बाद भी करीब तीन सौ लीटर केरोसीन तेल की कमी पाई गई। जिला पूर्ति अधिकारी रामजतन यादव ने बताया कि केरोसिन कंट्रोल एक्ट 1962 के तहत व आवश्यक वस्तु अधिनियम धारा 3?7 के मुताबिक कार्रवाई की गई है।

महिला महाविद्यालय में ऑनलाइन अंकुरण कार्यक्रम

फतेहपुर। डॉ. भीमराव आंबेडकर राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय के आइक्युएसी प्रकोष्ठ द्वारा नवप्रवेश 2020.21 हेतु अंकुरण कार्यक्रम का आयोजन ऑनलाइन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं महाविद्यालय प्राचार्य डॉण् अपर्णा मिश्रा ने कहा कि अंकुरण के माध्यम से हम बताना चाहते हैं कि हम प्रवेशार्थियों को विषय चयन के लिए काउंसलिंग के माध्यम से उनके करियर को दिशा देना चाहते हैं और सफलता के मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करना चाहते हैं। आइक्युएसी प्रभारी डॉण् रमेश बाबू ने कार्यक्रम के उद्देश्य को रेखांकित किया। कार्यक्रम में छात्राओं के साथ ही समस्त महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

तीन और कोरोना रिपोर्ट आई पॉजिटिव

फतेहपुर। जनपद में आज 03 और अप्रवासी की कोरोना रिपोर्ट पाजीटिव आने के बाद कुल कोरोना पाजीटिव लोगों की संख्या बढ़कर 113 हो गई है। जिनमे कोविड एल-01 हास्पिटल से 65 संक्रमितो के ठीक होकर डिस्चार्ज हो जाने के कारण जिले में ऐक्टिव कोरोना केसो की संख्या 48 बची है, जिनका उपचार चल रहा है। बताते चले कि पूर्व में जनपद के पहले केस की मौत हो चुकी है, जो इनमें शामिल नहीं है। जनपद में अप्रवासी श्रमिकों की आमद जिस तेजी से हो रही है, उससे अगले कुछ दिनो में कोरोनो संक्रमितो की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी हो तो शायद आश्चर्य न होगा। कोरोना अपडेटः फतेहपुर- कुल सैंपल 3476, कुल प्राप्त जांच रिपोर्ट 3292, आज प्राप्त पॉजिटिव रिपोर्ट 03, कुल कोरोना पॉजिटिव व्यक्ति 113, अब तक अस्पताल से डिस्चार्ज मरीज 65, कोरोना के एक्टिव केस 48 हैं।

तीन लोगों ने फांसी लगा की आत्महत्या

फतेहपुर। जनपद के अलग-अलग तीन थाना क्षेत्र अन्तर्गत शराबी सहित तीन लोगों ने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। सदर कोतवाली क्षेत्र के पत्थरकटा मोहल्ला निवासी ओमप्रकाश का 22 वर्षीय पुत्र रजत जो शराब पीने का आदी था। आए दिन घर में कोहराम मचा रहता था। कल शाम जब वह नशे की हालत में घर आया तो परिजनों ने उसे डांट डपट दिया। इसी बात से क्षुब्ध होकर उसने घर के अन्दर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। जब घर के सभी लोग गहरी नींद सो रहे थे। सुबह परिजनों की नींद खुली तो फांसी पर लटका रजत का शव देख घर पर कोहराम मच गया। इसी प्रकार हुसैनगंज थाना क्षेत्र के ग्राम सेमरहटा निवासी रमेश का 24 वर्षीय पुत्र राजेश ने मामूली विवाद के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। जबकि ललौली थाना क्षेत्र के सिधांव गांव का निवासी शिवभूषण का 28 वर्षीय पुत्र रामजी तिवारी का घर में किसी बात को लेकर कहासुनी हो गयी। जिस पर उसने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। मृतक रामजी तिवारी अपने पीछे दो पुत्र, एक पुत्री छोड़ गया है। पत्नी शिवानी का रो-रोकर बुरा हाल है। सूचना पाकर पुलिस ने तीनों शवों को अपने कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया है।

सड़क हादसे में युवक की मौत

फतेहपुर। मलवां थाना क्षेत्र के अन्तर्गत देर रात अज्ञात वाहन की चपेट में आ जाने से एक लगभग 38 वर्षीय अज्ञात युवक की मौत हो गयी। सूचना पाकर पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर विच्छेदन गृह भेज दिया। समाचार लिखे जाने तक मृतक की पहचान नही हो सकी थी।

32 लोगों पर शांतिभंग की कार्रवाई

फतेहपुर। जनपद के अलग-अलग थाना क्षेत्रों के अन्तर्गत बीते चौबीस घण्टे के अन्तराल में आधा दर्जन से अधिक थानों की पुलिस ने ढाई दर्जन लोगों के विरूद्ध 151 के तहत कार्यवाही की है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार खागा कोतवाली प्रभारी दो, खखरेरू थानाध्यक्ष एक, धाता थानाध्यक्ष दो, सुल्तानपुर घोष थानाध्याक्ष चार, बिन्दकी कोतवाली प्रभारी तीन, कल्याणपुर थानाध्यक्ष तीन, थरियांव थानाध्यक्ष 9 तथा हथगाम थानाध्यक्ष ने 8 लोगों के खिलाफ शांतिभंग की कार्यवाही की है।

पुलिस ने नौ वांछित किए गिरफ्तार

फतेहपुर। ललौली थाना प्रभारी ने शनिवार की सुबह गश्त के दौरान वांछित चल रहे आधा दर्जन से अधिक लोगों को गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार ललौली थानाध्यक्ष आज सुबह अपने हमराह सिपाहियों के साथ क्षेत्र में कानून व्यवस्था चुस्त दुरूस्त रखने के उद्देश्य से गश्त कर रहे थे। तभी मुखबिर की सटीक सूचना पर वांछित नीरज पाठक, सुरेन्द्र यादव पुत्र श्रीपाल, मुकेश निषाद पुत्र मातीलाल, राममिलन पुत्र सौंइनीय, नीलू पुत्र बाबूराम, गोलू रैदास पुत्र रामस्वरूप, मनोज पुत्र बाबूराम, अशोक पुत्र माधव व जयनारायण उर्फजेका पुत्र गंगाप्रसाद साहू निवासीगण मुत्तौर को गिरफ्तार करते हुए उनके विरूद्ध कानूनी कार्यवाही कर न्यायालय भेज दिया है।

घरेलू कलह में युवक ने जहरीला पदार्थ खाकर दी जान

बिंदकी (फतेहपुर)। घरेलू कलह के चलते युवक ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या कर लिया। युवक की मौत के बाद परिजनों में हड़कंप मच गया। मृतक की पत्नी कई वर्ष पहले अपने मायके चली गई थी जिसके बाद से युवक परेशान रहता था। नगर के मोहल्ला हजरतपुर ठठराही निवासी सुनील यादव उम्र 32 वर्ष पुत्र रामपाल यादव ने घरेलू कलह के चलते जहरीला पदार्थ खा लिया। युवक की हालत बिगड़ी तो परिजनों के पैरों तले जमीन खिसक गई। युवक को निजी वाहन से ले जाकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया चिकित्सक ने युवक की हालत गंभीर देखते हुए प्राथमिक उपचार बाद हैलट कानपुर रेफर कर दिया जहा पर युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। युवक की मौत की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया परिजन रो रो कर बेहाल हो रहे थे। बताया जाता है कि मृतक युवक की पत्नी कई वर्ष पहले अपने मायके चली गई थी इसके चलते युवक परेशान रहता था।

पति समेत पांच ससुरालीजनों पर दहेज हत्या का मुकदमा

बांदा। ससुराल में विवाहिता का शव फंदे में लटके मिलने के मामले में मायके पक्ष ने पति समेत पांच ससुरालीजनों के विरुद्ध दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज कराया है। तहरीर में मृतका के पिता ने दहेज की मांग पूरी न होने पर पीटकर गला दबाने का जिक्र किया है। पुलिस क्षेत्राधिकारी मामले की जांच कर रहे हैं। गिरवां थाना क्षेत्र के ग्राम बरसड़ा बुजुर्ग निवासी विवाहिता कविता पत्नी कैलाश कुशवाहा का शव 14 जून को घर के अंदर फंदे में लटका मिला था। ससुरालीजनों ने खुदकुशी करने की वजह के बारे में अनभिज्ञता जाहिर की थी। उधर इस संबंध में मृतका के पिता विजयपाल कुशवाहा ग्राम कोर्रा बुजुर्ग कमासिन ने गिरवां थाने में तहरीर देकर बताया कि उसने 3 फरवरी 2019 को अपनी बेटी कविता की शादी सामूहिक विवाह योजना के तहत अतर्रा से की थी। हैसियत के मुताबिक दान दहेज दिया था। शादी के बाद ससुरालीजन दहेज में दो लाख रुपये की मांग और कर रहे थे। आरोप लगाया कि बेटी को दहेज के लिए मायके नहीं भेज रहे थे। बेटी ने ससुरालीजनों की ओर से प्रताड़ित करने की जानकारी मायके में दी थी। पति उसे अपने साथ दिल्ली ले गया था। वहां भी पति बेटी को खाना नहीं देता था। पांच जून को पति ने साजिश के चलते उसे चचेरे देवर के साथ दिल्ली से ससुराल भेज दिया था। जहां सभी ने मिलकर बेटी की गला दबाकर हत्या कर दी है। थाना प्रभारी शशि कुमार पांडेय ने बताया कि तहरीर के आधार पर पति कैलाश देवर राजेश ओमप्रकाश कमल व ससुर श्रवण के विरुद्ध दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। जांच के आधार पर आरोपितों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

चीनी कंपनी को ठेंगा, टॉवर में लगेंगे स्वदेशी उपकरण

बांदा। जिले में लगे बीएसएनएल टॉवर अब स्वदेशी उपकरणों से लैस होंगे। इनमें चीन निर्मित बीटीएस व उपकरण नजर नहीं आएंगे। भारत.चीन के मध्य तनाव के चलते केंद्र सरकार ने फोर.जी अपग्रेशन का कार्य ठप कर दिया है। अब नए सिरे से टेंडर होगा जिसमें स्वदेशी कंपनियां ही शामिल होंगी। जिले के 212 टॉवर में 16 को फोर.जी से अपग्रेड किया जा चुका है। भारतीय दूर संचार निगम लिमिटेड ;बीएसएनएलद्ध के अधिकारियों के मुताबिक चीन की कंपनियां अन्य देशों के मुकाबले सामान सस्ता मुहैया कराती हैं। इनमें टॉवर के तकनीकी उपकरण भी हैं। चार माह पहले केंद्र सरकार ने मोबाइल टॉवरों में फोर.जी अपग्रेड करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर टेंडर कराया था। यूरोप अमरीका जर्मनी सहित कई देशों की कंपनियों ने टेंडर डाले थे। चीन की कंपनी ने सबसे कम दर पर टेंडर डाला था इसलिए उसका चयन हो गया था। जिले में बीएसएनएल के 212 व प्राइवेट कंपनियों के चार टॉवर हैं। अपग्रेड किए जा चुके 16 टॉवरों में चीन के बीटीएस लगाए गए हैं।

खागा में संयुक्त टीम का मौरंग खदानों पर छापा, मचा हड़कंप

● झगवा में मिला चुस्त-दुरुस्त तो रानीपुर में मिलीं अनियमितताएं

संवाददाता। खागा (फतेहपुर)

जनपद में लगातार ओवरलोडिंग एवं अवैध खनन के मामले प्रकाश में आ रहे हैं परंतु विभागीय कर्मचारी कार्यवाही करने से बच रहे हैं। जनपद में हो रहे मोरंग खदानों में ओवरलोडिंग एवं अवैध खनन कि लगातार शिकायतों के बाद शुक्रवार शाम खागा उप जिला अधिकारी प्रहलाद सिंह ने मझिगवा मोरंग खदान तथा खनन अधिकारी मिथिलेश कुमार पांडेय ने रानीपुर टू में छापा मारा, जहां पर रानीपुर मोरंग खदान में भारी अनियमितता सामने आई जिसके बाद हरकत में आए खनन अधिकारी ने 05 ओवरलोड ट्रकों को सीज कर दिया, जिसके बाद खनन क्षेत्र में हड़कंप मच गया, जिसके बाद भारी भरकम मशीनों को छुपा दिया गया। कोई गांव की गली में घुस गया, कोई जंगल में ओवरलोड गाड़ी लेकर घुस गया। सड़कों में सन्नाटा पसर गया, तभी खनन अधिकारी ने रास्ते पर खड़े रानीपुर मोरंग खदान के 05 ओवरलोड ट्रकों को सीज कर दिया। एसडीएम श्री सिंह ने मझिगवा खदान में छापा मारा जहां पर खनन क्षेत्र की निगरानी कर जायजा लिया और ओवरलोड व बिना रॉयल्टी के वाहनों को चेक किया, जहां पर सब कुछ दुरुस्त मिला, कांटा पर लगा सीसीटीवी कैमरा चालू मिले। इस मौके पर खागा उप जिलाधिकारी प्रहलाद सिंह, किशनपुर थाना अध्यक्ष पंधारी सरोज, इंचार्ज होशियार सिंह आदि कर्मचारी मौजूद रहे।

अध्यक्ष प्रतिनिधि व ईओ ने किया फाउंटेन फव्वारे का उद्‌घाटन

फतेहपुर। नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष प्रतिनिधि हाजी रजा व अधिशासी अधिकारी श्रीमती मीरा सिंह द्वारा आज वार्ड अहमदगंज व ज्वालागंज के बीच स्थित चौराहे पर फाउंटेन फव्वारे का उद्घाटन किया गया। इस मौके पर अध्यक्ष प्रतिनिधि ने कहा कि शहर विकास की ओर अग्रसर है। सभी सभासदों के सहयोग से नगर पालिका परिषद द्वारा शहर के चौराहों का सौंदर्यीकरण कराया जा रहा हैए जिसके अंतर्गत कई चौराहों का नव निर्माण तथा सुंदरीकरण का कार्य किया जा रहा है। अधिशासी अधिकारी ने कहा कि इस रंगीन फव्वारे का प्रस्ताव पूर्व में पारित हुआ था जिसका निर्माण कार्य पूर्ण होने पर आज इसका उद्घाटन हो रहा है। इस मौके पर सभासद विनय तिवारीए आरिफगुड्डाए मकबूल आलमए शादाब अहमदए कासिम अलीए नुरुल हुदाए दिनेश तिवारी खलीफाए अजाज अहमद उर्फराहतए अनुरागए नूरए हुमायूंए भानु पटेलए रामसिंहए दीपक कुमार डब्लूए वकील राईनए मुन्ना बाजपेईए पुत्तू लालए मोहसिनए सहायक अभियंता जगदीश प्रसाद समेत अमित कुमार जयसवालए राकेश कुमार गौड़ए मोहम्मद हबीबए गुलाब सिंह आदि मौजूद रहे।

भाजपाइयों ने पत्रक के साथ सीएम राशन किट भी बांटी

पत्रक व राशन किट देते भाजपा नेता शानू गुप्ता

चित्रकूट। भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे के निर्देश पर जिला महामंत्री राजेश जायसवाल की अगुवाई में व्यापारी भाजपा नेता शानू गुप्ता ने कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जारी पत्रक कोलगदहिया गांव में बांटे। गरीबों को मुख्यमंत्री राशन किट देकर प्रधानमंत्री की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। शनिवार को भाजपा जिला महामंत्री राजेश जायसवाल ने कहा कि भाजपा देश व प्रदेश के प्रत्येक गरीब व वंचितों को लाभ देने का कार्य कर रही है। भाजपा नेता शानू गुप्ता ने कहा कि मोदी-योगी सरकार जनकल्याणकारी योजनाओं से आम जनता की मदद कर रही हैं। मोदी की सकारात्मक सोंच से जनता में खुशहाली आ रही है। लोगों को अपने व्यापार व रोजगार बढाने को सरकार ने हर वर्ग के लिए महत्वपूर्ण योजनायें लागू की हैं। सभी लोगों को सीधा लाभ सरलता से मिल रहा है। इस मौके पर शानू गुप्ता ने गांव के अतिगरीबों को मुख्यमंत्री राशन किट बांटी। राशन किट में 15 दिनों की राशन सामग्री दी गई।

अटल भूजल योजना के संचालन करने से कन्नी काट रहे हैं अधिकारी

संवाददाता। हमीरपुर

बुन्देलखंड में पेयजल व्यवस्था को सुधारने व जल बचाने की गरज से गठित की गयी अटल भूजल योजना का जिले में दो माह बाद भी अभी तक संचालन नही हो पाया है। सीडीओ द्वारा लघु सिचाई विभाग के अधिशासी अभियंता को जिम्मेदार ठहराया गया है मगर अभियंता ने अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लिया है।

जानकारी के मुताबिक बुन्देलखंड में पेयजल योजना को पटरी पर लाने के लिये केंद्र सरकार ने अटल भूजल योजना दो माह पहले लागू की गयी थी। इस योजना में पेयजल के साथ साथ वाटर रिचार्जिंग करना व किस किस क्षेत्र में किसको कितने पानी की आवश्यकता है इसके लिये एक रणनीति बनायी गयी थी। ताकि बुदेलखंड में पानी की समस्या को हमेशा के लिये समाप्त किया जा सके। शासन से पूरी गाइड लाइन जारी होने के बाद जिले में इसकी जिम्मेदारी लघु सिचाई विभाग के अधिशासी अभियंता को सौपी गयी थी मगर उन्होने अभी तक कोई काम नही किया है। जब कल इस मामले में सीडीओ ने अधिशासी अभियंता एसपी राम को कड़ा पत्र लिखकर नाराजगी जाहिर की इसकी लिखित जानकारी जिलाधिकारी को दे दी है इस पर पलटवार करते हुये अधिशासी अभियंता ने कहा अटल भूजल योजना से उनका कोई लेना देना नही है। न ही जिला स्तरीय कमेटी में उनका नाम है जब कि जिला विकास अधिकारी विकास मिश्रा का कहना है कि लघु सिचाई विभाग के अधिशासी अभियंता को ही नोडल अधिकारी बनाया गया है। इससे साबित हो गया है कि बुन्देलखंड की अति महत्वाकांक्षी योजना दो पाटो के मध्य झूलती नजर आ रही है इस योजना को संचालन करने में किसी की रुचि नही है जिससे बुन्देलखंड में पानी की समस्या बढ़ती जाना लाजिमी हो गया है।

वृद्धाश्रम के कर्मी निकले कोरोना पॉजिटिव हमीरपुर में मरीजों की संख्या पहुंची 68

हमीरपुर। हमीरपुर शहर स्थित वृद्दाश्रम में एक कर्मी के कोरोना पाजटिव पाये जाने से हड़कंप मच गया, जिलाधिकारी, एसपी व सीएमओ वृद्धाश्रम में पहुचकर वहां पर समय काट रही सभी वृद्धो का हाल चाल पूछा और सैम्पिल लिया गया। जिले मे अब पाजटिव संक्रमितो की संख्या बढ़कर अड़सठ हो गयी है। मुख्य चिकित्साधिकारी(सीएमओ) डा. आरके सचान ने बताया कि वृद्धाश्रम कर्मी शहर के नजदीक स्थित कुसमरा गांव का रहने वाला है इस गांव में कई मरीज पाजटिव मिल चुके है एक सप्ताह पहले गांव गया था वही पर उसका भी सैम्पिल लिया गया था। आज जांच रिपोर्ट में कोरोना पाजटिव पाया गया है। गांव से आने के बाद कर्मी सीधे वृद्धाश्रम में काम करने लगा था इस आश्रम में कई लोग काम करते है। कर्मी ज्यादातर वहा पर रह रहे वृद्ध महिला व पुरुषो के संपर्क में रहा है यहां पर जो भी वृद्ध महिलाएं व पुरुष है वे सभी सत्तर साल के ऊपर है। जांच रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। जिलाधिकारी डा. ज्ञानेश्वर त्रिपाठी व पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार व सीएमओ मौके परजाकर संक्रमित यूवक से काफी देर तक पूछतांछ की है। संक्रमित युवक को इलाज केलिये बादा कोविड 19 अस्पताल भेज दिया गया है। जिले में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 68 पहुच गयी है। आज प्रशासन ने वृद्धाश्रम को सेनेटाइज कराया और वहा पर आने जाने के लिये प्रतिबंध लगा दिया गया है। हमीरपर शहर में संक्रमित रोगी को पाया जाना पहला मामला है अभी तक अन्य ब्लाकों व ग्रामीण क्षेत्रों मे संक्रमित व्यक्ति पाये गये मगर अब शहर में भी कोरोना वायरस के मरीज निकलना शुरु हो गये है।

कोरोना रोकने में फेल है केंद्र सरकारः भाकपा

चित्रकूट। भाकपा के आवाहन पर जिला सचिव अमित यादव की अगुवाई में राष्ट्रपति सम्बोधित 12 सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपकर डीजल व पेट्रोल के मूल्यों में हो रही लगातार बढ़ोत्तरी को भाकपा ने गम्भीरता से लेते हुए प्रतिरोध जताने का निर्णय लिया है। ज्ञापन में कहा कि महंगाई चरम पर है, लोग परेशान हैं। शनिवार को भाकपा जिला सचिव अमित यादव ने राष्ट्रपति सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपते हुए कहा कि तेल उत्पाद कम्पनियों ने जब से मूल्य वृद्धि की है। डीजल 75 रुपये व पेट्रोल 80 रुपये पहुंच गया है। उपभोक्ता पहले ही गैस, बिजली आदि की महंगाई झेल रहे हैं। कोरोना को रोकने को लॉकडाउन से तहस नहस हुई अर्थव्यवस्था को और अधिक हानि उठानी होगी। केन्द्र की जनविरोधी सरकार ने कोरोना महामारी रोकने में पूरी तरह असफल है। चीन के वुहान शहर में महामारी की विनाशलीला शुरु हुई।

डीएसओ व खंड विकास अधिकारियों के खिलाफ की जाए कार्रवाई: डीएम

संवाददाता। चित्रकूट

बैठक में निर्देश देते डीएम

जिलाधिकारी शेषमणि पाण्डेय ने खण्ड विकास अधिकारियों तथा जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देश दिये कि प्रवासी मजदूरों के राशन कार्ड बनाने में प्रगति नहीं हो रही है। पिछली बैठक में निर्देश देने के बाद भी प्रगति न होने पर खण्ड विकास अधिकारियों व जिला पूर्ति अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की जाये। शनिवार को जिलाधिकारी शेषमणि पाण्डेय की अध्यक्षता में कोरोना वायरस बचाओ बाबत हुई कलेक्टेऊट में बैठक में उन्होंने डीएफओ के कार्यों में रुचि न लेने पर जवाब-तलब किया। डीएम ने सीएमओ से कहा कि टेलीमेडिशन में आशा, एएनएम को गांव में लगाकर जनसुविधा केन्द्र पर मरीजों को भेजकर स्वास्थ्य लाभ दिलायें। सीएमओ से कहा कि जिन गांव व नगर में हॉटस्पाट हैं वहां पर आशा, एएनएम व निगरानी समिति को लगाकर जानकारी प्राप्त करें।

उन्होंने डीपीआरओ से कहा कि साफ-सफाई चौकस रखी जाये। उपजिलाधिकारियों, सेक्टर व जोनल मजिस्टेऊट से कहा कि मास्क पहनने व सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराने को लगातार कार्यवाही करते रहें। नगर में अधिशाषी अधिकारी एनाउंस करायें कि मास्क व सोशल डिस्टेंसिंग का हर हाल में पालन किया जाये। हॉटस्पाट क्षेत्रों में होम डिलिवरी से आवश्यक वस्तुयें पहुंचायें। जहां पॉजिटिव केस मिले हैं, वहां तत्काल सैनेटाइज व हाउस टू हाउस सर्वे कराकर तत्काल स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाये। सीएमओ से कहा कि जो मरीज सर्दी, खांसी, जुकाम के आयें उनके सेम्पल की जांच जरूर की जाये। प्रवासी मजदूरों को हर हाल में खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाये।

उरई में कोरोना एक्टिव मरीजों की संख्या 78 हुई

उरई (जालौन)। जनपद में लगातार कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या में बढ़ोत्तरी के क्रम में 20 जून को भी आयी रिपोर्ट के बाद तीन नये कोरोना पॉजीविट मरीज पाये गये है। इस तरह से देखा जाये तो जिले में कोरोना एक्टिव मरीजों की संख्या बढ़कर 78 पहुंच गयी है। गौरतलब हो कि पूर्व में कांशीराम कालौनी उरई एवं कोंच में एक-एक व्यक्ति की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आयी थी, जिनकी कॉन्टेक्ट ट्रेसिंग में कांशीराम कालौनी से 1 व्यक्ति की रिपोर्ट एवं कांशीराम कालौनी कोंच से 1 महिला की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आयी है। साथ ही लाजपत नगर कोंच के एक व्यक्ति इलाज हेतु झांसी गये हुये थे, जिनका झांसी में टेस्ट कराया गया, उनकी भी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आयी है। जनपद में 20 जून को 3 नये केस आये है। अब जनपद में कुल कोरोना पॉजिटिव की संख्या 138 हो गयी है, जिसमें से 6 व्यक्ति मृत हो गये एवं 54 व्यक्ति ठीक हो गये है। वर्तमान में एक्टिव केस की संख्या 78 है।

परिजनों के साथ योगा कर शरीर को निरोगी बनाएं

उरई (जालौन)। सहकार भारती के झांसी विभाग के संयोजक सुधीर सिंह गौर ने शनिवार को उरई में जेल रोड पटेल नगर स्थित नगर कार्यालय पर सहकार भारती के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर कहा कि सहकार भारती सहकारिता क्षेत्र के अलावा अन्य समाजिक कार्यों में भी हिस्सा लेती है, जैसे अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस हरवर्ष हर्षोल्लास से मनाती है, पर इस बार कोविड-19 के चलते अपने देश की देन योग को इस बार सभी पदाधिकारी परिवारिक स्तर पर मनायें हम सभी अपने-अपने घरों में रहकर पूरे परिवार के साथ मिलकर योग दिवस 21 जून रविवार के दिन योग करें। बैठक में जिला संगठन प्रमुख सिया शरण व्यास जिला अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह राजावत जिला उपाध्यक्ष राहुल समाधिया, जगपाल सिंह यादव, श्याम करन प्रजापति, जिला महामंत्री कुंदन सिंह, रविन्द्र सिंह परमार विक्रम कुशवाहा, सौरभ गुप्ता आदि उपस्थित थे।

ऋण पत्रावलियों के निस्तारण में लापरवाही होगी अक्षम्य

बांदा। डीएम ने लीड बैंक प्रबंधक सहित बैंक अधिकारियों के साथ बैठक की। बैंक पत्रावलियों का निस्तारण न होने के कारण कड़ी नाराजगी जाहिर की। सरकारी विभागों की पत्रावलियां बिना निस्तारण वापस किए जाने पर सीडीओ ने बैंक अधिकारियों को सख्त चेतावनी दी। कहा कि प्रवासी श्रमिकों को प्रशिक्षित कर उन्हें रोजगार दिलाया जा रहा है। बैंक इसमें पूरी मदद करें।

कलेक्ट्रेट सभागार में शुक्रवार को बैठक में डीएम अमित सिंह बंसल ने एलडीएम से विभिन्न योजनाओं के तहत ऋण के लिए आईं पत्रावलियों के निस्तारण की समीक्षा की। इस दौरान मत्स्य अधिकारी ज्ञानेंद्र कुमार व एनआरएलएम के के के पांडेय ने बताया कि बैंकों से बिना निस्तारण पत्रावलियां लौटाई जा रही हैं। इस पर डीएम ने कड़ा एतराज जाहिर किया। कहा कि शासन की मंशा है कि महानगरों से आए प्रवासियों को रोजगार दिया जाए। इसके लिए प्रत्येक बैंक प्राप्त होने वाली पत्रावली को तत्काल निस्तारित कराएं और संबंधित विभाग को निस्तारण के संबंध में अवगत करा दें। सभी अधिकारियों को सचेत किया की कोविड.19 के संक्रमण को देखते हुए भारी संख्या में प्रवासी कामगार जनपद में आए हैं। उनके कौशल की वृद्धि करते हुए ऋण उपलब्ध कर उन्हें स्वरोजगार को प्रेरित करना है। इस कार्य के लिए जनपद स्तर पर पूरी तैयारी की जा चुकी है। आईटीआई के साथ.साथ अन्य प्रशिक्षण संस्थानों पर ट्रेनिग शुरू कर दी गई है। सीडीओ हरिश्चंद्र वर्मा ने कहा कि विभागीय अधिकारियों से कहा कि वह बैंक पत्रावलियां तत्काल फिर से भेजें। गुण दोष के आधार पर परीक्षण कर पत्रावली का निस्तारण किया जाए। बैठक में आर्यावर्त बैंक का प्रतिनिधित्व कर रहे क्षेत्रीय प्रबंधक एस के द्विवेदी ने बताया कि वह स्वयं व्यक्तिगत ध्यान देकर पत्रावली को गुण दोष के आधार पर निस्तारित करवाएंगे।

पट्‌टाधारक करवा रहा मौरम का अवैध खनन!

● पट्‌टाधारक ने बगैर अनुमति लगायी दर्जन भर पॉकलैंड मशीनें

संवाददाता। उरई (जालौन)

जनपद की उरई तहसील क्षेत्र के ग्राम बंधौली में मौरम खंड संख्या तीन का पट्टाधारक प्रशासन के निगरानी तंत्र को धता बताकर न केवल ग्राम पंचायत की जमीन से मौरम का खनन करवा रहा है बल्कि वन क्षेत्र में भी अवैध तरीके से मौरम का खनन कर प्रदेश सरकार को करोड़ों रुपये की अब तक चपत लगा चुका है। हैरानी की बात तो यह है कि उक्त खंड से ज्यादातर मौरम भरे वाहन एनआर में निकाले जाते हैं जिन्हें रोकने टोकने की हिम्मत जिम्मेदार अधिकारी नहीं जुटा पाते हैं। ताज्जुब की बात तो यह है कि पट्टाधारक ने खनिज दफ्तर से बगैर अनुमति लिये ही दर्जन भर पॉकलैंड मशीनों से मौरम खनन कराने में जुटा हुआ है। बंधौली गांव के ग्रामीणों से मिली जानकारी के अनुसार बंधौली के गाटा संख्या 2558, 2559 खंड संख्या तीन जिसका रकवा 20.242 हैक्टेयर बताया जाता है उसका पट्टा मे. खजुराहो मोटर्स प्रा.लि. 6 किमी सागर रोड ढ़डारी छतरपुर जिला छतरपुर मप्र के नाम है। मौरम खंड का पट्टा हासिल करने के बाद उक्त कंपनी ने दर्जन भर कर्मियों को मौरम खंड पर भेजकर वहां से मौरम का खनन करना शुरू कराया लेकिन कुछ ही दिनों में पट्टाधारक की नियत में लालच आया तो उसने ग्राम प्रधान से सांठगांठ कर ग्राम पंचायत की जमीन से करोड़ों रुपये की मौरम का उठान करवा दिया। जब उक्त संबंध में ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से लिखित शिकायत की तो मौके पर अतिरिक्त मजिस्ट्रेट गुलाब चंद्र सहित कई अधिकारी पहुंचे तो उन्होंने ग्राम पंचायत की जमीन से हुये अवैध मौरम खनन के गड्ढों को देखकर उसकी नापजोख भी कराकर पट्टाधारक के विरुद्ध कार्यवाही के संकेत दिये थे। लेकिन इसके बाद भी पट्टाधारक ग्राम पंचायत ही नहीं वन विभाग की जमीन से मौरम का अवैध खनन कराने में जुटा हुआ है। आश्चर्य की बात तो यह है कि उक्त पट्टाधारक ज्यादातर वाहनों में मौरम भरकर उन्हें एनआर में निकालता है। जिससे साफ संकेत मिल रहे है कि पट्टाधारक जिला प्रशासन के निगरानी तंत्र को चुनौती दे रहा है। इतना ही नहीं एनजीटी की गाइड लाइन में पट्टाधारक को अपने क्षेत्र में महज तीन मीटर गहराई तक ही मौरम का खनन करने की अनुमति है। लेकिन लाल सोने की चमक देखकर पट्टाधारक एनजीटी की गाइड लाइन को भी तार-तार करने पर तुला हुआ है। जो ग्रामीण अवैध मौरम खनन का विरोध कर पर्यावरण की रक्षा के लिये संघर्षरत है उन्होंने साफतौर पर कहा कि यदि समय रहते जिम्मेदार प्रशासनिक अमले ने इस पर अंकुश न लगाया तो ग्रामीण स्वत: ही मौरम भरे वाहनों का रास्ता अवरुद्ध कर प्रशासन का ध्यान इस ओर आकर्षित कराने को विवश होंगे जिसकी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी।

शिवगढ़ में सड़क किनारे गड्ढे में युवक का शव मिलने से सनसनी

● पिता की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज

संवाददाता। शिवगढ़ (रायबरेली)

शिवगढ़ थाना क्षेत्र के उचौरी ग्राम पंचायत अंतर्गत त्रिपुरा बाजार - पडीराकला सम्पर्क मार्ग के किनारे गड्ढे में 30 वर्षीय युवक का शव मिलने से क्षेत्र में मचा हडकम्प। पिता की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ किया मुकदमा दर्ज। विदित हो कि शिवगढ़ थाना क्षेत्र के अनन्त कुवर खेड़ा मजरे पडीराकला का रहने वाला स्वामीदीन पुत्र पहली जो शुक्रवार को सायं 3 बजे घर से निकला था। जब स्वामीदीन देर रात तक घर नही पहुंचा तो परिजनों ने खोजबीन शुरू कर दी किन्तु युवक का कहीं पता नही चल सका। शनिवार की सुबह परिजनों को जानकारी मिली कि उचौरी ग्राम पंचायत अंतर्गत त्रिपुला बाजार - पडीरा कला सम्पर्क गार्ग के किनारे गड्ढे में संदिग्ध परिस्थितियों में एक युवक का शव पड़ा है। सूचना पाकर मौके पर पहुंचे परिजनों ने मृतक के शव की सिनाख्त स्वामीदीन के रुप में की। मृतक के भाई राजेंद्र कुमार ने बताया कि उसका भाई स्वामीदीन शुक्रवार को शाम 3 बजे घर से निकला था जो रात में घर नही पहुंचा। मृतक के शरीर पर कई जगह चोट के निशान पाए गए हैं। युवक की मौत से उसकी पत्नी सीता,पिता पहली,भाई राजेंद्र कुमार सहित परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। मृतक के पिता पहली की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफहत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है। थाना प्रभारी धीरेंद्र कुमार यादव ने बताया कि मृतक के पिता पहली की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफहत्या का मुकदमा दर्जकर लिया गया है। शव कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही पता चलेगा कि युवक की मौत कैसे हुई है।

सीओ महराजगंज ने लिया घटनास्थल का जायजा

महराजगंज क्षेत्राधिकारी राघवेंद्र चतुर्वेदी ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का जायजा लिया। क्षेत्राधिकारी राघवेंद्र चतुर्वेदी ने बताया कि फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से एविडेंस एकत्रित कर लिए हैं। शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है पीएम रिपोर्ट आने के बाद आगे कार्यवाही की जाएगी।

अज्ञात वाहन की टक्कर से अज्ञात युवक की दर्दनाक मौत

शिवगढ़ (रायबरेली)। शिवगढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत बांदा- बहराइच हाईवे पर स्थित न्यू पब्लिक एकाडमी इण्टर कॉलेज भवानीगढ़ के समीप हाण्डा एजेंसी के सामने अज्ञात वाहन की जोरदार टक्कर से 22 वर्षीय अज्ञात युवक की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत। युवक की शिनाख्त में जुटी पुलिस। विदित हो कि शनिवार की सुबह उसम समय मच गया जब भवानीगढ़ चौकीदार प्यारेलाल गश्त कर रहे थे। जिन्हें गश्त के दौरान बांदा- बहराइच हाईवे पर स्थित न्यू पब्लिक एकाडमी इण्टर कॉलेज भवानीगढ़ के पास हाण्डा एजेंसी के सामने हाईवे की पश्चिमी पटरी पर युवक का शव पड़ा मिला। जिसकी सूचना चौकीदार प्यारेलाल ने आनन-फानन में शिवगढ़ पुलिस को दी। सूचना मिलते ही मय फोर्स के आनन-फानन में मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष धीरेंद्र कुमार यादव ने शव को कब्जे में लेकर युवक की शिनाख्त लगाने की काफी कोशिश की किंतु शव की शिनाख्त नहीं हो सकी।युवक के शरीर पर चेकदार लाल रंग का गमछा, कत्थई रंग की अंडरवियर पाई गई है। घटना सुबह 4 बजे से 5 बजे के बीच की बताई जा रही है। थानाध्यक्ष धीरेंद्र कुमार यादव ने बताया कि मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

विश्वास बनकर उभरे भाजपा जिला संयोजक

संवाददाता। डलमऊ रायबरेली

वैश्विक महामारी के दौरान बहुत से समाजसेवी युवाओं ने अपने अपने स्तर पर राहत कार्य को अंजाम दिया गया पर डलमऊ नगर पंचायत मे एक नाम भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के जिला संयोजक संतोष दीक्षित का है जिनकी भूमिका अभिभावक की भांति रही। जिन्होंने डलमऊ नगर पंचायत से लेकर गाँव-गाँव तक अपने सहयोगियों के माध्यम से राहत सामग्री को पहुंचाने की महत्वपूर्ण भूमिका को निभाने की अनवरत कोशिश आज तक जारी है पहले राशन और आज सुरक्षा सामग्रियों मे मास्क सेनेटाइजर का वितरण कर लगातार अपने सहयोगियों के माध्यम से आमजनमानस तक पहुँचाया जा रहा है। युवा जिला संयोजक की ओर से कोरोना काल में उत्पन्न हुए संकट में गरीब परिवारों के बीच राहत सामग्री का वितरण कराया गया व गरीबों तक सभी संभव मदद पहुंचाई जिससे जीवनयापन मे कठिनाईयों का सामना ना करना पड़े भाजपा के जिला संयोजक संतोष दीक्षित का विचार था कि क्षेत्र के असहाय निर्धन परिवारों को लॉक डाउन के दौरान हर जरूरतमंद को खाद्यान्न सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं सोएगा। महामारी के दौरान उत्पन्न विषम परिस्थितियों में गरीबों के बीच विश्वास की मजबूत कड़ी के रूप में उभरा नाम विश्वास बन गया। सम्पूर्ण लॉक डाउन के दौरान लगातार कस्बे के साथ-साथ आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के असहाय मजदूर और निर्धन परिवारों में खाद्य सामग्री एवं लंच पैकेट के वितरण की अहम किरदार अदा करने वाले भाजपा के व्यापार प्रकोष्ठ जिला संयोजक संतोष दीक्षित की सादगी का प्रतीक इससे ही लगाया जा सकता है कि लोकप्रियता के माध्यमों से काफी दूर रहते हैं महामारी के खतरे से उत्पन्न हालात पर कुछ समयपूर्व सभी परिवारों से जिला महामंत्री दिनेश त्रिपाठी व व्यापार प्रकोष्ठ के जिला संयोजक संतोष दीक्षित ने अपील करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कोरोनावायरस के संक्रमण से बचने के लिए किए गए गये लॉक डाउन और सामाजिक दूरी का अनुपालन करते हुए प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के साथ-साथ अपने परिवार और समाज को सुरक्षित रख सकता है।

कच्ची दीवार ढहने से महिला की मौत

संवाददाता। सुलतानपुर

बहादुरपुर खुनका गांव में बारिश से कच्ची दीवार ढहने से महिला की मौत हो गई। डीएम ने एसडीएम बल्दीराय को जांच कर पीड़ित परिवार को तत्काल आर्थिक सहायता मुहैया कराने का निर्देश दिया है। शनिवार को बल्दीराय तहसील क्षेत्र के बहादुरपुर खुनका गांव निवासी जमुना प्रसाद की पत्नी ज्ञानमती घर के कामकाज निपटा रही थीं। इसी बीच बारिश से कच्ची दीवाल भरभराकर गिर पड़ी। दीवाल के मलबे में ज्ञानमती दब गईं। परिजनों की चीख पुकार पर पहुंचे पड़ोसियों ने आनन-फानन में मलबा हटाया लेकिन तब तक ज्ञानमती की मौत हो चुकी थी। महिला की असामायिक मृत्यु पर डीएम ने शोक प्रकट करते हुए एसडीएम बल्दीराय को जांच कर पीड़ित परिवार को फौरन आर्थिक मदद दिलाने का निर्देश दिया है।

सर्वेश बने अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा युवा के राष्ट्रीय प्रवक्ता

● समर्थकों में हर्ष, नेतृत्व के प्रति जताया आभार

सुलतानपुर। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा (युवा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवर अवनीश सिंह ने सुलतानपुर के सर्वेश कुमार सिंह को संगठन का राष्ट्रीय प्रवक्ता नियुक्त किया है। श्री सिंह के मनोनयन से समर्थकों में खुशी है और नेतृत्व के प्रति आभार प्रकट किया है। नगर के सीताकुण्ड मोहल्ला निवासी सर्वेश कुमार सिंह जो कि पेशे से मीडिया क्षेत्र में हैं। वर्तमान समय में लखनऊ में रह रहे हैं। अखिल भारतीय क्षत्रीय महासभा (युवा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने युवा पत्रकार व जुझारू व्यक्तित्व के धनी सर्वेश कुमार सिंह को संगठन का राष्ट्रीय प्रवक्ता बनाया है। संगठन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने बधाई देते हुए कहा है कि सर्वेश सिंह युवा और निर्भीक पत्रकार हैं इनके मनोनयन से संगठन को मजबूती मिलेगी। इनके मनोनयन पर प्रभात सिंह, दिनेश पाण्डेय, रमेश सिंह, धनन्जय सिंह, राकेश सिंह, विजय सिंह, बृजेन्द्र विक्रम सिंह, मनीष तिवारी, विनोद पाठक, विजय पाण्डेय समेत दर्जनों लोगों ने हर्ष व्यक्त किया है।

क्विक न्यूज

अन्तर्राष्ट्रीय दिवस घरों में करें योगः डीएम

गोंडा। जिलाधिकारी डा. नितिन बंसल ने बताया कि आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी किये गये 6वॉ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2020 के सफल क्रियान्वयन हेतु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए अपने-अपने घरों में प्रातः 07.00 बजे से 08.00 बजे तक योग किया जायेगा। साथ ही दूरदर्शन पर प्रातः 06.30 बजे से सजीव प्रसारण प्रारम्भ होगा। उन्होंने बताया कि इस दौरान योग दिवस चैलेन्ज उत्तर प्रदेश योग प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। जिसमे पुरूष, महिला क्रमशः 05 से 17 वर्ष, 18 से 60 वर्ष व 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग तथा योग पेशेवर पुरूष व महिला श्रेणियों में प्रतिभाग करेगें। प्रतिभाग हेतु आयुष कवच ऐप पर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। प्रतिभागी अपनी 03 से 05 मिनट की योग करते हुये वीडियों सोशल मीडिया पर अपलोड करेगें। जिलाधिकारी ने समस्त जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि 21 जून को योग दिवस का व्यापक प्रचार करते हुए योग दिवस मनाना सुनिश्चित करें।

118 में पांच लोग मिले कोरोना पॉजिटिव

सुलतानपुर। मुख्य चिकित्साधिकारी डा. सीबीएन त्रिपाठी ने बताया कि वीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफपैलियो बाटनी लैब लखनऊ को 118 सैम्पल जांच के लिए भेजे गए थे। जिनका परिणाम शनिवार को मिला। जिसमें से 113 निगेटिव और पांच लोगों की जांच कोरोना पाजटिव आई है। जिसमें अर्चना सोनी पत्नी रोहित सोनी निवासी कल्याणपुर पीपरपुर अमेठी भादर, आयशा खातून पत्नी मो. तारिक खान निवासी पांचोपीरन कूरेभार की डिलेवरी जिला महिला अस्पताल में हुई थी। इनके अलावां विनीता पत्नी अरविंद कुमार निवासी नरसड़ा वल्लीपुर बल्दीराय, उपेन्द्र सुत बैजनाथ निवासी ग्राम सेमती वल्लीपुर बल्दीराय, कंचन पत्नी अजय कुमार निवासी ग्राम सिन्दुरापुर बल्दीराय शामिल हैं।

बुखार से पीड़ित अधेड़ महिला की मौत

ऊंचाहार। ऊंचाहार कोतवाली के गांव बीकरगढ़ निवासिनी देवकली 52वर्ष पत्नी देवनाथ को वर्षात के बाद गांव के निकट पानी के जलभराव होने पर संक्रामक रोग से पीड़ित हो गई जिसके प्राइवेट पैथोलाजी मे हुए जांच मे टाइफाइड बुखार आने पर परिजनो के द्वारा जिला से लेकर लखनऊ तक के अस्पताल मे उपचार करवाने के लिए गए जिसमे कहीं भर्ती न करने पर परिजनो के द्वारा उनको घर लाया गया जहां पर उनकी मौत हो गई।जिनके मौत पर परिजनो मे रो रोकर बुरा हाल है।

दुष्कर्म के आरोपित गिरफ्तार, भेजा जेल

ऊंचाहार। ऊंचाहार कोतवाली के गांव पट्टीरहसकैथवल मे दलित युवती के साथ हुए सामुहिक दुष्कर्म के मामले मे पुलिस ने गांव पट्टीरहसकैथवल निवासी रमन 24वर्ष पुत्र लल्लन सिंह को शनिवार के दिन गिरफ्तार करके जेल भेजा है जबकि गांव के ही दो आरोपित फरार होने पर पुलिस उनकी तलास जारी होने को बताया है।

निरीक्षण कर एसपी ने परखी लॉकडाउन की हकीकत

सुलतानपुर। पुलिस अधीक्षक शिवहरि मीणा ने नोबल कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण से बचाव के लिए स्वयं रात्रि चेकिंग अभियान चलाया। उन्होंने कोतवाली नगर थाना क्षेत्र के रोडवेज बसस्टाप, टेढुई मोड, थाना क्षेत्र गोसाईगंज के द्वारिकागंज, थाना क्षेत्र कूरेभार के कस्बा कूरेभार व धनपतगंज में आने-जाने वाले व्यक्ति को चेक किया। इस दौरान डयूटी पर मौजूद पुलिसकर्मी चौकन्ना दिखे। एसपी ने मातहतों को निर्देशित किया कि रात्रि चेकिंग के दौरान लाकडाउन से सम्बंधित गाइडलाइन का सख्ती से पालन कराया जाए। एसपी ने रात्रि में ही कूरेभार थाने का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एसपी द्वारा थाने के कार्यालय, जनसुनवाई पटल, सीसीटीएनएस, महिला हेल्प डेस्क, मालखाने का जायजा लिया गया। अभिलेखों व शस्त्रों का रख-रखाव व थाने में लगे कैमरों को भी परखा। उन्होंने थाना परिसर की समुचित साफसफाई का निर्देश भी दिया।

शादी का झांसा देकर किशोरी से दुष्कर्म

संवाददाता। ऊंचाहार

● तीन पर केस दर्ज

ऊंचाहार कोतवाली के गंगाकटरी गांव कुशलकापुरवा की दलित किशोरी के साथ कोतवाली के गांव दिलमनपुर के दूसरे जाति के युवक के द्वारा शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश मे आया है जिसमे किशोरी के तहरीर के अनुसार पुलिस ने आरोपित युवक समेत तीन के खिलाफ धारा 376, 240, 504, 506, 3/4 पोक्सो एक्ट व एससीएसटीएक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। बताते चले कि कोतवाली के गांव कुशलकापुरवा निवासिनी 17वर्षी किशोरी के तहरीर के अनुसार किशोरी से फोन पर दूसरे जाति के युवक से संपर्क होने पर दोनो मे प्यार का इजहार हुआ जिसके बाद युवक ने 25-11-2019 को स्टांपपेपर पर किशोरी से हस्ताक्षर विवाहनामा पर करवाकर बोला कि हमारी तुम्हारी शादी हो गई है जिसके बाद युवक दिल्ली लेकर गया जिसके साथ निरंतर संबंध बनाया दिनांक 16-05-2020 को दिल्ली से दोनो घर आए जिसके बाद गांव दिलमनपुर अपने घर ले जाकर दुष्कर्म किया जिसके बाद दिनांक 17-05-2020 को आरोपित युवक अपने माता पिता के साथ मिलकर गालीगलौज करके धमकाया और घर से जातिसूचक गाली देते हुए भगा दिया और कहा कि हम तुम्हारे साथ विवाह नही किया हूं जो करना हो कर लेना।जिसकी लीखित शिकायत पीड़ित दलित किशोरी ने कोतवाली ऊंचाहार मे दिनांक 19-06-2020 को कोतवाली मे पीड़िता ने युवक समेत तीन के खिलाफ नामजदगी तहरीर दिया।कोतवाली निरीक्षक ने बताया कि किशोरी की तहरीर पर आरोपित युवक रोहित लोहार पुत्र शिवविलासयशिवविलास यपुष्पा पत्नी शिवविलास निवासीगण दिलमनपुर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।किशोरी को शनिवार के दिन महिला कांस्टेबल के निगरानी मे मेडिकल परीक्षण हेतु भेजा गया है।आरोपितो की तलास जारी है।मुकदमा हलाकि एससीएसटीएक्ट का होने पर सीओ को यहां से भेज दिया जाएगा जिसका विवेचना सीओ ही करेंगे।

डा. एसके गोयल बने सीएमएस

सुलतानपुर। जिला अस्पताल के चर्चित एवं सीनियर चिकित्सक डा. एसके गोयल को शासन ने सीएमएस की जिम्मेदारी सौंपी है। डाक्टर गोयल की तैनाती पर स्वास्थ्य कर्मियों सहित शुभचिंतकों ने बधाई दी है और शासन के आदेश की सराहना की है। गौरतलब हो कि जिले के चर्चित सीएमएस डा.वीबी सिंह हमेशा सुर्खियों में रहे, लेकिन अंतिम एक मामले में जब सुर्खियों में आए तो शासन ने उनका तबादला फ़तेहपुर कर दिया। रिक्त चल रहे सीएमएस के पद पर जिले के वरिष्ठ एवं चर्चित जिला अस्पताल में तैनात डा. एसके गोयल को शासन ने सीएमएस की जिम्मेदारी सौंपी है। शासन के इस आदेश से स्वास्थ्य कर्मियों एवं शुभचिंतकों ने खुशी व्यक्त करते हुए शासन के प्रति आभार प्रकट किया है।

संकट काल में ऑनलाइन प्लेटफार्म ही मनोभावों को व्यक्त करने का सहज माध्यम

संवाददाता। सुलतानपुर

● संत तुलसीदास पीजी कॉलेज में हुआ ऑनलाइन राष्ट्रीय शोध कार्यशाला का शुभारंभ

संत तुलसीदास पीजी कॉलेज कादीपुर में शनिवार से सात दिवसीय राष्ट्रीय ऑनलाइन शोध कार्यशाला का आयोजन शुरू हो गया। कार्यशाला में सामाजिक विज्ञानों में शोध गतिशीलता विषय पर विविध विद्वानों द्वारा अपने अनुभव साझा किए जाएंगे। राष्ट्रीय ऑनलाइन कार्यशाला का उद्घाटन सत्र प्रातः 10:30 बजे आरंभ हुआ।

उद्घाटन सत्र में प्रोफेसर मनोज दीक्षित कुलपति डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या, अध्यक्ष रहे। प्रो ईश्वर शरण विश्वकर्मा अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग मुख्य अतिथि तथा प्रोफेसर प्रशांत कुमार घोष अध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय प्रयागराज विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। कार्यशाला में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से तीन सो से अधिक शोधार्थी और प्राध्यापक जुड़े हैं। महाविद्यालय के प्रबंधक सौरभ त्रिपाठी ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया।

प्रो मनोज दीक्षित ने इस बात को रेखांकित किया कि आज की नई पीढ़ी के पास तकनीक के कारण अधिक सूचनाएं उपलब्ध है, हमें अपने पारंपरिक ज्ञान के साथ इन सूचनाओं का संश्लेषण विश्लेषण सीखना होगा। अब पूरी उच्च शिक्षा प्रणाली अधिक से अधिक तकनीक आधारित होती चली जाएगी। मुख्य अतिथि प्रो ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कहा कि संकट के समय ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ही हमें अपने मनोभावों को व्यक्त करने का सहज साधन है। उन्होंने अपने पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर एक नए शोध चिंतन का विचार प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता प्रोफेसर प्रशांत कुमार घोष ने प्रतिभागियों को शोध तकनीकी के नवीन प्रयोगों से परिचित कराया। तकनीकी सत्र में प्रो प्रशांत घोष ने शोध में साहित्य सर्वेक्षण और शोध अंतराल विषय पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया और प्रतिभागियों की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम का संचालन कार्यशाला के समन्वयक सतीश कुमार सिंह ने किया। प्राचार्य डॉ जितेंद्र कुमार तिवारी ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों के लिए धन्यवाद प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ इंदु शेखर उपाध्याय, डॉ सुशील कुमार पांडेय डॉ मदन मोहन सिंह, डॉ एसबी सिंह, डॉ संतोष कुमार पांडेय, डॉ संजीव, रतन गुप्ता, डॉ हरेंद्र सिंह, डॉ सुरेंद्र त्रिपाठी सहित महाविद्यालय के प्राध्यापक मौजूद रहे।

राष्ट्रीय ऑनलाइन शोध कार्यशाला में विचार प्रकट करते पदाधिकारी

घर पर ही मनाएं योग दिवसः डीएम

सुलतानपुर। जिलाधिकारी सी. इन्दुमती ने छठवें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर जनपद वासियों से अपील किया है कि 21 जून को प्रातः सात बजे से आठ बजे तक सोशल डिस्टेन्सिंग का अनुपालन करते हुए अपने घरों पर ही योग दिवस मनायें। उन्होंने अवगत कराया है कि दूरदर्शन पर योग कार्यक्रम का सजीव प्रसारण प्रातः सवा छह बजे से प्रारम्भ कर दिया जायेगा। इस अवसर पर ''योग दिवस चौलेन्ज उ0प्र0 योग प्रतियोगिता'' का आयोजन किया जायेगा, जिसमें 04 श्रेणी के महिला व पुरूष क्रमशः 5-17 वर्ष, 18-60 वर्ष, 60 वर्ष से अधिक तथा योग पेशेवर पुरूष व महिला प्रतिभाग करेंगे।

गरज चमक के साथ चल सकती हैं तेज हवाएं

सुलतानपुर। मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक अगले कुछ घण्टों के दौरान विद्युत चमक एवं हल्की वर्षा के साथ-साथ तेज हवायें चलने की सम्भावना है। ऐसे में जिलाधिकारी सी. इन्दुमती ने सभी को अपने परिवार के साथ अपने घरों में रहने की अपील की है जिससे किसी भी अनहोनी से बचा जा सके।

बीस लापरवाह पंचायत सचिवों का वेतन रोका गया

● चार को प्रतिकूल प्रविष्टि सीडीओ ने परसपुर ब्लाक की कई ग्राम पंचायतों का किया निरीक्षण,मनरेगा में लापरवाही पर एपीओ को भी मिली रिवर्स एंट्री

संवाददाता। गोंडा

विकास खंड परसपुर की ग्राम पंचायतों का किया निरीक्षण करते सीडीओ शशांक त्रिपाठी

शौचालय निर्माण में लापरवाही बरतने वाले पंचायत सचिव अब सीडीओ शशांक त्रिपाठी के निशाने पर आ गए हैं। उन्होंने शौचालय निर्माण में लापरवाही बरतने पर जिले के 20 पंचायत सचिवों का वेतन रोकने के आदेश तथा चार पंचायत सचिवों का प्रतिकूल प्रविष्टि दी है। वहीं मनरेगा योजना तथा मिशन कायाकल्प योजना के तहत कराए जा रहे कार्यों की हकीकत देखने के लिए शनिवार को विकासखंड परसपुर की कई ग्राम पंचायतों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सीडीओ श्री त्रिपाठी सबसे पहले ग्राम पंचायत डेहरास के मजरा मोहना पहुंचे। वहां पर आदर्श तालाब और खेल के मैदान का कार्य संतोषजनक ना मिलने पर एपीओ मनरेगा को प्रतिकूल प्रविष्टि तथा रोजगार सेवक को सेवा समाप्ति का नोटिस दिया है। इसके बाद उन्होंने ग्राम पंचायत पुरैना में निर्माणाधीन गौशाला, आंगनवाड़ी केंद्र तथा प्राथमिक विद्यालय का निरीक्षण किया। निर्माणाधीन गौशाला में एप्रोच का कार्य नहीं पाया गया। सीडीओ ने खंड विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि वह शीघ्र ही एप्रोच का निर्माण कार्य करा कर उन्हें सूचित करें। प्राथमिक विद्यालय में निरीक्षण के दौरान मिशन कायाकल्प योजना के तहत कोई भी कार्य नहीं कराया गया था। इस पर सीडीओ ने बीडीओ को निर्देशित किया कि वे प्राथमिक विद्यालय में मिशन कायाकल्प के तहत सभी जरूरी कार्य तत्काल शुरू कराएं। पुरैना में निरीक्षण के बाद सीडीओ सीधे ग्राम पंचायत बहुवन मदार माझा पहुंचे। वहां पर उन्होंने शौचालय के लाभार्थियों से सीधे वार्ता की तथा उन्हें शौचालय निर्माण का कार्य जल्द से जल्द पूर्ण कराने की अपील की। बताते चलें कि भवन में स्वच्छ भारत मिशन योजना के तहत 700 शौचालयों का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। इसके बाद सीडीओ कस्तूरबा गांधी विद्यालय परसपुर पहुंचे। वहां पर निरीक्षण के दौरान जल निकासी की समस्या पाई गई जिस पर सीडीओ ने बीडीओ को निर्देशित किया कि तत्काल जल निकासी की व्यवस्था करें। इसके अलावा एक्सटेंशन भवन का हैंड ओवर शीघ्र कराने के निर्देश दिए। ग्राम पंचायतों का निर्माण कार्य देखने के बाद सीधे-सीधे विकास खंड कार्यालय पहुंचे। वहां पर उन्होंने खंड विकास अधिकारी, पंचायत सचिवों तथा अन्य अधिकारियों के साथ विकास कार्यों की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान ही सीडीओ को यह जानकारी मिली कि पंचायत सचिव ब्लॉक पर सरकारी आवासों में अपने कार्यालय चला रहे हैं और बराबर गांव को नहीं जाते हैं। इस पर सीडीओ ने नाराजगी व्यक्त करते हुए समस्त सचिव को निर्देशित किया कि वह तत्काल सरकारी आवासों में कार्यालय चलाना बंद कर दें तथा अपने आवंटित गांव में जाकर कार्य कराएं। सीडीओ ने चेतावनी दी कोई भी पंचायत सचिव सरकारी आवासों में बैठकर दफ्तर नहीं चलाएगा बल्कि सरकारी कार्य के लिए विकासखंड के भवन में बैठे और कार्यों का निष्पादन करें अन्यथा की दशा में उनके खिलाफ कड़ा एक्शन लिया जाएगा।

अपमानजनक टिप्पणी करने वाले पत्रकार के विरुद्ध सौंपा ज्ञापन

करनैलगंज-गोंडा। सूफी संत पर अपमान जनक टिप्पणी करने वाले पत्रकार के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराने की मांग करते हुए ज्ञापन दिया गया है। पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष वर्तमान प्रतिनधि शमीम अहमद अच्छन, समाजवादी पार्टी के जिलाउपाध्यक्ष फहीम अहमद पप्पू, सभासद संघ के अध्यक्ष अकबाल आलम, सभासद मोहम्मद साबिर, मोहम्मद जमील, मोहम्मद रफी, प्रेमचंद, मुख्तार अब्बासी आदि ने उपजिलाधिकारी करनैलगंज व सीओ करनैलगंज सहित प्रभारी निरीक्षक को ज्ञापन सहित एक शिकायती पत्र दिया है। जिसमे कहा गया है कि एक टीवी चौनल के पत्रकार अमीश देवगन ने टीवी डिबेट के दौरान अजमेर शरीफस्थित ख्वाजा गरीब नवाज की मजार जो पूरी दुनिया के प्रसिद्ध सूफी संत हैं जिन्हें पूरी दुनिया के सभी धर्म व जाति के लोग उनसे आस्था रखते हुए उनको मानते हैं उन पर टिप्पड़ी करते हुए टेरेरिष्ट चिश्ती एवं लुटेरा जैसे अपमान जनक शब्दों का प्रयोग करते हुए ट्यूटर हैंडल पर पोस्ट भी किया है। देश की अखंडता व भाईचारे को बिगाड़ने की नीयत से षड्यंत्र रचा है। जिससे ख्वाजा साहब को मानने वाले लोगों को गहरा आघात लगा है। इस लिए प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर उचित कार्रवाई की मांग की है।

मंडल में कोरोना के 53 एक्टिव मरीजः आयुक्त

संवाददाता। गोंडा

देवीपाटन मण्डल के आयुक्त महेन्द्र कुमार ने बताया है कि मण्डल में आज तक 286 कोरोना पॉजिटिव मरीज ठीक होकर अपने घर जा चुके हैं। कोरोना महामारी से बचाव के दृष्टिगत मण्डल के जनपदों में लक्षणों के आधार पर सैम्पलिंग का कार्य लगातार किया जा रहा है। मण्डल के जनपदों से 20 जून को कोविड-19 टेस्टिंग के लिए संबद्ध प्रयोगशाला को कुल 634 सैंपल भेजे गए, जिसमें जनपद गोंडा से 155, जनपद बलरामपुर से 157, बहराइच से 235 तथा श्रावस्ती से 87 सैंपल भेजे गए हैं। आयुक्त ने बताया कि मण्डल में कुल 344 कोरोना पॉजिटिव मरीज हैं। जिसमें जनपद गोंडा में 123, बलरामपुर में 53, बहराइच में 116 तथा श्रावस्ती में 52 कोरोना पॉजिटिव मरीज हैं। मंडल में जनपद श्रावस्ती के 01, बलरामपुर के 01, गोन्डा के 02 तथा बहराइच के 01, कुल 05 कोरोना पॉजिटिव मरीजों की मृत्यु हो चुकी है। जनपद गोंडा में 02 कोरोना पॉजिटिव मरीजों की मृत्यु के अतिरिक्त जनपद का एक निवासी संक्रमित व्यक्ति लखनऊ में भर्ती हुआ तथा लखनऊ में ही उसकी टेस्टिंग हुई और लखनऊ में ही उसकी मृत्यु हुई। शेष 339 कोरोना पॉजिटिव मरीजों में से 286 मरीजों को ठीक होने के बाद उनके घरों को भेजा जा चुका है। ठीक होने वाले मरीजों में जनपद गोंडा के 90, बलरामपुर के 47, बहराइच के 103 तथा श्रावस्ती के 46 मरीज शामिल हैं। आयुक्त ने बताया कि वर्तमान में देवीपाटन मण्डल में अब मात्र 53 मरीज अभी ठीक होने शेष हैं, जिसमें जनपद गोंडा के 31, बलरामपुर के 05, बहराइच के 12 तथा श्रावस्ती के 05 कोरोना पॉजिटिव मरीज ठीक होने शेष हैं।

शहीद सैनिकों की आत्मा की शांति के लिए हवन पूजन

गोंडा। श्री श्री आदि शक्ति मां दुर्गा मंदिर के प्रांगण में वीरगति को प्राप्त हुए भारतीय सैनिकों के आत्मा की शांति हेतु मां जगत जननी जगदम्बे से प्रार्थना करते हुए विधि-विधान पूर्वक हवन किया गया। हवन-पूजन में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए,मंदिर के अध्यक्ष अनूप जायसवाल, प्रवक्ता उमेश श्रीवास्तव व प्रकाण्ड पंडितों द्वारा हवन पूजन सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर पूर्व पालिका अध्यक्ष एवं भाजपा नेता निर्मल श्रीवास्तव ने अमर शहीदों को याद करते हुए कहा कि देश के प्रति दिये गये बलिदान को भारतवासी कभी भूल नहीं सकता है। हम हिन्दुस्तानी संकल्प लेते हैं कि चीन से निर्मित उत्पादों का बहिष्कार करेंगे और अपने स्तर पर चीन का विरोध हमेशा करते रहेंगे। चीन के नापाक इरादों को भारतीय सेना ने मुंहतोड़ जवाब देकर देशवासियों का मस्तक ऊंचा किया है। भाजपा नेता पंकज कुमार श्रीवास्तव ने हवन के उपरान्त बताया कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह एवं रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने विदेशों में अपने भारत की शान बढ़ाई है। देश के छात्रों, युवाओं, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों, महिलाओं को अपने देश के सेना प्रमुखों एवं सेनाओं पर गर्व है। इस मौके पर युवा भाजपा नेता सुधीर दूबे, रमन श्रीवास्तव, आनन्द कुमार, लकी श्रीवास्तव, अनूप जायसवाल, उमेश, पवन पाठक, पंडित वीरेन्द्र पाण्डेय मौजूद रहे।

टेंडर का खेल

फिर सरकार के काम आ गया मुनाफे का फार्मूला

संवाददाता। बस्ती

● लखनऊ में प्रक्रिया होने से इस बार भी साढ़े सात करोड़ का हुआ फायदा

● इससे पहले भी राजधानी में टेंडर खुलने से सरकार को हो चुका है इतनी ही धनराशि का लाभ

जिले में न खुलकर लखनऊ में टेंडर खुलने से सरकार को करोड़ों का फायदा हो रहा है। पीडब्लूडी के दोनों खंडों में दो दिन पहले खुले 25 करोड़ के टेंडर में सरकार को एक बार फिर साढ़े सात करोड़ का लाभ हुआ है। यह लाभ 25 से 30 फीसद सरकारी रेट से कम पर टेंडर खुलने के कारण हुआ है। इससे पहले हाल ही में लखनउ में खोले गए 64 करोड़ के टेंडर में सरकार को इतनी ही धनराशि का फायदा हुआ था। सरकार के इस लाभ को देखते हुए पूरे प्रदेश में लखनऊ में टेंडर खोलने की मांग उठने लगी है। यह अलग बात है कि लखनऊ में टेंडर खुलने से नेताजी को झटका लगा है और टेंडर मैनेज भी नहीं हो पा रहा है। हांलाकि जिलों में टेंडर खोलने की बहाली को लेकर नेताओं के द्वारा भरसक प्रयास किए जा रहे है। इससे बस्ती और सिद्धार्थनगर जनपदों के अधिकारी राहत की सांस ले रहे है, एक बड़े अधिकारी का कहना है कि जबसे लखनऊ में टेंडर खुलना शुरु हुआ तब से अधिकारी अपने आप को तनावमुक्त महसूस कर रहे हैं। वहीं ठेकेदार संघों के पदाधिकारियों का कहना है कि लखनऊ में टेंडर खुलने का सबसे बड़ा लाभ सरकार को तो राजस्व के रुप में हो ही रहा है, साथ ही टेंडर प्रक्रिया में पारदर्शिता भी झलक रही है, जिसका लाभ उन ठेकेदारों को मिल रहा है, जिन्हें नेताओं के चहेतों के कारण अभी तक नहीं मिल पा रहा था। पिछले दो माह से बस्ती और जनपद सिद्धार्थनगर का टेंडर स्थानीय स्तर पर न खुलकर राजधानी में खुल रहा है, इसके पीछे स्थानीय स्तर पर शिकायत को कारण माना जा रहा है। कहा जा रहा है कि अधिकारियों के सुझाव पर ही सरकार और विभाग की ओर से लखनऊ में टेंडर खोलने के निर्णय लिया गया, इस निर्णय का लाभ भी सरकार को मिलता दिख रहा है। इन दोनों जनपदों के ठेकेदार संघों के पदाधिकारियों का कहना है कि जो टेंडर पहले स्थानीय स्तर पर खुलते थे, वह सरकारी दर के लगभग बराबर ही रहता था, बिलो दर बहुत ही कम रहता था, जिसका लाभ सरकार और उन ठेकेदारों को नहीं मिल पा रहा था, जो बिना किसी नेताजी के सहारे टेंडर प्रक्रिया में भाग लेना चाहते थे, कहते हैं कि अधिकारियों पर नेताओं का अपने लोगों को टेंडर देने का काफी दबाव रहता था। क्यों कि सरकारी रेट के बराबर या मामूली कम दर होने पर ही नेताओं के चहेतों को मिलेगा। पिछले दिनों 64 करोड़ के ठेके को निरस्त करने के लिए जिस तरह कई नेताजी खुलकर सामने आए उससे यह साबित हो गया कि स्थानीय स्तर पर खुलने वाले टेंडर में कहीं न कहीं नेताओं का दबाव रहता था। हांलाकि विभाग ने नेताओं के जायज शिकायतों पर भी ध्यान नहीं दिया। इसी दबाव के चलते मंडल के एक बड़े अधिकारी को वीआरएस तक लेना पड़ा। इससे अलग एक वर्ग ऐसा भी है जो यह कहता है कि बिलो रेट का फायदा भले ही सरकार को राजस्व के रुप में मिल रहा है, मगर इसके चलते सड़कों की गुणवत्ता दिन प्रति दिन खराब होती जा रही है। चूंकि इस बिंदु पर न तो सरकार सोच रही है, और न विभाग ही कोई कदम उठा रहा है। समाजसेवी अमरेश चंद्रा का कहना है कि जब किसी सड़क की लागत ही एक करोड़ है तो उस सड़क की गुणवत्ता कैसे 70 और 75 लाख में रह जाएगी। जाहिर सी बात है कि सड़क बनते ही टूटने लगेगी, और हो भी यही रहा है। कहते हैं कि वह भी बिलो दर का लाभ सरकार को नहीं मिलता अधिकारी उसका आपस में बंदबांट कर लेते हैं, इस लिए अधिकारी एक तीर से दो निशाना साध रहा है। वह सरकार को फायदा कराकर अपने आप को वफादार साबित करता है, और उसका मलाई वह खाता है। वहीं उ.प्र. शिक्षणेत्तर संघ के प्रदेश मंत्री विजय कुमार द्विवेदी कहते हैं कि विभाग आज तक नहीं बता सका कि बिलो रेट का धन किस मद में व्यय किया जाता है, और उसे सरकार के खजाने में जमा किया जाता है भी या नहीं?

शिक्षकों ने किया शहीदों को नमन, फूंका चीन के राष्ट्रपति का पुतला

बस्ती। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष चन्द्रिका प्रसाद सिंह, मंत्री बाल कृष्ण ओझा के संयोजन में शनिवार को पदाधिकारियों और शिक्षकों ने बीएसए कार्यालय परिसर में मोमबत्तियां जलाकर भारत-चीन सीमा पर शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित किया गया। इसके बाद शिक्षकों ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का पुतला दहन के साथ ही चाइना के सामानों की होलिका जलाई। पूर्व सैनिक एवं शिक्षक बाल कृष्ण ओझा ने कहा कि चीन ने हमारे साथ विश्वासघात किया, उसे करारा जबाब देने की जरूरत है। देशवासियों को चाहिए कि वे चीन निर्मित उत्पादों का बहिष्कार करें। भारत-चीन सीमा पर शहीद हुये सैनिकों को श्रद्धांजलि और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का पुतला फूंककर विरोध प्रदर्शन करने वालों में मुख्य रूप से संघ के कोषाध्यक्ष दुर्गेश यादव, जिला उपाध्यक्ष सुधीर तिवारी के साथ ही राकेश सिंह, रूकुनुद्दीन, अशद जमाल, अनीश खान, श्रीधर पाल, सुरेश गौड़, कुलदीप सिंह, माखन लाल, सन्तोष मिश्र, सन्तोष पाण्डेय, धर्मेन्द्र पाण्डेय, अनिल पाण्डेय, राजकीय कन्या इण्टर कालेज की प्रधानाचार्य नीलम सिंह, प्रधानाचार्य डा. संजय सिंह, प्रधानाचार्य डा. हरेन्द्र सिंह सहित अन्य शामिल रहे।

विधायक संजय जायसवाल सीएम से मिले,शिक्षकों के वेतन भुगतान की मांग

संवाददाता। बस्ती

रुधौली के विधायक संजय प्रताप जायसवाल सीएम योगी से मिले और उन्हें लॉकडाउन में बंद रहे निजी स्कूलों के शिक्षकों को बंदी के दौरान वेतन का भुगतान कराने वाला मांग पत्र दिया। इससे पहले भी विधायक सीएम से इस तरह की मांग कर चुके है। पत्र में 22 मार्च से से कोविड19 के खतरे को लेकर देशव्यापी लाकडाउन का हवाला देते हुए कहा कि इस दौरान हिंदी और अंग्रेजी माध्यम वाले शिक्षण संस्थाएं बंद हो गई। स्कूल प्रबंधन ने शिक्षकों को कोई वेतन भी नहीं दिया। जिसके चलते परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया। उन्होंने सीएम से प्रभावित अध्यापकों के बकाए का वेतन दिलाने के लिए आदेश जारी करने की मांग की।

पांच आरोग्य केंद्रों पर आज लगेगा योग शिविर

मिर्जापुर। अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर आज जिले के पांच आरोग्य केन्द्रो पर योग शिविर का अयोजन किये जाने का फैसला किया गया है। जिला कार्यक्रम प्रबन्धक अजय सिंह ने बताया कि इन वेलनेस सेटरो के प्रभारी चिकित्साधिकारियों को सीएमओ द्वारा लिखे पत्र में निर्देश दिया गया है कि सुबह छह बजे से योग शिविर लगाया जाये। योग शिविर में वेलनेस सेंटर के चिकित्सकए कर्मचारी और मरीज और उनके परिजन भी शामिल होगे। सीएमओ का पत्र मिलते ही आरोग्य केन्द्रो के प्रभारी चिकित्साधिकारी योग शिविर के आयोजन की तैयारी में जुट गये है। अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस पर इस बार वेलनेस सेटरो पर भी आयोजन किया जायेगा। जिले के लालगंजए गुरूसण्डीए पटेहराए हलिया एवं विजयपुर सीएचसी पर स्थित वेलनेस सेटरों योग दिवस पर शिविर आयोजित करने के लिएचुना गया है। इन वेलनेस सेटरों के चिकित्सकए चिकित्सा कर्मी इलाज कराने वाले मरीज और उनके परिजनों को शामिल किया जायेगा। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का मानना है कि इससे मरीजों व उनके परिजनों को जहां योग के प्रति जागरूक किया जा सकेगा। वही नियमित योगाभ्यास से कई बीमारियों से उन्हें निजात भी दिलाया जा सकेगा। इसी को मूलमंत्र मानते हुए यह फैसला लिया गया है। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ ओ0पी0तिवारी ने जिले के पांचो आरोग्य केन्द्रो के प्रभारी चिकित्साधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि 21 जून को सुबह 6 बजे योग शिविर का आयोजन कर इसका वीडियो रिकार्डिंग भी कराया जाय। इसके अगले दिन योग दिवस की वीडियों क्लीप के साथ रिपोर्ट भी जिला मुख्यालय पर भेज दिया जाये।

सत्येंद्र मिश्रा बने अखिल भारत हिंदू युवा मोर्चा के प्रदेश महासचिव

सोनभद्र। अखिल भारत हिन्दू युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवओम मिश्रा ने हिनौता गाँव निवसी सत्येंद्र मिश्रा पुत्र मातादिहल मिश्रा को अखिल भारत हिन्दू युवा मोर्चा का प्रदेश महासचिव मनोनीत किया है। उन्होंने बताया कि श्री मिश्रा द्वारा पिछले कई वर्षों से समाजिक कार्यो में पूरी तन्मयता के साथ बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया जा रहा है। श्री मिश्रा संगठन को मजबूती प्रदान करने के साथ ही प्रदेश के अति पिछड़े जरूरतमन्द लोगो तक भारत सरकार तथा राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को पहुचाने के लिए संकल्पित रहेंगे। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष वेदप्रकाश गुप्ता वारणसी जिलाउपाध्यक्ष महेंद्र कुमार मिर्जापुर जिलाध्यक्ष अगस्त कुमार उपाध्याय इत्यादि लोग मौजूद रहे।

कोरोना वायरस कम नहीं हुआ, इसे हल्के में न लें: डा.राजशेखर

संवाददाता। बस्ती

● एमडी परिवहन निगम और जिले के नोडल अधिकारी ने कहा बचाव ही एक मात्र उपाय, अभी तक दवा नहीं बनी

परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक एवं जिले के नोडल अधिकारी डॉ. राजशेखर ने कहा है कि कोरोना वायरस का असर अभी कम नहीं हुआ है। इसलिए कोई भी नागरिक इसे हल्के में न लें घर से बाहर निकलने पर मास्क का प्रयोग करें तथा सोशल डिस्टेंसिंग मेंटेन करें। उन्होंने लोगों से कोरोना वायरस की रोकथाम एवं बचाव के लिए जन जागरूकता अभियान संचालित करने की अपील की। मंडलायुक्त सभागार में आयोजित बैठक में उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस से बचाव ही एकमात्र उपाय है, क्योंकि अभी तक इसकी कोई दवा नहीं बनी है। कहा कि पिछले पांच दिनों में उन्होंने जिले के अस्पतालों का निरीक्षण किया है। कोरोना वायरस के प्रोटोकॉल के अनुसार व्यवस्था ठीक है, परंतु शहर और ग्रामीण क्षेत्र में प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया जा रहा है। वायरस अभी समाप्त नहीं हुआ है और लोग बिना मास्क के बाजारों में निकल रहे हैं। सोशल डिस्टेंसिंग का भी पालन नहीं हो रहा है। कहा कि केवल मास्क का प्रयोग करने से ही वायरस का खतरा 40: तक कम हो जाता है। यदि मास्क नहीं है तो रुमाल या गमछा का प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्र में प्रत्येक वार्ड में तथा गांव में निगरानी समितियां गठित की गई हैं। इसके माध्यम से गंभीर रोगों वाले व्यक्तियों, 10 वर्ष से कम आयु के बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं की मॉनिटरिंग की जा रही है। कहा कि निगरानी समितियों के सहयोग के लिए रेड क्रॉस सोसाइटी, स्काउट गाइड, एनसीसी, युवक मंगल दल, आंगनवाड़ी कार्यकत्री एवं सहायिका को जोड़ा जा सकता है। इनके माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा सकता है कि वह कोरोना वायरस के प्रोटोकॉल का पालन करें। उन्होंने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन तथा नर्सिंग होम एसोसिएशन के पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि वह अपने नर्सिंग होम क्लीनिक के सामने लाउडस्पीकर से कोरोना वायरस प्रोटोकॉल के बारे में लोगों को जागरूक करें। पंपलेट और पोस्टर लगाएं। मरीज के साथ केवल एक तीमारदार को रहने की अनुमति दें। यदि बीच में तीमारदार को बदलने की जरूरत होती है, तो उसका भी कोरोना टेस्ट कराएं। अपने क्लीनिक एवं नर्सिंग होम में वायरस के प्रोटोकॉल का पूरा पालन करें। प्रोटोकॉल तोड़ने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करने को कहा। स्वास्थ्य विभाग की ओर से एसपीजीआई लखनऊ के न्यूरो सर्जन डॉ0 अवधेश जायसवाल ने बताया कि नर्सिंग होम सामान्य एवं इमरजेंसी दोनों प्रकार के ऑपरेशन कर सकते हैं, परंतु इसके लिए उन्हें बेहद कड़ाई से प्रोटोकॉल का पालन करना होगा। अपने स्टाफ की सुरक्षा के पूरे इंतजाम करने होंगे। एक मरीज के साथ केवल एक तीमारदार को ही अनुमति दें। उन्होंने कहा कि जिले में 41 निजी अस्पतालों को संचालन की अनुमति दी गई है इन अस्पतालों को भी टुनेट मशीन लगाने के बारे में सोचना चाहिए। इससे उनके कार्य में आसानी होगी। डीएम आशुतोष निरंजन, पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा, सीडीओ सरनीत कौर ब्रोका, आईएमए के अध्यक्ष डॉ. अनिल श्रीवास्तव, सचिव डॉ नवीन श्रीवास्तव, सीएमओ डॉ. जेपी त्रिपाठी, एसीएमओ डॉ. फखरेयार हुसैन, डॉ. सी एल कन्नौजिया, डॉ. अश्वनी श्रीवास्तव, डॉ. दीपक श्रीवास्तव, डॉ. बीपी त्रिपाठी, डॉ. पीके श्रीवास्तव, रेड क्रॉस के कुलविंदर सिंह तथा दीपेंद्र सिंह सहित अन्य मौजूद रहे।

कम लागत में अधिक पैदावार करते हुए आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ें किसान

सोनभद्र। जिलाधिकारी एस0 राजलिंगम ने जिले के किसानो को खरीफकी फसलों की तैयारियों जैसे- बुवाई, रोपाई के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में धान की फसल की नर्सरी डालना शुरू हो चुका है। उन्होंने बताया कि धान के नर्सरी रोपाई कार्य को वैज्ञानिक तरीके से किया जाय, ताकि कम लागत में अधिक पैदावार करते हुए किसान आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सके। उन्होंने किसानो को बताया कि जो किसान भाई नर्सरी डाल रहें, हो उनसे अनुरोध है कि धान का बीज शोधन 4 ग्राम प्रति किग्रा बीज, ट्राइकोडरमा से या कार्बेण्डाजिंम 2.5 ग्राम प्रति किग्रा अथवा थीरम 3 ग्राम प्रति किग्रा बीज शोधन करने से फायदा अवश्य होगा, क्योंकि बीज शोधन करके कम से कम खर्च में ही फसल को रोगों से पूर्णतया निजात मिल जाती है। यदि रोपाई के समय 2.5 से 3.0 किग्रा ट्राइकोडरमा प्रति हेक्टेयर भूमि शोधन करें तो फसल अच्छी होगी। धान की फसल में खरपरवार बीमारी की समस्या ज्यादा रहती है, इस समस्या के निदान के लिए किसान भाई खरपतवारनाशी व कीटनाशी दवाओं काा छिड़काव से फायदा होता है। रसायन छिड़काव करते समय किसान भाई ध्यान रखें कि खेत में पानी 2-3 सेमी अवश्य हो। किसान भाइयों से अपील की जाती है कि सकरी व चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों पर रोक लगाने के लिए ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई0सी0 2.5 से 3.0 ली0 प्रति हेक्टेयर, प्रिटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई0सी0 1.25 से 1.50 ली0 प्रति हेक्टेयर, पाइराजोसल्फ्यूरान इथाइल 10 प्रतिशत डब्लू0पी0 80 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से रोपाई के दो तीन दिन के अन्दर छिड़काव करें।

दुबारा लक्षण मिलने पर नये रोगी के रूप में किया जायेगा पंजीकरण

मिर्जापुर। डिस्चार्ज के बाद पुन: लक्षण प्रकट होने पर कोविड केयर सेन्टर ध् हेल्प लाइन नम्बर पर सूचित करने हेतु सलाह दिया जायेगा। डिस्चार्ज होने के 14 दिन बाद पुन: लक्षण प्रकट होने पर व्यक्ति को नये रोगी के रूप में पंजीकृत किया जायेगा।

ट्रक अनियंत्रित होकर खाई में गिरी चालक और खलासी की हुई मौत

संवाददाता। सोनभद्र

मारकुंडी घाटी मे एक बार फिर ट्रक हादसा हुआ है, हादसे मे चालक व खलासी की मौत हो गयी है घटना शनिवार की सुबह लगभग 9 बजे की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार चोपन थाना क्षेत्र के मारकुंडी घाटी मे सीमेंट की सीट लदा ट्रक अनियंत्रित होकर खाई में जा गिरा, जिससे लदे सीमेंट के सीट के निचे दबने से चालक व खलासी की दर्दनाक मौत हो गयी। जनपद जौनपुर के सतहरिया से सीमेंट की सीट लाद कर ट्रक बैढन मध्य प्रदेश के लिए जा रही थी। जैसे ही उक्त ट्रक शनिवार की सुबह तकरीबन 9 बजे चोपन थाना क्षेत्र के मारकुंडी घाटी के दुसरे मोड पर उतरते समय ट्रक अनियंत्रित होकर खाई मे जा गिरी इस दुर्घटना में चालक व खलासी ट्रक मे लदे सीमेंट के सीट के निचे दब गयें। यह घटना देख राहगीरों समेत पास के बस्ती मे हडकंप मच गया, सूचना पर फैरी तौर पर पहुंचे चौकी प्रभारी गुरमा प्रमोद कुमार यादव ने ग्रामीणों के सहयोग से ट्रक के सीमेंट सीट के निचे दबे चालक अजहरुद्दीन 28 पुत्र कूतबूद्दीन निवासी ग्राम बड़होर थाना बभनी को तत्काल एम्बुलेंस मंगवाकर जिला चिकित्सालय भेज दिया वही दुसरे खलासी मिथून कुमार 18 पुत्र रूद्र प्रसाद निवासी बड़होर थाना बभनी के शव को दो घंटे के कड़ी मकश्द के बाद सीमेंट की सीट हटाकर बाहर निकाल कर पोस्टमार्डम हाउस भेज दिया गया। वही गंभीर रूप से जख्मी चालक अजहरुद्दीन की नाजुक हालत को देखते हुए एम्बुलेंस से वाराणसी रेफर कर दिया गया था किंतु वाराणसी जाते समय रास्ते में ही चालक अजहरुद्दीन की मौत हो गयी। वही पुलिस दोनो शवों को अपने कब्जे मे लेकर पंचनामा कर अंत परीक्षण कराने की कार्रवाई कर रही है।

कहां गया शौचालय का 18 लाख हिसाब नहीं दे रहे प्रधान-सेक्रेटरी

● जांच अधिकारी ने जताई गोलमाल की आशंका परसुरामपुर के ग्राम सिंकदरपुर का मामला

बस्ती। स्वच्छ भारत मिशन के तहत बनने वाले शौचालय के धन को प्रधान और सेक्रेटरी मिलकर निजी धन की इस्तेमाल कर रहे हैं। जिस भी ग्राम में शौचालय की जांच होती है, वहां लाखों रुपये के घोटाला उजागर होता है। यह चूक कहीं न कही जिम्मेदारों को संदेह के दायरे में खड़ा करती हैं। अब तक कई एफआईआर दर्ज हो चुका है, मगर गोलमाल कम नहीं हो रहा है। डीपीआरओ कार्यालय में लगभग सौ से अधिक कार्रवाई के अभाव के कारण लंबित हैं, कार्रवाई न हो इसके लिए पत्रावली ही दबा दी जाती है, और इसके लिए भारी सुविधा षुल्क लिया जाता है। सीडीओ को ऐसे मामलों की छानबीन करने की जानकारी दी गई, जिनका आदेष होने के बावजूद अभी तक कार्रवाई नहीं हुई। नया मामला दो दिन पहले सामने आया जब मिशन के जिला समन्यवक राजाशेर सिंह ने परसुरामपुर ब्लॉक के ग्राम पंचायत सिकंदरपुर की जांच की। इस ग्राम पंचायत में विभिन्न वर्षो के 150 से अधिक के षौचालय के धन कहां और किसको दिया गया, उसका पता ही चल रहा है। प्रधान और सेक्रेटरी को नोटिस देने के बावजूद तय समय सीमा में हिसाब-किताब नहीं दिया गया। अब कार्रवाई करने की रिपोर्ट करने की तैयारी हो रही है। स्वच्छ मिषन के दोनों जिला समन्यवक राजाशेर सिंह और विष्णुदेव तिवारी के जांच में निरंतर गोलमाल का मामला सामने आ रहा है। इन दोनों जिला समन्वयकों की पारदर्शी और निष्पक्ष जांच को लेकर पूरे जिले में सराहना हो रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर घरों पर ही करें योगाभ्यास: डीएम

संवाददाता। सोनभद्र

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2020 का मकसद योग के माध्यम से स्वास्थ्य को बढ़ाते हुए प्रतिरोधात्मक क्षमता को बढ़ाना, तनाव से राहत प्रदान करना और योगाभ्यास से भलाई की भावना को बढ़ाना है। 21 जून, 2020 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम के बजाय, जिले के लोग अपने घर पर परिवार के साथ सुबह 07.00 बजे से करेंगें। योगाभ्यास करने का वीडियो अपने सोशल मीडिया पर अपलोड करेंगें और वीडियो अपलोड व पोस्ट करते समय सामान्य योग अभ्यास की वीडियो और पढ़ने की सामग्री से प्राप्त करेंगें। जिले के अधिकारी अपने अपने घरों में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर योगाभ्यास करने के साथ ही प्रमाण के रूप में वीडियो क्लीप भेजेंगें। किसी भी हाल में सामूहिक योगाभ्यास न किया जाय। घरों में किये जाने वाले योगाभ्यास में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए सेनिटाइजेशन किया जाय। उक्त बातें जिलाधिकारी एस0 राजलिंगम व पुलिस अधीक्षक आशीष श्रीवास्तव ने अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2020 के सम्बन्ध में शनिवार को कलेक्ट्रेट मीटिंग हाल में समीक्षा करते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि जिला विद्यालय निरीक्षक व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी स्कूली बच्चों व शिक्षकों के माध्यम से घरों पर योगाभ्यास करने सम्बन्धी गांव स्तर तक प्रचार प्रसार करें। इसी प्रकार से जिला पंचायत राज अधिकारी, उप जिलाधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी, जिला पूर्ति अधिकारी अपने अपने सम्बन्धित सुलभ संसाधनों के माध्यम से घर घर स्तर पर निजी तौर पर योगाभ्यास करने के लिए नागरिकों को जागरूक करें। उन्होंने बताया कि प्रथम चरण के तहत योगाभ्यास करते हुए प्रतिभागियों को अपनी 3 से 5 मिनट की वीडियो क्लीप बनानी होगी, इस वीडियो को अपने सोशल मीडिया पर अपलोड करना होगा, और उत्तर प्रदेश राज्य आयुष के सोशल मीडिया पेज हैण्डिल्स को टैग करना होगा। दूसरे चरण में आयुष कवच एप का इस्तेमाल कर रहे प्रतिभागियों के एप पर लागिन कर पंजीकरण करने का विकल्प उपलब्ध रहेगा, जो प्रतिभागी आयुष कवच का उपयोग नहीं कर रहे हैं, वे उत्तर प्रदेश राज्य की वेबसाइट पर लागिन करके रजिस्ट्रेशन पंजीकरण कर सकते हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पुरूष व महिला वर्ग की तीन तीन श्रेणियां निर्धारित की गयी है, जिसमे 5 से 17 वर्ष, 18 से 60 वर्ष व 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को शामिल किया जाना है। प्रतियोगिता में बालक, बालिका, पुरूष, महिलाएं व बुजुर्ग भी शामिल होंगें। प्रतियोगिता के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी उत्तर प्रदेश आयुष सोसायटी की वेबसाइट पर लागिन करके प्राप्त की जा सकती है। श्रेणी बालक, बालिका के नागरिक प्रतिभाग करेंगें। जिले में प्रथम स्थान पाने वाले को 2100 रूपये, दूसरा स्थान पाने वाले को 1100 व तीसरा स्थान पाने वाले को 501 रूपये का पुरस्कार राशि दी जायेगी। लोग अपने घर पर परिवार के साथ ही सोशल डिस्टेंसिंग के साथ करेंगें। उन्होंने जिले के नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि नोवेल कोरोना वायरस कोविड-19 के संक्रमण को रोकन के मकसद से अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास सामूहिक रूप से करने से मना किया गया है, लिहाजा शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए जिले के नागरिकगण अपने अपने घरों पर ही योगाभ्यास करेंगें। बैठक में जिलाधिकारी एस0 राजलिंगम व पुलिस अधीक्षक आशीष श्रीवास्तव के अलावा अपर जिलाधिकारी योगेन्द्र बहादुर सिंह, डिप्टी कलेक्टर प्रकाश चन्द्र, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 एस0के0 उपाध्याय, जिला विकास अधिकारी रामबाबू त्रिपाठी, डीसी मनरेगा टी0बी0 सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी डॉ0 राकेश तिवारी सहित अन्य सम्बन्धितगण मौजूद रहें।

क्विक न्यूज

मास्क न लगाने पर 32 पर केस, 700 से वसूले 70 हजार

बस्ती। कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए सार्वजनिक स्थान पर मास्क न लगाने पर भारतीय दंड संहिता की धारा 188 के धारा 15 (3) के तहत 32 लोगों पर मुकदमा दर्ज किया गया है। उक्त जानकारी जिलाधिकारी आशुतोष निरंजन ने दी है। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार धारा 15 (4)के तहत रात्रि निषेधाज्ञा उल्लंघन करने पर 700 लोगों पर रु0 70000 जुर्माना वसूल किया गया है। इसी प्रकार धारा 15 (5) दोपहिया वाहन पर पिछली सीट पर यात्रा करने पर 220 लोगों से रु0 55000 जुर्माना वसूल किया गया है।

स्वास्थ्य विभाग ने मटिहानी में लिया 16 का सैम्पल

मिर्जापुर। कोरोना पाजिटिव महिला के मौत हो जाने के बाद राजगढ़ स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी बड़ी सक्रियता के साथ कार्य कर रहे है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र राजगढ़ पर तैनात राहुल सिंह ने बताया कि कोरोना महिला के मौत के बाद स्वास्थ्य कर्मचारी गांव गांव जाकर लोगों की थर्मल स्क्रीनिंग के साथ ही साथ संदिग्ध पाये जाने पर उनका सैम्पल लेने का भी कार्य करे है उसी के तहत मटिहानी गांव में प्रभारी चिकित्साधिकारी की देख रेख में 16 लोगों का सैम्पल शनिवार को लिया गया है उसके बाद जांच हेतु मंडलीय चिकित्सालय भेज दिया गया है।

दो महिलायें मिली कोरोना पॉजिटिव

सोनभद्र। जनपद सोनभद्र में कोरोना पॉजिटिव मरीजों के मिलने का सिलसीला रुकने का नाम नही ले रहा है। शनिवार को जनपद मुख्यालय स्थित न्यू कॉलोनी की रहने वाली दो महिलाओं की रिर्पोट कोरोना पॉजिटिव आने के बाद हड़कम्प की स्थिति उत्पन हो गई। दोनो महिलाये विगत दिनों हरियाणा से लौट कर आयीं थी जिन्हे होम कारेंटाइन किया गया था। जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी एस0 के उपाध्याय ने बताया की शनिवार को आये रिर्पोट में दो महिलाये कोरोना पॉजिटिव पायी गई है। जिन्हे इलाज के लिये मधुपुर स्थित कोविड 19 लेवल वन हॉस्पीटल भेजा जा रहा है।

बीजपुर-रेनुकूट मार्ग पर पेड़ गिरने से भारी वाहनों का आवागमन ठप

बीजपुर/सोनभद्र। स्थानीय थाना क्षेत्रान्तर्गत स्थित विभिन्न ग्राम सभाओं में पिछले कई दिनों से हो रही बरसात ने जहाँ निर्धन आदिवासियों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं वहीं शनिवार की रात्रि से हो रही बारिश के कारण ग्राम सभा सिरसोती के टोला नकटू परिक्षेत्र मौजूद बीजपुर रेनुकूट मार्ग पर सड़क किनारे खड़े विशालकाय पेड़ के गिर जाने से इस मार्ग पर भारी वाहनों का आवागमन घंटो तक बिल्कुल ही ठप रहा। पेड़ के गिरने से सड़क का कुछ भाग खाली रह जाने के कारण दो पहिया व चार पहिया वाहन चालक किसी तरह सावधानी बरतते हुए अपने अपने वाहनों को किसी तरह उस मार्ग पर निकालकर अपनी यात्रा पूरी कर ले रहे थे लेकिन भारी वाहन चालक असमर्थ साबित हो रहे थे। शनिवार व शुक्रवार की रात्रि के बरसात का ऐसा मंजर था कि ग्रामीण क्षेत्रो में बने कई कच्चे मकानों की दिवाले व बरामदा भी धराशाई हो गए। कोविड 19 के इस मुश्किल घड़ी में आदिवासी निर्धन ग्रामीण अपने अपने पुराने बने कच्चे मकानों को लेकर बरसात के भय से परेशानियों के दौर से गुजर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि इसी तरह से मूसलाधार बारिश होती रही तो कही उन्हें भी बेघर न होना पड़े। समाचार लिखे जाने तक नकटू में बीजपुर रेनुकूट पर भारी वाहनों के आवागमन की सेवा बहाल नहीं हो पाई थी।

स्टाम्प क्रय करने वाले वेंडरों को स्टाम्प बैंक में चालान के माध्यम से जमा करने का निर्देश

मीरजापुर। मुख्य कोषाधिकारी ने जनपद के स्टाम्प विक्रताओं को जानकारी देते हुये कहा कि षासन के निर्देष के अनुपालन में कोशागार में स्टाम्प क्रय करने वाले व्यक्तिस्टाम्प वेन्डरए बैंक में चालान के माध्यम से निर्धारित धनराषि सुसंगत लेखाषीर्षक में जमा करेगें। उन्होनें कहा कि बैंक से प्राप्त चालान की बैंक स्कल से मिलने के उपरान्त सम्बन्धित व्यक्तिस्टाम्प वेन्डर को स्टाम्प उपलब्ध कराया जायेगा।

आश्रय स्थल चलाने के लिए स्वैच्छिक संस्थाओं का चयन

मिर्जापुर। जिला दिव्यांगजन सषक्तीकरण अधिकारी दिव्या शुक्ला ने जानकारी देते हुये बताया कि शासन के निर्देश के क्रम में मानसिक मंदिर एवं मानसिक रूप से रूग्ण निराश्रित दिव्यांगजन हेतु आश्रय गृह संचालन हेतु प्रसव मांगा गया हैए गृह संचालन हेतु इच्छुक संस्थायें इच्छुक अपना प्रस्ताव एक सप्ताह के अन्दरदिव्यांगजन कल्याण अधिकारी के कार्यालय में प्रस्तुत करें।

मऊ में फायर के तीन सिपाहियों सहित दस पॉजिटिव

संवाददाता। मऊ

मऊ जिले में शनिवार को एक साथ 10 कोरोना पाजिटिव रिपोर्ट आते ही हड़कम्प मच गया। जिनमें तीन फायर ब्रिगेड के सिपाही शामिल हैं। सूचना मिलते ही जिला प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग की टीम मौके पर पहुंच गई। संक्रमितों को उपचार के लिये परदहां स्थित कोविड अस्पताल में भर्ती कराने के साथ हाटस्पाट बने क्षेत्रों को सील करने के साथ सेनेटाइजेशन की कार्रवाई शुरू की गई। 10 संक्रमितों में एक की उसकी मौत के बाद रिपोर्ट पाजिटिव आई है।

मुख्य चिकित्साधिकारी डा. सतीश चंद्र सिंह ने बताया कि अबतक जिले से कुल 3625 लोगों का सैम्पल जांच के लिये भेजा गया है। अबतक प्राप्त 3428 रिपोर्ट में 3356 की रिपोर्ट निगेटिव प्राप्त हुई है। शनिवार को वाराणसी से आई 290 रिपोर्ट में 10 की रिपोर्ट पाजिटिव रही। जिसमें से हट्टीमदारी के पांच की रिपोर्ट पाजिटिव आई। जिसमें 15 जून को लखनऊ में पाजिटिव मिली महिला के परिवार के दो सदस्य शामिल हैं। जबकि 16 जून को लिये गये रैण्डम सैम्पलिंग के दौरान फायर ब्रिगेड के तीन सिपाहियों की रिपोर्ट पाजिटिव रही। जबकि चिरैयाकोट के महतवाना के कोइराता

कलेक्ट्रेट में प्रेसवार्ता के दौरान जानकारी देते जिलाधिकारी ज्ञान प्रकाश त्रिपाठी

मुहल्ला निवासी 24 वर्षीय युवक पाजिटिव निकला। वह 14 जून को नाइजीरिया से लौटा था। 15 जून को उसकी सैम्पलिंग कराई गई थी। उधर दुबारी के विग्रहपुर निवासी एक व्यक्ति की रिपोर्ट पाजिटिव रही है। वहीं वलीदपुर व हरिनासाथ निवासी दो लोगों की भी रिपोर्ट पाजिटिव आई है। यह दोनों हरियाणा के गुरुग्राम से लौटे थे। उधर शहर के खीरीबाग निवासी 54 वर्षीय अधेड़ की 18 जून को तबितय खराब होने पर वाराणसी के बीएचयू में भर्ती कराया गया था। जहां उनकी सैम्पलिंग कराई गई थी। 19 जून को उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई थी। मौत के बाद शनिवार को उनकी रिपोर्ट पाजिटिव आई। सभी संक्रमितों को उपचार के लिये परदहां स्थित कोविड अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जबकि हाटस्पाट बने क्षेत्रों में सेनेटाइजेशन व कंटेनमेंट की कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

- एक की मौत के बाद रिपोर्ट आई पॉजिटिव, 19 जून को तोड़ा था दम
- शहर में एक साथ मिले पांच कोरोना संक्रमित, की गई थी पूल्ड सैम्पलिंग

शहर में एक साथ मिले पांच और कोरोना संक्रमित

मऊ। शहर के हट्टीमदारी मुहल्ले से एक साथ पांच लोगों की रिपोर्ट पाजिटिव आई। 15 जून को हट्टीमदारी निवासी एक महिला अपनी पुत्री का इलाज कराने लखनऊ गई थी। जहां उसकी जांच के बाद रिपोर्ट पाजिटिव आई थी। रिपोर्ट पाजिटिव आने के बाद हट्टीमदारी में हाटस्पाट बनाने के बाद लोगों की जांच शुरू की गई। शनिवार को उसके परिवार के दो सदस्यों सहित फायर ब्रिगेड के तीन सिपाहियों की रिपोर्ट पाजिटिव आई। इसकी सूचना मिलते ही इलाके में हड़कम्प की स्थिति है।

अन्तिम संस्कार में शामिल लोगों की होगी सैम्पलिंग

मऊ। शहर कोतवाली क्षेत्र के खीरीबाग मुहल्ला निवासी 58 वर्षीय अधेड़ की तबियत खराब होने के बाद 18 जून को वाराणसी स्थित बीएचयू में भर्ती किया गया था। जहां उसकी सैम्पलिंग की गई थी। 19 जून को उसकी उपचार के दौरान मौत हो गई। मौत के बाद उसका शव उसके घर भेज दिया गया। जहां उसका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। स्वास्थ्य विभाग की टीम अन्तिम संस्कार में शामिल लोगों की पड़ताल में जुटी है। सभी की सैम्पलिंग कराई जायेगी।

अबतक जिले में मिले 78 पॉजिटिव, 19 एक्टिव

मऊ। मुख्य चिकित्साधिकारी डा. सतीश चंद्र सिंह ने बताया कि जिले में शनिवार को आई 10 पाजिटिव रिपोर्ट के साथ जिले में कुल मिले संक्रमितों की संख्या 78 हो गई है। जिनमें से 57 ठीक होकर घर जा चुके हैं। 19 जून को वाराणसी में अधेड़ की मौत के बाद रिपोर्ट आने के साथ अबतक जिले में मौत की संख्या दो हो गई है। जिले एक्टिव मरीजों की संख्या 19 है। संक्रमित मिले मरीजों के सम्पर्क में आये लोगों की सैम्पलिंग कराई जा रही है।

जिले में पांच और हाटस्पॉट, सीमायें सील

मऊ। जिले में तेजी से कोरोना पाजिटिव मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। जिले में अबतक कुल हाटस्पाट की संख्या 34 हो गई है। शनिवार को एक साथ पांच नये हाटस्पाट बढ़ गये। जिनमें दुबारी क्षेत्र का विग्रहपुर, वलीदपुर पट्टी, हरिनासाथ, हट्टीमदारी स्थित फायर ब्रिगेड आवासीय परिसर व खीरीबाग शामिल हैं। इन क्षेत्रों की सीमायें सील करने के साथ सेनेटाइजेशन का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। स्वास्थ्य विभाग टीम द्वारा क्षेत्र में रैण्डम सैम्पलिंग के साथ प्रत्येक घरों में प्रत्येक व्यक्तियों की स्क्रीनिंग कराई जायेगी।

लगातार 18 घंटे बारिश से मौसम हुआ सुहाना

डुमरियागंज-सिद्धार्थनगर। डुमरियागंज तहसील क्षेत्र में गुरुवार की 20 रात लगभग 12:00 बजे से तेज बारिश हो रही है, जिससे किसान के चेहरे खिल गए हैं। किसान खेत में धान की रोपाई करना प्रारंभ कर दिए हैं। मौसम विभाग की माने तो 10 जून से ही बारिश का असर दिखाई देना प्रारंभ हो जाता है। लगातार घंटों बारिश से तलाब, पोखरा, नाला भर गया है। जिन किसानों के यहां धान का बीज तैयार हो गया है। वह किसान धान की रोपाई प्रारंभ कर दिए हैं। बारिश हो जाने से मौसम ठंडा हो गया है और गर्मी से राहत मिल गया है। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे भी बारिश का आनंद लेने से नहीं चूके। सही मौसम में बारिस हो जाने से किसानों की धान की रोपाई सही समय से प्रारंभ हो जाती है। लगातार हुई धीमी बरसात से किसानों की धान की बीज, सब्जियों की खेती का भरपूर फायदा हुआ है।

बच्चे और महिलाओं को कोतवाल ने बांटा माक्स

सकलडीहा-चन्दौली। कोरोना जैसी महामारी का प्रकोप थमने का नाम नही ले रहा है। इसके बाद भी लोग लापरवाही बरत रहे है। शुक्रवार को कोतवाल बंदना सिंह ने कस्बा और चौराहा पर महिला और बच्चों को मास्क वितरण किया। इस दौरान उन्हें सोशल डिस्टेंस के साथ कोरोना जैसी महामारी से बचने का सलाह दी। केन्द्र सरकार द्वारा अनलॉक वन में शर्तो के साथ कस्बा की दुकानों को खोलने की छूट दी गयी है। लेकिन कोरोना जैसी संक्रामक महामारी को लेकर लोग लापरवाह दिख रहे है। कोतवाली पुलिस लगातार सोशल डिस्टेंस का पालन और जागरूक कराने में जुटी है। इस क्रम में व्यापारी नेता कृष्णा सेठ के पहल पर डेढ़ सौ मास्क कोतवाल वंदना सिंह ने कस्बा और चौराहा पर महिला और बच्चों को पहनाया। इस दौरान अनावश्यक बाजार और गांव में न घूमने की सलाह दिया। इस मौके पर कस्बा प्रभारी बाबूराम यादव अजय यादव अनीता प्रभाकर मिश्रा श्यामलाल सेठ सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

बगैर मास्क घूम रहे पांच दर्जन लोगों का चालान

सकलडीहा-चन्दौली। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अनलॉक वन में बगैर मास्क लगाकर घूमने वाले लोगों के खिलाफ पुलिस ने अभियान चलाया है। शनिवार को कोतवाल वंदना सिंह ने अभियान चलाकर पांच दर्जन लोगों का चालान कर जुर्माना वसूल किया। पुलिस की इस कार्रवाई से खलबली मची है। जिला प्रशासन द्वारा जारी गाइड लाइन के बाद भी अनदेखी कर रहे है। शनिवार को कोतवाल वंदना सिंह और कस्बा प्रभारी बाबूराम यादव ने सकलडीहा अलीनगर तिराहाए सधन तिराहा और ब्लॉक रोड पर अभियान चलाकर पांच दर्जन लोगों को बगैर मास्क घूमने पर चालान कर जुर्माना वसूल किया। पुलिस की इस कार्रवाई से खलबली मची हुई है। इस बाबत कोतवाल वंदना सिंह ने बताया कि बगैर मास्क और सोशल डिस्टेंस का अनदेखी करने वालों को बख्सा नही जायेगा। इस मौके पर कस्बा प्रभारी बाबूराम यादव, कांस्टेबल अनीता, अजय यादव, प्रभाकर मिश्रा सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

अस्थाई जेल से फरार अपराधी गिरफ्तार

जौनपुर।'जौनपुर' अस्थाई जेल से फरार हत्याअभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया अब दूसरे की तलास पुलिस कर रही है। अशोक कुमार पुलिस अधीक्षक जौनपुर द्वारा जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध प्रभावी नियंत्रण एवं कार्यवाही हेतु चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत अपर पुलिस अधीक्षक नगरए जौनपुर के कुशल व सुशील कुमार सिंह क्षेत्राधिकारी नगर के कुशल नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक जय प्रकाश सिंहए थाना. लाइन बाजार मय उनि विक्रम लक्ष्मण सिंह मय हमराह के साथ मुअसं. 178-2020 धारा.223ध्224 भादवि से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त राजू चौहान पुत्र प्रभुलाल चौहान निवासी कटहरी थाना बदलापुर जनपद.जौनपुर 19 जून को अस्थाई कारागार प्रसाद इंटरनेशनल स्कूल पचहटिया से फरार हुआ था को गिरफ्तार किया गया एवं न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया ।

ईनामी अपराधी पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

सिद्धार्थनगर। थाना उसका बाजार पुलिस के हत्थे चढ़ा बीस हजार का इनामिया अपराधी अधीक्षक के आदेश के क्रम में जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर प्रभावी नियंत्रण एवं वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु अभियान प्रचलित है। थाना शोहरतगढ़ में 7.8.2019 को पंजीकृत मुअसं 173/2019 धारा 3/5,8 गोवध निवारण अधिनियम व 11 पशु क्रूता अधिनियम के अभियोग में वांछित चल रहे अभियुक्त मुहर्रम के सम्बन्ध में मुखबीर द्वारा सूचना दी गई जिसके क्रम में शुक्रवार की रात्रि में दिनेश चन्द्र चौधरी प्रभारी निरीक्षक उसका बाजार व पंकज कुमार पाण्डेय प्रभारी एसओजी की संयुक्त टीम द्वारा चेकिंग की जा रही थी कि चौबाहे पुल के पास मोटर साइकिल से एक संदिग्ध व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया जिसे रोकने का प्रयास किया गया तो वह व्यक्ति तेज गति से मोटरसाइकिल चलाते हुए भागने लगा तथा अपनी मोटरसाइकिल छोड़कर झाड़ियों की आड़ से पुलिस टीम पर फायर कर दिया। पुलिस टीम द्वारा आत्मरक्षार्थ जवाबी कार्यवाही करते हुए अभियुक्त पर फायर किया गया जिससे अभियुक्त के दाहिने पैर में गोली लगी घायल स्थिति मे गिरफ्तार कर लिया गया घायल अपराधी को नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रए उसका बाजार में उपचार हेतु भर्ती कराया गया और बाद जिलाचिकित्सालय सिद्धार्थनगर में रेफर किया गया ।

कांग्रेसियों ने दी शहीदों को श्रद्धांजलि

गाजीपुर। जनपद के शहर कांग्रेस कमेटी के द्वारा चीनी सेना द्वारा भारतीय सेना के कर्नल एवं जवानों की दो रोज पहले एक झड़प में शहीद हो गए थे उन्हीं की याद में आज टाऊनहॉल परिसर में शहर के तमाम वरिष्ट नेता शहर कांग्रेस के वर्तमान पदाधिकारीगण व कार्यकर्ताओं ने अपने अमर योद्धा के लिए मोमबत्ती जलाकर दो मिनट का मौन रखा और इसके बाद चीन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की तथा जी भरकर कोसा। शोक सभा को संबोधित करते हुए शहर कांग्रेस कमेटी के शहरअध्यक्ष सुनील साहू ने कहा कि चीन की धोखेबाज सेना द्वारा हमारी सैनिकों को निशाना बनाया गया जिसकी शहर कांग्रेस कमेटी गाजीपुर कड़े शब्दों में निंदा करती है तथा हमसभी अपने वीर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। श्रद्धांजलि देने पहुंचे वार्ड न24 से लगभग बीसों नवजवानों ने वीर जवानों को श्रंद्धांजलि अर्पित किया।

शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित

जौनपुर। लायंस क्लब क्षितिज के संस्थापक अध्यक्ष शशांक सिंह रानू की अध्यक्षता में नखास सद्भावना पुल के पास स्थित नव दुर्गा शिव मंदिर परिसर में लद्दाख में शहीद हुए 20 जवानों की शहादत पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री सिंह ने कहा कि सीमा पर इस समय लद्दाख के गलवन घाटी में पड़ोसी देश चाइना द्वारा सीमा विस्तार के कारण विषम परिस्थितियां उत्पन्न की जा रही हैं। एक तरफ जहां मैत्री की बातें हो रही थीं वहीं धोखे से चाइना ने कायराना हरकत करते हुए कटीले तारों से बने हथियारों व पत्थरों से हमारे सैनिकों पर हमला बोल दिया। जिसमें हमारे बीस सैनिक शहीद हो गए। पलटवार करते हुए हमारे सैनिकों ने मुंहतोड़ जवाब दिया जिसमें उनके 43 चीनी सैनिक मारे व घायल हो गए। जिस प्रकार सैनिक बॉर्डर पर शत्रु देश चीन से मोर्चा ले रहे हैं, उसी प्रकार प्रत्येक नागरिक का फर्ज बनता है कि हम चीनी सामानों का बहिष्कार कर चीन को आर्थिक रूप से कमजोर करें। इस मौके पर रवि मिंगलानी, अतुल सिंह, दिलीप सिंह, संजीव जायसवाल, जैकी साहू, सर्वेश गुप्ता, विष्णु सहाय, मनीष देव, डा. चन्दन गुप्ता, अजय गुप्ता, डा. यमुना शंकर पाण्डेय, पं. आनन्द मिश्रा, शम्मी गुप्ता, अजीत सोनकर, नीरज सिंह, देवेश जी वैश्य, हसन अब्बास, ब्रजेश पाण्डेय आदि मौजूद रहे। सभी आगंतुकों के प्रति आभार सचिव चंद्रशेखर जायसवाल ने व्यक्त किया।

गैंगेस्टर एक्ट का अभियुक्त चढ़ा पुलिस के हत्थे

धानापुर-चन्दौली। शनिवार को धानापुर और धीना पुलिस के संयुक्त टीम ने यूपी गैंगेस्टर एक्ट के अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। प्रभारी निरीक्षक विनोद मिश्र ने बताया कि मुखबीर की सूचना पर मनीपट्टी बॉर्डर के पास पुलिया से मुअस 28-2020 धारा 1 यूपी गैंगस्टर एक्ट से संबंधित अभियुक्त राज कुमार यादव निवासी मंझरिया थाना जमानिया को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तारी में धीना प्रभारी निरीक्षक अशोक कुमार सिंह भी मौजूद रहे।

पब्जी गेम ने ली एक और जान, मिली किशोर की लाश

ग़ाज़ीपुर। थाना नोनहरा क्षेत्र अन्तर्गत फतेहपुर अटवा निवासी एक 18 वर्षीय किशोर अपने कठवामोड स्थित आवास पर फांसी लगा कर खुदकुशी कर लिया । प्राप्त जानकारी के अनुसार फतेहपुर अटवा निवासी विनोद गुप्ता कठवामोड बाजार में कई कमरों का मकान बना कर परिवार सहित रहते थे और कुछ कमरे भाड़े पर भी दे कर चलाते थे । शुक्रवार की शाम को पूरा परिवार खाना खा कर अपने अपने कमरे में सोने चले गए थे कि प्रिंश गुप्ता ;18द्ध अपने छोटे भाई के साथ एक कमरे में सोने गया और कुछ देर बाद पानी पीने के लिए बाहर आया और वही बैठकर मोबाइल पर पब्जी गेम खेलने लगा उसका छोटा भाई बोला कि चलो सो जाओ तो कुछ देर में आने को बोल कर वही गेम खेलने लगा जब काफी समय हो गया तो छोटा भाई बाहर देखने लगा लेकिन वो कही दिखाई नही दिया।

करंट की चपेट में आने से युवक की मौत

गाजीपुर। जनपद के ख़ानपुर थाना क्षेत्र के शिवदासपुर में फर्राटा पंखा का प्लग लगाते समय बिजली की चपेट में आ गया जितेंद राम और कुछ देर बाद उसकी मौत हो गयी। शुक्रवार की रात साढ़े दस बजे जितेंद राम;24द्ध पुत्र त्रिवेणी राम अपने घर में पंखा का प्लग लगाते समय पंखे के साथ चिपक गया। उसके मां की चिल्लाहट सुन पड़ोसी दौड़कर पहुचे और प्राथमिक उपचार करने लगे।देर रात उसकी मौत हो गयी। जितेंद अपने पिता त्रिवेणी राम और भाई सतेंद्र के साथ पंजाब में काम करता था पंद्रह बीस दिन पूर्व ही अपने गांव आया था।

ट्रैक्टर–ट्रॉली से बाइक की टक्कर, एक की जान गई

गाजीपुर। जनपद के थाना बरेसर अन्तर्गत परसा तिराहीपुर मार्ग पर पावर हाऊस के समीप एक अधेड़ की सड़क दुर्घटना में मौत हो गयी। प्राप्त सूचना के अनुसार अधेड़ व्यक्ति का नाम रविन्द्र निषाद;50द्ध पुत्र रमन निषाद तिराहीपुर थाना रसड़ा बलिया जिले का रहने वाला था। वह जनपद के मोहम्मदाबाद में अपने रिश्तेदारी में गया हुआ था। वहां से बाइक से आते वक़्त ट्रैक्टर ट्राली ने टक्कर मार दी जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गयी। मौके से टैक्टर टाली सहित फरार हो गया।बाराचवर चौकी पुलिस ने मौके पर पहुचकर शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिये जिला मुख्यालय भेज दिया।

कई थानाध्यक्ष व उपनिरीक्षक इधर–उधर

देवरिया। पुलिस अधीक्षक डॉ श्रीपति मिश्र ने कई थानाध्यक्षों सहित उपनिरीक्षकों के कार्यक्षेत्र में परिवर्तन किया है। मईल थानाप्रभारी रविंद्र कुमार रवि को अपराध शाखा भेजा गया। मईल का चार्ज भाटपार के थानाध्यक्ष दीपक कुमार को दिया गया। बनकटा के दरोगा राम प्रवेश राम को भाटपार थानाध्यक्ष बनाया गया है।अनिल कुमार पाण्डेय को बरहज का का चार्ज दिया गया है। पाण्डेय बरहज में क्राइम प्रभारी थे। भटनी से दरोगा अशोक कुमार सिंह व पुलिस लाईन से दरोगा नरेंद्र प्रताप राय अपराध शाखा भेजे गए हैं।

बरहज करुवाना मार्ग पर सहयोग के कार्यकर्ताओं ने खराब सड़कों रोपे धान

संवाददाता। देवरिया

शनिवार को समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने सपा नेता विजय रावत के नेतृत्व में पूरी तरह टूट चुके बरहज-करुवना मार्ग पर सोसल डिस्टेनस का पालन करते हुए बुरी तरह टूट चुकी सड़क पर धान रोपकर प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने सरकार विरोधी नारे लगाए। बरहज.करुवना मार्ग सहित बरहज विधानसभा क्षेत्र की कई मुख्य सड़कों के जर्जर हालत पर चिंता व्यक्त करते हुए उनके जल्द मरम्मत एवं निर्माण की मांग की। इस दौरान संबोधित करते हुए सपा नेता विजय रावत ने कहा कि बरहज विधानसभा क्षेत्र की इन सड़कों के निर्माण की मांग को लेकर कई बार धरना . प्रदर्शन करने के बाद प्रशासन द्वारा अश्वासन देने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं हुआ। बरहज-करुवना मार्ग तो बिल्कुल जर्जर हालत में पहुँच गया हैए इस मार्ग पर बड़े बड़े गड्ढे होने से आये दिन राहगीरों को दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़ता है। साथ ही बेलडार-कठिनाहिया देवरिया मार्गए कपरवार से रुद्रपुर मार्ग व बरहज से भैया विजौली मार्ग भी बिल्कुल टूट चुके हैं। इन सभी मार्गो में जनता का चलना दूभर हो गया है। लेकिन इन सड़कों को लेकर प्रशासन व भाजपा सरकार का रवैया उदासीन है। प्रदेश की भाजपा सरकार में विकास का कोई काम नही हो रहा है।हम सभी समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं के कई बार धरना-प्रदर्शन व अनशन करने के बाबजूद कोई कार्यवाही नहीं हुई है। यदि जल्द से जल्द इस मुद्दे पर कोई कार्यवाही नहीं होती है तो समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुप नही बैठेंगे। प्रदेश की भाजपा सरकार में कोई विकास कार्य नही हो रहा है। इस सरकार को जनता की समस्याओं से कोई लेना देना नही है।

घर पर ही करें योग: जिलाधिकारी

संवाददाता। जौनपुर

21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के संबंध में शासन द्वारा योग एट होम के निर्देश दिए गए हैं। जिलाधिकारी दिनेश कुमार सिंह एवं पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार ने मुख्य विकास अधिकारी अनुपम शुक्ला, मुख्य राजस्व अधिकारी डा. सुनील वर्मा तथा समस्त उपजिलाधिकारियों के साथ बैठक किया।

जिसमें निर्णय लिया गया कि जनपद में भी शासन के निर्देशानुसार योग एट होम अर्थात घर पर ही योग किया जाएगा। जिलाधिकारी ने कहा कि कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत सामूहिक रूप से योग कार्यक्रम का आयोजन नहीं किया जाएगा। योग दिवस पर राज्य एवं जिला स्तर पर एक प्रतियोगिता वीडियो ब्लॉगिंग कांटेस्ट का भी आयोजन किया गया है। जिसके तहत राज्य के प्रत्येक जिले के सभी लोग दूरदर्शन तथा सोशल

जौनपुर नगर के जेसीज चौराहा के पास स्थित एक इंस्टीट्यूट कैम्पस में आयोजित बैठक में उपस्थित एसोसिएशन के सदस्य

मीडिया पर प्रसारित हो रहे सामान्य योग अभ्यासक्रम के अनुसार योग करें तथा वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड करें। राज्य तथा जिला स्तर पर तीन श्रेणियों महिला, पुरुष एवं योग पेशेवर के 8 वर्गों में तीन-तीन पुरस्कार दिए जाएंगे। पुरुष तथा महिला श्रेणी में तीन-तीन वर्ग बच्चे, वयस्क, वरिष्ठ नागरिक तथा योग पेशेवर श्रेणी को दो वर्ग महिला तथा पुरुष में विभाजित किया गया है। प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने हेतु प्रतियोगियों को दो चरणों में कार्रवाई करनी होगी। प्रथम चरण में योगाभ्यास करते हुए प्रतिभागी को अपनी 3 से 5 मिनट की वीडियो बनानी होगी तथा वीडियो को अपने सोशल मीडिया फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब पर अपलोड करनी होगी। द्वितीय चरण में वीडियो अपलोड करने के पश्चात प्रतियोगिता हेतु पंजीकरण करना होगा। आयुष कवच ऐप प्रयोग करने वाले प्रतिभागियों हेतु आयुष कवच ऐप लॉगिन कर पंजीकरण कर सकते हैं। जो लोग आयुष कवच ऐप उपयोग नहीं कर रहे हैं वह उत्तर प्रदेश राज्य आयुष सोसाइटी की वेबसाइट पर लॉगिन कर पंजीकरण कर सकते हैं।

हिन्दू युवा वाहिनी ने कैंडल जलाकर जवानों को दी श्रद्धांजलि

संवाददाता। सकलडीहा-चन्दौली

चीन की करतूत को लेकर देशवासियों का आक्रोश थमने का नाम नही ले रहा है। शुक्रवार को हिन्दू युवा वाहिनी के जिलाध्यक्ष रामदयाल यादव रिंकू के नेतृत्व में कॉलेश्वर महादेव मंदिर परिसर में शहीद जवानों को कैंडिल जलाकर श्रद्धांजली अर्पित किया। इस मौके पर पूजा अर्चना कर घायलों जवानों के स्वास्थ्य लाभ की कामना किया। गलवानी घाटी में बीस सेना के जवानों के शहीद होने की घटना को लेकर भारतवासियों में आक्रोश है। हिन्दू युवा वाहिनी के जिलाध्यक्ष रामदयाल यादव रिंकू ने कहा कि भारत के जवानों की कुर्बानी व्यर्थ नही जायेगी। हिन्दू वाहिनी हर पल मुहतोड़ जबाब देने के लिये तैयार है। इस दौरान हिन्दूवाहिनी के पदाधिकारियों ने घायल जवानों की स्वास्थ्य लाभ की कामना को लेकर पूजा अर्चना किया। अंत में बीर शहीद जवानों को श्रद्धांजली अर्पित किया। इस मौके पर सत्यम यादव, मनीष श्रीवास्तव, दीपक राय, रोमी राय, राजकुमार गुप्ता मौजूद रहे।

एसपी ने किया थाना एकौना का निरीक्षण

संवाददाता। देवरिया

पुलिस अधीक्षक देवरिया डा. श्रीपति मिश्र द्वारा थाना एकौना जनपद देवरिया का वार्षिक निरीक्षण किया गया जिसके क्रम में थाना कार्यालय के अपराध रजिस्टरए ग्राम अपराध रजिस्टरए अंगुष्ठ छाप रजिस्टरए एक्टीव लिस्ट एराजनैतिक सूचना रजिस्टरए बीट सूचना रजिस्टर एफ्लाई शीट रजिस्टरए हेल्प डेस्क आदि का निरीक्षण किया। थानों पर नियुक्त समस्त विवेचक.गण को विवेचनाओं के गुणवत्तापूर्ण एवं शीघ्र निस्तारण हेतु निर्देशित किया गया । स्थानीय पुलिस को निर्देशित किया गया कि कोरोना वायरस के संबन्ध में अफवाह फैलाने वाले लोगों पर कड़ी नजर रखें एवं शांति एंव कानून व्यवस्था को प्रभावित करने वालों के विरुद्ध किसी भी प्रकार की नरमी न बरती जाये। थाने पर आने वाले आगन्तुकों के समस्याओं के त्वरित निस्तारण हेतु थानाध्यक्ष एकौना को निर्देशित किया गया तथा थाने के अधिकारीध्कर्मचारीयों को आवश्यक दिशा.निर्देश दिए गये। थाने पर शस्त्रों एवं दंगा नियन्त्रण उपकरणों के रख.रखाव एवं उनकी साफसफाई हेतु थानाध्यक्ष एकौना को उचित दिशा निर्देश दिये गये।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना का शुभारम्भ

गाजीपुर। ग्रामीण भारत में अपने गांव वापस पहुंचे कामगारों व प्रवासी मजदूरों को अपने गांव में ही रोजगार मुहैया कराने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा आज दिनांक 20 जून को बिहार के खगड़िया से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना का शुभारम्भ डिजिटल माध्यम से शुभारम्भ किया गया। जिसका सीधा प्रसारण सूचना और तकनीकी मंत्रालय के कॉमन सर्विस सेंटरों के माध्यम से देश के ग्रामीण नागरिकों के मध्य किया गया। उसी के क्रम में आज जनपद के कुल लगभग 500 से ज्यादा केंद्रों से 10000 नागरिको ने सोशल दूरी एवं मास्क एवं जरूरी सुरक्षा के साथ कार्यक्रम का लाईव प्रसारण देखा गया। बताते चले कि इन्ही कॉमन सर्विस सेंटरों के माध्यम से स्थानीय नागरिकों को कोरोना महामारी के काल में स्थानीय नागरिकों को विभिन्न प्रकार के आवश्यक सेवा सहयोग डिजिटल माध्यम से प्रदान की जा रही है। जिला प्रबंधक शिवा नंद उपाध्याय ने बताया कि इन प्रवासी मजदूरों को ध्यान में रखते हुए ब्ब् केंद्रों के माध्यम से आज विभिन्न प्रकार के कौशल विकास समेत अन्य ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करने के साथ साथ ग्रामीण नौकरी वेबसाईट के माध्यम से इनका पंजीकरण कर इन्हे स्थानीय स्तर पर रोजगार प्राप्त करने में सहयोग भी किया जा रहा है।

प्रतिभा खोज परीक्षा में जिला स्तर पर अमन द्वितीय व अबू कैश को मिला तृतीय स्थान

सुइथाकला, जौनपुर। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के घोषित परिणाम के अनुक्रम में विकास खण्ड स्थित अभिनव पूर्व माध्यमिक विद्यालय अशोकपुर कला के 20 व डीह अशरफाबाद के 18 बच्चों ने सफलता का परचम लहराते हुए विद्यालय के साथ क्षेत्र को भी गौरवान्वित किया है। अभिनव पूर्व माध्यमिक विद्यालय डीह अशरफाबाद के छात्र अमन मौर्य 128 अंक के साथ जनपद की मेरिट लिस्ट में द्वितीय तथा अबू कैश 127 अंक

हासिल कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत इन बच्चों की सफलता पर क्षेत्रीय प्रबुद्ध लोगों के साथ ही अभिभावकों ने भी हर्ष प्रकट करते हुए विद्यालय परिवार को बधाई दी है।

गंगा तट पर अब जल पुलिस चौकी और शवदाह प्लेटफार्म बनाने की पहल शुरू

चहनियां-चन्दौली। जनपद के ऐतिहासिक स्थल बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनी गंगा तट पर जल पुलिस चौकी व शवदाह प्लेट फार्म बनाने की पहल शुरू हो चुकी है। इसके लिए भाजपा नेता अरबिंद पांडेय ने राज्य मंत्री अनिल राजभर को प्रस्ताव लिखकर को दिया था । इसे लेकर शनिवार को एसडीएम ,नायब तहसीलदार,बलुआ इंस्पेक्टर आदि अधिकारियों ने बलुआ घाट का निरीक्षण किया। बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनी गंगा तट पर भाजपा नेता अरबिंद पांडेय व गंगा सेवा समिति के अध्यक्ष दीपक जायसवाल ने बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनी गंगा तट पर जल पुलिस चौकी व शवदाह प्लेट फार्म बनाने के लिए राज्य मंत्री अनिल राजभर को प्रस्ताव 20 दिसम्बर 19 को दिया था । जिसपर राज्यमंत्री ने मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी को प्रेषित किया था । जनपद के इस ऐतिहासिक स्थल पर दोनों योजना की कार्य पर पहल शुरू हो गयी है । उत्तर प्रदेश पुलिस मुख्यालय लखनऊ से जारी जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को जांचकर कारवाही हेतु रिपोर्ट प्रेषित किया है ।

कोविड-19 प्रोटोकॉल के तहत घर पर ही मनेगा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

गाजीपुर। हर साल 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस लोगों को निरोग रखने में योग की भूमिका के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस वर्ष कोविड.19 संक्रमण को देखते हुए इसे घर पर परिवार वालों के साथ ही मनाने का निर्णय लिया गया है। इस बारे में मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश शासन ने गाज़ीपुर सहित प्रदेश के समस्त जिलाधिकारियों को पत्र जारी कर सूचित किया है। पत्र में कोविड-19 संक्रमण को देखते हुए योग दिवस मनाने को लेकर कई दिशा.निर्देश दिये गए हैं तथा साथ ही प्रतियोगिता के बारे में विस्तार से बताया गया है। क्षेत्रीय आयुर्वेद एवं यूनानी अधिकारी डॉ आनन्द विद्यार्थी ने बताया कि 21 जून को योग दिवस को लेकर शासन की ओर से स्पष्ट निर्देश दिये गए हैं कि कोई सामूहिक कार्यक्रम का आयोजन न कर सभी लोग अपने घरों पर सुबह 7रू00 बजे से योगाभ्यास करेंगे जिसके लिए शासन द्वारा सोशल मीडिया पर योग के वीडियो अपलोड किए गए हैं। इसके साथ ही योग दिवस प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया है जिसमें प्रतिभागी को योग करते हुए तीन से पाँच मिनट का अपना वीडियो बनाकर सोशल मीडिया जैसे फेसबुकए ट्विटरए यूट्यूब पर अपलोड करना होगा। इन वीडियो को आयुष कवच, एप या 'लनेनचण्पद पर भी रजिस्ट्रेशन कराकर अपलोड कर सकते हैं।

तिलोई में एक ही परिवार के दो सदस्य कोरोना पॉजिटिव

● उपजिलाधिकारी ने मौके पर पहुंच कर गांव की सीमाएं सील कराई

संवाददाता। तिलोई, अमेठी

कोरोना महामारी का प्रकोप लगातार बढ़ता ही जा रहा है शिवरतनगंज थाना क्षेत्र के किशुनपुर मजरे सतगवां निवासी जमुना प्रसाद पुत्र रघुनाथ उम्र 53 वर्ष व शिव श्याम पुत्र जमुना प्रसाद उम्र 20 वर्ष जोकि एक सप्ताह पूर्व दिल्ली से वापस आये थे उनकी रिपोर्ट शुक्रवार को पॉजिटिव आयी है।

ग्राम प्रधान शिवराज सिंह ने बताया कि ये दोनों लोग एक सप्ताह पूर्व दिल्ली से वापस आये थे संदेह के आधार पर इनकी जांच करवाई गई जिनकी शुक्रवार को रिपोर्ट पॉजिटिव आयी है थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत सतगवां के गांव किशुनपुर में दो कोरोना पाजिटिव मरीज मिलने के बाद उपजिलाधिकारी सुनील कुमार त्रिबेदी ने गांव पहुंचकर सीमाएं सील करायी है।एसडीएम ने ग्रामीणों को जागरुकता का पाठ पढ़ाया और कहा सतर्कता ही इसका बचाव है।आप सब लोग घर पर रहें सुरक्षित रहें।उन्होंने बताया कि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिये केवल छूट रहेगी बाकी कोई भी व्यक्ति बाहर घूमता मिला तो उसके खिलाफ लॉक डाउन उल्लंघन का मुकदमा दर्ज कर किया जाएगा। ऐहतियात के तौर पर गांव की सभी सीमाएं सील कर दी गयी है।ग्राम पंचायत विकास अधिकारी गंगा विभूति व ग्राम प्रधान शिवराज सिंह ने भी ग्रामीणों से घर मे रहने की अपील की।

अवैध असलहे सहित तीन अभियुक्त गिरफ्तार

संवाददाता। अमेठी

जिले के थाना जामो पुलिस व स्वाट टीम द्वारा अवैध असलहों के साथ 03 अभियुक्त गिरफ्तार किया गया है।पुलिस अधीक्षक अमेठी डॉ0 ख्याति गर्ग के नेतृत्व में अपराध एवं अपराधियों की धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के तहत प्रभारी निरीक्षक रतन सिंह थाना जामों मय हमराह व उ0नि0 विनोद यादव प्रभारी स्वाट टीम मय हमराह द्वारा 03 अभियुक्तों अवधेश सिंह पुत्र सूरज सिंह नि0 अढ़नपुर थाना मुसाफिरखाना जनपद अमेठी लवलेश सिंह पुत्र सूर्यनाथ सिंह नि0 रामपुर चौधरी थाना जामो जनपद अमेठी व विमलेश द्विवेदी पुत्र स्व0 मोहन द्विवेदी नि0 लालूपुर ढबिया थाना जामो जनपद अमेठी को नहर पटरी कदम पुलिया के पास से समय 08रू30 बजे प्रात: गिरफ्तार किया गया । अभियुक्त अवधेश सिंह के कब्जे से 01 अवैध तमंचाए 01 जिन्दा कारतूस 12 बोरए अभियुक्त लवलेश सिंह के कब्जे से 01 अद्धीए 01 जिन्दा कारतूस 12 बोर व अभियुक्त विमलेश द्विवेदी के कब्जे से 01 तमंचाए 02 जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद हुआ । थाना जामो द्वारा विधिक कार्यवाही करके जेल भेज दिया गया है।

इन्हौना बाजार से मोटरसाइकिल चोरी

तिलोई अमेठी। थाना शिवरतनगंज की रिपोर्टिंग पुलिस चौकी इन्हौना अंतर्गत बीते शुक्रवार को बाजार से एक मोटरसाइकिल चोरों में पार कर दी हैं पीड़ित ने मामले शिकायत पुलिस से की हैं पर पुलिस ने मामले में मुकदमा नहीं दर्ज किया हैं जानकारी के मुताबिक इन्हौना कस्बा निवासी लल्लन पुत्र मोण्सगीर इन्हौना बाजार में मोबाइल व कपड़े की दुकान करता हैं शुक्रवार को घर से दुकान के लिए अपनी मोटर साइकिल सुपर स्पलेंडर से आया और दुकान के बगल बरदाही बाजार में गाड़ी खड़ी कर दुकान चला गया कुछ देर बाद वापस आने पर गाड़ी गायब मिली काफी तलाश करने पर भी कुछ पता नही चल सका पीड़ित ने पूरे मामले की शिकायत पुलिस से की है पर पुलिस जांच के नाम पर मामले को दबाने में जुटी है चौबीस घंटे बीतने पर भी चोरी का मुकदमा नहीं दर्ज हो सका है मामले में चौकी प्रभारी हरदेव बहादुर सिंह ने बताया कि जांच कर मुकदमा पंजीकृत क्या जाएगा।

नर्सिंगहोम के कर्मचारी की गोली मारकर हत्या

संवाददाता। प्रतापगढ़

● पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद हुआ हत्या का खुलासा

थाना कंधई अंतर्गत ग्राम जफीरापुर में बीती रात ड्यूटी पर जाते समय नर्सिंगहोम कर्मचारी की गोली मारकर हत्या कर दी गई। शनिवार सुबह उसका शव देखा गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने पहले तो हादसा माना और शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम के दौरान गोली निकलने पर हत्या का मामला सामने आया। प्राप्त जानकारी के अनुसार कंधई इलाके के साल्हीपुर पूरे बुधाई निवासी कालूराम विश्वकर्मा का बेटा श्यामलाल (38) शहर के पुराना माल गोदाम रोड स्थित नर्सिंग होम में नौकरी करता था। शुक्रवार रात करीब नौ बजे वह बाइक से घर से ड्यूटी पर आ रहा था। चिलबिला-मदापरपुर मार्ग पर कंधई इलाके के जफरापुर गांव के पास उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गई। रात में किसी को घटना की जानकारी नहीं हो सकी। शनिवार सुबह राहगीरों ने शव देखा तो तो भीड़ में मौजूद लोगों ने ही उसकी पहचान कर ली। जानकारी मिलने पर परिजनों के साथ ही कंधई पुलिस भी पहुंच गई। परिजन व रिश्तेदार शव देखने के बाद हत्या का आरोप लगाने लगे लेकिन पुलिस ने हादसे में मौत मानते हुए शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमार्टम के दौरान गोली निकलने पर हत्या की बात सामने आई। इसके बाद पुलिस जिला अस्पताल पहुंची। एसपी अभिषेक सिंह ने भी जफरापुर पहुंचकर घटनास्थल देखा। नर्सिंगहोम कर्मी की हत्या से उसके परिजनों में कोहराम मचा है। गांव के लोग भी हत्या को लेकर हैरान हैं।

ग्रामीणों ने थाना घेरा

संवाददाता। तिलोई, अमेठी

विकास खण्ड सिंहपुर की ग्राम पंचायत गढ़ी महाबल के गांव पूरे झाऊ में एक युवक द्वारा सार्वजनिक गलियारा बंद करने के मामले ने तूल पकड़ लिया है।ग्राम प्रधान की शिकायत व खण्ड विकास के निर्देश पर पुलिस उक्त युवक को पकड़कर थाने ले आई इसकी खबर जब ग्रामीणों को लगी तो पुलिसिया कार्यप्रणाली से आक्रोशित लोगों ने थाने का घेराव कर शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन किया।एसडीएम के निर्देश पर राजस्व पुलिस व विकास विभाग की संयुक्त टीमें मौके पर पहुंची और गलियारा खोलवाते हुये युवक को छोड़ दिया गया है। ग्राम पंचायत गढ़ी महाबल के गांव पूरे झाऊ निवासी आशीष कुमार उर्फ बब्बू पुत्र रामकुमार शुक्ला की भूमिधरी जमीन पर आज से करीब दस वर्ष पूर्व खडंजा लगा हुआ था।एक सप्ताह पूर्व उन्होंने उक्त मार्ग पर बांस लगाकर आवागमन बंद कर दिया था इसकी जानकारी जब ग्राम प्रधान श्रवण कुमार त्रिबेदी को हुई तो उन्होंने मामले से खण्ड विकास अधिकारी को अवगत कराया।ग्राम प्रधान के शिकायती पत्र पर खण्ड विकास अधिकारी राम दयाल गौतम ने पुलिस को कार्यवाही के लिये लिखकर भेज दिया।शुक्रवार को मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने युवक को समझाया बुझाया लेकिन बात नही बनी तो उसे पकड़कर थाने ले आई।इसकी खबर जब ग्रामीणों व आसपास के लोगों को लगी तो शनिवार की सुबह से ही थाना शिवरतनगंज प्रांगण में आक्रोशित लोगों की भीड़ बढ़ती गयी।समाजसेवी श्रीकांत त्रिपाठी की अगुवाई में सैकड़ों की संख्या में एकत्रित लोग थाना प्रांगण में धरने पर बैठ गये और युवक को पकड़ने का कारण व छोड़ने की जिद पर अड़े रहे।थानाध्यक्ष अजीत कुमार सिंह ने सबको समझा बुझाकर शांत कराया तो प्रदर्शनकारी माने।इसके बाद उपजिलाधिकारी सुनील कुमार त्रिबेदी के निर्देश पर एडीओ पंचायत सर्वेन्द्र सिंह चौहानएग्राम विकास अधिकारी चन्द्र सिंह ततवालएराजस्व निरीक्षकएहल्का लेखपाल के साथ भारी संख्या में पुलिस बल गांव पहुंचकर आवागमन वाले रास्ते को खोलवा दिया है और पकड़े गये युवक को भी छोड़ दिया है।इस सम्बन्ध में थानाध्यक्ष अजीत कुमार सिंह ने बताया कि उक्त मार्ग बंद करने से आवागमन बाधित था जिसे खोलवाते हुये युवक को छोड़ दिया गया है।

आठ वर्षीया बच्ची के कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव

मसौली बाराबंकी। मसौली थाना क्षेत्र के ग्राम पुरेजबर में एक 8 वर्षीय बच्ची के कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव पाये जाने से गांव में हड़कम्प मच गया मौके पर पहुँची स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बच्ची को एल1 चन्द्रा अस्पताल में भर्ती कराया गया है तथा परिजनों को होम क्वारंटाइन कर गांव में दवाओं का छिड़काव किया गया है। कोरोना पॉजिटिव पायी जाने वाली बालिका एक पखवारा पूर्व अपने परिजनों के साथ दिल्ली से घर वापस आयी थी। पुरेजबर निवासी कमलेश गौतम सपरिवार दिल्ली में रहकर जीवन यापन करते है लाक डाउन के दौरान काम धन्धा बन्द होने के बाद अपने 6 सदस्यीय परिवार के साथ घर वापस आये थे जाँच के बाद सभी को होम क्वारंटाइन किया गया था चार दिन पूर्व लिये गये सैम्पल में शुक्रवार की रात्रि आयी रिपोर्ट में 10 वर्षीय बालिका की रिपॉर्ट पॉजिटिव पाई गई हैं। रात्रि में ही पहुँची स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बालिका को एल वन चन्द्रा हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है तथा गांव में बांस बल्ली बांध कर पूरे गांव में दवा का छिड़काव किया गया है।

हाथों की सफाई के लिए यूनीसेफ ने भेंट किये 20 हजार साबुन

संवाददाता। बहराइच

कोविड.19 के कारण उत्पन्न विषम परिस्थितियों में प्रभावी लॉकडाउन के कारण विभिन्न शहरों एवं प्रदेशों से लौटे प्रवासी कामगारों को रोज़गार उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से जनपद की सभी 1054 ग्राम पंचायतों में महात्मा गॉधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारण्टी अधिनियम ;मनरेगाद्ध अन्तर्गत 5801 कार्य प्रारम्भ कराकर 01 लाख से अधिक गैर दक्ष श्रमिकों को रोज़गार प्रदान किया गया है। कोविड.19 के संक्रमण से बचाव तथा प्रभावी रोकथाम के लिए सबसे कारगार उपाय सामाजिक दूरी के साथ.साथ निश्चित समय के अन्तराल पर हाथों की स्वच्छता है। जिसके लिए साबुन सबसे सरल उपाय है।

जनपद के सभी ग्राम पंचायतों के कार्य स्थल पर कार्य करने वाले श्रमिकों के हाथों की स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कलेक्ट्रेट में यूनीसेफ संस्था ने जिलाधिकारी शम्भु कुमार को 20000 ;बीस हजारद्ध साबुन भेंट किये। श्री कुमार ने साबुन भेंट करने के लिए यूनीसेफ संस्था का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि साबुन से हाथ धोने की गतिविधि को बढ़ावा मिलेगा जो की कोरोना महामारी से बचाव में बहुत कारगर साबित होगा।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अरविन्द चैहानए ज्वाईन्ट मजिस्ट्रेट प्रशिक्षु आईएएएसए सूरज पटेलए परियोजना निदेशक डीआरडीए अनिल कुमार सिंहए जिला पंचायत राज अधिकारी उमाकान्त पाण्डेयए यूनीसेफ के जिला रिसोर्स पर्सन फसीह अहमदए आगा खान फाउंडेशन के कार्यक्रम अधिकारी जलए स्वच्छता एवं स्वास्थ्य अश्वनी चैरसियाए प्रोग्राम को.ऑर्डिनेटर अवनीश मिश्राए ब्लाक समन्वयक जयचन्द सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

आवास आवंटन में शिकायत पर जांच करने पहुंची सीडीओ

संवाददाता। सिरौलीगौसपुर बाराबंकी

एक ग्रामीण की शिकायत पर गलत आवास आवंटित करने के मामले में मुख्य विकास अधिकारी ने गांव पहुंचकर मामले की जांच किया। गांव में व्याप्त गंदगी से वह काफी नाराज हुई। विकासखंड सिरौलीगौसपुर के अंतर्गत ग्राम पंचायत किंतूर के राममिलन ने शिकायत की थी कि गांव के विक्रम हरिमोहन व केशव को प्रधानमंत्री आवास आवंटित किया गया है शिकायत में उन्होंने कहा था कि इन लोगों के घर पहले से ही बने हुए हैं और बाद में उन्हें इस आवास का लाभ दिया गया है इस शिकायत पर मुख्य विकास अधिकारी मेधा रूपम ने शनिवार को किंतूर गांव पहुंचकर वहां के आवासों की हकीकत देखी उन्होंने वहां पाया कि तीनों व्यक्तियों को जो आवास आवंटित किए गए थे वह अपना आवास बनवाने के पश्चात अपना शेष घर भी बनवा लिया है इस संबंध में मुख्य विकास अधिकारी खंड विकास अधिकारी कमलेश कुमार से आवास पाने वाले तीनो लोगों के पूरा डाटा जिसमे खतौनी वाहन व अन्य दस्तावेज उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।इसके अतिरिक्त उन्होंने मनरेगा के अंतर्गत हरिमोहन के घर से चौकिया तक एक किलोमीटर कच्ची पटाई का भी निरीक्षण किया। वहां पर कार्य कर रहे मनरेगा मजदूरो से उन्होंने कहा कि तुम्हारे कार्य का भुगतान सीधे खाते में जाना चाहिए यदि कोई इस में गड़बड़ी कर रहा है तो तुरंत हमें सूचित करें। गांव में व्याप्त गंदगी से वह काफी नाराज दिखी और खंड विकास अधिकारी से वहां की साफ सफाई के निर्देश दिए हैं। इस मौके पर खंड विकास अधिकारी कमलेश सहायक विकास अधिकारी अभय शुक्ला व अन्य लोग मौजूद रहे।

सात पर मुकदमा दर्ज

अमेठी। थाना संग्रामपुर पुलिस ने बृजेश कुमार दूबे पुत्र ओम प्रकाश दूबे नि0 केवलापुर मजरे कनू थाना संग्रामपुर जनपद अमेठी के पिता ओम प्रकाश दूबे द्वारा 27 मई को थाना संग्रामपुर पर मु0अ0स0 208 20 धारा 147 447 504 506 352 भादवि के तहत अभियोग राम बहादुर पुत्र राम अजोर नि0 केवलापुर थाना संग्रामपुर आदि 7 के विरुद्ध पंजीकृत कराया गया था। पुलिस अधीक्षक कार्यालय के मुताबिक जिसमें बाद विवेचना आरोप पत्र संख्या 195 को 02 जून को विवेचक उ0नि0 सुजीत कुमार सिंह द्वारा प्रेषित किया गया है । शान्ति व्यवस्था के दृष्टिगत 29 मई को राम बहादुर पुत्र राम अंजोर आदि सहित सात लोगों के विरुद्ध 151ध्107ध्116 द0प्र0सं0 की कार्यवाही की जा चुकी है । पुलिस के पास की गई वादी की शिकायत पर पुलिस द्वारा अभियोग पंजीकृत करते हुए आरोप पत्र प्रेषित किया जा चुका है तथा निरोधात्मक कार्यवाही भी की गई है । साथ ही सुरक्षा की दृष्टि से मौके पर 02 सिपाहियों की अस्थायी पिकेट तथा प्रभावी गश्त की कार्यवाही भी की जा रही है । बताते चले कि उक्तर प्रकरण में कार्यवाही न होने को लेकर पीडित फौजी ने एसडीएम अमेठी कार्यालय पर धरने पर बैठक गया थाए जिसके उपरान्त प्रशासन हरकत में आया था।

मोक्षदा क्षेत्र को पर्यटन क्षेत्र बनाना हो हमारी प्राथमिकता: समाज शेखर

संवाददाता। प्रतापगढ़

बेल्हा की रहस्यमई जलधारा मोक्षदा के पुनरोद्धार कार्य के बाद सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने स्थानीय साथियों के साथ जलधारा का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान खुदाई की गई जलधारा में जल भरण वॉच चेकडैम द्वारा रोके गए जल तथा बरसात में आने वाले जल की संभावनाओं का आकलन किया गया। तय हुआ कि आगामी बरसात में कार्यदाई संस्था को सहयोग करते हुए स्थानीय लोग भी चेक डैम की सुरक्षा में सहयोग करेंगे सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर के समक्ष उठाया कि यहां क्योंकि यह जल भरने की वजह से यहां पर पर्यटन क्षेत्र का विकास हो रहा है यहां पर एक घाट बनाया जाए इस जलधारा का और साथ ही साथ यहां पर एक मुक्तिधाम जहां पर लोग हिंदू लोग अपने तो का अंतिम क्रिया कर सके तब उनके लिए जीवनदाई साबित हो सकेगी। इस अवसर पर राष्ट्रीय पर्यावरण सुरक्षा संघ प्रमुख श्लोक मिश्र ने कहां कि हमें मोक्षदा क्षेत्र के महत्त्व को समझना होगा मोक्षदा अपने आप में एक प्राकृतिक जल स्रोत होने के साथ साथ क्षेत्र को हरित क्षेत्र बनाने की दिशा में भी इसका अपना महत्व है जरूरत है कि हम इस क्षेत्र को और हरा भरा बनाने की ओर पहल करें जिससे एक बड़े क्षेत्र में हरित सुंदर वातावरण का निर्माण हो सके। जिसके लिए आगे साथियों के सहयोग से मोक्षदा क्षेत्र के आसपास पौधरोपण अभियान को बढ़ावा देने का कार्य जल्द शुरू किया जाएगा। इस दौरान समिति के अध्यक्ष मित्र प्रकाश द्विवेदी, सचिव राष्ट्रीय पर्यावरण सुरक्षा संघ प्रमुख श्लोक मिश्र, सचिव शरद मिश्रा तथा ग्राम के अग्रणी उत्पादक हौसला बहादुर सिंह मौजूद रहे।

शहर से लेकर ग्रामीण बाजारों में भी साप्ताहिक बंदी रही सफल

संवाददाता। प्रतापगढ़/लालगंज

शहर में साप्ताहिक बंदी के दिन शनिवार को खुली दुकानें पुलिस ने बंद करा दी। इस दौरान दुकानदारों को चेतावनी भी दी गई।शहर में साप्ताहिक बंदी के दिन शनिवार को दुकानें खुली रहीं। नगर कोतवाली पुलिस ने अंबेडकर चौराहा, जिला अस्पताल के सामने, गाजी चौराहा, बाबागंज चौक इलाके में घूम घूम कर दुकानें बंद कराईं। सड़क किनारे फलों का ठेला लगाने वालों को भी पुलिस ने भगा दिया। दोपहर बाद इक्का-दुक्का लोगों ने फिर से अपनी दुकानें खोल दी। शहर कोतवाल सुरेंद्र नाथ ने बताया कि शहर में अब भी हॉटस्पॉट एरिया हैं। इसके बाद भी लोग साप्ताहिक बंदी के निर्देश का पालन नहीं कर रहे हैं। साप्ताहिक बंदी के निर्देश के तहत दुकानें बंद कराई गई हैं। इसी क्रम में लालागंज में साप्ताहिक बंदी पूरी तरह से सफल रही है। डीएम के आह्वान पर व्यापार मंडल एक दिन पहले शुक्रवार को मुनादी कराई गई थी। जिसमें दुकानदारों से अपने प्रतिष्ठान बंद करने की बात कही गई थी। इसका असर भी शनिवार को साफ दिखाई दिया। नगर क्षेत्र में कुछ मेडिकल स्टोर को छोडकर कहीं एक भी दुकान नहीं खुली मिली। बाजार में बंदी पूरी तरह से सफल रही। दुकानें बंद होने से चारों तरफ सन्नाटा पसरा रहा। राहगीर चाय पानी तक के लिए तरस गए। अर्से बाद साप्ताहिक बंदी पूरी तरह से सफल रही है। दुकानदारों ने अपने आप प्रतिष्ठान बंद किया था। पहली बार ऐसा हुआ जब व्यापार मंडल या पुलिस प्रशासन के बाहर निकले बिना दुकानें बंद रखी गई।

क्विक न्यूज

रसोइये की संदिग्ध हालात में मौत

मसौली बाराबंकी। 26 वीं वाहिनी पीएसी गोरखपुर एव वर्तमान में दसवीं वाहिनी पीएसी बाराबंकी के स्पोर्ट मेस में कुक के रूप तैनात पीएनओ नम्बर 050570108 रसोइये निवास पुत्र राम तपस्या यादव की मृत्यु हो गयी। जिसकी सूचना मृतक के परिजनों एव 26 वीं वाहिनी पीएसी गोरखपुर के सेनानायक को दी गयी है तथा मृतक का शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। मृतक श्री निवास पुत्र राम तपस्या यादव बलिया जनपद के थाना बेल्थरा के गांव महुआतर पोस्ट उभा चैनपुर का निवासी है तथा 26 वीं वाहिनी पीएसी गोरखपुर में कुक के पद कार्यरत है जो वर्तमान समय में बाराबंकी स्थित स्पोर्ट मेस में कार्य रहा था। शुक्रवार की रात्रि को भोजन कर श्री निवास नित की भांति सोने चला गया भोर में पीएसी कर्मियों ने देखा कि श्री निवास बिस्तर पर अचेत अवस्था में पड़ा है जिसे आनन फानन में जिला अस्पताल में लेकर पहुंचे इससे पूर्व कुक की मौत हो गयी।

घायल राजस्व निरीक्षक को बढ़े हाथ

लालगंज, प्रतापगढ़। हादसे में घायल हुए राजस्व निरीक्षक के परिजनों को एक लाख की सहायता राशि उपलब्ध कराई गई है। तहसील में तैनात राजस्व निरीक्षक बाबूलाल श्रीवास्वत 16 जून को घर जाते से रानीगंज अजगरा बाजार में अज्ञात वाहन की चपेट में आने से गंभीर रूप से घायल हुए थे। उनको प्रयागराज के शकुंतला हास्पिटल में वेंटिलेटर पर रखा गया है। राजस्व निरीक्षक की हालत नाजुक देख एसडीएम वीके प्रसाद के निर्देशन में अफसर व कर्मचारी मदद को आगे आए। तहसील में तैनात अफसर, लेखपाल व राजस्व निरीक्षकों ने अपनी तरह से एक लाख रूपए की राशि जुटाई। लेखपाल संघ अध्यक्ष रामचंद्र त्रिपाठी की अगुवाई में एक प्रतिनिधि मंडल प्रयागराज पहुंचा और अस्पताल में भर्ती कर्मचारी के पत्नी पुष्पा श्रीवास्तव को एक लाख रूपए की नकद आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई।

अधेड़ की मौत में अज्ञात पर केस

लालगंज, प्रतापगढ़। हादसे में हुई अधेड़ की मौत में अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। लालगंज कोतवाली क्षेत्र के वानिकी प्रशिक्षण केंद्र के सामने हाईवे पर शुक्रवार को सफारी की चपेट में आने से उदयपुर के ननइयां निवासी बाइक सवार मुन्ना वारसी की मौत हो गई थी। घटना के दूसरे दिन मृतक के भांजे मो. असफाक की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ गैर इरादतन हत्या केस दर्ज किया गया है।

रेडक्रास टीम ने की बारातियों-जनातियों की थर्मल स्कैनिंग

बाराबंकी। फैजाबाद से नेहरू नगर आई बारात की सूचना पर रेडक्रास टीम ने मौके पर पहुँच कर सभी बारातियोव जनातियों की थर्मल स्कैनिंग करके सोशल डिस्टेंसिंग के प्रति जागरूक किया।नेहरू नगर वार्ड निगरानी समिति के अध्यक्षध्सभासद मो0 फैसल के आमांत्रण पर रेडक्रास सचिव प्रदीप सारंग ने स्वयंसेवकों कीटीम गठित की।शनिवार को घुसियाना निवासी अफजाल घोसी की बहन का विवाह था।अफजाल ने स्वयंसभासद से कोरोना प्रोटोकॉल की चिंता जताई।जिसपर सभासद फैसल ने रेडक्रास से संपर्क साधा ।ज्ञातव्य हो कि नेहरू नगर वार्ड को आदर्श बनाने के लिए रेडक्रास ने कदम बढ़ाया था।जिसके तहत घर.घर थर्मल स्कैनिग का कार्य स्वयंसेवकों द्वारा पूर्ण किया गया।

मांधता बाजार में जलभराव से परेशानी

प्रतापगढ। विकासखंड मांधाता बाजार मे जलभराव होने से क्षेत्र की जनता में आक्रोश व्याप्त है। मांधता बाजार में जेठवारा मोड़ से लेकर संजय नगर तिराहा तक जलभराव होने के कारण लोगो का पैदल चलकर कठिनाई भरा है। कई बार तो मोटर साइकिल सवार व पैदल जाने वाले लोग जल भराव होने के कारण उसमे फिसल कर गिर जाते है। स्थानीय दुकानदारों व ग्रामीणों का कहना है कि यहां पर जलभराव पिछले पांच वार्षो से है, मगर प्रशासन जनता की समस्याओं की तरफ ध्यान नही दे रहा है।

किशोरी ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

हैदरगढ़ बाराबंकी। कोतवाली क्षेत्र के बारा गांव में बीती रात एक किशोरी ने अज्ञात कारणों के चलते घर के कमरें में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। भोर सुबह जानकारी होने पर परिवारीजनों में कोहराम मच गया। घटना की सूचना पर पहुंची मुकामी पुलिस ने जाँच पड़ताल के बाद शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया है।जानकारी के मुताबिक उक्त गांव निवासी लाल बहादुर पाल की 17 वर्षीय पुत्री शीला उर्फ पिंकी शुक्रवार की रात अपनी मां के साथ छत पर सोई हुई थी। भोर सुबह करीब 4 बजे जब मां उठी तो देखा शीला वहाँ नहीं थीए उनको लगा कि बेटी घर के अंदर है लेकिन कई बार आवाज देने के बाद भी उधर से कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। जब वह छत से नीचे उतरकर घर के भीतर कमरें में गई तो वहाँ का सारा नजारा देखकर दंग रह गई। बेटी का शव कमरें में छत में लगे फंखे से रस्सी के सहारे झूल रहा था। इसके बाद देखते ही देखते परिजनों में कोहराम मच गया। वहीं किशोरी ने आत्महत्या क्यों की यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक धर्मेंद्र सिंह रघुवंशी से उनके सीयूजी नम्बर पर इस बाबत जब दूरभाष के माध्यम से बात करने का प्रयास किया गया तो उनका फोन हीं नहीं उठा।

आदेश के बावजूद पीड़ित को नही मिला न्याय

रामसनेहीघाट बाराबंकी। स्थानीय तहसील क्षेत्र के ग्राम पूरे गोड़ियन मजरे असेना निवासी सतगुरू पुत्र बंसीलाल के घर का मुख्य रास्ता ग्रामवासी दबंग सतनारायण पुत्र जसवंत मथुरा पत्नी सत्यनारायण आदि ने मिलकर एक राय होकर जबरिया बंद कर दिया है इन की और परिजनों से पुरानी रंजिश चल रही है निरन्तर परेशान करते रहते हैं सतगुरु का मकान के घर को जाने का मुख्य रास्ता है जिसमें दबंग ग्रामवासी सतनारायण आदि ने मकान के बगल रास्ते में बांसवाड़ा रास्ता पूरी तरह बंद कर दिया जिससे उसका घर से आवागमन पूरी तरह बंद हो गया है पीड़ित ने उपजिलाधिकारी के समक्ष प्रस्तुत होकर तहरीर दिया जिसपर हल्का लेखपाल मौके की जाँच करने गये प्रकरण का समाधान नहीं किया हैं।पीड़ित न्याय के लिऐ दर दर की ठोकरें खा रहा हैं।

योग दिवस आज, घर पर ही करना होगा योग: डीएम

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा. रूपेश कुमार ने रविवार को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जनपदवासियों से अपील किया है कि 21 जून को प्रात: 7 बजे से 8 बजे तक सोशल डिस्टेसिंग का अनुपालन करते हुये अपने घरों पर ही योग दिवस मनायें। उन्होने अवगत कराया है कि दूरदर्शन पर योग कार्यक्रम का सजीव प्रसारण प्रात: 6.15 बजे से प्रारम्भ कर दिया जायेगा तथा इस अवसर पर ''योग दिवस चैलैन्ज उ0प्र0 योग प्रतियोगिता'' का आयोजन किया जायेगा जिसमें 04 श्रेणी के महिला व पुरूष क्रमश: 5-17 वर्ष, 18-60 वर्ष, 60 वर्ष से अधिक तथा योग पेशेवर पुरूष व महिला प्रतिभाग करेगें। प्रतिभागिता हेतु आयुष कवच ऐप पर रजिस्टेशन करना होगा। पुरूष और महिला श्रेणी के प्रतिभागी 3-5 मिनट का योग करते हुये वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड करेगें। उन्होने कहा कि स्वयं को कोविड-19 के संक्रमण से बचायें तथा समाज को सुरक्षित रखने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें।

भाजपा की वर्चुअल रैली 27 को, ईरानी करेंगी संबोधित

संवाददाता। बाराबंकी

जन.जन तक संवाद स्थापित करने में भाजपा ने कमर कस ली है। सरकार की उपलब्धियों को आम जनता तक पहुँचाने के जिला स्तर पर विभिन्न मोर्चों की वर्चुअल ;ऑनलाइनद्ध सम्मेलनों की सफलता से उत्साहित भाजपा क्षेत्रीय स्तर पर बड़ी रैली करने की तैयारियों में जुट गई है।अवध क्षेत्र में भाजपा की यह वर्चुअल ;ऑनलाइनद्ध रैली आगामी 27 जून को आयोजित होगी।रैली को केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित करेंगी।शनिवार को आयोजित भाजपा जिला कार्यसमिति की बैठक में क्षेत्रीय संगठन मंत्री प्रद्युम्न कुमार ने यह जानकारी देते हुए रैली की सफलता के लिए पदाधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। बैठक को सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय संगठन मंत्री ने कहा कि क्षेत्रीय रैली में रिकॉर्ड स्तर पर कार्यकर्ताओं व आम जनमानस को जोड़ने के लिए मोबिलाइजेशन बहुत जरूरी है।इसके उपरांत जिला पदाधिकारियों से उन्होने जिला सम्मेलन व मोर्चा सम्मेलनएव्यक्तिगत परिवार सम्पर्क अभियान की बिंदुवार समीक्षा की।कोरोना आपदा के समय भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा मास्क एसैनिटाइजर वितरण आदि सेवा कार्यों की रिपोर्ट तलब की।उन्होने प्रवासी मजदूर सम्पर्क अभियान की कार्य योजना बनाने के निर्देश भी दिए।साथ ही 21 जून को योग दिवस परिवार संग मनाने एवं 23 जून को श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस मनाये जाने हेतु पार्टी की कार्य योजना से अवगत कराया।इसके पूर्व प्रभारी मंत्री दारा सिंह चौहान ने स्वागत उदबोधन दिया।सांसद उपेंद्र रावत एविधायक साकेन्द्र प्रताप वर्माए बैजनाथ रावत ने भी बैठक में अपने विचार रखे।बैठक की अध्यक्षता कर रहे जिला अध्यक्ष अवधेश श्रीवास्तव ने सभी को आभार ज्ञापित किया।सन्चालन महामंत्री सन्दीप गुप्ता ने किया।इस अवसर पर शरद अवस्थीएसतीश शर्मा एजिला उपाध्यक्ष रचना श्रीवास्तव प्रमोद तिवारीएमहामंत्री शील रत्न मिहिरएभुल्लन वर्माएमीडिया प्रभारी विजय आनन्द बाजपेईए रोहित सिंहए आईटी संयोजक विजय श्रीवास्तव सहित जिले कार्य समिति के सभी पदाधिकारी व मोर्चा अध्यक्ष मौजूद रहे। इनसेटएएक लाख छियत्तर हजार परिवारों में किया गया जनसम्पर्क। जिला अध्यक्ष अवधेश श्रीवास्तव ने समीक्षा बैठक में विभिन्न अभियानों की आख्या प्रस्तुत की।उन्होने बताया कि व्यक्तिगत सम्पर्क अभियान के तहत दस हजार नौ सौ पचहत्तर कार्यकर्ताओं ने जिले के एक लाख छियत्तर हजार दो सौ तीस परिवारों में जनसम्पर्क करके प्रधानमंत्री का पत्र सौपा।सेवा कार्यो में एक लाख इक्कीस हजार मास्क व सोलह हजार पांच सौ सैनिटाइजर एसाबुन आदि भी जरुरतमंदों को वितरित किये गए।

पायनियर
रविवार, 21 जून, 2020

एजेण्डा

किताबों व थिएटर के माध्यम से मैंने दुनिया को समझा, उन्हीं से मैंने अपनी नैतिकता की समझ हासिल की कि कैसे एक अच्छा जीवन जीएं
- ग्रेटा गेरविग

एक नयी दुनिया

कोविड-19 महामारी के अब जीवन का नियमित हिस्सा होने से, फिल्म इंडस्ट्री को अब अपने प्रस्तुति तंत्र की पुनर्पड़ताल करने की जरूरत है और गुलाबो सिताबो के डिजीटल रिलीज के फैसले से शूजीत सरकार ने इस दिशा में कदम बढ़ाया है। गौतम चिंतामणि की रिपोर्ट...

यह रोज की बात नहीं है जब सिनेमा के सबसे नामचीन अभिनेताओं वाली एक फिल्म का प्रीमियर आपके कमरे के भीतर हो रहा है या ठीक आपकी हथेली पर मौजूद आपके सेल्यूलर फोन की स्क्रीन पर। शूजीत सरकार की नई फिल्म गुलाबो सिताबो की खबर करीबी सिनेमा हाल में रिलीज होने के बजाय अमेजोन प्राइम वीडियो पर प्रसारित हुई जिसमें सदी के महानायक अमिताभ बच्चन और हिन्दी फिल्मों से सवार्धिक सितारों में से एक, आयुष्मान खुराना ने अभिनय किया है, जिसने उत्साह और निराशा की मिश्रित उम्मीदे हासिल की थीं। टिकट खरीद कर देखने वाले दर्शक को, जिसने फिल्म में गहन रुचि लेने के संकेत दिखाए थे, भारत में लोकप्रिय फिल्मों द्वारा पास दिया जा रहा था, यह तार्किक कदम था। लेकिन सिनेमाहाल मालिकों और मल्टीप्लेक्स श्रृंखलाओं के लिए यह कदम किसी भी रूप में एक संकेतक से कम नहीं था कि उनके पैरों के नीचे की जमीन खिसक चुकी थी। यह बदलाव संभवतया उदार शालीनता हो सकता है, मौजूदा कोरोना वायरस महामारी जिसने जीवन की हमारी समझ को बदल दिया है मगर जो घटित होने वाला था।

हाल के दिनों में, फिल्मों को देखे जाने का तरीका बदल गया था जिसमें दर्शक नेटफ्लिक्स और अमेजोन प्राइम वीडियो जैसे आनलाइन प्रसारण मंचों को अपनी मनपसंद फिल्म देखने का सदस्यता शुल्क देकर फिल्में देखने लगे थे। फिल्में प्रोड्यूस करने के संसाधन भी जबरदस्त बदलाव से होकर गुजरे थे जिनमें डिजीटल फार्मेट ने अधिकांश पारंपरिक फिल्म उद्योग की जगह ले ली थी लेकिन समूची श्रृंखला का केवल एक पक्ष आम तौर पर पहले जैसा ही रहा- वो था प्रदर्शन। 2017 में, नेटफ्लिक्स के ब्राइट ने विल स्मिथ, दुनिया के सबसे बड़े बाक्स आफिस सितारों में से एक, को प्रदर्शित किया, और नतीजा उसी समय स्पष्ट हो गया जैसे ही इसने पारंपरिक सिनेमाई रिलीज को नजरंदाज किया। सिनेमा देखने का अनुभव बदलाव के मुहाने पर था। भारत में, यह क्षण सरकार की फिल्म गुलाबो सिताबो के आनलाइन प्रीमियर की घोषणा के साथ उपस्थित होता नजर आया। यह पहली बार था कि एक प्रथम श्रेणी की हिन्दी फिल्म सिनेमा हाल से बाहर प्रदर्शित होगी और सिनेमा मालिकों की प्रतिक्रियाएं साफ इशारा करती हैं कि किस तरह फिल्म निर्माता के लिए एक छोटा कदम फिल्मों के लिए एक बड़ी छलांग बन सकता है। अग्रणी सिनेमा हाल मालिकों ने इस कदम को चूक बताया और आइनोक्स मल्टीप्लेक्स चैन ने अपनी 'भारी नाराजगी व दुख' जाहिर किया, और कहा कि 'ऐसे शुभ मित्रों के साथ सौदे में दण्डात्मक उपाय' करने पड़ेंगे।

देशव्यापी तालाबंदी के कारण रिलीज के लिए तैयार अनेक फिल्मों के रिलीज होने पर रोक लग गयी, जबकि व्यापार संशय की स्थिति में आ गया कि इस स्थिति का कैसे सामना करे। शुरुआत में, अधिकांश प्रोड्यूसर मानते थे कि रिलीज होने की तारीखें बदलने से इस दुर्दशा का समाधान हो जाएगा। लगभग हर कोई सहमत था कि ऐसे उपाय पर्याप्त होंगे। कुछ सप्ताह बाद, यह आकलन, कि सभी बदलाव और कुछ नहीं बल्कि तात्कालिक उपाय थे, बदल गया, जब यह भय हुआ कि सिनेमा हाल शायद निकट भविष्य के दौरान पूरी क्षमता से संचालित नहीं होंगे तो इस स्थिति ने व्यापार को पारंपरिक सिनेमा रिलीज के साथ साथ वितरण के अन्य तरीके तलाशने के लिए मजबूर किया। जहां तक फिल्में दिखाने के नए तंत्र के बारे में सोचने का मामला है तो फिल्म व्यापार की सत्ता का केन्द्र आम तौर पर दो खंभों पर टिका था। जो फिल्में पर्दे पर उतरने के लिए पूरी तरह तैयार थी, जब जिदंगी का कोविड-19 की कड़वी सच्चाई से टकराव हो गया, उनमें हैं रोहित शेट्टी निर्देशित व अक्षय कुमार अभिनीत फिल्म सूर्यवंशी तथा कबीर खान की 1983 विश्व कप विजेता भारतीय टीम की कहानी पर आधारित फिल्म 83 थी जिसमें रणवीर सिंह ने महान कपिलदेव की भूमिका निभाई हैं।

यह पहली बार नहीं था जब फिल्म इंडस्ट्री में चीजें इस मुकाम पर पहुंच गयी थीं। कुछ साल पहले, कमल हासन उसी दिन डीटीएच प्लेटफार्म पर विश्वरूपम रिलीज करने का विचार लाए थे जब फिल्म सिनेमा हाल में रिलीज होने वाली थी। जैसा कि अपेक्षा थी कि सिनेमा मालिकों द्वारा काफी आक्रोश व्यक्त किया गया, उन्होंने कमल हासन की अगली फिल्मों का बहिष्कार करने की धमकी भी दी यदि अभिनेता अपनी बात पर अड़ा रहा। शायद हासन ने जिस कारण इस विकल्प पर विचार किया था उसका संबंध शायद उन संभावित विवादों से हो सकता है जो विश्वरूपम में कुछ प्रमुख दृष्यों के जरिए सामने आ सकते थे जिन पर संभवतया धार्मिक भावनाएं आहत होने का आरोप लग सकता था। अंत में, हासन आगे नहीं बढ़े और सिनेमाहाल के बजाय मंचों पर सुपरस्टारों द्वारा अभिनीत फिल्म रिलीज करने का फैसला टल गया। ऐसी अफवाहें थीं कि हासन ने एक आंतरिक सर्वे कराया था और संख्या उस सच्चाई की भविष्यवाणी नहीं करती थी जिसकी उन्होंने फिल्म के बाक्स आफिस कारोबार के मामले में परिकल्पना की थी।

समायोजन अनुमान से भरा था क्योंकि फिल्म प्रोड्यूसर और ओटीटी प्लेटफार्म दोनों ऐसे तरीके व क्षेत्र तलाश में थे जो दर्शक को बनाए रखे। हालांकि फिल्में फिर भी अवसर नीति का खेल खेल सकती थीं मगर बोलने के मामले में, प्रचलित मंचों को खेल को उठाने की आवश्यकता थी, जैसाकि प्लेटफार्म ने तालाबंदी के दौर में महत्वपूर्ण महत्ता हासिल की थी जहां लोगों की देखने की आदतें एक और बदलाव से होकर गुजरी हैं। उनके भारी क्षेत्रों की मेहरबानी रही कि ओटीटी मंच आसानी से प्रतिष्ठित नामों से सजी फिल्में अपने साथ लाने में सफल रहे। एक संक्षिप्त अवधि के लिए, ग्रेपवाइन अक्षय कुमार की फिल्म लक्ष्मी बाम्ब, के साथ चर्चा में था जो 22 मई को रिलीज होने वाली थी, जो चर्चा के मुताबिक उक्त प्लेटफार्म पर विशेष रूप से रिलीज होने वाली पहली बड़ी फिल्म बन रही थी कि डिज्नी प्लस और हाटस्टार वीआईपी इसे अपने प्रीमीयर सदस्यों के लिए हथिया लिया। लगभग 88 करोड़ रुपए के बजट से बनी, लक्ष्मी बाम्ब लाकडाउन के कारण प्रोडक्शन उपरांत विलंबित हो गयी जबकि प्रोड्यूसरों ने जून अंत तक इसके आनलाइन रिलीज होने के लिए तैयार होने की उम्मीद की है। चर्चा इस बात से ही बढ़ गयी थी कि कबीर खान ने बताया था कि 83 के डिजीटल प्रीमीयर के लिए भारी धनराशि का प्रस्ताव दिया गया है लेकिन खान ने फैसला किया कि उनकी फिल्म जनवरी 2021 में रिलीज होगी। अंत में, गुलाबो सिताबो वो फिल्म बन कर उभरी जो लोगों की कल्पना से कहीं व्यापक ढंग से खेल के नियमों का पुनर्लेखन करने में कामयाब हुई।

यदि कोई आसपास गौर से गहन नजर डाले तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सिनेमा में उल्लेखनीय परिवर्तन तभी आए हैं जब दर्शक की देखने की आदत या तो जबरदस्त ढंग से बदली है या एकरस हो गयी है। 1950 दशक में, जब लाइव टेलीविजन ने कथावाचन में अपनी असर छोड़ना शुरू किया, राबर्ट आल्टमन और सिडनी ल्यूमेट स्टूडियोज जैसे फिल्मकारों की मेहर बानी है जिन्हें अमरीका में स्टूडियोज ने फिल्म बनाने का अवसर दिया। उसी प्रकार, जब 1960 दशक में अमरीका की विपरीत संस्कृति व सामाजिक आदोलन को नकारना काफी ज्यादा बढ़ गया तो स्टूडियो के अगुवा फ्रांसिस फोर्ड कोपाला, मार्टिन स्कार्सिस, स्टीवन स्पीलबर्ग और जार्ज लुकास जैसे फिल्म स्टूडियो से पढ़े फिल्मकारों की पहली पीढ़ी को फिल्में बनाने के लिए लेकर आए।

इन फिल्मों ने ब्रायन डे पाल्मा, पीटर बोग्दानोविच और विलियम फ्रीडकिन के साथ मिलकर 'अमेरिकन न्यू वेव' या न्यू हालीवुड की नींव का निर्माण किया। बाद में जब वीएचएस ने दर्शक प्राथमिकता को बदलने की धमकी दी तो स्टूडियोज ने विषयवस्तु के मामले में ज्यादा प्रयोग करना शुरू किया। उन्हीं आधारों पर, कोरोना वायरस के बाद की दुनिया में, जिस तरह फिल्म प्रदर्शित होती है, उसे बदलना पड़ेगा। मेरी शैली की फ्रेंकेन्स्टीन से काफी हद तक मिलता जुलता- इंसानी मन के लिए कुछ भी इतना तकलीफदेह नहीं होता जितना कि एक महान व अप्रत्याशित बदलाव- भारत में बालीवुड और सर्वाधिक लोकप्रिय सिनेमा को न केवल बदलाव को स्वीकार करना पड़ेगा बल्कि नए दौर के लिए तैयार भी होना होगा।

कोविड -19 महामारी के अब जीवन का नियमित हिस्सा बनने से, फिल्म इंडस्ट्री को अपने प्रस्तुति तंत्र की समीक्षा करने की आवश्यकता है और गुलाबो सिताबो को डिजीटल स्तर पर रिलीज करने के फैसले से, शूजित सरकार ने इस दिशा में शुरुआत कर दी है। सामान्य हालात में, रोनी लाहिड़ी, और शील कुमार, जो गुलाबो सिताबो के प्रोड्यूसर और दूरगामी साझीदार हैं, लीक से हटकर सोचने के लिए मजबूर नहीं हुए होते।

लेकिन सच कहा जाए तो सरकार-लाहिड़ी- कुमार की यह तिकड़ी उस बदलाव को लाने के लिए आदर्शतया फिट है जो शायद जीवन में बिरले ही होने वाली घटना है। ऐसे विषयों का चुनाव करने की सिरकार की आदत, जो एक चुनौतीपूर्ण कथावाचक बनाती है, लेखक जूही चतुर्वेदी और अभिनेताओं द्वारा, जिन्हें वह कास्ट करते हैं, पूरक बनाई जाती है, लेकिन यह लाहिड़ी और कुमार की प्रोड्यूस करने की योग्यताएं हैं जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मद्रास कैफे (2013) जैसी जासूसी ड्रामा फिल्में प्रोड्यूस करने में मामले में लाहिड़ी और कुमार का साहस बहुत बड़े पैमाने का था हालांकि जो बहुत कम बजट व शैड्यूल का था, या पिंक (2016) जैसी फिल्म जो अमिताभ बच्चन के नेतृत्व में महंगे अभिनेताओं जिनमें बंगाली सिनेमा के दृष्टिमान चैटजी नामक कलाकार शामिल थे, के बावजूद वितरकों में भरोसा नहीं जगाती थी। हिट फिल्में देने के बावजूद, सिरकार के प्रोड्यूसरों ने उन्हें पैसे के मामले में बिरले ही लीक से परे जाने की अनुमति दी लेकिन साथ ही साथ, उन्होंने कभी भी फिल्म निर्माता के दृष्टिकोण में कांट छांट नहीं किया। लगभग 30 से 35 करोड़ बजट से बनी फिल्म, गुलाबो सिताबो निश्चित रूप से बच्चन और खुराना जैसी कास्ट के होने के कारण बाक्स आफिस पर एक हिट फिल्म हुई होती और हालांकि आनलाइन रिलीज ने संभवतया उन्हें ज्यादा कमाई प्रदान की, मगर इसमें जो जोखिम शामिल था, वो विचार करने योग्य है। सरकार समेत, लाहिड़ी और कुमार मल्टीप्लेक्स और थिएटर चैन के असंतोष से वाकिफ हैं, जो आने वाली फिल्मों के संदर्भ में उन्हें भयभीत कर सकता है लेकिन यही संभवतया नया सोचने वालों व पुरानी परिपाटी पर चलने वालों के बीच का अंतर है।

सिनेमा और आनलाइन प्रसारण मंचों के बीच लड़ाई गुलाबो सिताबो के सीधे घरों में प्रसारण से एक नए दौर में प्रवेश कर गयी है। फिलहाल, हिन्दी फिल्म के सिनेमाई व डिजीटल रिलीज के बीच लगभग दो महीने लंबा विलंब होगा। गुलाबो सिताबो के प्रीमियर की घोषणा होने के एक दिन बाद, अमेजन प्राइम ने तमिल, हिन्दी, तेलुगू, कन्नड़, और मलयाली में छह और फिल्मों की सूची जारी की है जो उनके प्रसारण मंच पर धीरे दिखाई जाएंगी, यह कदम सिनेमा मालिकों के लिए चीजों को और बदतर ही बनाता है।

लगभग 30 से 35 करोड़ बजट से बनी फिल्म गुलाबो सिताबो निश्चित रूप से बच्चन और खुराना जैसी कास्ट के होने के कारण बाक्स आफिस पर एक हिट फिल्म हुई होती और हालांकि आनलाइन रिलीज ने संभवतया उन्हें ज्यादा कमाई प्रदान की, मगर इसमें जो जोखिम शामिल था, वो विचार करने योग्य है।

>> पेज 3

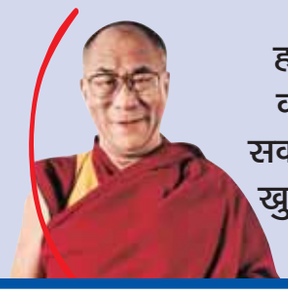

हम बाह्य जगत में कभी शांति नहीं पा सकते जब तक कि हम खुद में शांत नहीं होते
- दलाईलामा

जीवन चक्र
भारत भूषण पद्मदेव

भाग्य गढ़ सकती है स्वेच्छा

पिछले अंक में मन और उसके कामकाजी तंत्र की संरचना के बारे में विस्तार से चर्चा करने के बाद, अब मैं आपके समक्ष मन के रसायन की जानकारी प्रस्तुत करूंगा। जैसा कि मैंने पहले बताया था कि हम अनुवांशिक इच्छा व मानसिक प्रवृत्तियों के साथ जीवन शुरू करते हैं, जो कि पूर्वजन्म के कर्मों का प्रतिफल हो सकती हैं। उसी के अनुसार, मन स्वैच्छिक ढंग से व्यक्तिगत विशिष्ट मान्यताएं विकसित करता है जो इच्छा प्रवृत्तियों में फलित होती हैं जिसके कारण मिलते जुलते विचार जगते हैं। इनमें से कुछ विचार मन की प्रयोगशाला में पोषित होने के बाद अहमियत प्राप्त करते हैं और कार्यरूप में साकार होते हैं। हालांकि सभी विचार कार्यरूप में परिणित नहीं होते हैं। कमजोर विचार अपने विकासक्रम में मर जाते हैं। लेकिन ऐसा कोई कार्य नहीं किया जा सकता जो विचारों से संचालित न हो। इसीलिए कहा जाता है: ''अपने विचारों पर ध्यान दो, वे शब्द बनते हैं, अपने शब्दों पर ध्यान दो, वे कर्म बनते हैं, अपने कर्मों पर ध्यान दो, वे आदत बनते हैं, अपनी आदतों पर ध्यान दो, वे भाग्य बन जाती हैं।''

प्रमाणतया, मंशा, चरित्र और इच्छा प्रवृत्तियों की कथ्य व उत्पन्न विचार, कर्म के प्रतिफलों की गुणवत्ता निर्धारित करते हैं, उसी के अनुसार हम फल पाते हैं- सुखद व दुखद किसी भी रूप में। उससे भावना आश्वस्ति पाती है और हमारी स्मृति का हिस्सा बनती है, जो पुन: अपनी विचार प्रक्रिया को बदलती है, संबंधित भावी जटिलताओं के साथ। इस तरह, हम विचारों के आत्मरचित सर्किटनुमा संजाल तथा अपनी स्वनिर्मित भावनाओं में फंस जाते हैं जिससे आम तौर पर छुटकारा पाना कठिन होता है। अब, इससे बाहर कैसे निकलें?

आपका मन आत्मचिंतन तथा अपने भीतर की कमजोरियों व अंतर्निहित क्षमताओं की मौजूदा प्रवृत्तियों का पता लगाने की शक्ति से संपन्न है। आपको पहले उन्हें पहचानने व स्वीकार करने और फिर नयी शैक्षणिक जानकारियों के जरिए अनिवार्य सुधार करने की जरूरत है। साथ ही, अंतर्निहित क्षमताओं को निखारना तथा अपनी रचनात्मक योग्यताएं सुधारनी चाहिए। देखिए, कि मन कितना अनोखा उपकरण है, जो अपने स्वरचित आईने में अपनी छवि देख सकता है। हालांकि विडंबना यह है कि अनेक बार व्यक्ति प्रतिभा संपन्न हो सकता है, लेकिन वह खुद उसके बारे में नहीं जानता है। कुछ साल पहले एक नौजवान अपने करियर के संबंध में मार्गदर्शन मांगने आया। उसे ऐसा करियर अपनाने की सलाह दी गयी जिसमें भाषागत योग्यता, माध्यम के बतौर, शामिल है। उस नौजवान से सवाल किया: ''महोदय, आपने शायद मेरी क्षमता को गलत ढंग से समझ लिया है, क्योंकि मेरी भाषा अच्छी नहीं है, न ही मैं ऐसा करियर अपनाने के प्रति इच्छुक हूं। बल्कि मैं तो प्रबंधकीय नौकरी करना पसंद करूंगा।''

मैंने सलाह दी, ''अपनी प्रबंधकीय कार्यभार सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद भी, आपको बेहतर संवाद योग्यता की जरूरत है। ऐसे में बिजनेस स्कूल में प्रवेश की तैयारी करने के साथ साथ अपनी भाषा पर काम क्यों नहीं करते?'' यह बात उसके समझ में आ गयी। तीन महीने बाद, वह वापस आया: ''महोदय अब मुझे लगता है कि मैं स्पष्टता के साथ बेहतर लेखन कर सकता हूं। क्या मुझे पत्रकारिता को अपनाना चाहिए? ''

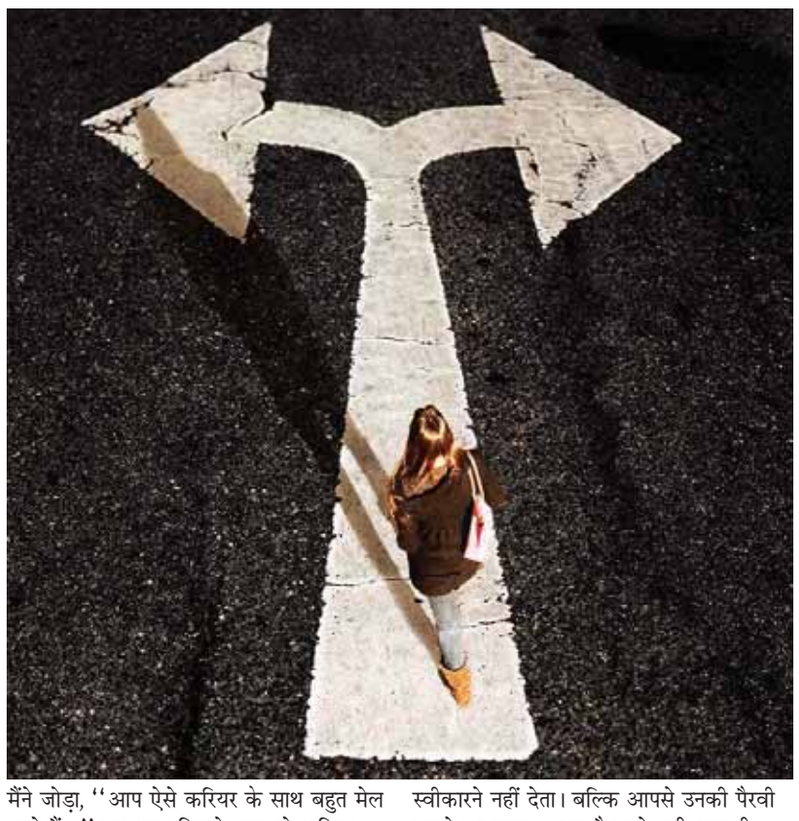

मैंने जोड़ा, ''आप ऐसे करियर के साथ बहुत मेल खाते हैं। '' वह आज पिछले सत्रह से अधिक सालों से सफलतापूर्वक पत्रकारिता काम करते आए हैं।

हालांकि, विडंबना यही रहती है, कि आपका अहंकार विध्वसंक की भूमिका निभाता है। यह आपको तटस्थतापूर्वक आपकी कमजोरियां स्वीकारने नहीं देता। बल्कि आपसे उनकी पैरवी कराने का प्रयास करता है मानो वही आपकी पहचान हो। यहां पुन: एक समझदार गुरू की भूमिका सामने आती है। वह पहले आपको आपकी समस्त अच्छी व बुरी वास्तविक छवि दिखाएगा। फिर वह आपको एक प्रक्रिया प्रदान करेगा और आगे का रास्ता दिखाएगा। वह कोई चमत्कार नहीं करता है। बल्कि वह आपको अपने स्तर पर विकसित होने देता है। यह प्रक्रिया आपका ध्यान, अपनी बाह्य दुनिया से अपने भीतर की दुनिया की ओर, केन्द्रित करने की मांग करती है। जैसे ही आप अपने भीतर झांकते हैं, आपका सामना अवचेतन स्तर पर एकत्रित असंख्य विचारों से होता है। उन्हें अपने हाल पर छोड़ कर, आप उनके साथ अंजाने में छेड़छाड़ करते रह सकते हैं, एक जंगली बंदर की तरह जो मनमाने ढंग से पेड़ की एक डाल से दूसरी डाल पर कूदता फिरता है। आपको उन अच्छे या बुरे विचारों से अनासक्त रहने हेतु अपने मन को साधने की जरूरत है। याद रखें, आप केवल तभी प्रभावित हो सकते हैं जब आप किसी चीज पर ध्यान देते हैं। जिस तरह आपका बंदर मन एक समयावधि के बाद स्थिर होता है, गंभीरतापूर्वक, प्रक्रिया को नियमित आधार पर समझता है, आप फिर भी मन की गहरी परतों पर गौर करेंगें। जो आपको अपनी अनुवांशिक मन प्रवृत्तियों की समझ प्रदान कर सकता है। गुरू अपनी ज्ञान दृष्टियों से समस्त प्रक्रिया चरण के दौरान आपकी सहायता करता रहता है जो आपको अपनी अनुवांशिक कमजोरियों से पार पाने में सहायता कर सकती है। निरंतर प्रयासों के जरिए, एक समयावधि पर, मन अपनी कमजोरियों से मुक्त हो जाता है, अपनी समग्र शक्तियों के साथ परिदृष्य में उपलब्ध होता है। जिसके बाद, गुरू आपको समग्र ढंग से जीवन के आयामों की खोज व अहसास कराता है, जो आपको अपनी चिंतन प्रक्रिया पुनर्परिभाषित करने में सहायता करता है। अब आप अपनी स्वेच्छा का उपयोग करने के लिए पूर्णतया तैयार है ताकि नीयति के चक्र से उबर सकें और उसे नए ढंग से गढ़ सकें।

आपका मन आत्मचिंतन तथा अपने भीतर की कमजोरियों व अंतर्निहित क्षमताओं की मौजूदा प्रवृत्तियों का पता लगाने की शक्ति से संपन्न है। आपको पहले उन्हें पहचानने व स्वीकार करने और फिर नयी शैक्षणिक जानकारियों के जरिए अनिवार्य सुधार करने की जरूरत है। साथ ही, अंतर्निहित क्षमताओं को निखारना तथा अपनी रचनात्मक योग्यताएं सुधारनी चाहिए। देखिए, कि मन कितना अनोखा उपकरण है, जो अपने स्वरचित आईने में अपनी छवि देख सकता है।

शक्ति के स्तंभ

कोविड -19 महामारी से निपटने के लिए, भारत सरकार सोशल डिस्टेंसिंग और क्वारंटाइन के सख्त उपाय अपना रही है। संक्रमण की संभावना से प्रभावित लोगों को एकांत में रखा जा रहा है और बाकी लोगों को सोशल डिस्टेंसिंग अपनाने के लिए कहा गया है। हालांकि ये उपाय आम तौर पर लोगों के भले के लिए हैं, मगर बच्चों पर तालाबंदी के मनोवैज्ञानिक प्रभावों को नकारा नहीं जा सकता। प्रतिबंधित गतिशीलता व सोशल डिस्टेंसिंग से, बच्चे सामाजिक अलगाव और अपने दोस्तों से जुड़ाव की कमी महसूस करेंगे, और मनोगत अलगाव की ओर जाएंगे। जैसा कि बच्चों के पास सामाजिक स्थिति की जटिलताओं को समझने के सीमित स्रोत होते हैं, महामारी के दौरान मौजूदा परिदृश्य तथा सोशल डिस्टेंसिंग जैसे उपायों की अनिवार्यता को समझने में वे अक्षम होते हैं, ऐसे में तालाबंदी और क्वारंटाइन निराशा बढ़ा सकती है और वे आक्रोशित उठापटक के रूप में फूट पड़ सकते हैं।

महामारी ने बच्चों को अपने स्कूल व कक्षाओं की कमी को भी महसूस कराया है जो सीधे उनके मानसिक स्वास्थ्य समेत शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करेगी। ढांचे व परिवेशगत प्रेरणा की नासमझी वाली बिगड़ी हुई रोजमर्रा दिनचर्या उन्हें बेचैन, अवसादग्रस्त व अकेला महसूस करा सकती है। इसके अलावा, अपनी रोजमर्रा दिनचर्या में बदलाव होने से, बच्चे पिछलग्गू बन सकते हैं, नकारात्मक एकाग्रता तलाशना सीख सकते हैं और धीरे धीरे अपने माता पिता पर निर्भर होते जा सकते हैं। लाकडाउन की इस अवधि के दौरान, बच्चे शारीरिक रूप से कम सक्रिय होते हैं, अधिकांश समय स्क्रीन से चिपके रह सकते हैं, सोने का समय अनियमित हो सकता है, खानपान बिगड़ सकता है जिसके कारण हानिकारक मोटापा व हृदय का तंदुरूस्ती बिगड़ सकती है।

इस परिदृश्य में, बच्चों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। जीवन के शुरूआती वर्षों के दौरान, माता पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। इस दौर में किसी भी गड़बड़ी के बच्चे की समझदारी पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकते हैं। हालांकि, यह आजीवन माता पिता की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारता नहीं है। प्रमुख देखभाल करने वालों के साथ टकराव व खराब जुड़ाव बच्चे को ज्यादा कमजोर बना सकते हैं और उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकते हैं। नकारात्मक भावनाओं के शिकार बच्चों के गंभीर तनाव समस्या, समायोजन समस्या व दुख की भावनाओं का शिकार होने की संभावना बहुत ज्यादा है। तनाव के दौर में, खराब परवरिश के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर दूरगामी विपरीत प्रभाव पड़ सकते हैं इससे उनमें मनमानापन, मनोरोग तथा वयस्क होने पर आत्महत्या की भावनाएं विकसित होने का खतरा पैदा होता है।

मौजूदा अनिश्चितता के दौर में माता पिता महत्वपूर्ण सुरक्षा कारक का काम करते हैं। इसीलिए, सभी अभिभावकों के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे संतुलित परवरिश करने का प्रयास करें। तारतम्यता सजगता की स्थिति से संबंधित है जहां माता पिता बच्चे की भावनाओं पर ध्यान देते हैं और उस पर प्रतिक्रिया करते हैं। तनाव के दौर में, खासतौर पर मौजूदा महामारी के कारण, बच्चों को सीधे कुछ बताने में कठिनाई महसूस हो सकती है और उनकी अंतर्निहित भावनाएं उनकी शारीरिक भाषा, आचरण व गुस्से, नकार, नींद न आने तथा मनो चिकित्सीय शिकायतों में फूट पड़ने के रूप में प्रकट हो सकती हैं। इस तरह माता पिता की भूमिका है कि वे परेशानी व संबंधित भावनाओं के संकेत पर नजर रखें। कुछ गतिविधियों की सहायता से माता पिता बच्चे की नकारात्मक भावनाओं का समाधान कर सकते हैं और उनमें सकारात्मकता तथा स्वस्थ होने की भावना जगा सकते हैं।

- लेखक गुंजन जोशी मनोवैज्ञानिक हैं।

राह बनाती यात्रा

छत्तीसगढ का राज्य आज वन संरक्षण के मामले में समूचे देश का नेतृत्व कर रहा है। तालाबंदी अवधि के दौरान, जब वन आधारित आर्थिक गतिविधियां देश भर में ठप्प कर दी गयी थीं, छत्तीसगढ़ ने मुख्यमंत्री भूपेश सिंह बघेल के नेतृत्व में बहुत सारी उपलब्धियां अपने नाम कीं। तालाबंदी में, राज्य ने वन उत्पाद संग्रह में अधिकतम भागीदारी दर्ज की। उसी अर्थ में, वनवासियों के राजस्व में लगभग 2500 करोड़ होने की संभावना है। ट्रिफेड से प्राप्त आंकड़े के आधार पर, एक लाख कुंटल वन उत्पाद अभी तक राज्य में एकत्रित किए गए हैं। हालांकि महामारी ने समूची दुनिया की अर्थव्यवस्था को बर्बाद किया है, मगर छत्तीसगढ़ में आदिवासी वन उपज का संग्रहण आदिवासियों की आजीविका के साथ गतिमान रहा है और साथ ही साथ राज्य की अर्थव्यवस्था को तेजी देता रहा है।

घर पर रहने के आदेश ने देश की बेरोजगारी की समस्या को गहरा दिया है। हालांकि, छत्तीसगढ़ में वनवासियों को वन उपज एकत्रित करने व वनांचल प्रदान करने का रोजगार मिल रहा है। राज्य सरकार की नयी आर्थिक रणनीति में वन उपज के जरिए वनवासियों के जीवन में बड़ा बदलाव लाना शामिल है। राज्य हर साल तेंदु पत्तियों के 15 लाख मानक बोरे एकत्र करता है जिसके जरिए 12 लाख 65 हजार संग्रहकर्ता परिवारों को रोजगार मिलता है। तेंदु पत्ता की कीमत में प्रति बोरी 4000 रूपए का इजाफा हुआ है जिससे उन्हें 649 करोड़ का सीधा लाभ प्राप्त हुआ है।

राज्य सरकार ने अब न्यूनतम समर्थन मूल्य को पिछले सात रूप से बढ़ाकर अब 25 रूपए कर देने से वन उत्पादों की संख्या बढ़ा दी है। वन उत्पाद को 866 प्रमुख बाजारों के जरिए संरक्षित किया जा रहा है। काष्ठ कला विकास, लाख चूड़ी उत्पादन, दोना पत्तल बनाने, दवा निर्माण, शहद निर्माण, टेराकोटा हस्तशिल्प कार्य आदि कार्यक्षेत्रों के जरिए दस लाख दिहाड़ियों का रोजगार पैदा किया जा रहा है।

वन विकास कार्पोरेशन बंबू वृक्ष सुरक्षादलों, बंबू फर्नीचर निर्माण, वनौषधि बोर्ड के जरिए औषधीय पौधों की खेती के निर्माण के जरिए 14000 युवाओं को रोजगार अवसर दे रहा है। इसी प्रकार, सीएफटीआरआई मैसूर की सहायता से, महुआ आधारित एनर्जी बार के उत्पादन, चाकलेट, अचार, सेनिटाइजर, आंवला आधारित निर्जलित उत्पाद, इमली की टाफी, जामुन जूस आदि के उत्पाद की योजना बनाई जा रही है।

मामूली वन उत्पाद के संग्रह के कारण वनवासियों की आय निरंतर बढ़ रही है। जशपुर व सरगुजा जिलों में चाय बागान सीधे लाभार्थियों को लाभ देते हैं। एक हजार महिलाओं को 50 लाख मास्क सिलने का रोजगार मिला है। वर्तमान साल में, लगभग 12 हजार महिलाओं ने इमली की शुरूआती प्रोसेसिंग से तीन करोड 23 लाख रूपयो की अतिरिक्त आमदनी हासिल की है। इस साल वनवासियों की अपनी जमीन पर लक्ष्य 70 लाख पौधे लगाने का है। लाख उत्पादन को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के हिस्से के रूप में 164 उत्पादन क्षेत्रों में 36 हजार प्रमुख किसानों का चयन किया गया है। इसके अलावा, अन्य वन आधारित गतिविधियों व्यापक रोजगार अवसर भी पैदा किए हैं।

इस हफ्ते आपका भविष्य

मधु कोटिया

मेष (मार्च 21-20 अप्रैल)

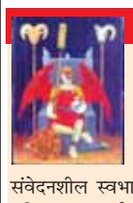

आप जीवन के प्रति ठोस नजरिए से हर समस्या का समाधान कर सकते हैं। बेचैन मन और आक्रामकता कुछ नहीं देते सिवाय तनाव के। आप एक समझदार व संवेदनशील स्वभाव के हैं। आप परेशान हो सकते हैं यदि आप अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं करते हैं। करियर मोर्चे पर, रचनात्मक विचारों को लेकर अपने सहकर्मियों व सहयोगियों के साथ आगे बढ़ें। यह सौदे करने, संबंध बनाने व साझीदारियां करने का उत्तम समय है। इस सप्ताह, आपके आत्मविश्वास में वृद्धि के संकेतक हैं। आपका तार्किक स्वभाव आपके संबंध को प्रभावित कर सकता है।

शुभ अंक: 13 **शुभ रंग:** मैरून **शुभ दिन:** बुधवार

वृष (अप्रैल 21-21 मई)

इस सप्ताह आप मुखर व ऊर्जावान हैं। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। कुछ त्वरित कार्रवाइयां आपको व्यस्त रखेंगी और आप इसका आनंद लेंगे। आपमें आगे बढ़ने की दृढ़ता व प्रेरणा होगी। चीजों को थोपने का प्रयास न करें क्योंकि इसका विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। पेशेवर रूप में, यह महत्वपूर्ण फैसले लेने का उचित समय नहीं है। आप महसूस कर सकते हैं कि आपकी ऊर्जा बाधित है। गुप्त इरादे, संदिग्ध जानकारी तनाव का कारण बन सकती है। मामले की गंभीरता में उतरने तथा अपनी बेचैनियों, भयों व मानसिक गांठों का समाधान तलाशने की आवश्यकता है ताकि वे आपको परेशान न करें।

शुभ अंक: 7 **शुभ रंग:** सफेद **शुभ दिन:** सोमवार

मिथुन (मई 22-21 जून)

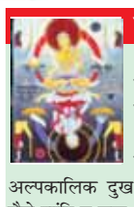

आप गहराती समस्याओं पर काबू पाएंगे और अपने संबंधों में तनाव दूर करेंगे। करियर के मामले में थोड़ा दुख हो सकता है लेकिन स्थिति पर काबू पा लेंगे और उस अल्पकालिक दुख की अनिवार्यता को समझेंगे। जैसे जैसे शांति व सुख आपके कार्यक्षेत्र में दाखिल होंगे आप देखेंगे कि पूर्व के बदलाव ने आपको अधिक लाभकारी दौर में प्रवेश करने के लिए उत्साहित किया है। सप्ताह वित्त के मामले में लाभकारी दिखता है। धन विभिन्न स्रोतों से आप तक पहुंचेगा। आपके सपने साकार हों सकते हैं, शायद फिर भी आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप न हों।

शुभ अंक: 2 **शुभ रंग:** हरा **शुभ दिन:** शुक्रवार

कर्क (जून 22-22 जुलाई)

आप फास्ट टेक्रेक पर हैं। व्यायाम करते समय सावधान रहें, मामूली चोट या खिंचाव हो सकता है। यदि आप किसी चोट से उबरने की प्रक्रिया में हैं तो अत्यधिक प्रयास न करें,वर्ना इसके दुष्परिणाम सामने आ सकते हैं। अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाएं। कार्यस्थल में कुछ समस्याएं आ सकती हैं। अपनी नौकरी की चिंता करना मसले सुलझाने में सहायता नहीं करने जा रहा है। आपको लग सकता है कि आपकी नौकरी बहुत चुनौतीपूर्ण है। ध्यान दें कि आप क्या संभाल सकते हैं, और अपनी बेचैनी को दरकिनार करने का प्रयास करें।

शुभ अंक: 8 **शुभ रंग:** लाल **शुभ दिन:** शनिवार

सिंह (जुलाई 23-23 अगस्त)

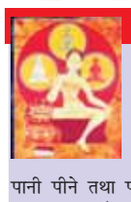

स्वास्थ्य अच्छा है, लेकिन चिंता, तनाव, और बेचैनी इस सप्ताह आपके मन की शांति को प्रभावित करने वाले हैं। अपना विशेष खयाल रखने पर ध्यान दें। व्यायाम, भोजन व पानी पीने तथा पर्याप्त आराम करने में संतुलन लाना अत्यावश्यक है। प्राणयाम अभ्यास व ध्यान इस समय आपके लिए विशेष रूप से उपयोगी साबित होंगे। करियर मोर्चे पर, कोई अप्रत्याशित घटना आपको चकित कर सकती है। आप नौकरी छोड़ने का फैसला कर सकते हैं यदि आप इस समय नौकरीशुदा हैं, भले ही वो नौकरी अच्छी है मगर आपका अब उसमें मन नहीं लगता है।

शुभ अंक: 12 **शुभ रंग:** कत्थई **शुभ दिन:** गुरूवार

कन्या (अगस्त 24-23 सितम्बर)

आप अपनी भावनाओं का दमन कर सकते हैं। यदि ऐसा है तो आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकता है। सावधान रहें कि आपको कैसे, कब और कहां अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाएं व्यक्त करनी हैं। कोई भी चीज जो आपका तनाव घटाती है, अभी आपके लिए मददगार होगी, वो पांच मिनट का टहलना भी हो सकता है। आपकी भावनाएं आपके आध्यात्मिक जीवन की अभिव्यक्ति का प्रवेशद्वार हैं। यह काम से थोड़ा समय अवकाश लेने का उत्तम समय है, अगर आप ऐसा कर पाएं तो आराम करें। इससे आपके करियर में सकारात्मक बदलाव आएंगे।

शुभ अंक: 10 **शुभ रंग:** पीला **शुभ दिन:** रविवार

तुला (सितम्बर 24-23 अक्टूबर)

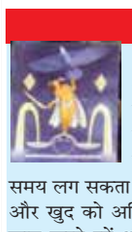

इस सप्ताह स्वास्थ्य समस्याएं आपको परेशान कर सकती हैं। एक बार में एक ही समस्या से निपटें, सकारात्मक सोचें और जानें कि जो हो रहा है उसकी तह में जाने में समय लग सकता है। खुद पर भरोसा रखें, सवाल पूछें और खुद को अधिकतम संभव रूप में शिक्षित करें। काम करते रहें और चीजें बेहतर हो जाएंगी। क्षमता और दृढ़ता के साथ मिलकर बड़े विचार आपको अपना लक्ष्य पाने में सहायता कर सकते हैं। वो तब, जब आप अपनी परियोजनाओं व गतिविधियों का समझदारी से चुनाव करते हैं। कलात्मक रूचियों की ओर ध्यान आकर्षित होगा।

शुभ अंक: 16 **शुभ रंग:** नारंगी **शुभ दिन:** मंगलवार

वृश्चिक (अक्टूबर 24-22 नवम्बर)

इस सप्ताह तनाव आपको नुकसान पहुंचा सकता है। अपने जोखिम के कारकों को आसान करने तथा इस तनाव से निपटने के तरीके तलाशें। यदि सबकुछ विफल होता है तो जीवन शैली व उन चीजों को बदलने के बारे में सोचें जिन पर आपका धन खर्च हो रहा है। करियर मोर्चे पर, आपको अपने भावनात्मक मसलों- सहयोगियों व अधिकारियों के साथ संबंधों- का खयाल रखने की जरूरत हैं जिन्होंने अतीत में आपको तनाव प्रदान किया था। स्थिति सुधर जाएगी और आपको इस समय का अपने रिश्ते सुधारने में उत्तम उपयोग करना चाहिए।

शुभ अंक: 5 **शुभ रंग:** इंडिगो **शुभ दिन:** शनिवार

धनु (नवम्बर 23-23 दिसम्बर)

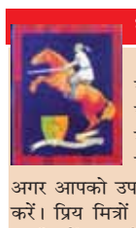

स्वस्थ रहकर अपने तनाव स्तर से निपटें। हर उस समस्या से निपटें जो शारीरिक रूप से उभरती है, उससे नकारने का प्रयास न करें। पर्याप्त आराम लेना सुनिश्चित करें। अगर आपको उपचार की जरूरत है तो उसकी मांग करें। प्रिय मित्रों से दिली बातें आपके स्वास्थ्य व समृद्धि में दूरगामी स्तर पर लाभ देंगी। पेशेवर मोर्चे पर, अधिकारियों के साथ टकराव से आपको अपना रास्ता बदलना पड़ सकता है। सभी विकल्पों को बंद करने का प्रयास न करें, जब तक कि आपको अन्य विकल्प नहीं मिलता है। आप जानते हैं कि यह समय कितना नाजुक है, शांत रहने का प्रयास करें।

शुभ अंक: 11 **शुभ रंग:** सुनहरा **शुभ दिन:** सोमवार

मकर (दिसम्बर 24-20 जनवरी)

इस सप्ताह आपकी स्वास्थ्य तालिका विशेष सुधार दिखाती है। जो लोग गंभीर बिमारी से जूझ रहे हैं, उन्हें नयी व बेहतर उपचार पद्धति या नया डाक्टर भारी उम्मीद प्रदान करेंगे। सकारात्मक सोचें और सर्वोत्तम की आशा करें, और आवश्यकता हो तो चिकित्सा सहायता मांगने में संकोच न करें। आपके जीवन को नया अर्थ प्राप्त होगा यदि आप आध्यात्मिक कार्यों में भाग लेते हैं और ईश्वर पर भरोसा करते हैं। अपने पेशेवर व व्यक्तिगत जीवन को अलग अलग करें। यह समय संवेदनशील होने का है, यदि आप ठहरने का फैसला करते हैं तो अपने काम के वैकल्पिक तरीके तलाशें।

शुभ अंक: 20 **शुभ रंग:** भूरा **शुभ दिन:** शुक्रवार

कुम्भ (जनवरी 21-19 फरवरी)

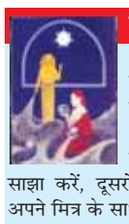

अपना स्वास्थ्य सुधारने का यह अच्छा समय है। आप सकारात्मक सोच रखेंगे। इस सप्ताह आप हर वस्तु व व्यक्ति के प्रति प्रेम का भाव रखेंगे। इस शुभ ऊर्जा को साझा करें, दूसरों को भी इसकी आवश्यकता है। अपने मित्र के साथ टहलने के लिए जाना या योग का अभ्यास करना आपके स्वास्थ्य व क्षमता के लिए अच्छा है। पेशेवर रूप में, आप स्थापित सामाजिक संरचनाओं व प्रथाओं का पालन करने के लिए समझदार होंगे। आपमें से कुछ लोग अपना खुद का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं या पारिवारिक व्यापार में शामिल हो सकते हैं।

शुभ अंक: 3 **शुभ रंग:** आसमानी **शुभ दिन:** गुरूवार

मीन (फरवरी 20-20 मार्च)

आप अपने स्वास्थ्य के संबंध में कुछ नया सीख सकते हैं। भ्रमव दुख की स्थिति की संभावना है। यदि आपको लगता है कि आपके स्वास्थ्य के साथ कुछ गड़बड़ है तो उसे अनदेखा न करें। डाक्टरी सहायता के लिए जाएं और अपनी जांच कराएं। उचित खुराक, व्यायाम, पौश्टिकता और विटाामिन या खनिज का सेवन करें। करियर मोर्चे पर, आप ऐसा अनोखा अवसर खो सकते हैं जिसमें आपकी हैसियत में संतोषजनक सुधार लाने की संभावना है। अपनी क्षमताओं पर ध्यान दें, कि आप क्या कर सकते हैं, और क्या नहीं कर सकते हैं। रिश्तों के मामले में यह सप्ताह खुद पर कड़ी निगाह डालने का अच्छा समय है।

शुभ अंक: 9 **शुभ रंग:** बैंगनी **शुभ दिन:** रविवार

पूर्वाग्रह एक बोझ है जो अतीत का धुंधला करता है, भविष्य को धमकाता है और वर्तमान को पहुंच से परे बताता है
- माया एंजेलो

हमेशा पहली बार

आईक्यूएसी का देव समाज शिक्षा कालेज द्वारा कराया गया सर्वे बताता है कि 90.2 फीसदी शिक्षकों ने कभी पहले ऑनलाइन कक्षाओं में नहीं पढ़ाया है

कुल 82.1 फीसदी उत्तरदातों में से किसी का भी आनलाइन अध्यापन का कोई अनुभव नहीं रहा है, 92.2 फीसदी शिक्षकों ने कहा कि वे पहली बार आनलाइन कक्षाएं ले रहे हैं। यह एक सर्वे में बताया गया है जिसे देव समाज कालेज आफ एजूकेशन, चंडीगढ़ के इंटरनल क्वालिटी अश्योरेंस सेल (आईक्यूएसी) द्वारा आनलाइन कक्षाओं के दौरान टीचरों द्वारा झेली जा रही चुनौतियों का अध्ययन करने के मद्देनजर कराया गया ताकि परिणामोन्मख ढंग से उनमें सुधार की अनुशंसाएं की जा सकें।

इसमें चंडीगढ़ और पंजाब के विभिन्न सरकारी, मान्यताप्राप्त प्राइवेट व सरकारी सहायता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों के 3550 शिक्षकों से संपर्क किया गया। सेंपल सर्वे में 38.6 फीसदी प्राइमरी टीचर, 33.9 फीसदी प्रशिक्षित स्नातक टीचर तथा 27.5 फीसदी परास्नातक टीचर शामिल थे। इस सर्वे को डा अनिता नांगिया तथा डा सीमा सरीन द्वारा देव समाज कालेज आफ एजूकेशन के प्रधानाचार्य, डा एग्नेस ढिल्लन के दिशानिर्देशन में कराया गया।

आनलाइन सर्वे के दौरान शिक्षकों द्वारा दी गयी प्रतिक्रियाएं आनलाइन पढ़ाने की शुरूआत से ही उनके द्वारा सामना की गयी रोजमर्रा की विभिन्न चुनौतियों पर पर्याप्त रोशनी डालती हैं। जानकारियों ने इंगित किया कि 33.56 फीसदी शिक्षक उचित सामग्री व संसाधनों की कमी के कारण किसी भी चुनौती का सामना नहीं करते हैं, जबकि 61.66 फीसदी ने बताया कि उन्होंने कुछ हद तक तथा 7.77 फीसदी ने काफी हद तक इस चुनौती का सामना किया।

44.23 फीसदी शिक्षकों के लिए सेवाकाल प्रशिक्षण की कमी वास्तविक चुनौती नहीं है। अनुमानतया, 74 फीसदी शिक्षक इसमें क्लास के लिए सभी छात्रों की मौजूदगी कठिन पाते हैं, जबकि 26 फीसदी इस चुनौती का सामना नहीं करते हैं।

यह भी पाया गया कि 22.54 फीसदी शिक्षकों को छात्रों के सीखने की समीक्षा करना कठिन नहीं लगा जबकि 56.45 फीसदी को कुछ हद तक तथा 21.01 फीसदी को इसमें बहुत ज्यादा समस्या महसूस हुई। हालांकि, समय की कमी तथा आत्मविश्वास की कमी अधिकांश शिक्षकों के लिए बिलकुल भी कोई समस्या नहीं थी।

अध्ययन ने आगे बताया कि लगभग 32.75 फीसदी पीडीएफ फार्मेट में नोटस भेजने के लिए व्हाट्सएप का उपयोग करते हैं। अनेक टीचर अध्याय के अपने वीडियो बनाते हैं और उन्हें छात्रों के बीच साझा करते हैं। यह जूम, वेब एक्स तथा टीम लिंक जैसे क्लाउड मीट एप के जरिए किया गया है। अनुमानतया 16.08 फीसदी टीचर आनलाइन अध्यापन के लिए गूगल क्लासरूम, गूगल हेंगआउट्स तथा गूगल मीट्स जैसे गूगल एप का उपयोग करते हैं, जबकि 19.20 फीसदी समूह नेक्स्ट लर्निंग प्लेटफार्म, स्नेपएचडब्लू, शिष्य, दीक्षा, एक्स्ट्रामार्क्स जैसे अन्य एप का उपयोग करते हैं और छात्रों को यूट्यूब लिंक्स देते हैं।

गौरतलब, सर्वे कोरोना वायरस महामारी के कठिन हालात के दौरान किया गया जब देश भर के स्कूल और कालेज मध्य मार्च से बंद कर दिए गए हैं। ई-लर्निंग एक गैरयोजनाबद्ध और त्वरित कदम था, जो सभी शैक्षणिक संस्थानों द्वारा चलाया गया जिसमें शिक्षकों को कोई उचित प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया गया, जहां अपर्याप्त बैंडविड्थ और मामूली तैयारी रही। इसमें संदेह नहीं कि अध्यापन की आनलाइन पद्धति किसी विकल्प की अनुपस्थिति में एक अच्छा इंतजाम है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों के लगभग दो तिहाई छात्र शिक्षण सामग्री हासिल करने में अक्षम हैं क्योंकि वहां इंटनेट व अन्य प्रासंगिक संसाधनों की उपलब्धता नहीं होती है। अध्यापन की इस आनलाइन पद्धति के न्यूनतम लाभार्थी छात्र ग्रामीण इलाकों के गरीब छात्र हैं और वे छात्र हैं जिन्होंने प्रतिष्ठित प्राइवेट स्कूलों में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के कोटे में दाखिला लिया है।

पारंपरिक कक्षाओं से आनलाइन अध्यापन की ओर होने वाले इस बदलाव की अनेक लोगों द्वारा प्रशंसा की गयी। एक उत्तरदाता ने कहा, ''ऐसे अराजक दौर के दौरान, आनलाइन कक्षाएं छात्रों की भागीदारी बनाए रखने का सर्वोत्तम उपाय हैं।'' एक अन्य उत्तरदाता ने कहा, ''मैं इस तकनीकी रूप से उन्नत दुनिया में ई-लर्निंग पद्धति की प्रबंल पैरवी करता हूं। यह स्कूलों द्वारा ली गयी महान पहल है।'' इसी प्रकार, एक अन्य टीचर ने जोड़ा, ''आनलाइन अध्यापन इस दौर में नेमत के रूप में सामने आया है। हमें अपने बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इसके साथ चलते रहना चाहिए। डिजीटल आज की पीढ़ी के लिए अच्छा ज्ञान हासिल करने का एक शानदार तरीका है। शुरू में, प्रक्रिया कठिन लग सकती है लेकिन समय के साथ नियमित जानकारियों की मदद से, यह अधिक असरकारी हो जाएगी।''

ई-लर्निंग पद्धति की कुछ खूबियां भी रहीं। खैर यहां कुछ चुनौतियां इस प्रकार हैं: आनलाइन पढ़ाना स्वायत्त रूप में आपको पारंपरिक शिक्षण पद्धति की तुलना में कम प्रत्यक्ष दृश्यमान बनाता है। यह आपके प्राधिकार को प्रभावित कर सकता है और छात्रों को आपसे कम जुड़ा महसूस करा सकता है। कुछ शिक्षकों ने कहा कि अनेक छात्रों के पास लैपटॉप, स्मार्टफोन जैसे उपकरण नहीं होते हैं या कनेक्शन बनाए रखने के लिए पैसा नहीं होता हैं। ''इसके अलावा, भौतिकी, रसायनशास्त्र और गणित जैसे विषयों में प्रयोगात्मक कार्य के लिए उचित स्थान नहीं होता है। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं विकास के भौतिक पहलू पूरी तरह नजरंदाज हो जाते हैं और सबसे महत्वपूर्ण, सशक्तीकरण के लिए माता पिता के सहयोग की आवश्यकता होती है। अनेक उत्तरदाताओं से स्पष्ट किया, ''ये वो वास्तविक चुनौतियां हैं जो आनलाइन अध्यापन की प्रक्रिया में बाधक बनती हैं।''

कुछ स्कूल टीचरों ने शिकायत की कि वे खुद तकनीक तकनीक से निपटने से पार पाने में जूझ रहे थे और चाहते थे कि उन्हें उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार, छात्रों को उचित प्रशिक्षण की जरूरत है। वाईफाई का ठोस कनेक्शन व बिजली आपूर्ति बनाया जा सके।

संभावित समस्याओं से पार पाने के लिए उपयोगकर्ता अनुकूल व असरकारी एप विकसित किए जाने चाहिए। आनलाइन अध्यापन की चुनौतियों व फायदों के संदर्भ में अभिभावकों की कौंसिलिंग तथा तकनीक प्रबंधन में शिक्षकों का प्रशिक्षण होना समय की आवश्यकता है। छात्रों, अभिभावकों यहां तक कुछ शिक्षकों को लगता है कि यह समय की बर्बादी है क्योंकि सबकुछ स्कूल खुलने पर दोहराना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि इसमें उचित ढंग से जागरूक किया जाना चाहिए कि आनलाइन या आफलाइन अध्यापन दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण है और यह कि केरीकुलम की गति छात्रों के विकास पर विपरीत प्रभाव डालेगी। भविष्य तथा देश की शिक्षा प्रणाली इससे प्रभावित हो सकते हैं। इसीलिए, हमें गंभीर होना चाहिए तथा अनेक नयी तकनीके लेकर आना चाहिए ताकि छात्रों में पढ़ने की रूचि व प्रेरणा विकसित की जा सके। उनकी मानसिक, भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा।

सीबीएसई को सभी शिक्षकों के लिए अध्ययन सामग्री का कोई एकसमान पैटर्न प्रदान करना चाहिए। सरकारी नीति को शैक्षणिक एप्स या साफ्टवेयर के लिए निशुल्क अत्यंत गतिशील इंटरनेट देना चाहिए। जैसा कि हम जानते हैं कि सभी छात्रों के पास आनलाइन कक्षाएं करने के संसाधन नहीं होते हैं- कुछ लोग वित्तीय समस्याओं का सामना करते हैं, जबकि कुछ को तकनीक उपकरणों के ज्ञान की कमी होती है। शिक्षक संसाधन प्रदान नहीं कर सकता। वह केवल मूल्यवान ज्ञान ही प्रदान कर सकता है।

पढ़ाने की आनलाइन पद्धति और पारंपरिक तरीके में भारी अंतर है। आमने सामने संवाद की अपनी अहमियत है क्योंकि इसमें मानवी जुड़ाव होता है। छात्र अनुशासन बनाए रखने की महत्ता समझते हैं। वे क्लासरूम छोड़कर नहीं जा सकते अगर टीचर पढ़ा रहा है, जबकि यहां, छात्रों के पास कांफ्रेंस छोड़कर जाने, आडियो व वीडियो को बंद कर देने का विकल्प है। हालांकि ई-लर्निंग के लाभ है मगर यह किसी भी तरह से पारंपरिक तरीके का स्थान नहीं ले सकती। केवल वही छात्र जिनके पास- स्मार्टफोन, लेपटॉप, अच्छा इंटरनेट कनेक्शन जैसे संसाधन हैं, और वे इसके जरिए सीखने व लाभान्वित होने के प्रति गंभीर हैं। कुछ और शैक्षणिक टीवी चैनल्स भी शामिल किए जा सकते हैं जो बच्चों के लिए कुछ टापिक्स को कवर करेंगे।

एक पंजाबी टीचर और एक हिन्दी टीचर ने कहा, ''हिन्दी में कम सामग्री होने तथा पंजाबी फोंट न होने के कारण हमें यह कठिन लगता है। हमारे लिए यह भारी काम है। हम शिक्षक सचमुच इसमें अपना पूरा मन लगा रहे हैं। हम चाहते हैं कि छात्र इस आनलाइन शिक्षण पद्धति के प्रति थोड़ा और गंभीर हों। हमें कुछ और अनुकूल तरीके तलाशने होंगे जिनके जरिए हम छात्रों के काम या प्रयासों का मूल्यांकन कर सकें। माता पिता को अपने बच्चों पर नजर रखनी चाहिए ताकि इस कठिन समय के दौरान तकनीक का कोई दुरूपयोग न हो। छात्र सर्वे भी कराया जाना चाहिए ताकि इंटरनेट व संसाधनों की उपलब्धता को समझा जा सके।''

हालांकि शारीरिक गतिविधि की आवश्यकता को रेंखांकित करते हुए एक टीचर ने कहा, ''शारीरिक शिक्षा को केवल पारंपरिक शिक्षण के माध्यम से सिखाया जा सकता है। आप आनलाइन खेल नहीं सिखा सकते। यह ऐसी चीज हैं जो प्रयोगस्तर पर की जाती है।''

वैश्विक स्वास्थ्य संकट ने निश्चित रूप से शिक्षा में तकनी के उपयोग बढ़ाया है। हालांकि, यह हर किसी के लिए वरदान नहीं है।

धारणाएं, जागरूकता व नजरिया

माहवारी स्वच्छता दिवस के अवसर पर यूथ की आवाज द्वारा कराए गए सर्वे में समस्याओं से लड़ने के कुछ आयुर्वेदिक तरीके व जानकारियां सामने आईं

विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस पर, वाटर, सप्लाई एंड सेनिटाइजेशन कोलाबोरेटिव कौंसिल (डब्लूएसएससीसी) के साथ मिलकर यूथ की आवाज ने माहवारी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की समस पर कराए गए आनलाइन सर्वे से प्राप्त जानकारियां प्रकाशित की है। यह सर्वे जिसकी शुरूआत सितंबर 2019 में आनलाइन हुई थी और जिसने 12सप्ताहों में माहवारी स्वच्छता, वर्जनाओं, अवधारणाओं, तथा भारत में माहवारी के प्रति नजरियों पर जागरूकता की श्रेणियों में युवा भारतीयों से प्रतिक्रियाएं एकत्रित कीं।

इसने उत्पाद उपयोग, कार्यस्थल पर उत्पादकता, सांस्कृतिक प्रथाओं व मान्यताओं संबंधी समस्याओं पर प्राथमिकताओं को एकत्रित किया तथा माहवारी स्वच्छता, स्वास्थ्य, जेंडर, भावनात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य की अंतर्क्रियाओं की पड़ताल की।

सर्वे कराने के पीछे मकसद गहराई में पड़ताल करना था कि युवा लोग माहवारी स्वच्छता को किस प्रकार समझते हैं और अपने नजरियों को मापते हैं जिससे नीति निर्माताओं द्वारा निर्णय लेने की प्रक्रिया संबंधी अगली जानकारी पाने में सहायता मिल सके।

❐ सर्वे से प्राप्त कुछ जानकारियां हैं:

टिकाऊ माहवारी स्वच्छता उत्पाद: लगभग 71 फीसदी उत्तरदाता प्राकृतिक रूप से गैरसड़नशील सेनिटरी नेप्किंस के उपयोग से सहमत थे तथा लगभग 63 फीसदी ने माना कि यह पर्यावरण के लिए हानिकारक है। लेकिन सस्ता तथा भरोसे का सवाल रजस्वलाओं में बाधक बना रहा जो जैविक रूप से सड़नशील विकल्पों की ओर स्पष्ट झुकाव बनाता है।

❐ युवा लोग माहवारी स्वच्छता संबंधी चर्चा के प्रति ज्यादा खुले हैं: 18 से 22 साल के आयुसमूह में 28 फीसदी से अधिक उत्तरदाताओं ने कहा कि वे माहवारी के बारे में बात करने में सहज थे जबकि 23 से 25 साल के आयुसमूह में केवल 27 फीसदी ने यह माना।

❐ पहली माहवारी से जुड़ी नकारात्मक भावनाएं: अपनी पहली माहवारी के दौरान भय और बेचैनी होना महिलाओं में प्रभावी नकारात्मक भावनाएं थीं जिसे 23 फीसदी से अधिक उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया।

❐ माहवारी अवकाश नीति की पुनर्पड़ताल करने की जरूरत: लगभग 41 फीसदी महिलाएं माहवारी अवकाश से संबंधित संसद में बिल पेश करने के पक्ष में थीं।

❐ सांस्कृतिक पिछड़ापन कायम है: लगभग 49.2 फीसदी उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्होंने सुन रखा है कि माहवारी के दौरान पूजा करने जैसी गतिविधियों से परहेज करना चाहिए। 51.1 फीसदी उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उन्हें अलग थलग रखा गया या माहवारी के कारण बहिष्कृत कर दिया गया है।

❐ भारत में माहवारी स्वच्छता के इर्दगिर्द विविधता का अभाव: 47 फीसदी से अधिक उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि माहवारी केवल महिलाओं की समस्या है। अधिकांश को नही मालूम था कि माहवारी भी द्विलिंगी है और ट्रांस पुरूष समस्या है। वो भी इस कदर कि केवल दस फीसदी उत्तरदाताओं को महसूस हुआ कि द्विलिंगी व समलिंगी आबादी की आवश्यकताएं माहवारी स्वच्छता के इर्दगिर्द पूरी हो रही हैं।

जिया आयुर्वेद के निर्देशक डा प्रताप चौहान कहते हैं कि जो कारक इस स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं उनमें खट्टा, नमकीन, गर्म, कसैला, गरिष्ठ व फर्मेन्टेड भोजन, चर्बीयुक्त मांस व पालतू जानवरों, अल्कोहल युक्त जूस आदि का अधिक सेवन तथा पूर्व भोजन के पचने से पहले खाना शामिल है। वे स्थितियां, जिनका भारी असर भी होता है, में बार बार गर्भपात, अत्यधिक यौन कर्म, अत्यधिक शारीरिक थकान (टहलना, गाड़ी चलाना, वजन उठाना आदि), दुर्बलता, सदमा, व दिन में सोना शामिल है। दुख, क्रोध, वासना, और बेचैनी जैसी मनोवैज्ञानिक स्थितियां भी माहवारी समस्याएं बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए ज्ञात हैं।

वह कहते हैं, ''आयुर्वेद के अनुसार, खराब खुराक व कमजोर पाचन इन समस्याओं के लिए प्रमुख कारणात्मक कारक हैं। अनुचित ढंग से पचा भोजन से शरीर में विषाक्त तत्व उत्पन्न होते हैं। ये विषाक्त तत्व रक्त संचरण के जरिए गहन टिशूज व संचार मार्गों तक पहुंचते हैं, जहां वे गतिरोध व अवरोधक का कारण बनते हैं। ये स्थितियां वात दोष (वायु) तथा रक्त धातु (रक्त) के बढ़ने का कारण बनती हैं। बढ़ा हुआ वात संचार मार्गो में रक्त अशुद्धियां लाता है जिसके कारण माहवारी में अधिक रक्तस्राव होता है।''

वह माहवारी समस्याओं के उपचार के लिए विभिन्न प्रकार के उपचार प्रस्तावित करते हैं। इनमें समस्या की प्रकृति के साथ अनुकूलन में ताजगीपूर्ण उपचार समेत पोषणकारी जड़ीबूटियों व पोषणकार्य शामिल है। मालिश व प्राणायाम व योग को शामिल करना भी माहवारी समस्या के स्थायी समाधान के लिए लाभकारी हो सकता है। इन माहवारी समस्याओं का उपचार करना जरूरी है क्योंकि महिला इस प्रक्रिया के जरिए वृहद अनुपात में अपनी गंदगी व विषाक्तता का अपने शरीर से निष्पादन करती है। यदि ये विषाक्त तत्व शरीर में रह जाते हैं तो वे शरीर के अगले गतिरोधन व अवरोधन का कारण बनते हैं।

डा प्रताप माहवारी समस्याओं से लड़ने के लिए कुछ आयुर्वेदिक तरीके बताते हैं:

- माहवारी के दौरान दिन में दो बार दो लौंग के साथ एक पिसा हुए लहसुन लौंग खाएं।
- माहवारी के दौरान अगर ऐंठन हो रही है। तो कालीमिच या दालचीनी पाउडर मिश्रित एक चम्मच अलूवेरा जेल का सेवन करें।
- अदरक युक्त हर्बल चाय पीना कारगर है। आप गर्म पानी में एक चम्मन अदरक पाउडर भी मिला कर पी सकती हैं।
- अपनी माहवारियों के पहले दिन से निम्नलिखित काढ़ा लें। यह लक्षणों को घटाने में सहायता करता है। दो गिलास पानी में एक चम्मच जीरा डालकर उसे संतुलित आंच में तब तक उबालें जब तक कि घोल घटकर आधा न हो जाए। बीज को छान लें। फिर उसमें एक चम्मच शहद मिलाएं और उसे गर्म गर्म पीएं।
- ठंडा स्नान व चंदन व मिंट मिश्रित पानी में स्नान करना मददगार है।

पेज एक का शेष

एक नई दुनिया

शायद इसीलिए सरकार के फैसले ने सिनेमा हाल मालिकों की ओर से ऐसे टकराव को न्यौता दिया है। दूसरे शब्दों में, सिनेमाहाल कगार पर होंगे क्योंकि सिनेमाहाल पर फिल्म प्रदर्शन को दरकिनार करने का सिरकार का फैसला सिनेमा देखने के नए दौर की शुरूआत के लिए पूर्णतया तैयार है।

तमिल सुपरस्टार और प्रोड्यूसर सूर्या का पोंमगल वन्दल को, जिसमें कि उनकी पत्नी ज्योतिका ने अभिनय किया है, डिजीटल स्तर पर रिलीज करने के फैसले ने भी एक्टर के खिलाफ टकराव को न्यौता दिया है। थिएटर और मल्टीप्लेक्स मालिकों ने धमकी दी है कि अगर सूर्या अपने फैसले पर अड़े रहते हैं तो भविष्य में उनकी किसी भी फिल्म को रिलीज नहीं किया जा जाएगा।

अब यह कि जिन्न बोतल से बाहर आ गया है और यह कोई साधारण जिन्न नहीं है जिसकी बच्चन और आलोचकों की वर्तमान पसंद खुराना, छोटे पर्दे पर उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं, तो स्थितियां भिन्न हैं। ऐसा नहीं है कि बच्चन पहले टीवी पर उपस्थित नहीं रहे हैं, असलियत में, यह सितारा सदी की शुरु आत से ही टेलीविजन सेलेब्रिटी रह चुका है जब इसने कौन हू वांट्स टू बी अ मिलियनेर के भारतीय संस्करण कौन बनेगा करोड़पति धारावाहिक को होस्ट करना शुरू किया था और बाद में 2014 में उन्होंने टेलीविजन पर एक थ्रिलर मिनी सीरीज, युद्ध में काम किया था। हालांकि बच्चन वैसी बाक्स आफिस परिघटना न हो, जैसा कि वह पहले हुआ करते थे, लेकिन उनका आभामंडल निरंतर प्रेरित करता है और खुराना के साथ यह भारत में सिनेमा के इतिहास में नए दौर से दर्शकों को परिचित कराने का एक उत्तम संयोजन है।

उस जमाने में, जब बच्चन ने सात हिन्दुस्तानी (1969) में अभिनय की शुरूआत की थी, और जब भारत में पहली टाकीज फिल्म आलम आरा (1931) बनी है के जमाने के बीच बहुत ज्यादा अंतर नहीं था। 51 साल के लंबे अभिनय करियर में बच्चन ने टेलीविजन के आगमन को बरकरार रखा है, 1980 दशक की शुरूआत में वीडियो पायरेसी के हमले तथा 1980 दशक के अंत में सिनेमाहालों के लगभग परित्याग तथा सेटलाइन टेलीविजन, आनलाइन पायरेसी के फलने फूलने के दौरान। और अब वह भारतीय सिनेमा में महान ऐतिहासिक बदलाव की प्रत्यक्ष कमान संभाले हुए हैं। समकालीन सितारों की बात करें तो खुराना की उपस्थिति लगभग एक मानक स्वीकृति का चिन्ह है। वह बिरले हैं जो महत्वपूर्ण दावेदारी, व्यवसायिक सफलता और साधारण दर्शक के साथ जुड़ने के सर्वोत्तम संयोजन का आनंद लेते हैं।

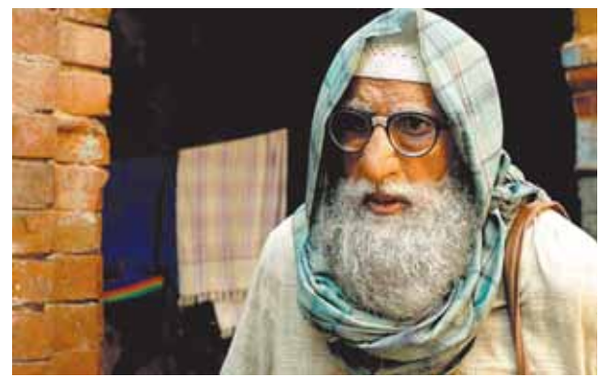

जिन्न बोतल से बाहर आ गया है और यह कोई साधारण जिन्न नहीं है जिसकी बच्चन और आलोचकों की वर्तमान पसंद खुराना, छोटे पर्दे पर उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं, तो स्थितियां भिन्न हैं। ऐसा नहीं है कि बच्चन पहले टीवी पर उपस्थित नहीं रहे हैं, असलियत में, यह सितारा सदी की शुरु आत से ही टेलीविजन सेलेब्रिटी रह चुका है जब इसने कौन हू वांट्स टू बी अ मिलियनेर के भारतीय संस्करण कौन बनेगा करोड़पति धारावाहिक को होस्ट करना शुरू किया था।

फिल्म के प्रदर्शन प्रारूप का फैसला लगभग हर चीज के बनने का तरीका बदल देता है। गुलाबो सिताबो शायद आनलाइन रिलीज करने की मंशा के साथ न बनाई गयी हो लेकिन भाग्य के पास काम करने का अपना तरीका होता है। हालांकि फिल्म की योजना बनाते समय, सिरकार के सिनेमाटोग्राफर अविक मुखोपाध्याय केवल एक लेंस के साथ फिल्म को शूट करने का विचार लेकर आए थे। 30एमएम का यह लेंस दर्शक को एक ही फ्रेम में हर चीज देखने का अवसर प्रदान करता है। चाहे वह उसे क्लोज अप में फ्रेम बनाए या लांग शॉट के रूप में फ्रेम करें, कोई फर्क नहीं पड़ता, मगर मुखोपाध्याय सिरकार के लिए लोगों व लोकेशन की समूची बारीकियों को कैप्चर कर सकते थे जिससे कि गुलाबो सिताबो की अनोखी दुनिया को जैसा वह दिखाना चाहते थे, उसे दिखा सकें। दोनों को बिलकुल भी नहीं पता था कि वे बिलकुल नयी दुनिया का द्वार खोल रहे होंगे। (लेखक फिल्म इतिहासकार और डार्कस्टार: द लोनलीनेस आफ बींग राजेश खन्ना, द फिल्म देट रीवाइव्ड हिन्दी सिनेमा एंड राजनीति: ए बायग्राफी ऑफ राजनाथ सिंह के लेखक हैं)

सुशांत तुम्हारे कहे हर शब्द का मतलब है। गर्व से भरी मुस्कान के साथ आपने हमें दिखाया। उत्साह से भरपूर, बीच में कहीं आप बच्चे की तरह उछल पड़े, हम सभी को एक यात्रा पर ले जाने के लिए ...
- भूमि पेडनेकर

'हर अभिनेता भूमिका को अपने ढंग से करना पसंद करता है'

सामान्य से दिखने वाले अभिनेता नमित दास ने पायनियर संवाददाता साक्षी शर्मा के साथ एक बातचीत में अपनी नई सीरीज़ आर्या के बारे में बताया कि उन्होंने इससे पहले ऐसा चरित्र कभी नहीं निभाया है-

जब हमने नमित दास को फोन किया तो उन्होंने बताया कि वो बरसात और प्रकृति का आनंद ले रहे थे। वो बादलों के विभिन्न सपनों में खो गए थे। उन्होंने कहा, 'हमें और क्या चाहिये? समय बिताने के लिए इससे अच्छा और कर भी क्या सकते हैं।' वैसे ही हम सब एक कठिन समय से गुजर रहे हैं। वो एक ऐसे व्यक्ति हैं जो जीवन की छोटी बातों में ही सुख तलाश कर लेते हैं। इसके लिए आपका गृह जनपद ही विशेष स्थान रखता है। नमित को ये सब कविता लिखने के लिए पुन: प्रेरित करते हैं।

जब हमने उनसे उनकी नई सीरीज़ के बारे में बात की तो वो कैमरा मोड में आ गए। आर्या एक डार्क अपराध थ्रिलर सीरीज़ है। वो इसमें जवाहर नाम एक निडर और सनकी व्यक्ति का चरित्र कर रहे हैं। इससे पहले उन्होंने ऐसा रोल नहीं किया था। वो इसमें एक मादक पदार्थ विक्रेता के खतरनाक चरित्र में हैं। 'जवाहर एक ऐसा चरित्र है जो मैंने आजतक नहीं किया है। उसके मूल्य और राजनीति मेरे वास्तविक जीवन के विचारों से बिलकुल उलट हैं। वो एक बाहरी व्यक्ति है लेकिन वो इस दुनिया का बादशाह बनना चाहता है। वो सत्ता और ताकत पाना चाहता है और इसके लिए वो सही गलत कुछ नहीं देखना चाहता। उसका चरित्र रुचिकर और अनिश्चित प्रकार का है। इसमें कई परतें हैं। अंत तक आपको समझ नहीं आएगा कि वो क्या और क्यों कर रहा है। यही बात दर्शकों को अंत तक बांधे रखती है।'

ये वेब सीरीज़ वास्तव में एक डच ड्रामा पेनोज़ा का ही हिंदी रूपांतरण है और इसमें आर्या सरीन (सुष्मिता सेन) ही कहानी की प्रमुख भूमिका में हैं। वो अपने पति के अपराधी को तलाश करने और सजा दिलाने का संकल्प लेती हैं क्योंकि उन्हें पता है कि उनके पति तेज सरीन (चंद्रचूढ़ सिंह) की हत्या करने वाला एक नकाबपोश व्यक्ति था। सीरीज़ में हर कोई एक रहस्य लपेटे नजर आता है। सीरीज़ में वास्तव में 'उसके पति की हत्या किसने की? आर्या अपने परिवार और संभालने और अपना अस्तित्व बनाए रखने में कितना समर्थ हो पाएगी? जैसे प्रश्नों का ही समाधान तलाशते दिखाया गया है।

लेकिन नमित के लिए ये एक अवसर था क्योंकि वो कुछ अलग करना चाहते थे। 'जब निर्देशक राम माधवानी ने मुझे चरित्र से परिचित कराया तभी मैंने इसे करने का निर्णय कर लिया था। इसका कारण ये था कि मैं कुछ अलग काम करना चाहता था। दर्शक किसी को भी समान भूमिकाओं में लंबे समय तक नहीं देख पाते। यही कारण है कि आपको विविधतापूर्ण रोल करते रहना होता है। फिल्म व्यवसाय में बहुमुखी होना अवश्यंभावी है।

नमित किसी चरित्र को परिभाषित करना उचित नहीं मानते क्योंकि हर अभिनेता किसी भूमिका को अपने ढंग से करता है और आप उस कलाकार के व्यक्तित्व की छाप चरित्र में देख सकते हैं। उन्होंने बताया, 'यही कारण है कि आपको जीवन के अनुभव लेते रहना चाहिये ताकि आप उनका प्रयोग किसी भी प्रकार के चरित्र को निभाने में कर सकें।'

यद्यपि जवाहर एक कोकीन बिजनेस में है लेकिन वो अपने चरित्र को नकारात्मक नहीं कहना पसंद करते। उनका कहना है, 'मैं इसे नकारात्मक चरित्र नहीं कह सकता क्योकि किसी चरित्र को परिभाषित करने से उसमें वो बात नहीं रह जाती। वो एक ग्रे चरित्र हैं जो आपकी समझ से परे हैं और यही बात उनके चरित्र को और रोचक बनाती है।

नमित किसी चरित्र को परिभाषित करना उचित नहीं मानते क्योंकि हर अभिनेता किसी भूमिका को अपने ढंग से करता है और आप उस कलाकार के व्यक्तित्व की छाप चरित्र में देख सकते हैं। उन्होंने बताया, 'यही कारण है कि आपको जीवन के अनुभव लेते रहना चाहिये ताकि आप उनका प्रयोग किसी भी प्रकार के चरित्र को निभाने में कर सकें।'

इस चरित्र को करने से अब वो अपने जीवन के दायित्वों को और भी जिम्मेदारी से उठा सकने में समर्थ हुए हैं। सीरीज़ में उनका चरित्र लाभ पर मरता है उसे हानि नहीं चाहिये। चरित्र की यही विशेषता उन्हें सोचने पर विवश करती है।

इसके रूपांतरण के समय से ही इसके निर्माताओं ने भारतीय संवेदनशीलताओं को ध्यान में रखा है और जहां आवश्यक हुआ ऐसी बातों को भारतीय परिवेश के अनुसार ढाला गया है, 'यदि आप राजस्थान के किसी नगर की बात करें तो वो कैसा होगा। वे जैसा बिजनेस करते हैं, उनकी शैली, बातचीत का ढंग, व्यक्तित्व और लोगों से बात करने का ढंग स्थिति के अनुसार रखा जाता है। इन सब बातों को सोचा गया और इन्हें ध्यान में रखते हुए कुछ नई बातों को शो में जोड़ा गया है।'

नमित ने अपने निर्देशक को इसका पूरा श्रेय देते हुए कहा, 'उनके सेट पर ऐक्शन, या कट जैसे शब्द नहीं होते। वहां केवल गो अर्थात 'जाओ' कहा जाता है। हम शॉट के बारे में भी बात नहीं करते। आपको बस चरित्र को जीने के लिए कहा जाता है और यही श्रेष्ठ विचार है। आप उस चरित्र को जब जीने लगते हैं तभी वो चरित्र सबसे सटीक ढंग से परदे पर दिखाई देता है। लेकिन नमित ने मूल सीरीज़ को नहीं देखा क्योकि वो किसी चरित्र से प्रभावित नहीं होना चाहते थे बल्कि वो अपने चरित्र को अपने अनुसार करना चाहते थे। उन्होंने कहा, 'आपको तय करना होता है कि आप इसे कैसे निभाएंगे, तभी आप से अच्छे से निभा पाते हैं शो में कई परतें हैं लेकिन आपको तय करना होता है कि आप उसे कैसे लेते हैं।'

तो जवाहर कहां फिट होता है? पूछने पर उन्होंने बताया, 'मेरे एक सह अभिनेता ने कहा कि जवाहर आर्या के मेजबान हैं।' इसके बाद वो किसी जासूसी जॉनर या हॉरर में काम करना चाहते हैं।

अब वो टीवी, वेब और फिल्मों में काम कर ही चुके हैं तो उन्हें किसमें काम करना अधिक प्रिय है? उन्होंने हंसते हुए बताया, 'ये तो मां से पूछने के समान है कि उसके दोनों बच्चों में से कौन सा अधिक प्रिय है। हर माध्यम अच्छा है और उसकी चुनौतियां, मिलने वाली संतुष्टि अलग होती हैं। लेकिन अंत में तो आप कलाकार ही हैं और यही सत्य है।' वर्तमान में वो डार्क ही रहना पसंद कर रहे हैं क्योंकि उनकी अगली परियोजना का नाम 'माफिया' जो है!

यश राज फिल्मस ने सुशांत राजपूत के अनुबंध की प्रतियां पुलिस को सौंपी

भाषा । मुंबई

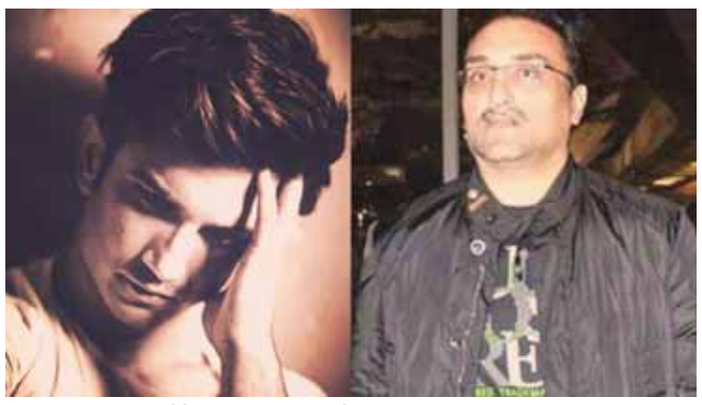

यश राज फिल्म्स (वाईआरएफ) ने शनिवार को भविष्य में आने वाली फिल्मों से संबंधित अभिनेता सुशांत राजपूत के हस्ताक्षर वाले अनुबंध की प्रतियां मुंबई पुलिस को सौंपी।

गत रविवार को राजपूत का शव उनके बांद्रा स्थित अपार्टमेंट में लटकता हुआ मिला था। पुलिस ने कहा था कि मौके से उन्हें कोई सुसाइट नोट नहीं मिला।

एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि 18 जून को पुलिस ने वाईआरएफ को एक पत्र भेजकर अनुबंध का ब्योरा मांगा था। जोन-9 के पुलिस उपायुक्त अभिषेक त्रिमुखे ने कहा, इसके मुताबिक, जांच अधिकारी को वाईआरएफ की ओर से अनुबंध की प्रति प्राप्त हुई है, जिस पर सुशांत राजपूत ने हस्ताक्षर किए थे।

उन्होंने बताया कि पुलिस ने अब तक 15 लोगों के बयान दर्ज किए हैं, जिसमें अभिनेता के परिवार के सदस्य, उनके कर्मचारी, करीबी मित्र अभिनेत्री रिया चक्रवर्ती और कास्टिंग निर्देशक मुकेश छाबड़ा शामिल हैं।

उपायुक्त ने कहा, उनके द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर पुलिस तथ्यों की जांच कर रही है।

पुलिस ने कहा था कि चक्रवर्ती ने जांचकर्ताओं को बताया था कि अभिनेता ने वाईआरएफ के साथ अपना अनुबंध समाप्त कर लिया था और उसे भी इस बैनर के साथ काम करने से मना किया था।

सुशांत राजपूत ने यश राज फिल्मस के बैनर तले बनी फिल्म शुद्ध देसी रोमांस (2013) और डिटेक्टिव ब्योमेकेश बक्शी (2015) में अभिनय किया था।

इस बैनर के साथ राजपूत की तीसरी फिल्म पानी आने की संभावना थी लेकिन वाईआरएफ ने कथित तौर पर इससे हाथ पीछे खींच लिए।

लीसेस्टर के मेयर ने गांधी प्रतिमा को बचाने का वादा किया

लंदन। लीसेस्टर शहर के मेयर ने मध्य ब्रिटेन के इस शहर के बीचोंबीच स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा को बचाने का वादा किया है जिसे कुछ लोगों ने हटाने के लिए अभियान शुरू किया है। इस बीच इस प्रतिमा को बचाने की एक ऑनलाइन याचिका पर 6,000 से अधिक लोगों ने हस्ताक्षर किए हैं।

मेयर पीटर सूल्सबी ने लीसेस्टर पूर्व के भारतीय मूल के पूर्व सांसद कीथ वाज के पत्र के जवाब में शहर के इस गौरवपूर्ण स्मारक के लिए अपना समर्थन जताया। वाज पिछले सप्ताह प्रतिमा को हटाए जाने की एक ऑनलाइन याचिका सामने आने के बाद से इसे बचाने के लिए अभियान चला रहे हैं। सूल्सबी ने कहा, मैं आपको यह आश्वासन देते हुए खुशी महसूस कर रहा हूं कि परिषद द्वारा प्रतिमा को हटाए जाने पर किसी भी समय सहमत होने की कोई संभावना नहीं है और जब तक मैं मेयर हूं, तब तक तो बिल्कुल नहीं। उन्होंने कहा कि अत्यंत गौरव की बात है कि हमारा शहर बापू के जीवन का उत्सव मनाता है जो आधुनिक भारत के निर्माण में प्रेरणापुंज थे और पूरी दुनिया के लिए मिसाल थे। प्रसिद्ध बेलग्रेव रोड गोल्डन माइल पर स्थित गांधीजी की चलने की मुद्रा वाली कांस्य प्रतिमा पिछले सप्ताह तब खबरों में आई जब इसे हटाने के लिए एक ऑनलाइन याचिका सामने आई। इसमें आरोप लगाया गया है कि गांधी एक फासीवादी व नस्लवादी थे। इसके बाद चेंज डॉट ऑर्ग पर जवाबी याचिका जारी कर लीसेस्टर में महात्मा गांधी की प्रतिमा को बचाने का आह्वान किया गया और कुछ दिन के भीतर इस पर हजारों लोगों ने हस्ताक्षर कर दिए हैं। याचिका में कहा गया है, लीसेस्टर में महात्मा गांधी की प्रतिमा कभी नहीं हटाई जानी चाहिए क्योंकि यह स्वतंत्रता, अहिंसा और शांति की प्रतीक है। इसमें कहा गया, आज हम सभी को मिलकर न्याय के लिए लड़ने तथा गांधी प्रतिमा को बचाने की जरूरत है। कोलकाता के मूर्तिकार गौतम पाल द्वारा निर्मित इस प्रतिमा का भारतीय संस्था समन्वयन परिवार द्वारा एक चंदा अभियान के बाद 2006 में यहां विमोचन किया गया था।

होम थियेटर

नाम बड़े और दर्शन थोड़े!

फिल्म : गुलाबो सिताबो
अमेज़न प्राइम
कलाकार: अमिताभ बच्चन, आयुष्मान खुराना, विजय राज़ आदि
रेटिंग 4/10

फिल्म में कुछ न भी हो तो भी गुलाबो सिताबो एक साहसपूर्ण प्रयास है-कहानी नहीं, बल्कि इसे बनाने का विचार और फिर वो प्लेटफार्म तय करना जिसपर ये रिलीज़ होने वाली है।

फिल्म के निर्देशक शूजित सरकार और फिल्म के लेखक जूही चतुर्वेदी दोनों ही साहसी व्यक्ति हैं। उन्होंने ही इससे पहले पीकू बनाई थी। एक खंडहर हवेली और इसके झगड़ालू वासिंदों, बुड्ढे मकान मालिक और उससे भी उम्रदराज वास्तविक मालिक पर फिल्म बना देना जबकि उनकी कोई व्यक्तिगत कहानी न हो, वास्तव में साहस का काम है।

इसके बाद उनका दूसरा साहसपूर्ण काम है एक वैकल्पिक प्लेटफार्म पर फिल्म को रिलीज़ करना जिसे अभी कुछ ही दिन हुए है। फिल्म गुलाबो सिताबो इरफान की फिल्म अंग्रेजी मीडियम के बाद दूसरी ऐसी फिल्म है जो ओटीटी प्लेटफार्म पर रिलीज़ हुई हो। ये सही है कि सिनेमा हॉल आजकल कोरोना के चलते बंद हैं। लेकिन ये भी सत्य है कि ओटीटी प्लेटफार्म की पहुंच काफी अधिक है। लेकिन इससे फिल्म के विशेष प्रभावों और शूटिंग के स्थानों आदि का कोई महत्व या अर्थ नहीं रह जाता जबकि इन पहलुओं पर फिल्म में काफी ध्यान दिया जाता है। फिल्म की हवेली थियेटर में कुछ और ही दिखाई देती जबकि टीवी या लैपटॉप या मोबाइल स्क्रीन पर इसकी लुक सामान्य ही रहने वाली है।

दूसरी बात ये है कि फिल्म में अमिताभ बच्चन को जिस ढंग से प्रस्तुत किया गया है वो समझ से परे है। बच्चन इसमें एक ऐसे वृद्ध बने हैं जो कुरूप हैं, उनका शरीर और चाल दोनों ही विचित्र हैं। साथ ही उनकी नाक भी कुछ अधिक ही लंबी है। फिल्म में अमिताभ अपनी भूमिका से लोगों को प्रभावित करने में असफल रहे हैं और ऐसे में उन्हें इस रूप में प्रस्तुत करने का निर्देशक का निर्णय सवालों के घेरे में आता है। अमिताभ इसमें 78 साल के मिर्ज़ा बने हैं जो अपने से 17 साल बड़ी महिला से विवाह करते हैं।

उनके सामने हैं आयुष्मान खुराना जो एक आटा चक्की के स्वामी हैं और जिनके तीन छोटी बहने हैं। फिल्म में उन्हें मिर्जा के यहां बीस रुपये के मासिक किराए पर रहते दिखाया गया है जिसे देने में भी वो आनाकानी करते हैं।

दोनों के बीच की कहासुनी कई बार होती है लेकिन वो दर्शकों पर प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहते हैं। वे बेढंगी कहासुनी करते दिखाई देते हैं जो कहीं रुचिकर लग सकती है। फिल्म में इन दोनों के अलावा विजय राज़ हैं जो एक आर्केलॉजी विभाग में क्लर्क हैं। वो भी अपनी दी गई भूमिका में किसी प्रकार की रुचि पैदा करने में असफल रहते हैं। फिल्म में विचारशून्यता प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है।

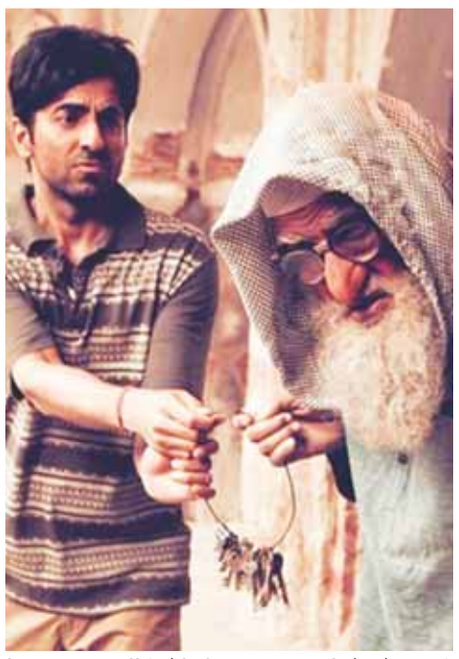

चतुर्वेदी वैसे लेखन अच्छा करते हैं और उनकी बात आपके दिल में सीधे पहुंचती है लेकिन इस बार वो राह भटक गए लगते हैं। लगता है जैसे उन्होंने कहानी को बिना किसी रुचि के लिखा है।

गुलाबो सिताबो में मिर्जा को अपनी पत्नी से हवेली झटकने के प्रयास करते दिखाया गया है। उनके किराए दारों की भी कोई निजी कहानी नहीं दिखाई गई है। फिल्म में हवेली के ऊपर किसी और ढंग से कहानी को बुना जाना चाहिये था।

फिल्म के लिए सभी दिल थाम कर प्रतीक्षा कर रहे थे ऐसे में फिल्म सभी को निराश ही अधिक करती है। फिल्म में वैसे दो ही चरित्र प्रमुख हैं। एक तो हवेली और दूसरा फिल्म में 95 साल की हवेली की वास्तविक मालकिन मिर्जा की बेगम जिनके बीच कुछ बातचीत हमें हंसने के कुछ पल देती है।

फिल्म को नीरस कहानी पर बनी फिल्म कहा जाना अधिक उपयुक्त होगा।

लॉर्ड ऑफ द रिंग्स फेम अभिनेता इयान होम का निधन

भाषा । लंदन

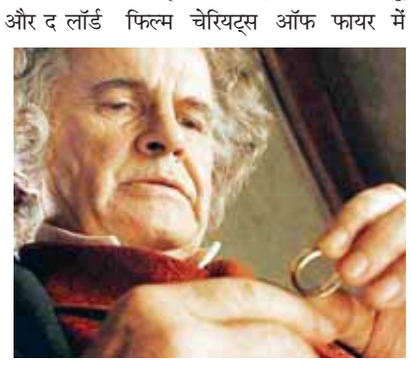

चेरियट्स ऑफ फायर और द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स जैसी फिल्मों के मशहूर अभिनेता इयान होम का यहां निधन हो गया। वह 88 वर्ष के थे।

ब्रिटिश अभिनेता होम के एजेंट एलेक्स इरविन ने एक बयान में कहा कि उन का निधन शुक्रवार सुबह एक अस्पताल में हुआ। अंतिम समय में उनका परिवार उनके साथ था।

इरविन ने कहा कि वह पार्किन्सन्स जैसी बीमारी से जूझ रहे थे। उन्होंने कहा, हमें जादुई व्यक्तित्व वाले बहुत ही प्रतिभाशाली अभिनेता की कमी बहुत खलेगी।

होम को 1982 की प्रसिद्ध फिल्म चेरियट्स ऑफ फायर में जानेमाने खेल कोच सैम मुसाबिनी के किरदार के लिए ब्रिटिश एकेडमी फिल्म पुरस्कार से नवाजा गया था। साथ ही वह सहायक अभिनेता के ऑस्कर पुरस्कार के लिए भी नामित हुए थे।

शिल्पा शेट्टी के साथ आनलाइन योग सत्र में भाग लेंगे रीजीजू, मेरीकॉम और मोदि्गल

भाषा । नई दिल्ली

खेलमंत्री किरेन रीजीजू रविवार को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर अभिनेत्री और फिटनेस ट्रेनर शिल्पा शेट्टी के साथ आनलाइन योग सत्र में भाग लेंगे जिसमें निशानेबाज अंजुम मोदि्गल और मुक्केबाज एम सी मेरीकॉम भी रहेंगी।

भारत सरकार के फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत आयोजित 45 मिनट का आनलाइन सत्र फन, फैमिली, योग के नाम से होगा। इसे आयुष मंत्रालय के घर पर योग के दिशा निर्देशों के तहत तैयार किया गया है चूंकि कोरोना वायरस महामारी के कारण बाहर योग दिवस नहीं मनाया जा सकता। अगले साल ओलंपिक का कोटा हासिल कर चुकी मोदि्गल ने कहा , मैं रीजीजू सर और शिल्पा शेट्टी से योग सीखने को लेकर उत्साहित हूं। शिल्पा ने कहा , मैं खेलमंत्री किरेन रीजीजू के साथ स्कूली बच्चों के लिए लाइव योग सत्र में भाग लूंगी। अपने परिवार के साथ इसमें हिस्सा लीजिए और अपना योग मैट साथ लेकर बैठिए। यह सत्र शाम को पांच बजे शुरू होगा और फिट इंडिया के यूट्यूब पेज पर लाइव दिखाया जाएगा। इसके अलावा शिल्पा शेट्टी कुंद्रा के फेसबुक और इंस्टाग्राम पेज पर भी लाइव होगा।